श्रीपरमात्मने नमः

तीर्थयात्रादर्शक।

जिसको

ब्रह्मचारी गेवीलालजीने बहुत परिश्रम और

छानबीनके साथ लिखा

एवं पं० गजाधरलालजी न्यायतीर्थने संशोधन किया

और

दि० जैनसमाज कलकत्ताने

प्रकाशित किया।

प्रथम बार १ हजार

जनवरी १९२२ वी० सं० २४४८

न्योछावर ॥)

प्रकाशक—
किशोरीलाल जैन पाटणी
१६ घांसतल्लास्ट्रीट बड़ाबाजार
कलकत्ता।

मुद्रक—
श्रीलाल जैन काव्यतीर्थ
जैनसिद्धांत प्रकाशक पवित्र प्रेस,
१ विश्वकोषलेन, बाघबाजार
कलकत्ता।

निवेदन।

वीर नि० सम्बत् २४४७ के चतुर्मासमें हम लोगोंके पुण्य-प्रतापसे ब्रह्मचारी गेवीलालजी महाराजने यहां पधारकर निवास करनेकी कृपा की। आपके उपदेशसे धर्मप्रभावनाका महान् आनन्द रहा। उसी समय ब्रह्मचारीजीने स्वलिखित तीर्थयात्रा करनेवालोंकेलिए सुगम रास्ता बतलानेवाली इस पुस्तकके प्रकाशनकी आवश्यक्ता बतलाई और तदनुसार हम लोगोंने भी उसे उपयोगी समझ समस्त जैन भ्राताओंके हितार्थ यथाशक्ति सहायता दे प्रकाशित कर दिया है।

इसकी न्योछावर लागतसे भी कम ॥) आठ आना मात्र रक्खी गई है जिससे आवश्यकताके समय हर कोई ले सके।

न्योछावरका आया हुआ रुपया और छपाई आदिके खर्चसे बचा हुआ द्रव्य, समस्त ब्रह्मचारी गेवीलालजीकी सम्मतिसे किसी धार्मिक कार्यमें ही लगा दिया जायगा।

यह पुस्तक समस्त जैन संस्थाओं और तीर्थोंमें विना मूल्य वितरण की गई है, जहां न पहुंचा हो वहांके भाई प्रकाशकके पतेपर पत्र डालकर मंगा लें।

कलकत्ता दि० जैन समाजकी तरफसे

निवेदक—

किशोरीलाल जैन पाटणी

आय व्ययका व्योरा ।

१३६७) पंचायती चंदा	५३१) कागज रीम ४५ पौंड ३२ दर ।=)
जिसकी विगत	पौंड कमीशन वाद देकर
पृष्ठ ६३-६४ पर	३) गाडी भाडा कागजोंका
छपी है ।	४२४) छपाई शुधाई आदि १९ रु०
१३६७)	फार्मके हिसाबसे २२ फार्मका
१०९८)	१४०) जिल्द बंधाई ७) रु० सैकडाके
२६९)	हिसाबसे दो हजारका ।
	१०९८)

पुस्तक मिलनेके पत्ते ।

१। बाबू दुर्लीचंद्रजी जैन

८२ लोअरचितपुर रोड कलकत्ता ।

२। मैनेजर—दि० जैनतेरापंथी कोठी

मधुवन पो० पारसनाथ (हजारी बाग)

३। जैनग्रंथरत्नाकरकार्यालय, हीराबाग, बंबई नं० ४

४। जैनसाहित्य प्रसारक कार्यालय, हीराबाग, बंबई नं० ४

५। दि० जैनपुस्तकालय, चंदावाडी, सूरत सिटी

६। जैनसिद्धांतप्रकाशक प्रेस ९ विश्वकोषलेन, बाघबजार कलकत्ता.

प्रस्तावना ।

इस समय संसारमें अगणित मत प्रचलित हैं और अगणित मनुष्य उनके परम भक्त बने हुए दृष्टि गोचर होते हैं। यद्यपि वर्तमानमें किसी भी मतका संचालक उपास्य देव दृष्टि गोचर नहीं होता तथापि उनके स्मरण चिह्न वर्तमानमें मोजूद हैं जो कि इस समय तीर्थोंके नामसे विख्यात हैं और लोग बडी भक्तिसे उन तीर्थ स्थानोंका आदर सत्कार करते और पूजते हैं।

यह निश्चय है कि हर एक मनुष्य आराम चाहता है और जिस मतमें उस आरामको करनेकी छूट है उस मतके अनुयायी बहुतसे मनुष्य हो जाते हैं किंतु जिस मतके अंदर आरामकेलिये स्थान नहीं, किसी बातका मुलाहिजा नहीं और तिस पर भी उस कठिन मतमें दृढता करानेवाला कोई खास व्यक्ति नहीं, उस मतसे लोग जल्दी फिसल जाते हैं और इच्छानुसार मत ग्रहण कर स्वरूप भ्रष्ट हो संसारमें घूमते फिरते हैं परन्तु यह निश्चित है कालदोष वा अज्ञानसे संक्लेशका कारण होनेपर भी वस्तुके वास्तविक स्वरूपके बतलानेवाले उस मतके भले ही कम अनुयायी हों परन्तु उनकी कीमत है, बल्कि यह कह देना भी अत्यधिक नहीं उस वास्तविक मतके अनुयायी ही मनुष्य संसारमें आदर्श हैं और उन्हींका मनुष्य जन्म सफल है। ठीक

भी है पत्थर होनेपर भी हीरा (पत्थर) संसारमें बहुत ही कीमती उत्कृष्ट और अत्यन्त कम दीख पड़ता है।

प्राचीनता एक प्रामाणिक पदार्थ है। जिस मतमें जितनी प्राचीनता दीख पड़ेगी वह मत उतना ही उत्तम माना जायगा भले ही वास्तविक मतके अनुयायी कम हों तथापि उनकी प्राचीनता संसारमें उनकी उज्वल कीर्ति और वास्तविकताको सदा कायम रखती है। किसी मतके मानने वाले बहुतसे भी मनुष्य हों पर जब मतोंका अंदर विचार करने केलिये तुलते हैं तब विद्वान लोग भी वास्तविक मतको ही गौरवकी दृष्टिसे देखते हैं। दिगम्बर जैन धर्म के भक्त यद्यपि वर्तमानमें बहुत थोडे हैं परन्तु उसके तत्व और तीर्थोंकी प्राचीनतासे आज उसका आदर समस्त संसारमें विस्तृत है। वे अपनी अज्ञानता या असमर्थतासे चाहे भले अखंड जैन धर्मकी निंदा करें परन्तु यह निश्चय है कि जब उसके किसी मुख्यतत्व पर आरूढ रहनेपर संसारका प्रत्यक्ष कल्याण होता दीख पड़ता है तब उसको सर्वांश रूपसे अपनाने पर क्या कल्याण नहीं हो सकता ? अहिंसा तत्व जैन धर्मका प्रधान अंग है और उसके अपनानेसे संसारका कितना मचराब बल बढ गया है यह आज संसार विख्यात है।

जैन धर्मके तत्त्व उसके गंभीर ग्रन्थोंमें उल्लिखित है। विद्वान वहांसे उनके गौरवकी जांच कर सकते हैं। अनेक तीर्थोंमें

परिभ्रमण करनेसे और उनकी अत्यन्त प्राचीनता देख-नेसे हमारी आत्मामें यह एकदम प्रबल जाग उठी कि इन समस्त तीर्थोंका खोजके साथ विस्तृत वर्णन प्रकाशित किया जाय जिससे जैन अजैन सब लोगोंको इस बातका ज्ञान हो जाय कि जैन मत बहुत ही प्राचीन है और वे लोग इसे और भी गौरवकी दृष्टिसे देख सकें। बस इसी आशयसे हमने यह तीर्थयात्रादर्शक नामकी छोटी सी परन्तु आनंददायी प्राचीन तीर्थोंके उल्लेखसे महनीय पु-स्तक लिखनी प्रारंभ कर दी। इस पुस्तकमें अतिशय क्षेत्र सिद्ध क्षेत्र प्राचीन नामी क्षेत्र गुप्त क्षेत्र पंच-कल्याण क्षेत्रों का निदर्शन है। बडे २ शहर जिसमें वर्तमानमें महा मनो-हर मंदिर विराजमान हैं उनका भी प्रसंगवश वर्णन है। जहां जहां प्राचीन चीजें देखने योग्य हैं उनका भी जिक्र किया गया है। रेलवे टिकट तीर्थोंमें सवारी डोली आदि का भी उल्लेख किया है। बीच बीचमें प्रसंगवश मुसल-मान और हिंदुओंके नामी २ तीर्थोंका भी उल्लेख है।

यद्यपि यह पुस्तक खासकर दिगंबर जैनी भाइयोंके निमित्तसे ही लिखी गई है परन्तु बीच बीचमें जो शहरों का तथा हिंदुओंके तीर्थोंका उल्लेख है उससे देशाटनके प्रेमी हर एक व्यक्तिके लिये यह लाभदायक है जो मनुष्य देशाटन करना चाहें वे इस पुस्तकके आधारसे करनेपर बिना किसी तकलीफके सभी मुख्य २ स्थानोंको देख सकते हैं

और बहुतसा लाभ उठा सकते हैं जहांतक बना है बडी मिहिनत और खोजके साथ प्रसिद्ध स्थानोंका इसमें उलेख किया ह।

इस पुस्तकके लिखनेमें ४ मास तक हमने बहुत परिश्रम किया है। हिंदी अंग्रेजीके नकशोंसे हमने तीर्थोंका मिलान जहां तक बना है, किया है। इसके पहिले हम इसी विषयकी तीनवार पुस्तक लिख चुके हैं परन्तु वे ठीक न समझ अपनेसे रद करदी चौथीवार बडे प्रयत्नसे यह पुस्तक लिखी है। हमें विश्वास है कि इसमें भी बहुतसी अशुद्धियां रह गई होंगी उनकेलिये विज्ञ पाठकोंसे सादर क्षमा प्रार्थना है।

इस पुस्तकमें जिन २ क्षेत्रोंका वर्णन है उनमें बहुतसे क्षेत्रोंमें हमने स्वयं भ्रमण किया और बहुतसे क्षेत्रोंको जैन डिरेक्टरी, शोलापुर निवासी डहया भाई द्वारा लिखित तीर्थ यात्रा, मूलचन्द्र जैन गुप्तद्वारा प्रकाशित तीर्थक्षेत्र यात्रा और बाबू ज्ञानचन्द्र लाहोर द्वारा लिखित तीर्थयात्रा इन चार पुस्तकोंसे अच्छीतरह मिलानकर लिखा है।

यहां यह प्रश्न न करना चाहिये कि इसमें सिवाय जैन तीर्थोंके, हिन्दुओंके तीर्थ बडे २ शहर रेलवे स्टेशन आदिका क्यों व्यर्थ उल्लेख किया गया इसका समाधान हम ऊपर लिख चुके हैं कि देशाटन करनेवाले भी भाईको सब बातोंका सुभीता मिले इसलिये ऐसा किया गया है।

हमने रेलवे लाइन और शहरोंका उल्लेख इसलिये

किया है कि कौन भाई कहांसे किस तीर्थको जाना चाहते हैं तथा अपनी जगहपर उनको कहांसे जाना ठीक और लाभदायक होगा। इस बातका यात्रियोंको अच्छी तरह ज्ञान रहे।

देखने लायक अनेक चीजोंका उल्लेख इसलिये किया है कि सब लोगोंको नवीन चीजोंके देखनेका शौक रहता है। यदि पतेके न मालूम रहनेसे वे नहीं देख सकते तथा उनके बारेमें पीछे सुनते हैं तो उनको पछिताना होता है क्योंकि बार २ तीर्थोंमें नहीं जाया जा सकता तथा प्राचीन कारीगरी और चीजोंके देखनेसे धर्म आदिका गौरव तथा बुद्धिका विकाश भी होता है।

सवारी महसूल आदिका उल्लेख इसलिये किया गया है कि किसी भी तीर्थक्षेत्रमें जानेके लिये यात्रियोंको आलस्य न हो क्योंकि सवारी आदिका पूरा हाल न मालूम होनेसे वे थोडी दूरके तीर्थमें जानेके लिये घबडा जाते हैं। दूसरे बिना जाने मजदूरी वा भाडा भी अधिक देना पडता है जिससे यात्रियोंको अधिक परेशानी उठानी पडती है।

हिंदुओंके क्षेत्रोंका वर्णन इसलिये किया है कि बिना अधिक खर्च तथा सुलभतासे उनको भी देख लिया जाय, इसमें कोई हानि भी नहीं क्योंकि श्रीभक्तामरजी स्तोत्रके लिखे अनुसार हरि हर ब्रह्मा आदिके देखनेमें, जिसप्रकार भगवान जिनेन्द्रमें विशिष्ट श्रद्धा होती है उसीप्रकार अन्य

मतोंके तीर्थोंके देखनेसे अपने ही तीर्थोंमें अधिक श्रद्धा होती है साथमें ब्राह्मण आदि किसी नोकरके जानेपर वह भी अपने तीर्थोंकी यात्रा सुलभतासे कर सकता है। वास्तवमें हिंदु आदि सबके तीर्थोंको देखना अवश्य चाहिये, वहांपर भी जैन धर्मकी बहुतसी बातोंका ज्ञान होता है।

वास्तवमें और भी तीर्थ सम्बन्धी अनेक पुस्तकें हैं परन्तु हमने सबोंकी अपेक्षा इसमें सुलभता रक्खी है जहां जिस बातकी आवश्यकता है वहांपर जोर दिया है। सब बातको अच्छीतरह समझाया है इसलिये यह पुस्तक और पुस्तकोंकी अपेक्षा, आशा है महत्वपूर्ण सिद्ध होगी। यात्रियोंको इस पुस्तकका स्वाध्यायकर तीर्थयात्राके लिये अवश्य जाना चाहिये।

विशेष क्या, नर जन्म पाकर हमने दो वर्ष तक बडे उत्साह और आनन्दसे बडे २ तीर्थक्षेत्र और प्राचीन जगहों की वन्दना की है। बहुतसे प्राचीन क्षेत्रोंपर जैनी भाइयोंके न होनेसे ठीक प्रबन्ध नहीं। गुप्त रहनेसे उनपर यात्री भी नहिं पहुंच सकते क्योंकि बहुतसे क्षेत्रोंकी खबर नहीं, यदि खबर है तो पुरा पता न मिलनेसे उनपर यात्रियोंका पहुंचना नहीं होता; सबको पता न रहनेसे उन क्षेत्रोंकी भी बडी दुर्दशा होती देख दुःख होता है। बस! सब भाई उन गुप्त और प्रसिद्ध क्षेत्रोंकी सुलभतासे वन्दना कर सकें

और तीर्थोंकी प्राचीनतासे जैन धर्मका गौरव समझ सकें इसलिये इस पुस्तकके लिखनेके लिये हमारा विचार होगया।

सम्वत १९७८ में हमने कलकत्तामें चतुर्मास किया। चार महिनेमें बडे परिश्रमसे यह पुस्तक तयार की गई जो आपके सामने विराजमान है।

यह निश्चय है वर्तमानमें विना छपाये किसी वातका प्रकाश होता नहीं इसलिये हमने इस पुस्तकका छपाना उचित समझा और कलकत्तेके उदार दानी भाइयोंसे इसके छपानेके लिये कहा गया। हर्षकी वात है कि कलकत्तेके भाइयोंने अपनी उदारता और धर्मभावसे चन्दाकर द्रव्य इकट्ठा किया और हमारा परिश्रम सब भाइयोंके सामने प्रगट किया जिससे इस उदारता परिपूर्ण कार्यके लिये कलकत्ताकी समाजको अत्यन्त धन्यवाद है।

अन्तमें अपने पाठकोंसे हमारा यह निवेदन है कि अज्ञानता वा भ्रमसे वहुतसी जगह इस पुस्तकके लिखनेमें त्रुटियां रह गई होंगी उसके लिये वे हमें क्षमा प्रदान करें।

जैन धर्मका सेवक—

गेवीलाल ब्रह्मचारी.

कुछ उपयोगी प्रश्न उत्तर

प्रश्न– तीर्थ यात्राओंके करनेसे क्या २ फल प्राप्त होता है। उत्तर–पापका नाश पुण्यका बंध और परम्परासे मोक्ष प्राप्त होती है।

प्रश्न— ऐसा कहां लिखा है? उत्तर– शिखर माहात्म्य पूजा पाठ और कई गूंथोंमें लिखा हुआ है।

प्रश्न– इसके सिवाय दूसरा भी कोई लाभ होता है कि नहीं। उत्तर–होता है और वह धन और शरीरकी सफलता पात्रदान और सज्जनोंसे मिलाप देशाटन नवीन २ चीजोंका देखना चतुरता आदि। घरमें पडे रहनेकी अपेक्षा बाहर निकलनेसे और तीर्थों पर जानेसे आलस्य प्रमाद आदिका भी नाश होता है।

तर प्रश्न– और भी किसी बातका लाभ होता है। उत्तर-प्राचीन प्राचीन बातोंका दर्शन विद्यालय बोर्डिंग हाउस अनाथालय लायब्रेरी विधवाश्रम कन्याशाला दानशाला धर्मशाला ब्रह्मचर्याश्रम आदि जितनी भी जैन समाज और जैन धर्मकी उन्नति करनेवाली संस्था हैं उन सबका निरीक्षण मुनि क्षुल्लक ब्रह्मचारी विद्वान सेठ आदि बडे २ महानुभावोंसे मुलाकात और किस देशका क्या बर्ताव - कहांपर कैसा जैनी भाइयोंकी चाल चलन है। आदि और भी अनेक प्रकारके लाभ होते हैं।

कुछ हितोपदेशी शिक्षा।

१– गृहस्थी संबन्धी विकल्प जाल क्रोध मान माया लोभ मत्सर आदिका सर्वथा त्यागकर परम शांति परम संतोष वीतरागता और शुद्ध भावोंसे यात्रा करनी चाहिए, ऐसी ही यात्रा अभीष्ट फल प्रदान करती है और सब काय क्लेश और देशका परिभ्रमण करना मात्र है।

२– सिद्ध क्षेत्र अतिशय क्षेत्र पंच कल्याणक्षेत्र जहां पर भी बन्दना करने जाओ बडे हर्षसे जाओ, जूता न पहनो शुद्ध वस्त्र धारणकर जय जयकार बोलते जावो। रास्तेमें जाते समय भगवान पंच परमेष्ठीके गुणोंका प्रति समय चिन्तवन करो। मल मूत्र आदि शरीर संबन्धी बाधाओंसे निवृत्त होकर जाओ। विकथा क्लेश विसंवाद करना छोड दो। कुटुंब आदिका कुछ भी ध्यान न कर उज्वल परिणामोंसे पूजा वंदना नृत्य गान आदि करो।

३– साथमें जो भी द्रव्य चढानेके लिये ले जाओ दिनमें अच्छी तरह शोधकर और धोकर चढाओ।

४– हर एक तीर्थपर खर्च अधिक है। मुनीम पुजारी जमादार नौकर आदि सबोंको वेतन देना पडता है और भी बहुत खर्च मंदिर आदिकी मरम्मत आदिका है वह सब भंडारसे किया जाता है इसलिये जिस समय भंडार करने जाओ सब बात सोचकर अच्छी तरह भंडारमें मदद दो।

यदि अपने पास धन है तो उसके खर्च करनेके लिये तीर्थ क्षेत्र सेवाके सिवाय और क्या कार्य होगा।

५– यदि किसी तीर्थपर मुनि ऐलक क्षुल्लक ब्रह्मचारी आदि मिल जांय तो उनका मिलाप बडे पुण्यका फल समझकर भक्ति भावसे उन्हें आहार औषध शास्त्र आदिका दान करो। तीर्थयात्रा और पात्र दानका मिलना बहुत कठिन है। दानके विना मनुष्य जन्म और गृहस्थाचार विफल है। तीर्थ क्षेत्रमें अवश्य कोई न कोई पात्र मिलता है भूल न करो।

६– मजदूर गोदी ले जानेवाले डोली वाले मनुष्योंकी मजूरी ठीक दो। उन्हें दिककर उनका जी मत दुखाओ।

७– क्षेत्रोंपर अकसर लूले लंगडे अपाहिज बहुत रहते हैं। उनका जीना यात्रियोंके दान पर ही निर्भर है। करुणाबुद्धिसे उन्हे भी दान दो।

८– जिस दिन पर्वत आदिकी वंदनाके लिये जाना हो उसके पहिले दिन शुद्ध पवित्र पाचक भोजन करना चाहिये जिससे पूजन आदिमें परिणाम लगे और मल मूत्र आदि की बाधा न हो।

पहाड आदिपर चढते समय बडी सावधानी रखनी चाहिये। आगे पीछेका बराबर ध्यान रख कर चलना चाहिये जल्दी करनेसे कष्ट होता है इसलिये वैसा न करना चाहिये।

१०– तीर्थ क्षेत्रोंपर प्रायः सब देशोंके यात्री आते हैं। सबके साथ मेल मिलाप बात चीत करनी चाहिये। उदारता और शांतिका वर्ताव रखना चाहिये। जिससे परस्परमें प्रेम और व्यवहार बढे।

११– यदि इच्छा हो तो तीर्थस्थानोंपर जोनार थाली कटोरा प्रसाद आदिका बांटना कार्य करने चाहिये। यही धन पानेका सदुपयोग है। मरते समय धन किसीके साथ नहीं जाता।

१२– जिस तीर्थ क्षेत्रमें वा रेल और शहरमें जाना हो पहिले स्टेशनका नाम गाडीका बदलना धर्मशाला मंदिर चैत्यालय आस पास तीर्थ क्षेत्रोंका हाल कुछ देखनेकी चीज आदि सबको किसी न किसीसे पूछ लेना चाहिये। पूछनेसे आराम और लाभ मिलता है।

१३– रेलमें बैठते समय किसीसे कुछ भी झगडा नहीं करना चाहिये शांतिपूर्वक सबसे हेल मेल रखना चाहिए गाली देने वा तकलीफ होनेपर बरदाश्त करना चाहिये। समताभाव रखना सदा अच्छा होता है।

१४– रेलमें अधिक न सोना चाहिये। अपना सामान और बाल बच्चोंको अकेला न छोडना चाहिये। किसीके सामने रुपया नोट छडी आदि चीजें बार बार निकालनेकी आवश्यकता नहीं क्यों कि धोखा होनेकी संभावना है।

१५– माता बहिन पुत्री आदिको रेलमें लुचे गुंडोंके साथ मत बिठाओ शायद कुछ चीज चोरी आदि चली जाय

१६– रेलमें किसी भी आदमीका विश्वास न करना चाहिये । मेल सबसे रक्खो पर अपनी चीज विश्वासपर मत छोडो । बहुतसे लोग सूरतसे बडे आदमी मालूम पडते हैं पर पक्के धोखे बाज होते हैं ।

१७– जिस समय रेल तांगा मोटर गाडी आदिमें चढो उतरो सामानको अच्छी तरह संभाल लो । यदि उसी समय चीज मिलेगी तो मिल सकती है फिर मिलना कठिन है

१८– जिस समय धर्मशालासे चलो सब सामान अच्छी तरह जांच लो । दिया बत्ती हर समय पास रखना चाहिये और चलते समय आले आदि सब अच्छी तरह देख लेने चाहिये । रास्तेमें कोई चीज न गिरे यह भी ध्यान रखना चाहिये ।

१९– कुली तांगा मोटर आदिका भाडा सब पहिले ही तय कर लेना चाहिये जिससे आगे झगडा फिसाद न हो । यदि कदाचित कोई झगडा हो जाय तो सब्र करना ठीक है दो पैसा जादा देनेसे टंटा मिट जा सकता है ।

२०– कुली और तांगे वालेको छोडकर मत जाओ साथ रहो नहीं धोखा खाना होगा ।

२१– रेलमें बाल बच्चे और स्वयं आपको धीरजसे बैठना चाहिये । जल्दी न करनी चाहिये । यदि एक गाडी

से न जाना हो सके तो दूसरी गाडीसे चला जाना ठीक है।

२२– रेलवे स्टेशनपर आधा घंटा पहिले पहुंचना चाहिये जिससे टिकट लेने और गाडीमें बैठनेका सुभीता होवे। ठीक टायम पर पहुंचनेसे बडी घबडाहट होती है। जल्दीमें सामान भी छूट जाता है।

२३– रेल आते समय प्लेटफार्मपर नहीं रहना चाहिए पीछे हट जाना चाहिये और चलती रेलमें चढ़ना भी न चाहिये।

२४– जिस जिस तीर्थ, शहर तथा हिंदुओंके क्षेत्रों पर जाओ गुंडा पंडा दगाबाज किसीकी बातोंमें न आना चाहिये।

२५–विदेशमें कुछ ज्यादा सामान मत खरीदो, नहीं तो अधिक बोझके हो जानेसे कुली तागा व गाडेकी तकलीफ उठानी होगी। यदि खरीदना हो तो वहींसे सीधा पार्सल घर भेज देना चाहिये, साथ न रखना चाहिए।

२६– यात्राको जाते समय मामूली गहना और बर्तन साथमें रखना चाहिये अधिक रखनेमें नुकसानका भय है।

२७– यदि अपने पास काफी धन है तो परदेशमें सवारी मजदूर खाने पीने आदिका लोभ नहीं करना चाहिए परन्तु फिजूलखर्ची भी ठीक नहीं।

२८– एकवार अच्छी तरह दाल रोटी रुचिपूर्वक जीम लेना चाहिये। बार बार खानेकी कोई आवश्यकता

नहीं। अभक्ष्य भोजन कभी नहीं करना चाहिये जिससे स्वास्थ्यको हानि पहुंचे अन्यथा असमयमें बीचमें ही बीमारी हो जानेपर यात्रा पूरी न हो सकेगी।

२९– अधिक भूखे मत रहो न रातको अधिक जगो स्वास्थ्यको नुक्सान पहुंचेगा। ४ दिन मुसाफिरी करनेपर १ दिन विश्राम लेना चाहिये।

३०–टिकट लेते समय हुशियारी रखनी चाहिये। जितना लगता हो संभालकर रक्खो खिडकीके पास टिकटके दाम संभाल लो, कम होनेपर टिकट न मिल सकेगी। टिकट हुशियारीसे रक्खो, खो न जाय। टिकटके नंबर जरूर नोट बुकमें लिख लेना चाहिए।

३१– रेलमें चढते उतरते समय अपने संघके सब मनुष्योंको गिनकर संभाल लो कोई छूट न जाय।

३२– चलती रेलकी खिड़की खुली नहीं रखनी चाहिये। बाल बच्चे वा सामानको खिडकीके पास न रहने दो, नहीं तो नीचे गिर जायगा।

३३– टट्टी पेशाब रेलमें पायखानामें करना चाहिए। घडी २ रेलसे बाहर नहीं आना चाहिये। जंक्शन पर उतर सक्ते हैं क्योंकि रेलके छूट जानेका भय रहता है।

३४– रेलके महसूलमें कभी चोरी मत करो और न कभी सरकारी महसूलको चुराओ। चोरी करनेसे बडी हानि होती है।

३५– जहांपर गाडी बदली जाय वहांका स्मरण रख पूछते जाना चाहिये जिससे स्टेशन चूकनेका भय न रहे ।

३६– रेलवे टिकट हर समय बदलता रहता है इसलिए जहां जाना हो वहांका भाडा किसी जानकार आदमीसे वा बाबूसे अवश्य पूछ लेना चाहिये ।

३७– रेलवे कानूनसे अधिक असबाब हो तो उसे तुलवा लेना चाहिये और महसूल चुका कर चिट लगवा लेना चाहिये, नहीं तो घूस देते २ नाकमें दम आ जायगी ।

३८– जो भी विदेशमें काम करो खूब विचार कर करो । यदि रुपया अधिक लग जाय तो उसकी पर्वाह न करो जल्दीका काम हानिकर हो जाता है ।

३९– दो एक सेर सामग्री बहुत अच्छी लेकर और सोधकर थैलीमें भरकर हर समय अपने पास रक्खो क्यों कि कभी कभी ऐसा मोका आ पडता है कि कहींपर सामग्री नहीं मिलती । यदि मिलती है तो ठीक शुद्ध नहीं जिससे बडा कष्ट उठाना पडता है ।

४०– रेलमें जाते समय किसी क्षेत्र, ग्राम वा शहरमें कोई आवश्यक काम हो तो उतर जाना चाहिये या आगे जाकर लोट आना चाहिये ।

४१– दैव योगसे कोई यात्री छूट जाय तो तार कर उसका पता पूछ लेना चाहिये और आगेके स्टेशनपर उतर कर उसे साथमें लेकर जाना चाहिये ।

४२– भूलसे यदि डिब्बेमें अपनी गठरी वा ट्रंक रह जाय और उस डिब्बेका नंबर मालूम हो तो फौरन आगे के स्टेशनको तार कर देना चाहिए। ठीक निशान बताने से वह सामान मिल जाता है। आगेके स्टेशनपर तार मिलते ही गार्डको पता लगनेसे गार्ड उसे संभालकर रख देता है इसलिये डिब्बाका नंबर भी याद रखना चाहिये।

४३– यात्रियोंको हरएक जगह टिकट कुली मोटर तांगा आदिका नंबर अवश्य ले लेना चाहिये। ऐसा करने से बड़ा आराम मिलता है।

रेलवे कानून।

१– १०० मील जानेके बाद १ दिन ठहर सकते हैं, यदि हमें ८०० मील जाना है तो हम आठ दिन ठहर सकते हैं। यात्रियोंको यह बात ध्यानमें रखनी चाहिए।

२– फिल हाल रेल किराया फी मील ३ पाईके हिसाबसे इस समय लगता है। दूरकी एकसाथ टिकट लेनेसे कुछ फायदा पडता है और फुटकर लेनेसे कुछ अधिक खर्च पडता है। बडी लाइनसे छोटी लाइनका वा शाखा लाइनोंका किराया अधिक लगता है। किराया प्रति मास या प्रति वर्ष बढता घटता रहता है सो पूछ लेना चाहिये।

३– रेलमें डिब्बोंके चार विभाग हैं पहिला दर्जा, २रा दर्जा, डयोढा दरजा और तीसरा दरजा। पहिला दरजा या फर्ष्ट क्लासमें छहगुना भाडा लगता है। इसमें एक सवारीके

साथ १॥ मन वजन जा सकता है । बैठने उठने आदि सब बातका आराम मिलता है । स्टेशनोंपर भी आराम करनेके लिये आराम घर बने हुए हैं वहांपर नौकर चाकर कुर्सी पलंग सब बातका बंदोबस्त है ।

दूसरा दर्जा या सेकंड क्लासका भाडा तिगुना लगता है वजन १ मन तक संग जा सकता है । आराम कुछ कम फर्ष्टक्लास सरीखा ही मिलता है ।

डयोढा दर्जा–इन्टर क्लासका किराया डयोढा लगता है । इसमें २० सेर वजन ले जानेकी आज्ञा है । तीसरे दर्जोंकी अपेक्षा इसमें थोडा अधिक आराम मिलता है । विशेष भीडका कष्ट इसमें नहीं भोगना पडता ।

तीसरा दर्जा या थर्ड क्लासका किराया प्रायः ३ पाई मीलके हिसाबसे लगता है । इसमें सवारीके साथ १५ सेर वजन जा सकता है ।

तीन वर्ष तकके बालकका महसूल माफ है । ३ वर्षसे ऊपरके बालकका किराया आधा लगता है ।

४– कबूतर आदि पक्षी, घोडा और गाय आदिका भाडा मनुष्यकी बराबर लगता है ।

५– रेलमें पार्सलका भाडा मील और वजनके हिसाबसे लगता है परन्तु हर समय बदलता रहता है इसलिये पूछ लेना चाहिये ।

६– रेलकी पार्सल अच्छी तरह सिली हुई मजबूत

रहनी चाहिये बजनेवाली वा हिलनेवाली चलनेवाली चीज उसमें न रहनी चाहिए । सिलाईसे बाहर निकली हुई भी नहीं होनी चाहिये ।

७– यदि कोई चीज बडी सिलाईके काबिल नहीं होती जैसे ट्रंक आदि उन्हें वैसे ही पार्सलमें लेलिया जाता है । और उसपर नंबरोंकी चिट लगा दी जाती है और भी बहुतसे कानून हैं । आवश्यकता हो तो पूछ लेना चाहिये ।

८– रेलका टिकट यदि किसी कारणसे न मिल सके और जल्दी जाना हो तो गार्डको खबर देदेनी चाहिये । यदि वह टिकट दे तो लेलेनी चाहिये नहीं तो जिस स्टेशनपर उतरना हो महसूल चुका देना चाहिये । अथवा कोई बीच में स्टेशन और गाडी अधिक खडी हो तो टिकट लेलेनी चाहिये ।

९– जिस समय टिकट ली जाय कि फोरन उसका नंबर नोट बुकमें लिख लेना चाहिये जिससे टिकट खो जानेपर भी किसी प्रकारका भय नहीं रहे । पासमें नंबर रहने पर कोई भी कुछ नहीं कह सकता ।

१०— जहांपर डाकगाडीमें थर्ड क्लास न हो वहां ड्योढा टिकट देनेसे बैठा जा सकता है और जहांपर ड्योढा दरजा न हो दूसरा और पहिला ही दर्जा हो वहां कमसे कम तिगुना भाडा देनेसे बैठा जा सकता है यदि डांक

गाडीमें बैठना न हो सके तो जिस दर्जेकी टिकट होगी उसी दर्जेकी पैसंजरमें जाना हो सकता है।

११– यदि पैसंजरके तीसरे दर्जेका टिकट हो और डांकसे जाना हो तो उसमें रहनेवाले दर्जोंके अनुसार टिकट बदला जा सकता है और उसमें तीसरे दर्जेका महसूल मुजरा लेलिया जाता है।

१२– यदि किसीने फर्ष्ट सेकंड वा इन्टर क्लास का टिकट लेलिया हो और गाडी न मिल सकी हो तो बाबूसे कहकर दाम वापिस कर लेना चाहिये या दूसरी गाडीसे चला जाना चाहिये।

१३– यदि अपने पास पेसंजरका टिकट हो और आगे जाकर डाकमें बैठना हो तो टिकट बदलकर डाकका मिल सकता है परन्तु डाकका टिकट रहनेपर यदि पेसंजर से जाना हो तो वह टिकट नहीं बदला जा सकता।

१४–गार्डके विना पूछे, विना टिकट रेलमें बैठनेसे जहांसे रेल छूटती है वहांसे किराया लिया जाता है इसलिये विना टिकट वा इजाजतके कभी रेलमें न बैठना।

तारका कानून।

१– अर्जेंट और ओर्डिनरी ये दो प्रकारके तार अपने उपयोगमें आते हैं। ओर्डिनरी तार बारह आनेसे कममें नहीं जाता और उसमें १२ शब्द जाते हैं यदि अधिक

शब्द हो तो फी शब्द एक आनाके हिसाबसे और भी अधिक लगता है। अर्जेंट तारमें ओर्डिनरी से दूना पैसा लगता है वह भी आजकल १॥) से कममें नहीं जाता १२ शब्द जाते हैं और यदि अधिक शब्द हों तो प्रति शब्द ≠) के हिसाबसे अधिक खर्च पडता है।

२– तार सब भाषामें लिया जाता है परन्तु लिखा अंग्रेजी अक्षरोंमें चाहिये।

३– तार आफिस खुला न हो वा टायम खतम हो गया हो तो १) फीस अधिक देनेसे तार जा सकता है।

४– जिस गांवमें तार घर न हो और वह गांव तार घरसे ४–६ मीलकी दूरीपर हो तो तारके पैसोंके सिवाय एक आना मील जादा फीस जमा करनेसे वह ठीक समय पर पहुंचा दिया जाता है, नहीं तो चिट्ठीके समान हो जाता है।

५—ओर्डिनरी [जबाबी] तार देनेसे यदि जबाब देनेवाला जल्दी जबाब दे और पोष्टमें देरी न हो तो जल्दी भी मिल सकता है अर्जेंट देनेसे बहुत जल्दी जबाब मिल जाता है। पोष्ट आफिसवाला उसे विशेष नहीं रोक सकता। अर्जेंट जबाबीके ३) रु० पडते हैं और ओर्डिनरीका १॥) रुपया पडता है।

६–तार घरके पास कुछ अंग्रेजी पढे लिखे रहते हैं यदि तुम अंग्रेजी न जानते हो तो उनसे लिखवा लो। एक आना वा आधा आना देना पडता है।

७—तारसे रुपये मगानेपर तार और मनीयार्डर दोनोंकी फीस देनी पडती है। तार पर जो भी पता लिखा जाय तार ओफिस पोष्ट आदि साफ अक्षरोंमें लिखा रहना चाहिये।

८—रेलवे स्टेशनसे तार न देकर तार घरसे तार देना चाहिये। रेलवेका तार रेलवे संबंधी सब काम समाप्त होनेपर देरसे दिया जाता है इसलिये देरसे पहुंचता है।

डाकखानेका कानून।

१—खुली चिट्ठी वा लेख आदि आधे आनेकी टिकटमें ५ तोला और एक आनाकी टिकटमें १० तोला तक जा सकता है।

२—बन्द चिट्ठी आधे आनेमें आधा तोला ३ पैसेमें पौन तोला और एक आनेमें एक तोला तक जा सकता है।

३—पाव आनेका पोष्ट कार्ड सब जगह समान रूपसे पहुंचता है, काली लाइनसे आगे पतेकी और समाचार लिखनेसे वह वैरँग हो जाता है और फिर आधा आना देना पडता है।

४— वेरंग चिट्ठी और पारसल आदिका दूना महसूल देना होता है।

५—चिट्ठीका पता ठीक साफ होना चाहिये अन्यथा ठीक पता न लगनेसे वह डेड लेटर आफिस भेज दी जाती है।

६—आजकल वेरंग कार्ड फाड़ दिये जाते हैं सिफ लिफाफा ही वैरंग जा सकते हैं।

७–वी० पी० (वेल्यूपेबल) पार्सल पुस्तक आदि सबका होता है महसूल ऊपर लिखा रहता है सिर्फ मनी-आडरकी फीस अधिक देनी पडती है।

८–हिफाजतसे चीज पहुंचनेके लिये बीमा किया जाता है। ५०) रुपयोंकी लागातके बीमाकी एक आना फीस १००) रुपयोंकी लागातके ऊपर दो आनाकी इस प्रकार प्रति ५०) पर एक एक आनाकी फीस महसूलसे अधिक देनी पडती है।

९–डाकका पार्सल खूब मजबूत सिला हुआ होनेपर ही लिया जाता है।

१०–डाकखानेमें ५ सेर वजनसे अधिक वजनवाली पार्सल नहीं ली जाती है। मनीआडर भी ६००] से अधिक नहीं लिया जा सकता।

११–मामूली टिकटके सिवाय जबावी रजिष्ट्रीके तीन आने और सादीके दो आने और भी अधिक देने पडते हैं

१२––मनीयार्डर फीस १) से लेकर १०) तक =) पचीस तक।), पचास तक ॥) पचहत्तर तक ।॥) और एक सौ तकका १) रु० लगता है। पांच रुपये पर एक आना फीसका नियम अब उठा दिया गया।

प्रांतोंके नाम और उनके क्षेत्रोंकी संख्या।

प्रांत नाम	क्षेत्रसंख्या		क्षेत्र संख्या
१ मेवाड प्रांतमें	६	९ शोलापुर प्रांतमें	८
२ मालवा प्रांतमें	१३	१० कोल्हापुर प्रांतमें	४
३ बुंदेलखंड प्रांतमें	२७	११ बंगाल प्रांतमें	११
४ नागपुर प्रांतमें	१२	१२ मद्रास प्रांतमें	६
५ मध्यप्रदेश प्रांतमें	११	१३ जयपुर प्रांतमें	४
६ गुजरात प्रांतमें	१३	१४ मारवाड प्रांतमें	३
७ मुंम्बई प्रांतमें	११	१५ देहली प्रांतमें	३
८ कर्णाटक प्रांतमें	१०	१६ आगरा प्रांतमें	५

१६ प्रांतोंमें १४७ सब क्षेत्र हैं।

क्षेत्रोंमें किस जगहसे कहां जाना चाहिए इस बातका खुलासा।

उदयपुरसे	श्रीकेसरियानाथजी वहांसे लौटकर फिर उदयपुर और वहांसे सनावर जाना चाहिये।		फिर वहांसे करेडा पार्श्वनाथ जाना चाहिये।
		करेडा पार्श्वनाथ से	चित्तोडगढ।
		चित्तोड-गढसे	मंदसौर।
सनवार से (कांकरोली)	भिंडर फिर लौट कर कांकरोली	मंदसौरसे	प्रतापगढ।

प्रतापगढसे	देवरिया फिर लौटकर मंदसौर और वहांसे नीमच जाना चाहिये।
नीमचसे	जावद लौटकर फिर नीमच और वहांसे बिजोलिया पार्श्वनाथ
बिजोलिया पार्श्वनाथसे	चुलेश्वर लौटकर निमच और वहांसे झावरा
झावरासे	रतलाम
रतलामसे	बडनगर
बडनगरसे	फतियाबाद
फतियाबादसे	अजनोद
आजनोदसे	बनेडाजी
बनेडाजीसे	इन्दोर
इन्दोरसे	मऊकी छावनी
मऊसे	बडवानी
बडवानीसे	सुसारी
सुसारीसे	तालनपुरजी

तालनपुरसे	कुकसी
कुकसीसे	धार लौटकर मऊ फिर मोरटंका [खेडीघाट]
मोर टंकासे	ओंकारमहाराज
ओंकार महाराजसे	सिद्धवर कूट वहांसे खेडीघाट फिर खंडवा
खंडवासे	भुसावल
भुसावलसे	जलगांव
जलगांवसे	चालीसगांव
चालीसगांवसे	धूलिया
धूलियासे	नादगांव
नादगांवसे	मनमाड
मनमाडसे	मालेगांव
मालेगांवसे	सटाना
सटानासे	मांगीतुंगी
मांगीतुंगीसे	नासिक
नासिकसे	गजपंथा फिर लौटकर नासिक वहांसे अंजन-

	गिरि फिर नासिक वहांसे मनर्मदा और वहांसे ऐरोलारोड
ऐरोलारोडसे	ऐरोला गुफा
ऐरोलागुफासे	दौलताबाद
दौलताबादसे	औरंगाबाद
औरंगाबादसे	कचनेराजी
कचनेराजीसे	चीकलठाना
चीकलठानासे	पर्बिणी
पर्बिणीसे	मीरखेड
मीरखेडसे	पीपरीगांव
पीपरीगांवसे	उखलदजी लोटकर मीरखेड और वहांसे अलवल
अलवलसे	कुलपाक लौटकर अलवल और वहांसे सिकंदराबाद
सिकंदराबादसे	हैदराबाद निजाम

हैदराबादसे	पूरणा
पूर्णासे	हिंगोली
हिंगोलीसे	वाशम
वाशमसे	अंतरीक्ष पार्श्वनाथ लौटकर मालेगांव और वहांसे पातर गांव
पातरगांवसे	आकोला
आकोलासे	मूर्तिजापुर
मूर्तिजापुरसे	मल्कापुर
मल्कापुरसे	कारंजा
कारंजासे	मूर्तिजापुर वहांसे अंजनगांव
अंजनगांवसे	एलिचपुरस्टेशन
एलिचपुरसे	परतवाडा वहांसे एलिचपुर शहर फिर परतवाडा और वहांसे मुक्तागिरजी फिर परतवाडा और वहांसे कुरंड
कुरंडसे	भातकुली

भातकुलीसे	अमरावती	छतरपुरसे	नयागांव लोट
अमरावतीसे	बडनेरा		कर छतरपुर और
बडनेरासे	धामन गांव		वहांसे खजराहा
धामनगांवसे	कुन्दनपुर लोट	खजराहासे	छतरपुर और
	कर धामनगांव		वहांसे आजम-
	वहांसे वर्धा		गढ लौटकर फिर
वर्धासे	नागपुर		छतरपुर वहांसे
नागपुरसे	कामठी		सतना सतनासे
कामठीसे	रामटेक लोटकर		कटनी मुडवारा
	नागपुर वहांसे	कटनी मुडवारासे	दमोह
	छिंदवाडा	दमोहसे	पटेरा
छिंदवाडासे	सिवनी	पटेरासे	कुण्डलपुर
सिवनीसे	क्योलारी	कुण्डलपुरसे	हटा
क्योलारीसे	नैनपुर	हटासे	बामौरी
नैनपुरसे	पिंडरई	बामौरीसे	नैनागिरजी
पिंडरईसे	जबलपुर	नैनागिरजीसे	हीरापुर
जबलपुरसे	कोनी लौटकर	हीरापुरसे	द्रोणगिरि
	जबलपुर और	द्रोणगिरिसे	भगवां
	वहांसे कटनी	भगवांसे	आहारजी
	मुडवारा	आहारजीसे	पपौरा
कटनी मुडवारासे	सतना	पपौरासे	टीकमगढ
सतनासे	छतरपुर	टीकमगढसे	महरोनी

महरोनीसे ललितपुर
ललितपुरसे चन्देरी
चन्देरीसे मालथोन
मालथोनसे ललितपुर
और वहांसे बालाबेट
बालाबेटसे ललितपुर
वहांसे जाखलौन
जाखलौनसे सुमेरका पर्वत
लौटकर जाखलौन
वहांसे देवगढ
देवगढसे चान्दपुर
चान्दपुरसे धौलपुर
धौलपुरसे बीना इटावा
बीना इटावासे सागर
सागरसे बीनाजी क्षेत्र
लौटकर सागर वहांसे
ललितपुर और वहांसे
दौलवाडा
दौलवाडासे सीरोन शांति-
नाथ लौटकर दैलवाडा
और वहांसे तालवेट
तालवेटसे पावाजी क्षेत्र
लौटकर तालवेट वहां
से खजराहा और
वहांसे झांसी
झांसीसे कुआवां लौटकर
झांसी और वहांसे
महवा फिर वहांसे
झांसी और वहांसे
सोनागिर
सोनागिरसे गवालियर
गवालियरसे पनीहार
पनीहारसे लश्कर
लश्करसे धौला
धौलासे आगरा
आगरासे फीरोजाबाद
फीरोजाबादसे शिकोहाबाद
शिकोहाबादसे सूरीपुर
बटेश्वर वहांसे शिको-
हाबाद वहांसे
फरुखाबाद
फरुखाबादसे कायमगंज
कायमगंजसे कंपिलाजी
लौटकर कायमगंज

वहांसे कानपुर
कानपुरसे लखनऊ
लखनऊसे बारावंकी
बारावंकीसे त्रिलोकपुर
क्षेत्र लौटकर बारा-
वंकी और वहांसे
विदौरा
विदौरासे गोंडा
गोंडासे बलिरामपुर
बलिरामपुरसे सेंटमेंट लौट
कर बलिरामपुर और
वहांसे गोरखपुर
गोरखपुरसे नोनखार भटनी
नोनखारसे खुकुन्दा
खुकुंदासे कहावगांव
कहावगांवसे तलाव या
सीतामर
सीतामरसे सोहावल
सोहावलसे रत्नपुरी लौट
कर सुहावल वहांसे
फैजाबाद
फैजाबादसे अयोध्या

अयोध्यासे इलाहाबाद
इलाहाबादसे प्रयागराज
लौटकर इलाहाबाद
वहांसे कौशांबी
कौशांबीसे बनारस
बनारससे सिंहपुरी
सिंहपुरीसे कादीपुर
कादीपुरसे चंद्रपुरी लौट
कर बनारस वहांसे
आरा
आरासे बांकीपुर नेपाल
आसाम तिब्बत
कैलाश आदि फिर
पटना
पटनासे विहार
विहारसे कुण्डलपुर
बड़ाग्रामरोड
कुण्डलपुरसे राजगृही
राजगृहीसे पावापुरी
पावापुरीसे गुणावा
गुणावासे नवादा
नवादासे नाथनगर

नाथनगरसे चंपानाला
चंपानालासे भागलपुर
भागलपुरसे मन्दारगिरि
फिर लौटकर
भागलपुर
वहांसे गया
गयाजीसे कुलुहापहाड
लौटकर गयाजी
वहांसे ईसरीस्टेशन
ईसरीसे सम्मेदशिखर
सम्मेदशिखरसे गिरीडी या
ईसरी और वहां
से कलकत्ता।
कलकत्तासे खंडगिरि।
खण्डगिरिसे कटक
कटकसे भुवनेश्वर लौट
कर खंडगिरि फिर
भुवनेश्वर
भुवनेश्वरसे खुर्दारोड
खुर्दारोडसे जगन्नाथपुरी
लौटकर खुर्दारोड
वहांसे मद्रास

मद्राससे तींडीवनम्
तींडीवनम्से सीतापुर
लौटकर तींडीवनं
और वहांसे पोन्नूर
पोन्नुरसे तींडीवनं फिर
वहांसे कांजीवरम्
कांजीवरम्से अर्पाकं क्षेत्र
लौटकर कांजीवरम्
और वहांसे पोलूर
पोलूरसे तीरूमले क्षेत्र, लौट
कर पोलूर और वहांसे
वेंकुमक्षेत्र
वेंकुमसे पोलूर और वहांसे
नींडमंगलम्
नींडमंगलम्से मनारक्षेत्र और
लौटकर नींडमंगलम् और
वहांसे मद्रास
मद्राससे सेतुबंधरामेश्वर
सेतुबन्धरामेश्वरसे लंकापुरी
लौटकर सेतुबन्ध रामेश्वर
फिर मद्रास और वहां
से बंगलूर

बंगलूरसे टीपंकुर स्टेशन
टीपंकुरसे आरसीकेरी
आरसीकेरीसे मन्दगिरि
मन्दगिरिसे जैनबद्री
जैनबद्रीसे हुंमचपद्मावती
हुंमचपद्मावतीसे वैनूर
वैनूरसे मूलबद्री
मूलबद्रीसे कारकल
कारकलसे नोरंग लौटकर
कारकल और वहांसे
मदरापाटन
मदरापाटनसे कारकल फिर
मूलबद्री वहांसे मंगलूर
मंगलूरसे बंगलूर और
वहांसे महेसूर
महेसूरसे गोम्मटपुरा वहांसे
मंदगिरि
मन्दगिरिसे जैनबद्री वहांसे
आरसीकेरी
आरसीकेरीसे हुबली
हुबलीसे आरटाळ लौटकर
हुबली वहांसे बेलगांव

बेलगांवसे हुबली और
वहांसे गदग
गदगसे बादामीकी गुफा
लौटकर गदग वहांसे
बीजापुर
बीजापुरसे बाबानगर लौटकर
बीजापुर और वहांसे
शोलापुर
शोलापुरसे दुधनी
दुधनीसे आतनूर लौटकर
दुधनी वहांसे आष्टै
आष्टैसे दुधनी वहांसे
सांवलागांव
सांवलागांवसे होणसलगी
होणसलगीसे सांवलगांव
लौटकर शोलापुर और
वहांसे बारसीरोड
बारसीरोडसे बारसीटाउन
बारसीटाउनसे भौमगांव
भौमगांवसे कुंथलगिरि लौट
कर बारसीटाउन और
वहांसे एडसी

एडसीसे	उस्मानाबाद लौट	बम्बईसे	सूरत
	कर एडसी और वहांसे तेर	सूरतसे	बारडोली
तेरसे	नागथाना लौटकर	बारडोलीसे	महुवा
	तेर और वहांसे लातूर	महुवासे	बारडोली, वहां
लातुरसे	बारसीटाउन वहांसे		से अंकलेश्वर
	बारसीरोड फिर पंढरपुर	अंकलेश्वरसे	सजोद लौट·
पंढरपुरसे	दिवसाल		कर अंकलेश्वर और
दिवसालसे	दहीगांव फिर		वहांसे भरोंच
	लौटकर दिवसाल और	भरोंचसे	वडोदा
	वहांसे कुण्डलरोड	वडोदासे	पावागढ
कुण्डलरोडसे	कुण्डलक्षेत्र	पावागढसे	गोधरा
	लौटकर कुण्डलरोड और	गोधरासे	आनंद
	वहांसे हाथकलंगडा	आनंदसे	खंभात लौटकर
हाथकलंगडासे	कुंभोज लौट		आनंद और वहांसे
	कर हाथकलंगडा और		अहमदाबाद
	वहांसे स्तवनिधि	अहमदाबादसे	ईडर
स्तवनिधिसे	कोल्हापुर	ईडरसे	वढाली लौटकर
	लौटकर स्तवनिधि		ईडर और वहांसे
	और वहींसे मीरज		भावनगर
	सांगली	भावनगरसे	पालीताना
मीरज सांगलीसे	कल्याणी	पालीतानासे	शत्रुंजय लौट
कल्याणीसे	बम्बई		कर पालीताना और

वहांसे जूनागढ
जूनागढसे गिरनार लौट
कर जूनागढ और
वहांसे वेरावल
वेरावलसे सोमनाथका
मंदिर लौटकर वेरा-
वल और वहांसे
जेतलसर
जेतलसरसे पोरवंदर
पोरवंदरसे द्वारिकापुरी
लौटकर पोरवंदर
और वहांसे राजकोट
राजकोटसे जामनगर लौट
कर राजकोट और
वहांसे महसाणा
महसाणासे तारंगा हिल वीस
नगर बडानगर
तारंगाहिलसे आबू रोड
आबूरोडसे देलवाडा अचल
गढ लौटकर आबूरोड
और वहांसे मारवाड
जंकशन

मारवाड जंकशनसे लुणीपाली
लूणीसे जोधपुर
जोधपुरसे मेरता रोड
मेरतारोडसे मेरता सिटी
लौटकर मेरता रोड
और वहांसे सांभर
मकराना
सांभरसे कुचामन
कुचामनसे लाडन
लाडनूसे सुजानगढ
सुजानगढसे देगाना
मेरतारोड
देगानासे नागोर
नागोरसे बीकानेर
बीकानेरसे रतनगढ चुरू
रतनगढसे हिसार
हिसारसे भिवानी
भिवानीसे देहली
देहलीसे बडागांव लौटकर
देहली और वहांसे
मेरठ
मेरठसे हस्तिनापुर लौटकर

मेरठ और वहांसे		कोटा वहांसे केसवजीका	
अलीगढ		पाटनगांव	
अलीगढसे	आंवला	केसवजीके पाटनगांवसे	कोटा,
आंवलासे	अहीक्षित पार्श्व-	वहांसे झालरापाटन	
नाथ लौटकर		झालरापाटनसे	पंडितजीका
आंवला और			सारोला
वहांसे हाथरस		पंडितजीकासरोलासे	चांदखेडी
हाथरससे	मथुरा	चांदखेडीसे	अटरू
मथुरासे	वृन्दावन लौटकर	अटरूसे	बारा
मथुरा और वहांसे		बारासे	गुना
आगरा		गुनासे	बजरंगगढ लौट
आगरासे	पडुंदा		कर गुना
पडुंदासे	महावीर रोड		वहांसे वीना ईटावा
महावीर रोडसे	चांदनगांव	वीना इटावासे भेलसा	
लौटकर पडुन्दा और		भेलसासे	भोपाल
वहांसे जयपुर		भोपालसे	समसीगढ लौट-
जयपुरसे	सांगानेर		कर भोपाल और
सांगानेरसे	सवाई माधोपुर		वहांसे मकसी
सवाई माधोपुरसे	चमत्कारजी		पार्श्वनाथ
लौटकर सवाई		मकसीपार्श्व-	उज्जैन
माधोपुर वहांसे कोटा		नाथसे	
कोटासे	बुन्दी लौटकर	उज्जैनसे	रतलाम झावरा

रतलाम मंदसौर प्रताप	नयानगरसे अजमेर फिर
झाबरासे गढ देवरी	किसनगढ ।
मंदसौर केसरपुरा	किसनगढ़से फुलेरा
आदिसे जावद	फुलेरासे रींगंच राख्योली
केसरपुरासे नीमच चुलेश्वर	रींगंचसे सीकर
बिजोलिया	सीकरसे रामगढ फतेपुर
पार्श्वनाथ	रामगढसे श्रीमाधोपुर
नीमच चित्तोड उदयपु-	श्रीमाधोपुरसे रेवाडी
आदिसे रादि भीलवाडा	रेवाडीसे देहली
चित्तोडसे भीलवाडा	देहलीसे मेरता खतोली
भीलवाडासे साहपुरा	मुजफ्फरनगर आदि
साहपुरासे मांडल	मेरता आदिसे पानीपत आदि
मांडलसे नसीराबाद	पानीपत ,, अंबाला ,,
नसीराबादसे पुष्करजी लौट	अंबाला ,, भिवानी ,,
कर अजमेर और	भिवानी ,, लाहोर मुलतान
वहांसे नयानगर	लाहोरसे श्रीबाहुरीबंध क्षेत्र

श्रीसिद्धक्षेत्रोंके नाम ।

१ श्रीबडवानीजी	३ श्रीमुक्तागिरिजी
२ श्रीमांगीतुंगीजी	४ श्रीनैनागिरिजी

५ श्रीपावापुरजी
६ श्रीचम्पापुरजी
७ श्रीसम्मेदशिखरजी
८ कुंथलगिरिजी
९ गिरनारजी
१० पटना गुलजारबाग
११ सिद्धवरकूट
१२ गजपंथाजी
१३ द्रोणगिरिजी
१४ सोनागिरिजी
१५ कैलाशपुरीजी
१६ गुणावाजी
१७ खण्डगिरिजी।
१८ पावागढजी।
१९ तारंगाजी।
२० मथुरा चौरासी।

श्रीक्षेत्रोंके नाम

१ अजमेर। २ केशवजीका पाटन। ३ प्रतापगढ। ४ देहली ५ समसीगढ। ६ उज्जैन। ७ इन्दौर। ८ नागोर। ९ अहीक्षितजी। १० देलवाडा [आबू] । ११ कुम्भोज। १२ कोल्हापुर। १३ खम्भात। १४ बडाली अमीझरा पार्श्वनाथजी। १५ भद्रापाटन। १६ आरटाल। १७ बीजापुर। १८ आर्पाकम्। १९ वैकुनम्। २० मनारगुंडी। २१ भागलपुर। २२ चीताम्बर [सीतापुर]। २३ बडागांव। २४ मेरठ। २५ जयपुर। २६ आगरा। २७ हाथरस। २८ सांगानेर। २९ शोलापुर। ३० गोधरा। ३१ ईडर रोड। ३२ होणासलगी। ३३ बादामीकी गुफा। ३४ आवनूर। ३५ पोन्नुर। ३६ तीरुमले। ३७ हुंपचपद्मावती।

३८ बारंग । ३९ विहार । ४० त्रिलोकपुर । ४१ इलाहाबाद । ४२ कुन्दनपुर । ४३ पावाजी । ४४ पपौराजी । ४५ महवा । ४६ आहारजी । ४७ जबलपुर । ४८ आजमगढ । ४९ छत्रपुर । ५० अमरावती । ५१ नागपुर । ५२ औरंगाबाद । ५३ हिंगोली । ५४ आकोला । ५५ नांदगांव ५६ पंडितजीका सारोला । ५७ कटक । ५८ धार (धारावती) । ५९ नयानगर , ब्यावर) । ६० गोरखपुर । ६१ आरा । ६२ बाहुरीबंध । ६३ कुरगमा (झांसी) । ६४ फीरोजाबाद । ६५ टीकमगांव । ६६ ललितपुर । ६७ चांदपुर । ६८ सागर । ६९ सिवनी । ७० बडनेरा । ७१ कामठी । ७२ कुलपाक (माणिक स्वामी) । ७३ बाशम । ७४ कारंजा । ७५ एलिचपुर । ७६ अंजनगिरि । ७७ ग्वालियर । ७८ लश्कर ।

पंचकल्याणक क्षेत्रोंके नाम ।

१ सौरीपुर (बटेश्वर) । २ अयोध्या । ३ बनारस । ४ सिंहपुरी (सारनाथ) । ५ सेंटमेंट । ६ रत्नपुरी [नौराई सोहावल] । ७ पटना (पाटलीपुत्र) । ८ कुलुहा पहाड [मंडिलपुर] । ९ राजगृही [कुण्ड] १० कुरुभोज । ११ द्वारिकापुरी [पोरबंदर] १२ कंपिलाजी (कायमगंज) १३ प्रयागराज (इलाहाबाद) । १४ चंद्रपुरी [कादीपुर] १५ कौशांबी (भरवारी) १६ खुकुन्दा (किष्किन्दापुर

नोनखार)। १७ कुण्डलपुर [दमोह] १८ चम्पापुरी (भागलपुर)। १९ मिथिलापुरी [जनकपुरी] २० अहि-क्षितजी [आंवला]। २१ हस्तिनागपुर [मेरठ]। २२ भेलसा।

श्रीअतिशय क्षेत्रोंके नाम

१ केसरियानाथजी। २ करेडा पार्श्वनाथजी। ३ चुलेश्वरजी। ४ एरौलारोड। ५ ऊखलद। ६ अन्तरिक्ष पार्श्वनाथजी। ७ रामटेक। ८ कुण्डलपुर। ९ बालावेट। १० बीनाजी। ११ जैनबद्री। १२ गोम्मटपुरा। १३ तेर [नागाठाना]। १४ रत्ननिधि। १५ सजोद। १६ चमत्कारजी। १७ झालरापाटन। १८ बारागांव। १९ बजरंगगढ। २० बाबानगर। २१ बेळगांव। २२ लाडनू। चांदनगांव [महावीररोड]। २४ केशवजीका पाढनगांव। २५ आष्टे विघ्नेश्वर पार्श्वनाथ। २६ भिंडरगांव। २७ बिजोलिया पार्श्वनाथजी। २८ बनेडाजी। २९ कचनेरा। ३० तालनपुरजी। ३१ कौनी। ३२ भातकुली। ३३ खजराहा। ३४ पपौराजी। ३५ सुमेरुका पर्वत। ३६ राजगृही। ३७ कारकल। ३८ वेनूर। ३९ धाराशिव [उस्मानाबाद]। ४० दहीगांव। ४१ चंदेरी। ४२ मालथौनजी। ४३ सीरोंन ४४ मूलबद्री। ४५ कुंडलक्षेत्र। ४६ महुवा [बारडोली]

४७ अंकलेश्वर । ४८ चांदखेडी । ४९ मकसी पार्श्वनाथ । ५० जयपुर ।

नामी शहरोंके नाम

१ उदयपुर । २ रतलाम । ३ अजमेर । ४ जयपुर । ५ बीकानेर । ६ जोधपुर । ७ देहली । ८ मुलतान । ९ फीरोजपुर । १० सहारनपुर । ११ अंबाला । १२ भाटिंडा । १३ देहरादून । १४ लाहौर । १५ उज्जैन । १६ इन्दौर । १७ बडवानी । १८ कुकसी । १९ धार । २० खंडवा । २१ नासिक । २२ औरंगाबाद । २३ सिकन्दराबाद । २४ बंबई । २५ हुबली । २६ मद्रास । २७ कलकत्ता । २८ बंगलूर । २९ मंगलूर । ३० महेसूर । ३१ नागपुर । ३२ जबलपुर । ३३ सागर । ३४ दमोह । ३५ कानपुर । ३६ लखनऊ । ३७ गोरखपुर । ३८ । भटनी । ३९ इलाहाबाद ४० बनारस । ४१ अयोध्या । ४२ मतापगढ । ४३ मेरठ । ४४ हाथरस । ४५ राजकोट । ४६ बडोदा । ४७ आनन्द । ४८ भरोंच । ४९ लातुर । ५० डिबरूगढ । ५१ मनीपुर । ५२ झालरापाटन । ५३ धूलिया । ५४ मालेगांव ५५ श्रीमाधोपुर । ५६ ब्यावर । ५७ आवरा । ५९ मथुरा । ६० भावनगर । ६१ अहमदाबाद । ६२ गोधरा ६३ वारसीटुन । ६४ पूना । ६५ कोल्हापुर । ६६ कोटा । ६७ बून्दी । ६८ जेसलमेर । ६९ वाशम । ७० आकोला ।

७१ सवाईमाधोपुर । ७२ नसीराबाद । ७३ मन्दसौर । ७४ आगरा । ७५ सांभर । ७६ जामनगर । ७७ सूरत । ७८ जूनागढ । ७९ शोलापुर । ८० रायपुर । ८१ भरतपुर ८२ भोपाल । ८३ अलवर । ८४ पर्वणी । ८५ हिंगोली । ८६ मांडल । ८७ सीकर । ८८ रेवाडी । ८९ मऊकी छावनी । ९० भुसावळ । ९१ अमरावती । ९२ एलिचपुर । ९३ कटनी । ९४ वीना इटावा । ९५ एटार्सी । ९६ होसंगाबाद । ९७ पंढरपुर । ९८ लंकापुरी । ९९ छिंदवाडा । १०० विलासपुर । १०१ लश्कर । १०२ इटावा । १०३ देववंद । १०४ विहार । १०५ भागलपुर । १०६ रामेश्वर १०७ जगदीशपुर । १०८ सिवनी । १०९ रायपुर । ११० गवालियर । १११ सहारनपुर । ११२ गया । ११३ पोतनूर । ११४ जौलारपेठ ।

वैष्णवोंके तीर्थ

तीर्थ	स्टेशन	तीर्थ	स्टेशन
ओंकारमहाराज	मारटंका	गिरनारजी	जूनागढ
जगन्नाथपुरी	खुद	सोमनाथ	वैरावल
भुवनेश्वर	खुद	द्वारिकापुरी	पोरबन्दर
बैजनाथजी	खुरदारोड	बटेश्वर	शिकोहाबाद

रामेश्वर	खुद	पुष्करजी	खुद
नाथद्वारा [कांकरोली]	मनवार (कांकरोली) वा माहोली	जनकपुर (मिथिलापुरी)	सीतामढी
		कुलुहापहाड़	गया
		मथुरा	खुद
पंढरपुर	खुद	वृन्दावन	खुद
गया	खुद	पूरणा	खुद
काशी	खुद	पर्बणी	खुद
प्रयागराज	खुद	नासिक	खुद
उज्जैन	खुद	त्रिबक	नासिक

कौन कौन शहरोंमें कौन रेल गइ है इस बातका दिग्दर्शन ।

जी० आई० पी० आर० G. I. P. R.

मनमाड भुसावल चालीसगांव धुलिया कुशम्बा साकरी पीपरनार मांगीतुंगीजी सटाना मरुपागांव नांदगांव जलगांव मलकापुर खामगांव आकोला सीरपुर (अंतरिक्ष) वाशम मूर्तिजापुर कारंजा अंजनगांव एलिचपुर परतवाडा मुक्तागिरजी कुरम भातकुली बडनेरा अमरावती धामनगांव कुन्दनपुर चांदुर पुलगांव वर्धा नागपुर नासिक गजपन्याजी अंजनगिरि

दमोह सागर बीना इटावा मढ़ुवा बीनाजी पटेरा कुण्डलपुर हटा नैनागिरि हीरापुर बांबोरी सेद्पा द्रोणागिरि आहारजी पपोराजी टीकमगढ़ महरौनी ललितपुर बालाबेट जाखलौन देवगढ सुमेका पर्वत चांदपुर चंदेरी थुनवजो देलवाडा सीरोन शांतिनाथजी तालवेट पवाजो झांसी कुरगमा सोनागिरि गवालियर पन्नीयारजी शोलापुर दुधनी आतनूर आष्टे विघ्नेश्वर सांवळ गांव होणसलगी कुर्डवाडी पंढारपुर दिक्साळ दहीगांव पूना बारसीटाउन कुंथलगिरिजी भोमगांव एडसी धाराशिव (उस्मानवाद) तेर लातूर बारा गुना बजरंगगढ भेळसा समसगढ भोपाल मक्सी पार्श्वनाथ उज्जैन देहली।

एम० ए० एस० एम० आर० M. A. S. M. R.

मद्रास जोलारपेठ वेगलूर आरसीकेरी मन्दगिरि जैन बद्री महेश्वर गोमटापुरा सीमोगा हुंमचपद्मावती वेनूर नींडमंगलम् मनारगुन्डी हुबली आरटाल वेलगांव गदग बादामीकी गुफा बीजापुर बाबानंगर कुण्डलरोड सांगली मिरज हाथकलंगडा कुंभोज कोल्हापुर स्तवनिधि।

ई० आई० आर० E. I. R.

नवादा विहार पटना कुण्डलपुर राजगृही आरा चंपापुरी पावापुरी मन्दारगिरि श्रीसम्मेदशिखरजी काशी इलाहाबाद गया कुलुहापहाड खंडगिरिजी खजराहा झांसी सतना छत्रपुर अजयगढ शिकोहाबाद बटेश्वर फीरोजाबाद

आगरा मरवारी कोशांबी प्रयाग बाकीपुर बख्त्यारपुर नाथनगर चंपापुरी भागलपुर मन्दारगिरि कलकत्ता अलीगढ़ अहीक्षितजी हाथरस मथुरा देहली पानीपत सुनपत शिमला अगाधरी रोहतक अंबाला नेनपुर पिंडरई जबलपुर कौनी ।

बी० एन० आर० B. N. R.

कलकत्ता खड्गपुर कटक भुवनेश्वर खंडगिरि खुरदारोड जगदीशपुरी वालटीइर कामठी रामटेक गोंदिया बिलासपुर रायचूर राजनांदगांव दुरग जाडसेकडा सिवनी क्योलारी आदि ।

एन० डबल्यू० आर० N. W. R.

हस्तिनापुर मेरठ देहली गाजियाबाद खेखडा बडागांव मुलतान लाहोर लुधियाना फीरोजपुर करांची हैदराबाद ।

एच० जी० वाई० आर० H. C. Y. R.

मनमाड एरौलारोड ऊखलद माणिकस्वामी कचनेर औरंगाबाद पर्बणी पूरणा हिंगोली सिंकदराबाद हैदराबाद

जे० बी० आर० J. B. R.

साभर कुचामण मकराना मेरता रोड मेरता सिटी नागौर बीकानेर चुरू रत्नगढ हिसार डेगहाना जसवंतगढ लाडनू सुजानगढ हैदराबाद ।

एस० आई० आर० S. I. R,

तींडीवनम् अर्पाकम् पोन्नुर सीतामूर कांजीवरम् पोलूर तीरमले पैकुनम् रामेश्वर मंगलूर मूलवद्री कारकल मद्रापाटन वारंगगांव।

ओ० आर० आर० O. R. R.

अयोध्या फैजाबाद रत्नपुरी नौराई इलाहाबाद (प्रयागराज) काशी (बनारस)

बी० एन० डबल्यू० आर० B. N. W. R.

लखनऊ अयोध्या लक्कडमंडी गोरखपुर भटनी नौनखार खुकुन्दा कहावगांव चतरामपुर मलकापुर बलि-रामपुर सेंटमेंट बनारस सिंघपुर चन्द्रपुरी–कादीपुर–गोंडा बाराबंकी सोहावल त्रिलोकपुर।

बी० बी० एंड० सी० आई० आर० B. B. &. C. I. R.

उदयपुर केसरिया नाथ भिंडर सनवार करेडा चित्तोड भीलवाडा मांडल नसीराबाद अजमेर पुष्करजी किशनगढ फुलेर रींगंच राणोली सीकर श्रीमाधोपुर रेवाडी देहली जयपुर सांगानेर सवाईमाधोपुर चमत्कारजी चंदनग्राम –पदुण्डा–आगरा ब्यावर मारवाड लूनी पाली जोधपुर आबू अचलगढ देलवाडा मेशाणा तारंगा वीसनगर पाटन वीरमगांव वडोदा पावागढ ईडर गोधरा आनंद खंभात

बडाली अहमदाबाद सूरत बम्बई जलगांव बारडोली महुवा रतलाम झाबरा मंदसौर प्रतापगढ नीमच बिजोलिया पार्श्वनाथ चुलेश्वर बनेरा उज्जैन इन्दोर मऊ धर्मपुरी बडवानी तालनपर कुकसी धार मोरटंका ओंकारजी सिद्धवरकूट जूनागढ गिरनारजी वेरावल पोरबंदर द्वारिकापुरी जामनगर सोमनाथका मंदिर झालरापाटन कोटा बून्दी पंडितजीका सारोला केशवजीका पाटनगांव चांदखेडी भावनगर खंडवा कानपुर फरुक्खाबाद कायमगंज कंपिलाजी कल्याणी पूना ।

किस किस क्षेत्रकी कौन कौन ष्टेशन हैं उनकी सूची ।

क्षेत्र	स्टेशन	क्षेत्र	स्टेशन
केसरियाजी	उदयपुर	इंदौर	खुद
भिंडर	सनवार	बनेडाजी	अजनोद १
करेडा	खुद		इंदौर २
प्रतापगढ	मन्दसोर	मऊ	खुद
चुलेश्वरजी	नीमच १	धर्मपुरी	मऊ
बिजोलिया,	भीलवाडा २	बडवानी	,,
	मांडल ३	तालनपुर	,,

कुकसी	मऊ	(माणिक स्वामी)	अलवल
धार	,,	सिकंदराबाद	खुद
ओंकरजी	मोरटंका	हैदराबाद	,,
सिद्धवरकूट	,,	हिंगोली	,,
नांदगांव	,,	वाशम	हिंगोली
मांगीतुंगी	चींचपाडा १	अंतरीक्ष	आकोला
	नासिक २	(सीरपुर)	
	धूलिया ३	जलगांव	खुद
	मनमाड ४	चालीसगांव	,,
नासिक	खुद	खामगांव	,,
गजपंथा	नासिक	भुसावल	,,
अंजनगिरि	,,	मलकापुर	,,
त्रिंबक	,,	मुर्तिजापुर	,,
एलोराकी गुफा	खुद १	कारजा	,,
	दौलताबाद २	एलिचपुर	एलिचपुर
औरंगाबाद	खुद	परतवाडा	,,
कचनेरजी	औरंगाबाद १	मुक्तागिरजी	,,
	चीकलठाना २	अंजनगांव	खुद
पर्वणी	,,	मातकुली	कुरम
पूरणा	,,	बनेडा	खुद
ऊखलदजी	मीरखेड	अमरावती	,,
कुलपाक	अलवल	वर्धा	,,

कुंदनपुर	धामनगांव	दमोह	दमोह
नागपुर	खुद	पटेरा	,,
कामठी	,,	कुंडलपुर	,,
रामटेक	,,	हटा	,,
छिंदवाडा	,,	हीरापुर	,,
सिवनी	,,	बांवोरा	,,
गोंदिया	,,	नैनागिर	मलारा १
बिलासपुर	,,	द्रोणगिरि,	दमोह २
रायपुर	,,		कोलपुर ३
क्योलारी	,,		गणेशगंज ४
पिंडराई	,,	आहारजी	दमोह
जबलपुर	,,	पपोराजी	,,
कौनी	जबलपुर	टीकमगढ	ललितपुर
कटनी	खुद	महरोनी	,,
सतना	,,	ललितपुर	,,
छत्रपुर	सतना	मालथौन	ललितपुर
अजयगढ	,,	चन्देरी	,,
खजराहा	खुद १	बालाबेट	,,
	सतना २	देलवाडा	जाखलोन
	दमोह ३	सुमेरु पर्वत	धौल
	मलारा ४	चांदपुर	,,
सागर	खुद	बीना इटावा	खुद

भेलसा	खुद
भोपाल	,,
उज्जैन	,,
बीनाजी अति० क्षेत्र	सागर
सीरोन	देवगढ़
कानपुर	खुद
झांसी	,,
सोनागिर	,,
लश्कर	,,
ग्वालियर	,,
पवाजी	तालबेट
कुरगमा	झांसी
महुवा	खुद
आगरा	,,
फीरोजाबाद	,,
पन्नीयारजी	,,
शिकोहाबाद	,,
फरुखाबाद	,,
फैजाबाद	,,
अहमदाबाद	,,
सौरीपुर	शिकोहाबाद
(बटेश्वर)	

कंपिला	कायमगंज
लखनऊ	खुद
बारावंकी	,,
गौंडा	,,
विश्रामपुर	,,
सेंटमेंट	बलरामपुर
त्रिलोकपुर	बारावंकी १
	बिंदौर २
गोरखपुर	खुद
भटनी	,,
खुकुन्दा	नोनखार
[किष्किन्धा]	
कहावगांव	चीतरामपुर १
	तलाव २
	नोनखार ३
रत्नपुरी	सोहावल
[नौराई]	
अयोध्या	खुद
इलाहाबाद	खुद
काशी	,,
पटना	,,
बांकीपुर	,,

आरा	खुद	खंडगिरि	भुवनेश्वर
सिंहपुरी	सारनाथ	खुरदारोड	खुद
चन्द्रपुरी	कादीपुर	जगदीश	,,
विहार	,,	मद्रास	,,
राजगृही	खुद	सीतामूर	तींडीवनम्
कुंडलपुर	बडगांव रोड	पौनूर	खुद
पावापुरी गुणावा	नवादा १	अर्पाकं	कांजीवरम्
	विहार २	नीरुमले	पौनूर
	पटना ३	मनारगुड़ी	नींडमंगलम्
भागलपुर	खुद	रामेश्वर	खुद
नाथनगर	,,	लंकापुरी	रामेश्वर
चंपापुर	नाथनगर	बंगलूर	खुद
मंदारगिरि	भागलपुर	महेसूर	,,
कुलुआपहाड	गया	मंगलूर	,,
मिथिलापुरी	सीतापढी	आरसीकेरी	,,
जनकपुर	,,	जैनबद्री	मन्दारगिरि
सम्मेदशिखर	गिरीडीह १	मूलबद्री	मंगलूर
	ईसरी २	वैनुर	,,
कलकत्ता	खुद	हुंमचपद्मावती	सिमोगा
डिब्रूगढ	,,	कारकल	मंगलोर १
खड्गपुर	,,		सिमोंगा २
कटक	,,	नोरंथ	,,

मद्रापाटन	सीमोगा	स्तवनिधि	कोल्हापुर
गोमटपुरा	महेसूर	सूरत	खुद
हुबली	खुद	महुवा	बारडोली
बेलगाम	,,	अंकलेश्वर	खुद
आरटाल	हुबली	सजोद	अंकलेश्वर
बादामीकी गुफा	गदग	भरोंच	खुद
बीजापुर	खुद	बडोदा	,,
बाबानगर	बीजापुर	पावागढ	,,
रायचूर	खुद	गोधरा	,,
शोलापुर	,,	आनन्द	,,
आष्टे	दुधनी	अहमदाबाद	,,
होंणमलगी	सांवलगांव	खम्भात	,,
आतनूर	दुधनी	ईडर	,,
कुर्दवाडी	,,	बडाली [पार्श्वनाथ]	ईडर
बारसीटुन	,,	कलिंकुड पार्श्वनाथ	,,
भोमगांव	बारसीटुन	आरवरी पार्श्वनाथ	कुंडलरोड
कुंथलगिरि	,,	कुण्डलक्षेत्र	
नागाठाना	तेर	पूना	खुद
धाराशिव	एडसी	कल्याणी	,,
लातूर	खुद	बम्बई	,,
पंढरपुर	,,	कुम्भोज	हाथकलंगडा
दहीगांव	दिक्साल	कोल्हापुर	खुद

पीरम	खुद	जेतलसर	खुद
सांगली	,,	पोरबन्दर	,,
घोला	,,	द्वारिकापुरी	पोरबन्दर
सीहोर	,,	नयानगर	खुद
भावनगर	,,	ब्यावर	खुद
श्रीशत्रुंजय	पालीताना	लाडनू	खुद
म्हैसाना	खुद	सुजानगढ	खुद
बढवानी	,,	नागौर	खुद
राजकोट	,,	बीकानेर	खुद
गिरनारजी	जूनागढ	रतनगढ	खुद
वीसनगर	खुद	हिसार	खुद
बडनगर	,,	भिवानी	खुद
तारंगाजी	,,	देहली	खुद
आबूजी	,,	पानीपत	खुद
मारवाड	,,	सुनपत	खुद
लूणी	,,	अम्बाला	खुद
पाली	,,	मुजफ्फरनगर	खुद
जोधपुर	,,	भाटिंडा	खुद
फलोदी	मेरतारोड	फीरोजपुर	खुद
सांभर	खुद	मुलतान	खुद
कुचामन	,,	रेवाडी	खुद
सोमनाथका मंदिर	वैरावल	फुलेरा	खुद

सीकर	खुद	हाथरस	खुद
किसनगढ	खुद	अहीछितजी	आंवला
राणोली	रींगस	राजनगर	,,
चुरू रामगढ	चुरू	चन्दनगांव	पाडुंडा
हैदराबाद	खुद		(महावीररोड)
करांची	खुद	जयपुर	खुद
अजमेर	खुद	सांगानेर	,,
नसीराबाद	खुद	सवाई माधोपुर	,,
हमीरगढ	खुद	चमत्कारजी	सवाई माधोपुर
मांडल	खुद	कोटा	खुद
भीलवाडा	खुद	बूंदी	कोटा
चित्तौडगढ	खुद	केशवजीका पाटन	खुद
गोसुंडा	खुद	नागदा	,,
कपासण	खुद	उज्जैन	,,
बडागांव	खेवडा	रतलाम	,,
देलवाडा	आबूरोड	नीमच	,,
अचलगढ	खुद	झालरापाटनरोड	,,
मेरठ	खुद	(पंडितजीका सारोला	
हस्तिनागपुर	मेरठ		झालरापाटनरोड
मथुरा	खुद	चांदखेडी	झालरापाटन
वृन्दावन	खुद		रोड १ अटरू २
अलीगढ	,,	बारा	खुद

अलवर	खुद	गढवाय फपौसा	भरवारी
भरतपुर	,,	शिमला	खुद
बांदीकुई	,,	लुधियाना	,,
गुना	,,	पेशावर	,,
बजरंगगढ	गुणा	दार्जिलिंग	,,
समसगढ	भोपाल	सहारनपुर	,,
पुष्करजी	,,	मुरादाबाद	,,
श्रीमाधोपुर	,,	बरेली	,,
बाहुरीबन्ध	सिहोरारोड	सोखण	,,
	मलैया	मनकापुर	,,
कौशांबी	भरवारी	माणिकपुर	,,

भिन्न भिन्न प्रांतोंके तीर्थ

मेवाड प्रांतमें ६।

१ केसरियानाथ २ भिंडर ३ बनेड़ा ४ बिजोलिया पार्श्वनाथ ५ चुलेश्वर ६ अजमेर।

मालवा प्रांतमें १२

१ प्रतापगढ २ मकसी पार्श्वनाथ ३ बनेड़ा ४ सिद्धवरकूट ५ बड़वानी ६ तालनपुर ७ क्षेत्रबाहुरीबन्द ८ बजरंगगढ ९ झालरापाटन १० सावीला ११ चान्दखेड़ी १२ कैलाशजीका पाटन।

बुन्देलखण्डमें २७।

१ कौनी २ कुंडलपुर ३ नैनागिर ४ द्रोणगिर ५ आहार ६ पपौरा ७ बालाबेट ८ खजराहा ९ चन्देरी १० मालथौन ११ देवगढ़ १२ चांदपुर १३ थौना १४ सुमेका पर्वत १५ सोरौन १६ पवा १७ अजयगढ १८ कुरगमा १९ सोनागिर २० पन्नोहार २१ ग्वालियर २२ सिवनी २३ जबलपुर २४ महुवा २५ भोपाल २६ सनसीगढ २७ सागर।

आगरा प्रांतमें ५।

१ फीरोजाबाद २ बटेश्वर [सौरीपुर] ३ कंपिला ४ मथुरा ५ अहिक्षित।

देहली प्रांतमें ३।

१ बड़ागांव २ हस्तिनागपुर ३ देहली।

बराड देश

नागपुर प्रांतमें १२।

१ नांदगांव २ मांगीतुंगी ३ गजपंथा ४ अंजनगिरि ५ कारंजा ६ बाशम ७ अन्तरीक्ष पार्श्वनाथ ८ मुक्तागिर ९ कुन्दनपुर १० अमरावती ११ रामटेक १२ भातकुली।

बंगाल—बिहार प्रांतमें ११।

१ आरा २ पटना ३ कुण्डलपुर ४ राजगृही ५ पावापुर

६ गुणावा ७ चम्पापुरी ८ खण्डगिरि ९ कुलुहा पहाड़ १० श्री-सम्मेदशिखर ११ कटक ।

बम्बई हातामें ११ ।

१ एलोराकी गुफा २ औरङ्गाबाद ३ कचनेरा ४ ऊखलद ५ माणिक स्वामी ६ हुबली ७ आरटाल ८ बेलगांव ९ बदामीकी गुफा १० बीजापुर ११ बाबानगर ।

गुजरात प्रांतमें १३ ।

१ महौवा २ अङ्कलेश्वर ३ सजौद ४ बड़ाली ५ खम्भात ६ तारङ्गा ७ शत्रुंजय ८ गिरनार ९ आबू १० अहमदाबाद ११ पावागढ १२ ईडरोड १३ द्वारिकापुरी ।

मारवाड प्रांतमें ३ ।

१ नागौर २ लाडनू ३ फलोदी ।

जयपुर प्रांतमें ४ ।

१ जयपुर २ शागानेर ३ चमत्कार ४ चन्दनगांव ।

मध्यप्रदेशमें ११ ।

१ अयोध्या २ रत्नपुरी ३ खुकुन्दा ४ कहावगांव ५ काशी ६ सिंहपुरी ७ चन्द्रपुरी ८ सेंटमेंट ९ प्रयागराज [इलाहाबाद] १० कौशांबी ।

मद्रास हातामें ६ ।

१ चींतांबूर २ पौन्नूर ३ तोरमले ४ वैकुनम् ५ अर्पाकम ६ मनारगुड़ी ।

दक्षिण प्रांतमें (महाराष्ट्र कर्णाटक प्रांतमें) १०

१ बैंगलूर २ म्हैसूर ३ जैनवद्री ४ मूलवद्री ५ कारकल ६ वैनूर ७ मद्रापाटन ८ बारङ्ग ९ हुंमचपद्मावती १० गोम्मटपुरा ।

शोलापुर प्रांतमें ८ ।

१ हौणसलगी २ आष्टै [विघ्नेश्वर पार्श्वनाथ] ३ दहीगांव ४ कुन्थलगिरि ५ धाराशिव ६ तेर ७ पंढरपुर ८ आतनूर ।

कोल्हापुर प्रांतमें ४ ।

१ कुम्भोज २ स्तवनिधि ३ कुण्डलक्षेत्र ४ कोल्हापुर ।

पृष्ठोंके हिसाबसे तीर्थोंकी सूची।

इति समाप्तः ।

द्रव्य दाताओंकी सूची ।

२१)	श्रीमान् सेठ हरकिशनदासजी मटरूमल	२१)	श्रीमान् सेठ श्रीरामजी कुंदनमल
४१)	,, जुहारमलजी गंभीरमल	२१)	,, राधाकिसनरामजी गनपतलाल
४१)	,, सरूपचंदजी हुकमचंद	२१)	,, सोरैमलजी किसोरीलाल
२१)	,, रामकिशनदासजी गिरधारीलाल	२१)	,, घनसामदासजी
		२१)	,, प्यारेलालजी रोसनलाल
४१)	,, रामलालजी सीवलाल	२१)	,, ताराचन्दजी सरूपचंद
४१)	,, जुवारमलजी चम्पालाल	२५)	,, रामजीवनदासजी फूलचंद
२१)	,, परेमसुखजी पंनालाल	२१)	,, पूरणचंदजी कुन्दनलाल

२१) ,, रीषभचंदजी रामचंद	२१) ,, रामवल्लभजी रामेसुर
४१) ,, लालचंदजी दीपचंद	२१) ,, रामजीवनजी रामनाथ
२१) ,, भारामलजी बंसीधर	२१) ,, सालगरामजी चुन्नीलाल
४१) ,, सदारामजी जैसराज	२५) ,, परतापमलजी हजारीमल
३१) ,, छोगमलजी फूलचंद	२५) ,, गणेशमलजी परेमसुष
५१) ,, मूलचंदजी तोलाराम	१५) ,, रतनलालजी सूरजमल
५१) ,, सेढमलजी दयाचंद	१५) ,, सेरमलजी झूमरमल
४१) ,, कनीयालालजी विरधीचंद	१) ,, प० झम्मनलालजी
५१) ,, चैनसुषजी गंभीरमल	५) ,, जुहारलालजी अगरवाल
३५) ,, मदनचंदजी प्रभुलाल	११) ,, चिरंजीलालजी सिषरचंद
३१) ,, हजारीमलजी जमना-दास	११) ,, रामचरणदासजी सीकरचंद
२५) ,, जोषीरामजी मुगराज	७) ,, मुरलीधरजी ठाकुरदास
११) ,, घनसामदासजी मोहनलाल	७) ,, नेमीचंदजी भादुवगस
११) ,, मांगीलालजी मोहनलाल	११) ,, लछमीनरायणजी नारमल
७) ,, रंगलालजी रामेसुर	११) ,, जुतारामजी खूबचंद
७) ,, श्रीलालजी सरजुलाल	११) ,, कालुरामजी छोगमल
४) ,, सूरजमलजी बसंतलाल	११) ,, जारैलालजी कनीयालाल
४) ,, सीवजीरामजी खूबचंद	११) ,, किसनलालजी जोरावरमल
११) ,, कालुरामजी मङ्गलचंद	२) ,, बिहारीलालजी पन्नालाल
५) ,, सीवनरायणजी सूरजमल	१६६) कलकत्ता ओसमाज

कुल जोड़ १३६७)

श्रीवीतरागाय नमः ।

तीर्थयात्रा दर्शक ।

मंगलाचरण ।

सोरठा ।

चौवीसी नंतानंत, सिद्धनंत गुरु पंच सब ।
सिद्ध रु अतिशय क्षेत्र, पंच कल्यानक भौम हैं ॥

दोहा ।

गुरु गौतम जिनवचन हैं, कुंद कुंद आचार ।
विदेहक्षेत्रके वीस जिन, होउ सहाय हमार ॥ २ ॥

चौपाई ।

रातदिना सुमिरूं नवकार, और न कछु दूजो आधार ।
विद्याधन बल माहिं समस्त, अटल सरदओ आतमवस्त

दोहा।

नमों निरंजन सिद्ध सम, चिदानंद भगवान्।
श्रेय पदारथ आतमा, सर्व पदार्थ आन्॥

यात्राका प्रारंभ।

उदयपुर शहर।

स्टेशनसे १ मील पर सूरजपोलसे बाहर सरकारी धर्मशाला है। स्टेशनपर तांगे मिलते हैं। रेलसे उतरकर तांगामें बैठकर यात्रियोंको इस धर्मशालामें ठहरना चाहिये। यहां हर एक बातका सुभीता और आराम मिलता है। शहरके अंदर, ४ मंदिर हूमडोंकी गलीमें, १ मंदिर मंडीकी नारमें, १ मंडीमें और २ मंदिर बडे बाजारमें, इस प्रकार आठ मंदिर हैं। आठों ही मंदिर बडे मनोहर और विशाल हैं। इनके अंदर तथा पिछवाडे और इधर उधर अत्यन्त मनोहर हजारों प्रतिमायें विराजमान हैं। यात्रियोंको चाहिये कि जिस समय धर्मशालासे मंदिरोंके दर्शन करने जांय, अपने साथ एक जानकार आदमीको ले लें। और जिस मंदिरका दर्शन करें वहांके पुजारीसे जहां जहां श्रीजी विराजमान हों पूछकर दर्शन करें, जिससे दर्शनके लिये कोई स्थान बाकी न रह जाय।

उदयपुर बहुत ही प्राचीन सुन्दर शहर है । बहुतसी चीज यहां देखने लायक हैं । शहर देखते समय भी यात्रियोंको एक चतुर आदमी अपने साथ रखना चाहिये और वहां पर कैसी भाषा है, कैसा पहिनाव है, और कैसी रीति रिवाज है ? यह बात ध्यानमें रखनी चाहिये । शहरकी देखने योग्य ये चीजें हैं--

राजाका महल, उसके अंदर शम्भूविलास, फतेह विलास, महकमा खास, मेंद्राजसभा, तालावके मध्य भागमें सज्जनगढ, सज्जननिवास, कचहरी, घोडा, गुलाब बाग अजायबघर, पीचोला तालाव, जगदीशका मंदिर, बडा बाजार, हाथीपोल दरवाजा, सहेलियोंकी बाडी, फतेहसागर, स्वरूप सागर, दिल्ली दरवाजा, बडा जेलखाना और राजाकी फौज आदि । उदयपुरसे थोडी दूरपर एकलिंगजीका एक विशाल मंदिर है वह भी देखनेके योग्य है । यात्रियोंको यहांसे श्रीकेसरियाजीकी यात्राके लिये जाना चाहिये ३४ मील पक्की सडकका रास्ता है । जानेकेलिये बैलगाडी तांगा आदिकी सवारी मिलती है ।

श्रीअतिशयक्षेत्र केसरियाजी ।

[धुलेव ग्राम]

यहां चारो ओर कोट खींचा हुआ बडा शहर है । पासमें ही एक विशाल नदी, एक तालाव, चार बावडी;

चार कुंड, चार धर्मशाला और एक विशाल मंदिर हैं। श्री मंदिरजीमें मूलनायक प्रतिमा श्रीआदिनाथ भगवानकी हैं जो अत्यंत मनोज्ञ चतुर्थ कालकी अतिशयवान है। मूल नायकसे भिन्न और भी मनोहर मनोहर हजारों प्रतिमायें हैं। यह मंदिर करीब एक मीलके घेरेमें, बावन देहरियोंसे विभूषित, विशाल, अत्यन्त मजबूत, लाखों रुपयोंकी लागतका बना हुआ है। तीनों काल यहां पूजा होती है। विशेषतासे केसर चढती है। दूधका प्रक्षाल होता है गुलाल चढता है। शामको जड़ाऊ आंगी चढती है। एवं गीत नृत्य वादित्र आदिसे यहां सदा इन्द्रपुरीके समान आनन्द होता रहता है। बारहो महिने यहां यात्री आते हैं और बोलकबूलकर अंगिया चढती हैं। यहां ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य और भील सब लोग पूजा प्रक्षाल करते हैं। मंदिरके अंदर नौकर फौज, नगाडा और वादित्र सदा रहते हैं। शहर धुलेवमें खासकर ब्राह्मण वैश्य लोगोंकी विशेष वस्ती है। और जैनी श्रावकोंके ८० घर हैं। यात्रियोंको यहांकी वन्दना कर करीब एक मीलकी दूरी पर चरणपादुका हैं वहांपर जाना चाहिये।

चरणपादुका (पगालियाजी)

यहां एक बडा चौक, बाग, वावडी, विशाल दालान और मनोहर छत्री है। छत्रीमें जिनेन्द्र भगवानकी चरण-

पादुका विराजमान हैं । यह स्थान बड़ा ही मनोहर है। यहांपर प्रतिवर्ष चैत्र सुदी ८ अष्टमीको रथयात्राका मेला होता है। हजारों यात्री मेलामें आते हैं । केसरियानाथके मंदिरमें जो श्रीआदिनाथ भगवानकी प्रतिमा विराजमान हैं वे इसी चरणपादुका स्थानसे निकली थीं और उनके साथ तीन चरू धनके भी निकले थे उसी धनसे श्रीकेसरियानाथजीके मंदिरका निर्माण हुआ था । और भी खुलासा हाल इसप्रकार है—

जहांपर श्रीकेसरियानाथजीका मंदिर है वहांपर किसी समय एक धूलिया नामका भील रहता था। धूलिया भीलको श्रीआदिनाथजीकी प्रतिमाके विषयमें स्वप्न हुआ था। उस जगहकी खुदाई करनेपर उसे प्रतिमाजी और उनके साथ धन मिला था। सुना जाता है कि उस धनसे उसने ही श्रीकेसरियानाथजीके मंदिरका निर्माण कराया था। धूलिया भीलने ही पहिले ही पहिल धुलेव गांव बसाया था, इसीलिये उसके धुलेव नामसे प्रतिमाजी धुलेवा नामसे प्रसिद्ध हैं। श्रीमंदिरजीका निर्माण आदि धूलिया भीलके द्वारा हुआ था इसीलिये भीलगण धुलेवा प्रतिमाजीकी आज्ञा मानते सौगन्ध खाते और पूजा करते हैं। यहांपर केसर अधिक चढनेसे श्रीकेसरियाजी नाम पड़ा है । श्रीकेसरियानाथजीके मंदिरकी मूलनायक

प्रतिमा श्याम वर्ण हैं। अतएव भील लोग प्रतिमाजीको कारा बाबा कहते हैं एवं ये प्रतिमाजी मुल्क भरमें मशहूर हैं। सुना जाता है बडे २ व्यापारियोंके जहाज इस प्रतिमाजीके नाम लेनेसे पार हुए थे। बादशाह अलरुद्दीन और राव सदाशिवको बडा भारी परिचय दिया था। थोडे दिन पहिले किसी कलकत्तेके सेठने प्रतिमाजीके नेत्र लगाना चाहा था उसे भी बडा भारी परिचय व चमत्कार प्राप्त हुआ था इनके सिवा और भी हमेशह नाना प्रकारके चमत्कार और अतिशय वहां पर हुआ करते हैं। वहांके लोग यहांतक कहते हैं कि यह प्रतिमाजी पहिले लंकामें रावणके मंदिरमें विराजमान थीं और स्वयं राजा रावण जो अष्टम प्रतिनारायण था इस प्रतिमाजीकी पूजन प्रक्षाल करता था। जो भी हो, यहांका तीर्थ बडा भारी अतिशयवान है।

श्रीकेसरियानाथजीसे एक रास्ता श्रीतारंगाजीको जाता है। पक्की सडक है बैलगाडीसे जाना होता है। श्रीकेसरियाजीसे जो यात्रीगण आगे जाना चाहें उन्हें चाहिये कि वे पहाडी रास्ता पक्की सडक जो कि खैरवाडा डोंगरपुर बांसवाडा सलुंबर धरियाबाद प्रतापगढ होकर मंदसौर स्टेशन वा दावद गोधरा स्टेशन पर जा मिलती है और उससे भी आगे रतलाम तक गई है, उससे जावें किन्तु

जो यात्री श्रीकेसरियानाथजीसे उदयपुर लौटना चाहें तो उनको रेलमें बैठकर स्टेशन सनवार (कांकरोली) उतरना चाहिये।

उदयपुर और कांकरोलीके बीचमें एक ' महोली ' नामका स्टेशन है. वहांसे एक रास्ता हिन्दू वैष्णवोंके बडे भारी तीर्थ राजनगर चत्रभुजजीको जाता है (एक रास्ता उंठाला कुरावड बाठरडा आदि गावोंको भी जाता है) जिस यात्री भाईको यह वैष्णवोंका तीर्थ देखना हो तो वह महोली स्टेशनपर उतरकर देख आवें और देख कर महोली स्टेशनसे फिर रेलगाडीमें बैठकर सनवार (कांकरोली) स्टेशन पहुंच जावे।

स्टेशन सनवार (कांकरोली)

सनवार मामूली अच्छा शहर है। वहांसे जानेके लिये दो रास्ता हैं। एक रास्ता कांकरोली राजनगर चत्रभुजजी गौंडाराव आदि गांवोंमें होकर जोधपुरको गया है। यह पहाडी रास्ता है। दूसरा रास्ता भिंडर गांव जाता है। भिंडर गांव सनवारसे १० कोशकी दूरीपर है और बैलगाडीसे जाना होता है। यात्रियोंको सनवारसे भिंडर ही जाना चाहिये।

भिंडर शहर (अतिशय क्षेत्र)

भिंडर शहर एक अच्छा सुंदर शहर है। इसके चारो

ओर कोट खिचा हुआ है । यहां राजाका राज है । दिग-बर जैनी भाइयोंके करीब २०० घर हैं । दो बडे मंदिर और एक चैत्यालय है । एक मंदिरमें गैंहू सरीखे लाल वर्णकी एक प्रतिमाजी श्रीऋषभदेव भगवानकी और श्वेत-वर्णकी एक प्रतिमाजी श्रीपार्श्वनाथ भगवानकी विराजमान हैं । दोनों ही प्रतिमाजी महामनोहर चौथे कालकी प्राचीन अद्भुत अतिशय संयुक्त हैं । इन प्रतिमाओंके दर्शन करने-पर जो मनमें चिंता जाता है वह शीघ्र सिद्ध होजाता है । यह भी केसरियानाथजी सरीखा अतिशय क्षेत्र है । चारो ओरके सौ २ कोसके यात्री यहां पर बोलकबूलकर चढानेको आते हैं । यहांपर बीसपंथ आम्नायसे पूजन होता है । दूध दही घृत आदि पंचामृताभिषेक हमेशह बडे ठाट बाटसे होता है । केसरियानाथजीके समान यहां भी खूब ही केसर चढती है । आरती गायन नित्यनियम पूजा सदा बडे ठाट बाटके साथ होते रहते हैं । यह एक प्रसिद्ध क्षेत्र है । यहांकी प्रतिमाजीके दर्शन करनेसे आत्माको बडी शांति मिलती है । हृदयमें आनन्दका स्रोत बह निक-लता है । हमेशह यहां घृतका अखण्ड दीपक जलता रहता है । मंदिरमें एक बडी भारी चांदीकी चार खंडकी मनोहर गन्धकुटी बनी हुई है जो प्रशंसा और देखनेके योग्य है । शहरमें देखने योग्य चीजें राजाका महल बडा

बजार आदि हैं। (यहांसे रास्ता कानोड बोइडा बानसी सादडी विनौता आदि गांवोंमें होकर स्टेशन निमाहेडा वा नीमचको गया है। यह रास्ता बैल गाडीका है परन्तु यात्रियोंको भिंडर शहरकी यात्राकर फिर स्टेशन सनवार कांकरोली ही लौट आना चाहिये और वहांसे रेलमें बैठकर करेडा जाना चाहिये।

करेडा 'अतिशय क्षेत्र'
(करेडा पार्श्वनाथ)

यह रेल्वे ष्टेशनसे दो फरलांगकी दूरी पर है। मंदिरजी दूरसे ही दीखते हैं। इस मंदिरके बनवानेमें १४ लाख रुपये खर्च हुये थे लेकिन आजकल तो वैसा सुन्दर सुदृढ मंदिर ७०-८० लाखमें भी नहीं बन सक्ता। मंदिरजीमें बावन देहली, कोट, दरवाजा, मंडप आदिकी अनेक मनोहर रचना है। मूल नायक श्रीपार्श्वनाथस्वामीका प्रतिबिंब श्यामवर्ण बहुत ही मनोज्ञ है। यह क्षेत्र जंगलमें रहने पर भी वापिका, कुवा, छत्री, धर्मशाला आदि यात्रियोंको सुखदायक समस्त सामग्रीसे सुशोभित है। विक्रम संवत् १९६६ तक यह दिगम्बर आम्नायके अधीन था, पौषवदी १० मी को यहां बडा भारी मेला लगता था और २ महीने तक लगा करता था जिसमें समस्त प्रकारके व्यापारी आते

थे। लेकिन अब श्वेताम्बरी हो गया है तो भी मेलाके समय दिगम्बरी ही अधिक आते हैं।

मंदिरजीके निकट एक छोटासा गांव करेडा है। यह पहिले बहुत बडा शहर था। यहांके रहनेवाले एक बणजारेने ही उक्त मंदिर बनवाया था। यहांसे पिचाई ष्टेशन आकर चित्तौडगढकी टिकट लेना चाहिये। मार्गमें कपासण, गौसुंडा ये दो शहर पडते हैं जिसको देखना हो वे यहां भी उतर सक्ते हैं।

चित्तोड गढ़।

यहां स्टेशनके पास सर्कारी धर्मशाला है। यहांसे नगर १ मील है। चित्तोड़गढमें एक चैत्यालय है। यह पहिले बहुत बडा शहर था। हिंदुराजा सूर्यवंशशिरोमणि राणा लोगोंकी यह राजधानी था। मुस्लमानी जमानेमें एक तरफ देहली और दूसरी और यही बादशाहत थी। गढ देखने योग्य है। राजकचहरी पहाडकी तलहटीके पास है। यहांसे कच्चा फारम लेकर गढ देखने जावे।

यह गढ दुनियांके समस्त गढोंका शिरताज है। इसका घेरा बारह कोशके बीचमें है। यहांकी रचना बडी ही मनोहर है। इसके तोपखाना तालाव महल मकान स्तम्भ जैन मंदिर आदि चीजें अधिक प्राचीन होनेसे यद्यपि टूटी फूटी हालतमें हैं तो भी उनके देखनेसे बडा आनंद होता है।

चितौडका गढ देखकर यात्रियोंको फिर स्टेशन लौट आना चाहिये और नीमचका टिकट लेकर नीमच पहुंच जाना चाहिये। चित्तौड़ गढ और नीमचके वीचमें नीपाहेडा केसरपुरा मंदसौर आदि गांव शहर पडते हैं। केसरपुरासे एक रास्ता जावद शहरको भी गया है। जावद एक सुन्दर बडा शहर है। तीन जैन मंदिर हैं। जावदमें उतरकर तीनों मंदिरोंका दर्शन करना यात्रियोंकी खुशीपर निर्भर है।

विशेष—चित्तौड गढसे एक रेलगाडी गंगार हमीगढ मांडलगढ भीलवाडा नसीराबाद होकर अजमेर जाती है इसका हाल आगे लिखा जायगा। यात्रियोंको चाहिये मंदसौर प्रतापगढके जिनमंदिरोंका अवश्य दर्शन करते जांय फिर उनके दर्शनोंका मौका मिलना कठिन है। मंदसौरका हाल नीचे लिखे अनुसार है—

मंदसौर शहर

मंदसौर स्टेशनके पासमें एक मनीराम गोविन्दरामकी धर्मशाला बनी हुई है। यहांपर सब बातका सुभीता और आराम है। यात्रियोंको यहां उतरना चाहिये। धर्मशालासे करीब एक मीलके शहर है। जानेके लिये तांगा मिलते हैं यह शहर प्राचीन और सुंदर है। यहांपर मंदिर और चैत्यालय कुल सात हैं जो कि मनोहर हैं। यात्रियोंको तलाशकर दर्शन करना चाहिये। यहांपर श्रावकोंके करीब ८० के

घर हैं। ये श्रावक सब दिगम्बर हैं। शहरमें बजार आदि कुछ चीजें देखनेकी हैं। यहांसे यात्रियोंको प्रतापगढ जाना चाहिये। करीब दश कोशकी दूरी पर यहांसे प्रतापगढ है, तांगा और बैलगाडी दोनों प्रकारकी सवारियां मिलती हैं।

प्रतापगढ (जैनपुरी)

यह शहर देवरी दरबार राजपूतानाका है इसलिये इसका नाम देवरी प्रतापगढ भी बोला जाता है। देवरी एक अच्छा कसबा और राजधानीका स्थान है। प्रतापगढसे कुछ मीलोंकी दूरीपर है। जिसतरह बंबई शहर रौनकदार और सुंदर है उसीप्रकार प्रतापगढकी भी रचना मनोहारिणी है। यहांपर भी बम्बईके समान धनाढ्य लोगोंका निवास है। दिगम्बर जैनियोंके घर यहां करीब तीन सौसे अधिक हैं। यहां राजाका महल बाजार आदि चीजें तारीफ और देखनेके लायक हैं। बडे बडे मंदिर नौ ९ और चैत्यालय सात ७ हैं। इन सबकी रचना बहुत सुन्दर है। शहरके बाहर करीब एक मीलकी दूरीपर श्रीशांतिनाथजीका अत्यंत मनोहर मंदिर है। इस मंदिरमें भगवान शांतिनाथजीकी नौ ९ फीट ऊंची विशाल पद्मासन प्रतिमाजी विराजमान हैं जोकि अत्यंत मनोज्ञ प्राचीन और अतिशयसंयुक्त है। और भी अनेक प्रतिमाएं विराजमान हैं जो अत्यंत दर्शनीय हैं। यात्रियोंको चाहिये कि यहांके मंदिरोंके दर्शन कर

मंदसौर वापिस लौट जांय फिर वहांसे नीमच चले जांय परंतु यात्रियोंको प्रतापगढसे देवरिया भी जाना चाहिये प्रतापगढसे मुंगाणा धरियाबाद सलुंबर केसरियानाथजीको भी रास्ता है। उससे आगे डूंगरपुर वांसवाडा खेदवाडाको भी रास्ता है। धुलेव शहरसे उदयपुरका भी मार्ग है। यात्रियोंकी खुशी, वे जहां जाना चाहैं जा सकते हैं। सब जगहको पक्की सडकका रास्ता है। रास्तेमें किसी प्रकारका भय नहीं।

देवरिया (देवगढ)

यह स्थान प्रतापगढसे सात मीलकी दूरीपर है यह कसबा बहुत अच्छा राजधानीका स्थान देखनेके योग्य है। यहांपर जैनियोंके घर आठ ८ हैं। एक विशाल मंदिर है जो कि सुनहरी कामका बना हुआ प्राचीन अत्यंत विशाल और मनोहर है। इसमें अनेक मनोहर प्रतिबिंब विराजमान हैं। दो प्रतिबिंब चांदी और एक सोनेकी भी निर्माण की हुई है, बडी ही मनोहर हैं। यहांकी रचना बडी ही सुंदर और देखने योग्य है। जो यात्री दर्शनार्थ यहां आवें उनको देवरीया कसबा देखकर फिर प्रतापगढ मंदसौर जाकर नीमच चला जाना चाहिये।

नीमच (छावणी)

नीमच उतर कर यात्रियोंको बिजोलियां गांव चला जाना चाहिये। पक्की सडक है। बैलगाडी ऊंटगाडी

घोडागाडी सब प्रकारकी सवारी मिलती हैं । बिजोलियां तीर्थको अजमेर भीलवाडा और मांडलसे भी जानेका रास्ता है। जिधरसे भी जाया जाय समान ही पडता है । बिजोलियां गांव नीमचसे पश्चिम की ओर और भीलवाडा मांडलसे पूर्व दिशामें है ।

बिजोलियां ग्राम ।

यह ग्राम छोटासा कसबा पर राजाकी राजधानी होने से अत्यंत सुंदर जान पडता है। इस ग्राममें कुछ दूरी पर बिजोलियां पार्श्वनाथजीका विशाल मंदिर है जो कि अत्यंत रमणीय और प्राचीन है। यह बिजोलियां अतिशय क्षेत्र है। खुलासा इस प्रकार है—

अतिशयक्षेत्र श्री बिजोलियां पार्श्वनाथजी

बिजोलिया पार्श्वनाथजी क्षेत्रमें प्रवेश करते ही दरवाजेके पास मंदिर है जो अत्यन्त विशाल और शिखर बंद है। मंदिरके बीचमें एक देहरा है जिसमें २३ प्रतिमा खुदी हुई हैं । देहरी खाली है। देहरीके पीछे वेदी है उसमें भी कोई प्रतिमा विराजमान नहीं । मालूम नहीं यहांकी प्रतिमा कहां पर पधरा दी हैं। चारों ओर दिवारोंके ऊपर मुनीश्वरोंकी प्रतिमा खिची हुई हैं । एक विशाल सभामंडप है। चार ४ गुमटी और दो २ विशाल मानस्तंभ हैं। मानस्तंभ तथा भीतोंके उपर अनेक प्रकारके प्रतिबिंब खुदे

हुये हैं। एक शिला लेख भी है। संस्कृत भाषामें शिखर-पुराण लिखा हुवा है इस मंदिरकी रचना अत्यंत प्राचीन और आश्चर्यकारी है। इस मंदिरको देखकर तथा शिला लेखको बांचकर यह मालुम होता है कि यह स्थान बडे २ आचार्य और ऋषियोंके ध्यान करनेका था इसलिये बडा पवित्र और पूजनीय है। यात्रियोंको चाहिये कि इस जगहका बडे ध्यानके साथ दर्शन करें। इस स्थानसे चुलेश्वर नामका अतिशय क्षेत्र पास है। यात्रियोंको चाहिये कि वे रास्ता आदिका अच्छी तरह पता लगाकर चुलेश्वर अतिशयक्षेत्र जांय।

श्रीचुलेश्वर (अतिशयक्षेत्र)

यह स्थान साहपुरा (मेवाड) तालुका जिलाका छोटा ग्राम वाजुदरासे करीब ४ चार मीलकी दूरीपर है। यहांपर एक पहाड करीब करीब एक मील ऊंचा है। पर्वतके नीचे एक प्राचीन मंदिर है। इसमें बहुतसी प्रतिमा खंडित हैं पहाड़पर जानेके लिये सीढी (पगथलिया) लगी हुई हैं। पहाडके ऊपर एक अत्यंत विशाल जिन-मंदिर है। उसके विशाल दालानमें करीब दो हजार मनुष्य रह सकते हैं। इस विशाल मंदिरमें एक प्रतिमा वालुकी श्रीपार्श्वनाथ स्वामीकी विराजमान है जो अत्यन्त प्राचीन महा मनोहर है और एक प्रतिमा अत्यंत प्राचीन चौवीसी

भगवानकी है। यहांकी सब रचना अत्यन्त प्राचीन और मनोहर है। सुना जाता है यहांपर भगवान पार्श्वनाथजीका समवसरण आया था। श्रीचुलेश्वर अतिशयक्षेत्रके पास बागुदरामें १५ घर दिगंबर जैनोंके हैं। एक चैत्यालय है। यात्रियोंको चाहिये कि यहांका दर्शनकर फिर नीमच लौट आवें। यदि किसी भाईकी इच्छा हो तो वह यहांसे भीलवाडा स्टेशन भी जा सकता है।

नीमच छावनी भी देखने योग्य है। यहांसे यात्रियोंको झावरा होते हुये रतलाम जाना चाहिये। यात्रियोंकी इच्छा कि वे झावरा और रतलाम देखनेके लिये उतरें नहीं तो बडनगर होकर फतियाबाद जाना चाहिये और वहांसे अजनोद स्टेशन उतरना चाहिये। बडनगर और फतियाबाद देखनेके लिये उतरना भी यात्रियोंकी इच्छापर निर्भर है। यहांपर झावरा आदिका भी कुछ उल्लेख किया जाता है—

झावरा।

झावरा स्टेशनसे १ मीलकी दूरीपर शहर है। यद्यपि शहर पुराना है तो भी अच्छा रौनकदार है। यहांपर दिगंबर जैन मंदिर ४ हैं। दिगंबर जैनियोंके घर भी करीब ७० घरके हैं। यहांसे यात्रियोंको रेलगाडीसे रतलाम जाना चाहिये।

रतलाम (रत्नपुरी)

स्टेशनसे १॥ मीलकी दूरीपर रतलाम शहर वसा हुआ है। यह शहर राजा साहबका बहुत अच्छा देखने योग्य है। यहां पर बडे बडे ७ सात मंदिर १ एक नसिया १ एक धर्मशाला और एक बोर्डिंग है। दिगम्बर जैनीयोंके करीब ३०० तीनसौके घर हैं। यहांके मंदिर और उनमें विराजमान प्रतिमा बडी ही मनोहर हैं। राजाका महल चौपड बाजार बडाबाग अमृतालाब कालेज किला चांदनी चौक आदि अनेक चीजें यहां देखनेके लायक हैं। यहांसे रेलकी ४ लाईन जाती हैं

१ गोधरा आनंद बडौदा अहमदवाद।

२ चित्तोड अजमेर उदेपुर आदि।

३ 'नागद' उज्जैन भोपाल आदि।

४ इन्दौर मऊ खंडवा तक।

रतलामका स्टेशन रेलवेका कारखाना भी देखनेके योग्य है। यहासे जात्रियोंको बडनगर आना चाहिये।

बडनगर।

स्टेशनसे एक १ मीलकी दूरीपर बडनगर वसा हुआ है। सुन्दर ३ जैन मंदिर और करीब १५० डेढसौके दिगंबर जैनी भाइयोंके घर हैं। यहां पर १ शुद्ध औषधालय १ अनाथालय और प्रांतिक सभा आदि जैन संस्था

अवश्य देखनेके लायक हैं। यहांसे यात्रियोंको फतिहाबाद जाना चाहिये।

फतिहाबाद।

फतिहाबाद स्टेशनसे १ मीलकी दूरी पर एक चंद्रावक नामका ग्राम बसा हुवा है। यहां पर १ एक जैन मंदिर और पन्द्रह १५ घर दिगंबर जैनियोंके हैं। यहांसे एक रेलवे लाइन उज्जैन और एक इंदौर जाती है। यहांसे यात्रियोंको अजनोद स्टेशन जाना चाहिये।

अजनोद स्टेशन

यह स्टेशन बहुत छोटा है यात्रियोंको बडी संभालके साथ यहां उतरना चाहिये। अजनोद स्टेशनपर उतरकर श्रीअतिशयक्षेत्र बनेडाजी जाना चाहिये। बैल गाडीकी सवारी मिलती है। इंदौरसे भी बनेडाजी अतिशय क्षेत्रके लिये बैलगाडीसे जाना होता है।

श्रीबनेडाजी (अतिशयक्षेत्र)

श्री बनेडाजीमें दो बडे २ मंदिर और एक चैत्यालय है। रचना मनोहारिणी है। मंदिरोंके अंदर जो प्रतिमा विराजमान हैं वे बडी ही मनोज्ञ और प्राचीन हैं। प्रतिवर्ष चैत्र सुदी ११ एकादशीको यहां मेला लगता है। यहांके दर्शनकर यात्रियोंको इंदौर जाना चाहिये।

इंदौर (शहर)

टेशनसे करीब आधा मीलके फासलेपर स्याहगंज जुब-लीबागमें सेठ स्वरूपचंद हुकुमचंद्रजीकी नासियांजी है। यात्रियोंको यहां आकर उतरना चाहिये। यहां सब प्रकारका आराम है। नासियांजीमें एक विशाल जैनमंदिर बना हुआ है और एक बोर्डिंग हाउस है। यहांसे एक मीलके फासलेपर छावनी स्थान है। यहां दो विशाल जैनमंदिर हैं। नसियाजीसे तांगामें बैठकर यात्रियोंको इन मंदिरोंके दर्शन करने चाहिये। छावनीसे १ मीलकी दूरीपर तुको-गंज है। यहां एक जिनमंदिर है यहांके दर्शन करने चाहिये। पासमें ही एक उदासीनाश्रम नामकी संस्था है उसे देखना चाहिये। यहींपर सेठोंका बंगला, बगीचा, सेठ हुक्मचंद-जीकी बडी कोठी (घंटाघर) आदि चीजें देखनेकी हैं वे देखनी चाहिये। यहांसे दो मीलकी दूरीपर शहर है। वहां नौ ९ जैनमंदिर हैं उनके दर्शन करने चाहिये। इन्दौरके सब ही मंदिर बढिया और विशाल हैं।

मंदिरोंके नाम और ठिकाना

एक मंदिर दितवारी बाजारमें है। यह मंदिर सेठ हुक्मचंदजीके निजके द्रव्यसे बना हुआ है। यह मंदिर अत्यंत विशाल लाखों रुपयोंकी लागतका जडाऊ और रंगके कामसे शोभित है। इसके दूसरे मंजलमें प्रतिमाजी विराजमान हैं

जो दीर्घ और अत्यंत मनोहर हैं । मंदिरके पास ही उक्त सेठ साहबका मकान और बंगला है यात्रीगण खुशीसे देख सकते हैं। कोई देखनेकी रोक टोक नहीं ।

एक मंदिर मल्हारगंजमें है जो अत्यंत विशाल है इसमें श्रीनेमिनाथस्वामीकी अत्यंत मनोज्ञ प्रतिमा विराजमान हैं। एक मंदिर माणिक चौकमें है। अत्यन्त विशाल तीन मंजलके तीन मंदिर मारवाडी बजारमें हैं । इन मंदिरोंमें बडी २ अत्यन्त मनोहर प्रतिबिम्ब विराजमान हैं । तीन प्रतिमा स्फटिकमणिकी हैं । एक सम्मेदशिखर पहाडकी और एक नन्दीश्वर द्वीपकी रचना बनी हुई है। दो मंदिर राजाके दरबारके पिछाडी हैं और एक मंदिर भट्टारकजीकी नसियांमें शहरके किनारेपर है। यात्रियोंको इन सब मंदिरोंका खूब हुशियारीसे दर्शन करना चाहिये. इस शहरमें राजाका पुराना तथा नया महल, नदीके किनारे मृतक राजा लोगोंकी छत्रियां, कालेज, बडाबाजार, कपडोंकी मीलें और तारघर आदि चीजें मनोहर देखनेलायक हैं । यात्रियोंको यहांसे मऊकी छावनी जाना चाहिये ।

मऊकी छावनी बडा शहर

मऊ स्टेशनसे एक मीलकी दूरीपर धर्मशाला है। यात्रियोंको इस धर्मशालामें उतरना चाहिये। बंबई बाजारमें राजवैद्य फतेलालजी गोधा और सेठ झवेरचन्दजी

रहते हैं। दोनों ही व्यक्ति बडे सज्जन धर्मात्मा हैं। यात्रियोंको यदि कुछ कार्य हो तो इन्हें सूचित करना चाहिये। इनसे कहनेपर शीघ्र काम होता है। इनके घरमें एक चैत्यालय है। शहरमें तीन बडे २ मंदिर हैं। यात्रियोंको पूछकर सब मंदिरोंका दर्शन करना चाहिये। यहांपर छावनीमें अंग्रेजी तथा राजाकी फौज देखने योग्य है। बंबई बाजार और चौक बाजार भी मनोहर देखने योग्य है। यहांसे यात्रियोंको बडवानी बावनगजा क्षेत्रको जाना चाहिये। मऊसे यह क्षेत्र ५० कोशकी दूरीपर है। पक्का सडकका रास्ता है तांगा मोटर बैल गाडी आदि सवारी हर समय मिलती हैं। मऊ और बडवानीके बीचमें मानपुर गुजरी धर्मपुरी और अंजड ये बडे २ चार गांव पडते हैं। हर एकमें जैनी भाइयोंके घर और एक एक मंदिर है।

बडवानी शहर

यह शहर सुन्दर और बडा है। व्यापारका स्थान है. यहां राजाकी कचहरी और महल देखने लायक हैं। इस शहरमें एक विशाल मंदिर और एक धर्मशाला है। यहां सेठ भोलाजी चान्दूलाल रहते हैं। जो कि परम सज्जन धर्मात्मा हैं। यहांसे ६ मीलकी दूरीपर श्रीबावनगजाजी क्षेत्र है। पकी सडकका रास्ता है। बैलगाडीकी सवारी मिलती है।

लोक प्रसिद्ध बावनगजा क्षेत्र
(जैन मत प्रसिद्ध चूलगिरि सिद्धक्षेत्र)

यह स्थान जंगलमें पहाडके ऊपर है। इसकी रचना बडी मनोहर है। यहांपर पहाडके नीचे दो धर्मशाला और सोलह १६ महा मनोहर मंदिर हैं। इनमें विराजमान प्रतिमा बडी ही मनोहारिणी हैं। पहाडकी तलहटीमें भी दो मंदिर हैं। एक बावनगजकी खड्गासन अत्यन्त प्राचीन शान्ति स्वरूपकी धारक महा मनोहर प्रतिमा भी विराजमान हैं। इसी प्रतिमाजीको बावनगजा बोलते हैं। अन्यत्र जैनतीर्थोंमें इतनी विशाल प्रतिमा कहीं नहीं हैं। यह प्रतिमा कुम्भकर्णकी है और इसीके पास मंदिरजीमें नौ गज लंबी एक खड्गासन प्रतिमा इन्द्रजीतकी विराजमान है। इन दोनों प्रतिमाओंके दर्शनसे चित्त बडा ही शांत और आनन्दपरिपूर्ण हो जाता है। इन मंदिरोंके अन्दर और अनेक प्रतिमा विराजमान हैं जो अत्यन्त मनोहर हैं। यहांसे आगे एक मीलकी ऊंचाईपर पहाडका मंदिर है। यहांकी चढाई सरल है। पहाडकी एक और चोटीपर भी एक मंदिर है। एवं पहाडके दरवाजेपर भी एक मंदिर है इन मंदिरोंमें बहुतसी प्राचीन प्रतिबिंब विराजमान हैं। इन मन्दिरोंका दर्शनकर सबसे बडे मंदिरमें जाना चाहिये। इस मंदिरमें, बाहिर परिक्रमामें, मंदिरके बीच बाडेमें और देहरीमें सैकडों प्र-

तिमा विराजमान हैं । ये प्रतिमा अतिशय प्राचीन खंडित और अखंडित हैं । मंदिरके समीप स्थानकमें इन्द्रजीत और कुम्भकर्णकी चरणपादुका विराजमान हैं । यह चूलगिरि क्षेत्र परम पवित्र है । यहांसे इन्द्रजीत कुम्भकरण आदि मुनिवर मोक्ष पधारे हैं। बडे मंदिरके ऊपरसे नरवदा (रेवा) नदी जो सिद्धवरकूटके पास बहती है, दीख पडती है। यह नदी वैष्णव लोगोंका बडा भारी तीर्थ है । वे लोग इसे नरमदा माई कहकर पुकारते हैं । हम लोगोंका भी यह नदी पवित्र तीर्थ है क्योंकि इस रेवा नदीसे साढे तीन करोड मुनिमहाराज मोक्ष पधारे हैं । यहांके दर्शनकर यात्रियोंको फिर बडवानी शहर लौट आना चाहिये ।

बडवानीसे २० मीलकी दूरीपर तालणपुर गांव है। यह अतिशय क्षेत्र है सुसारी होता हुआ बैलगाडीका माग है । यात्रियोंको बैलगाडीसे जाना चाहिये । सुसारीमें सेठ रोडमल मेघराजजी अति सज्जन धर्मात्मा पुरुष रहते हैं। यात्रियोंको इनके यहां ठहरना चाहिये । यहांपर एक मंदिरजी हैं उनका दर्शन करना चाहिये । यहांसे तालनपुर करीब तीन ३ मील पश्चिमकी ओर है । यहांपर पुजारी कुकसी शहरसे आता है पीछे वहीं लौट जाता है इसलिये यात्रियोंको चाहिये कि रातभर सुसारी ठहरकर वे सात बजेके भीतर ही तालनपुर पहुंच जांय, नहीं तो पुजारीके बिना दर्शन आदिकी दिक्कत उठानी पडेगा ।

श्रीतालनपुरजी (अतिशयक्षेत्र)

यह क्षेत्र जंगलमें है। एक धर्मशाला है। कुकसीशहर यहांसे करीब तीन मील है। यहांपर दो मंदिर श्वेतांबरी और एक दिगम्बरी है। दिगम्बरी मंदिर बडा सुदृढ और मनोहर है। श्वेतांबरी मंदिरोंमें भी बहुतसी दिगम्बर प्रतिमा विराजमान हैं। यात्रियोंको जांचके साथ दर्शन करने चाहिये। इन तीनों मंदिरोंके अन्दर अत्यन्त मनोज्ञ हजारों वर्षोंकी प्राचीन प्रतिमा जमीनके अन्दरसे निकली हुई हैं। सुना जाता है किसी समय एक किसान हल जोत रहा था। उसे ही ये प्रतिमा मिलीं थीं। यह खेत क्षेत्रके मंदिरके पीछे है। दिगम्बर मंदिरमें सात प्रतिबिंब हैं उनमें मूल-नायक प्रतिमा श्रीमल्लिनाथ भगवानकी बडी ही रूपवान शांत वीतराग हैं। इस प्रतिमाजीकी तुलना करनेवाली शायद ही कहीं प्रतिमा होगी। तालनपुरसे पक्की सडक दाऊद गोधराको भी जाती है यहांसे दर्शनकर यात्रियोंको कुकसी जाना चाहिये।

कुकसी शहर

यह शहर बडोदाके राज्यमें है। यहां पर दिगम्बर मंदिर और दिगम्बरी भाइयोंके घर दो हैं। श्वेतांबर मंदिर ३६ छत्तीस हैं। ये सभी मंदिर बहुत बडे हैं। उनमें सात मंदिर तो अवश्य देखने योग्य हैं। शहर भी देखने लायक

है। श्वेताम्बरी भाइयोंके यहां ३०० तीनसौ घर हैं। बहुतसे श्वेतांबरी लोग यहांके सज्जन हैं। कुकसीसे धार करीब २० बीस कोशकी दूरीपर है। पकी सडक है। मोटर तांगा बैलगाडी आदि सवारियां जाती हैं। यात्रियोंको यहांसे 'धार' जाना चाहिये।

धार

यह धार, धारावती नगरीके नामसे प्रसिद्ध है। यह प्राचीन विख्यात शहर है। यहींपर राजा मुंज कुंज विक्रमादित्य भोज कवि कालिदास गुरुवर मुनि मानतुंग सेठ धनंजय आदि प्रचण्ड राजा और विद्वान हुये थे। वर्तमानमें भी यह सूर्यवंशी राजाकी राजधानी है। यहां एक जैन मंदिर और ३० तीस घर दिगम्बर जैनियोंके हैं। यहांपर राजा साहबका किला, महल, दश मस्जिदें, मुंजसागर कुंजसागर आदि ८ तालाब, कालीदासके सामनेका बना हुआ कालीदेवीका मंदिर, कालीदेवीके मंदिरके पासका तालाव, थोडी दूरपर गंगा, तेलिनकी लाट, राजा भोजकी पाठशाला, कमाल मोलाकी मस्जिद, हवा बंगला, झीरा महल, लालबाग, बडा हाई स्कूल, संस्कृत विद्यालय, पुराना महल आदि अनेक चीजें देखनेके लायक हैं। वहांसे चार रास्ता जाती हैं—

१	धर्मपुरी बीकानेर बडवानी	१
१	इंदौर राज पीपल्या आदि	२
१	रतलाम	३
१	मऊकी छावनी ।	४

परन्तु धारसे लौटकर यात्रियोंको मऊकी छावनी ही जाना चाहिये। मऊसे मोरटंका (खेडी घाट) जाना चाहिये। मऊसे मोरटंकाकी स्टेशनके बीचमें पहाडी जंगल है। पहाडोंको फोडकर रेल निकाली गई है। यहांकी शोभा बडी ही रमणीय और दर्शनीय है।

मोरटंका (खेडी घाट)

स्टेशनके पास ही एक विशाल धर्मशाला है। इस धर्मशालाका निर्माण रायबहादुर सेठ कस्तूरचन्दजीने किया है। एक जैन मंदिर है। यात्रियोंको सर्व बातका यहां आराम मिलता है। यात्रियोंको विना किसी खटकाके यहां उतर जाना चाहिये। यहांसे करीब ६ मीलकी दूरीपर 'ओंकार महाराज' नामका स्थान है। रास्ता पक्की सडक और बैलगाडीकी सवारी मिलती है। यहांसे यात्रियोंको ओंकार महाराज जाना चाहिये।

ओंकार महाराज नरमदामाई

यहां बैल गाडीसे उतरकर साथमें एक कुली लेना चाहिये. थोडी दूरपर नरमदा नदीकी धार है वहां जाना

चाहिये। नदीकी उतराई प्रति मनुष्य दो पैसा)॥ लगता है इसलिये दो पैसा देकर नदी पार करना चाहिये। आधा गांव नदीकी इस पार और आधा उस पार बसा हुआ है. दोनों ओर वैष्णव और शिवजीके अनेक मंदिर हैं। उस पारके ऊपर एक विशाल मंदिर ओंकार महाराजका है। यह मंदिर पहिले जैनियोंका था परन्तु अब दूसरोंके हस्तगत हो गया। यहां हजारो हिन्दु वैष्णव आया जाया करते हैं। नरमदा और रेवा नदोका यहां समागम हुआ है। रेवा नदीको यहांके लोग कामेरी नदी बोलते हैं। ओंकारजी और नरमदा माई ये दोनों तीर्थ हिन्दुओंके बडे भारी तीर्थ हैं। यहांसे यात्रियोंको ओंकारजीके मंदिर आदिकी शोभा निरखते निरखते नदीके किनारे एक मील जाना चाहिये। यहांपर रेवा नदी है। उसे उतरकर श्रीसिद्धवर कूट क्षेत्र है। वहां पहुंच जाना चाहिये।

विशेष—यदि कोई भाई लौटकर ओंकार महाराजमें ठहरना चाहैं तो नावसे पार होकर जहां पहिले बैलगाडीसे उतरना हुआ था, वहां उतरें। वहांपर दो विशाल धर्मशाला वैष्णवोंकी बनी हुई हैं। मुमानियत नहीं है।

श्रीसिद्धवर कूट (सिद्धक्षेत्र)

यहां चारो ओर कोट खिचा हुआ है। कोटका एक विशाल दरवाजा है। कोटके भीतर बडी २ चार धर्मशाला

हैं। आठ ८ बडे २ जिनमंदिर है। इन मन्दिरोंमें नवीन प्राचीन बहुतसी प्रतिमा विराजमान हैं। जो महामनोज्ञ और शांति प्रदान करनेवाली हैं। यहांसे दो चक्रवर्ती दश कामदेव आदि साढे तीन करोड मुनि महाराज मोक्ष पधारे हैं। यात्रियोंको यहांका दर्शनकर थोडी दूर आगे एक आदमी साथ लेकर जंगलमें जाना चाहिये। वहांपर एक टूटा फूटा बहुत प्राचीन मंदिर है वह देखना चाहिये। वहांसे लौटकर फिर मोरटंका आना चाहिये और वहांसे रेलके रास्ता खण्डवा रवाना हो जाना चाहिये।

खंडवा

स्टेशनसे थोडी दूरके फासलेपर ही शहर बसा हुवा है। शहरमें एक जैन मंदिर एक धर्मशाला है। मंदिरमें बहुतसी प्राचीन प्रतिमा विराजमान हैं जो महा मनोहर दर्शनीय हैं। यहां दिगम्बर जैनियोंके घर करीब पचास ५० के हैं। यहांका शहर देखनेके लायक है। खंडवा शहर देखकर यात्रियोंको नान्दगांव जाना चाहिये। रास्तामें भुषावल जलगांव चालीसगांव आदि शहर पडते हैं। नांदगावको जानेवाली गाडी जलगांव बदली जाती है यह ध्यानमें रखना चाहिये। खंडवासे रेल तीन ओर जाती है—१ जलगांव मनमाड मुम्बई, २ इन्दौर अजमेर, ३ इटारसी जबलपुर।

यह बात यात्रियोंकी इच्छापर निर्भर है कि—कोई भाई भुषावल आदि शहरोंको भी देखता जाय। इन शहरोंके देखनेमें किसी प्रकारका कष्ट नहीं। यहां भुषावल आदि शहरोंका कुछ हाल लिखा जाता है—

भुषावल (जंकशन)

भुषावलका एक विशाल स्टेशन है। देखने लायक है। स्टेशनके पास ही शहर बसा हुआ है। यह एक अच्छा शहर है। यहांपर एक जैन मंदिर और ३० तीस घर दिगम्बर जैनियोंके हैं। यहांके मंदिरमें जो प्रतिमा विराजमान हैं बडी ही मनोहर और प्राचीन हैं। यहांसे रेलका रास्ता तीन ओर है—

१ खंडवा २ आकोला नागपुर और ३ मनमाड बंबई।

जलगांव (जंकशन)

यह शहर स्टेशनसे एक मीलकी दूरीपर है। यहांके सेठ चुन्नीलालजी श्रावकके घरमें चैत्यालय है। दिगम्बर जैनियोंके ५ पांच घर हैं। शहर मामूली है रेलोंका जाना ऊपरके समान है।

चालीसगांव (जंकशन)

यह स्थान स्टेशनके पास ही है। यहां एक जिनमंदिर और २० बीस घर दि० जैनी भाइयोंके हैं। मामूली अच्छा शहर है। यहांसे धूलिया चींचपाडा तक रेल जाती

है। यहांसे श्रीमांगीतुंगी क्षेत्रको भी सुभीतासे जाया जा सकता है।

धूलिया (विशाल शहर)

यह शहर स्टेशनसे दो २ मीलकी दूरीपर है । तांगा और घोडा गाडीकी सवारी मिलती है । यहां एक जैन मंदिर है। २५ घर जैनी भाइयोंके हैं। शहरमें अनेक चीजें देखने योग्य हैं। यहांपर सेठ हीराचन्द गुलाबचन्द नामके सज्जन धर्मात्मा व्यक्ति रहते हैं। यहांसे चींचपाडा तक रेल है। चींचपाडासे ४५ मीलकी दूरीपर मांगीतुंगी क्षेत्र है। पक्की सडक है । जानेकेलिये बैल गाडीकी सवारी मिलती है।

धूलिया शहरसे भी ६० मीलकी दूरीपर मांगीतुंगी क्षेत्र है। पक्की सडक है। बैल गाडीसे जाना पडता है। धूलिया और मांगीतुंगीके बीचमें कुंसंबा साकरी पीपरनार नामके कसबे पडते हैं। सबमें एक एक जिनमंदिर और जैनी भाइयोंके घर हैं।

नांदगांव

यह ग्राम स्टेशनके पास है। यद्यपि यह ग्राम छोटा है परन्तु यहांका मंदिर विशाल है। इसके अन्दर जो प्रतिमा विराजमान हैं बडी ही मनोहर हैं। शान्तिपूर्वक यात्रियोंको यहां दर्शन करना चाहिये। जैनी भाइयोंके घर अनुमान

२५ के हैं यात्रियोंको यहां जरूर उतरना चाहिये । यहांसे मनमाड जाना चाहिये । रास्ता पक्की सडक है । यह सडक एरोला दौलताबाद औरंगाबाद तक जाती है। बैलगाडीकी सवारीसे जाना पडता है ।

मनमाड (जंकशन)

यहांका स्टेशन बहुत बडा है । यहांसे एक रेल्वे लाइन बंबई, एक औरंगाबाद, हैदराबाद, एक धौंड हुबली और एक खंडवा इसप्रकार ४ लाइन गई हैं । यहांपर एक धर्मशाला वैष्णवोंकी है । यहांसे ६४ मीलकी दूरी पर मांगीतुंगी क्षेत्र है । रास्ता पक्की सडकका है । बैलगाडीसे जाना होता है । बीचमें मालगांव और सटाना गांव पडता है । मनमाडसे यदि यात्रियोंको पहिले नासिक और गजपंथा जाना हो तो रेल्वे द्वारा नासिक जाय । और वहांसे गजपंथा क्षेत्रके दर्शन करे । फिर वहांसे ६० मीलकी दूरीपर मांगीतुंगी क्षेत्र है बैलगाडीका रास्ता है इसलिये मांगीतुंगी चले जाय और यदि किसी भाईको पहिले मांगीतुंगी जाना हो तो सीधे मनमांडसे वे मांगीतुंगी चले जाय फिर बैलगाडीसे नासिक गजपंथा आ जाय (अथवा वापिस मनमाड लौट जांय फिर रेलसे नासिक आ जाय) यह बात यात्रियोंकी खुशीपर है । वे जिसमें सुभीता पडे वैसा करें । मनमाडसे मांगीतुंगीका रास्ता इसप्रकार है । बीचमें २२ मीलके फासलेपर एक मालेगां गांव है ।

माल्या गांव

यह धूलिया माल्या गांवके नामसे प्रसिद्ध है क्योंकि यहांसे २७ मीलकी दूरीपर धूलिया शहर है। यहांसे माल्या गांवतक पक्की सडकका रास्ता है। माल्या गांव और धूलिया शहर दोनों पास पास होनेसे इसका नाम धूलिया माल्या गांव है, ऐसा जान पडता है। माल्या गांव शहर अच्छा देखने लायक है। यहां एक विशाल नदी बहती है। नदीके ऊपर एक पुराना किला है जो देखने योग्य है। यहांपर एक जिनमंदिर और ७ घर जैनी भाइयोंके हैं। यहां २४ मीलके फासलेपर 'सटाना' है। रास्ता पक्का सडकका है, यात्रियोंको यहांसे सटाना जाना चाहिये।

माल्या गांवसे मांगीतुंगी क्षेत्र भी ३८ मीलके फासलेपर है। बैलगाडीका कच्चा रास्ता है, जानेके लिये सवारी बैलगाडीकी मिलती है।

सटाना

यह गांव मामूली अच्छा है। १ जैन मंदिर और ४ घर जैनी भाइयोंके हैं। यहांसे मांगीतुंगी १५ मील है। पक्की सडकका रास्ता है। बैलगाडीकी सवारी जाती है।

यात्रियोंको यह ध्यानमें रखना चाहिये कि नासिक और मनमाड दोनों ओरसे जानेपर सटाना मिलता है।

श्रीमांगीतुंगीजी (सिद्धक्षेत्र)

यह क्षेत्र एक विशाल जंगलमें है। पहाडके नीचे एक धर्मशाला और धर्मशालाके अन्दर ही एक मंदिर है। मंदिरमें भगवान पार्श्वनाथजीकी प्रतिमा विराजमान है जो कि श्यामवर्ण बडी ही मनोहर हैं। यहांसे पहाडकी ऊँचाई करीब ३ मीलके है। दो मीलतक चढाई बडी कठिन है। यात्रियोंको बड़ी सावधानीसे चढना चाहिये। बहुत रात्रिमें पहाडपर नहीं जाना चाहिये। पहिले मांगीका पहाड पडता है। इस पर्वतपर ४ गुफा हैं जो अत्यन्त सुन्दर हैं। यहां पहाडमें बहुतसी प्रतिमा खुदी हुई हैं। यात्रियोंको पूजन प्रक्षालकर परिक्रमा देना चाहिये। यहांसे लौटकर दो मीलके फासलेपर तुंगीका पहाड है वहां जाना चाहिये। मांगीके पहाडसे उतरते समय बडी सावधानी रखना चाहिये। तुंगी पहाडका चढना भी कठिन है तुंगी पहाडपर तीन गुफा हैं। मांगी पहाडकी अपेक्षा इस पहाडमें प्रतिमा कम हैं, परन्तु सब प्राचीन और मनोहर हैं। इन दोनों पहाडोंसे राम हनुमान सुग्रीव आदि ९९ करोड मुनीश्वर मोक्ष पधारे हैं। यहां पूजन दर्शन परिक्रमा देकर नीचे आवे। उतरनेका रास्ता दूसरा है। यह रास्ता भी कठिन है। बडी सावधानीसे उतरना चाहिये। दो मील उतर आनेपर २ गुफा मिलती हैं। ये दोनों गुफा सुध बुधजीके नामसे प्रसिद्ध हैं। वहां

पर एक कुण्ड है और बहुतसी मनोज्ञ प्रतिमा पत्थरमें खुदी हुई हैं। यहांसे उतरकर यात्रियोंको धर्मशालामें आ जाना चाहिये। फिर वहांसे नासिकको रवाना हो जाना चाहिये।

नासिक शहर

त्र्यम्बक दरवाजेके भीतर एक जैन मंदिर और एक धर्मशाला है। यहां उतरकर यात्रियोंको फिर शहर जाना चाहिये। यह शहर उत्तम देखनेके लायक है। यहां गंगा नामकी नदी है। नदीके किनारे शैव तथा वैष्णवोंकी बडी बडी धर्मशाला मंदिर कुण्ड आदि चीजें हैं जो दर्शनीय हैं। हिन्दु लोगोंका यह बडा भारी तीर्थ है। हजारों भक्त हिन्दु यहां आते जाते हैं। जो यात्री बैल गाडीसे नासिक आते हैं उनको नासिक शहरमें आकर तांगा वा बैलगाडीसे मशुर गांव जाना चाहिये। मशुर गांव नासिक शहरसे करीब ३ मीलके फासलेपर है। मशुर गांवमें १ जैन धर्मशाला है वहां जाकर उतरना चाहिये किन्तु जो यात्री नासिक ष्टेशनपर रेलसे उतरें उनको चाहिये कि वे पहिले ट्रामगाडी, मोटर, घोडा गाडी और बैलगाडी आदिकी सवारीसे नासिक शहर आवें। नासिक शहर, स्टेशनसे करीब ५ या ६ मीलकी दूरी पर है। फिर नासिकसे वे करीब ३ मीलके फासलेपर मेसुर जैन धर्मशाला चले जांय।

इस जैनधर्मशालासे गजपंथा क्षेत्र करीब एक १ मील है। अन्दाजा नासिक स्टेशनसे गजपंथा क्षेत्रकी दूरी १० मीलके करीब समझ लेनी चाहिये।

श्रीगजपंथा सिद्धक्षेत्र

इस क्षेत्रका पहाड करीब आधा मील ऊंचा छोटासा है। चढाई सरल सीधी है। चढनेके लिये सीढी लगी हैं। पहाडके ऊपर २ गुफा और दो कुंड हैं। कुण्डोंमें जल रहता है. अनेक प्रतिमा पहाडके पत्थरकी बनी विराजमान हैं। पहाडपर परिक्रमाका रास्ता है इसलिये यहांकी प्रतिमाओंकी पूजा बन्दनाकर परिक्रमा देना चाहिये। यहांसे बलभद्र आदि आठ करोड मुनीश्वर मोक्ष पधारे हैं। यहांसे यात्रियोंको नासिक लौट जाना चाहिये।

नासिकसे करीब १४ मीलके फासलेपर त्र्यम्बक शहरके रास्तापर एक अंजनी नामका ग्राम और अंजन गिरि नामका पहाड पडता है। ये स्थान अतिशय क्षेत्र हैं और सडकसे दक्षिण दिशाकी ओर १ मील हटकर हैं। पहिले रास्तामें निर्मल जलसे भरी हुई दो बावडी पडती हैं पीछे अंजनी गांव और अंजन गिरि नामका पहाड आता है।

श्रीअंजनगिरि (अतिशय क्षेत्र)

यहां अंजनी गांवमें १ जैनधर्मशाला है। एक मुनीम रहता है। उससे पूछकर यात्रियोंको ठहरना चाहिये। गांवके

पास फूटे टूटे करीब १३ मंदिर हैं । ये मन्दिर अत्यन्त प्राचीन हैं । इनकी शिखर, भीतें, स्तंभ, दरवाजे आदि स्थानोंपर बहुतसे प्रतिबिम्ब हैं जो कि दर्शनीय हैं । एक मन्दिरमें एक अत्यन्त प्राचीन मनोज्ञ अखंड प्रतिमा विराजमान है उसका दर्शन करना चाहिये । यहांसे मालीको संग लेकर पहाडपर जाना चाहिये । यह पहाड कुछ बडा और यहांकी चढाई सरल है । करीब १ मीलकी ऊंचाईपर एक विशाल गुफा है । यह गुफा अधिक लम्बी, पहाडका पत्थर काटकर बनायी गई है. यहांपर कुल १३ प्रतिमा हैं जो खंडित वा अखण्डित मनोज्ञ हैं । यहांपर एक कुण्ड है जिसमें सदा निर्मल जल भरा रहता है, यह भयानक जंगलमें पहाडी स्थान बडा प्राचीन है. जो यात्री यहांसे लौटना चाहैं वे लौट सकते हैं किन्तु जिनको पहाडके उपर जानेकी इच्छा हो उनको पहडापर चढ जाना चाहिये । ऊपर जानेके लिये बडी २ सीढियां लगी हुई हैं । परंतु अधिक प्राचीन होनेके कारण खंड खंड हैं । यात्रियोंको ऊपर पहाडपर जाते समय मालीको संग रखना चाहिये, गुफासे १ मीलकी ऊंचाईपर एक अत्यन्त प्राचीन मकान बंगला और एक तालाव है जो दर्शनीय है । तालावके पास १ छोटा पहाड और है वहांपर दो देवियोंका एक स्थान है. ये दोनों देवियां यहांपर अंजनी और सीताजीके नामसे मशहूर हैं । हिन्दु लोग इनकी पूजा भक्ति करते हैं, पूछनेसे

मालूम हुआ कि अंजना सतीका यहीं वनवास हुआ था। हनुमान भी यहीं उत्पन्न हुये थे, इसलिये इस गांवका नाम अंजनी और पहाडका नाम अंजनगिरि है, सीतादेवी भी यहीं आकर रही थीं इसलिये इस पहाडपर अंजनादेवी और सीता देवीकी मूर्ति है। यह पहिले एक विशाल शहर था। जैनियोंका एक अपूर्व स्थान था परन्तु काल दोषसे यह इस दशामें परिणत हो गया है। यहांसे यात्रियोंको नासिक स्टेशन लौट जाना चाहिये।

अंजन गिरि पहाडसे ७ मीलकी दूरी पर एक त्र्यंबक नामका बडा शहर है। यहां त्रिवेणी नदीका प्रवाह बहता है। त्र्यंबक महादेवका एक विशाल मंदिर है। जो हिन्दु लोग नासिक आते हैं वे सब ही त्र्यंबक महादेवकी वंद-नार्थ आते हैं। इसलिये नासिकसे त्र्यंबक शहर तक का रास्ता चालू रहता है। नासिकसे त्र्यंबक २२ मील है। यह बात यात्रियोंकी मर्जीपर है कि त्र्यंबक जावे या न जावें प-रन्तु वहांसे भी नासिक स्टेशन आना चाहिये।

नासिक स्टेशनसे बम्बई तक रेल जाती है। यात्रियोंको नासिकसे मनमाड आना चाहिये। मनमाडसे गोदावरी लाइनमें ।।।≈) की टीकट लेकर ऐरोला रोड स्टेशन जाना चाहिये। यह स्टेशन औरंगाबादके इसी ओर है।

एरोला स्टेशनसे ६ मीलकी दूरीपर एरोला रोड गांव

बसा हुआ है। पक्की सडक बैलगाडीका रास्ता है। यात्रियोंको इस गांवमें आना चाहिये।

एरोलारोड गांव (ऐरोलाकी गुफाका दर्शन)

यह एरोला ग्राम छोटा पर बहुत प्राचीन है। इसमें अनेक प्रकारकी प्राचीन रचना है। इस गांवके पास १ पहाड है जो करीब दो मीलका लंबा है। पहाडमें अत्यन्त मनोहर बहुमूल्य प्राचीन रचना है। इस रचनाको देखकर यह भावना होती है कि जिसने इस पहाडकी यह मनोहारिणी रचना नहीं देखी उसका मनुष्य जन्म व्यर्थ ही है। इस पहाडमें छोटी बडी ५४ गुफा हैं। इस समय भी ये गुफा स्पष्ट देखने योग्य हैं। जैनी बौद्ध वैष्णव शैव मुसललमान आदि सभी मनुष्य इन गुफाओंको पूजने आते हैं। इन गुफाओंमें ९ गुफा अत्यन्त विशाल और मनोहर हैं। उनमें भी तीन गुफाओंकी रचना महा मनोहर है अवर्णनीय है। साक्षात् देखनेसे ही इनका गौरव जाना जा सकता है ये ९ गुफा तीन २ मंजलकी धारक विशाल मूर्तियोंकी धारक हैं। हजारों मनुष्य इनमें प्रवेश कर सकते हैं। गुफाओंके नाम इस प्रकार है—

१ पार्श्वनाथजीकी गुफा २ नागशय्या ३ गणेशभुवन। ये तीनों गुफा ९ खंडोंकी है। इनके भीतर बडा भारी जंगल है। १३ कुण्ड हैं जिनका जल सदा निर्मल और

गरम रहता है। औरंगाबाद दौलताबाद ऐरोलाके धोबी लोग यहां कपडे धोने आते हैं। चौथी गुफा इन्द्रसभा कही जाती है जो साक्षात् इन्द्र सभाके ही समान महा मनोहर है। इसमें दो हजारके करीब मनुष्य ठहर सकते हैं। तथा ५ कृष्ण लीला ७ शिवालय, ८ कैलाशपुरी, ९ बौद्ध धर्म गौतमपुरी कही जाती हैं। यहांका मनोहर वर्णन लिखा नहीं जा सकता। यात्रियोंको अवश्य यहां दर्शन करना चाहिये यह सब वर्णन एरोला रोडकी गुफाका है परन्तु एरोला गांवके पास भी लाल पत्थरका १ बडा कीमती मंदिर है और एक लीला कुण्ड है। ये दोनों ही चीजें दर्शनीय हैं। यात्रियोंका गुफाओंकी मनोहारिणी रचना देखकर एवं एरोलाके पासके लाल पत्थरके मंदिरके दर्शन और लीला कुण्ड देखकर फिर एरोला गांवमें भीतर आ जाना चाहिये और किसी स्थानपर ठहर जाना चाहिये।

जैनके तीर्थ।

एरोला गांवमें जिस स्थानपर ठहरते हैं वहां पर स्नान आदिसे निवृत्त होकर कुछ सामग्री हाथमें लेलेनी चाहिये और एक आदमी को संग लेकर सडकके रास्ताकी ओर जाना चाहिये। यहां पर गांवसे पाव मीलकी ऊंचाई पर १ पहाड है। पहाडके ऊपर भगवान पार्श्वनाथका मंदिर बना हुआ है। यह मंदिर नीचेसे दीखता है। दो गुफा भी

हैं। पत्थरका हाथी सिंह कुंड और इन्द्र आदिकी रचना यहांकी मनोहारिणी है। इस मंदिरमें बहुतसी प्रतिमा विराजमान हैं। एक प्रतिमा श्रीपार्श्वनाथ स्वामीकी विराजमान है जो अत्यन्त विशाल और मनोहर है। यात्रियोंको यहांका दर्शन कर नीचे उतरना चाहिये। यहां पर ७ गुफा और हैं। इनमें हजारों प्रतिमा विराजमान हैं जो कि अत्यंत मनोहर और दर्शनीय हैं। जैनियोंका यह स्थान अपूर्व है। पर्वतकी सब गुफाओंको देखकर यात्रियोंको एरौला गांव लौट आना चाहिये। ऐरोला गांवसे करीब ९ मीलकी दूरीपर दौलताबाद स्टेशन है। यात्रियोंकी इच्छापर निर्भर है कि रास्तेमें अनेक प्रकारकी रचना देखते हुए या तो वे ऐरौलासे बैलगाडीकी सवारीसे दौलताबाद स्टेशन जांय या फिर वापिस एरौला रोड स्टेशन चले जांय परन्तु दोनोंमें जिस ष्टेशन पर जांय वहांसे औरंगाबाद चले जांय।

विशेष—एरौलासे दौलताबाद ८ मील है और वहांसे १ मील स्टेशन है। दौलताबादसे १ रास्ता औरंगाबाद भी जाता है। करीब ६ मील है। रास्ता बैलगाडीका है। यात्रियोंकी खुशी या तो वे दौलताबादसे बैलगाडीमें बैठकर औरंगाबाद जांय या फिर रेलके रास्ता चले जांय। यहां पर गुफाओंको 'लहाना' कहते हैं यह ध्यानमें रखना चाहिये।

औरंगाबाद।

यह शहर स्टेशनसे २ मीलकी दूरीपर बसा हुआ है। शहर अन्दर चौक बाजारकी १ गलीमें धर्मशाला है। वहीं पर एक विशाल मंदिर है जिसके भौंरे और वेदीमें करीब १ हजारके महा मनोहर प्राचीन प्रतिमा विराजमान हैं। यह मंदिर पंचायती है। इसके आस पास और भी सुंदर ४ मंदिर है। ७ चैत्यालय हैं जो घरोंमें विराजमान हैं। मंदिरके मालीको संग लेकर यहांके सब मंदिरोंके दर्शन करना चाहिये। चौक बाजारसे करीब डेढ मीलकी दूरीपर एक गोमापुरा स्थान है। यात्रियोंको यहां तांगासे जाना चाहिये गोमापुरामें १ प्राचीन मंदिर है। बहुत सी प्राचीन प्रतिमा विराजमान हैं। गोमापुराके पास बादशाही प्राचीन एक मस्जिद है जो देखने योग्य है। यह मस्जिद आगरेके ताजबीबी रोजा सरीखी है। यहांसे पाव मीलकी दूरीपर पहाडकी गुफा (लहाना) है गोमापुराके मालीको साथ लेकर यात्रियोंको यहां आना चाहिये। पहाडकी ऊंचाई करीब एक फर्लांग है। सडक और सीढी जानेके लिये हैं। पहाड पर सबसे पहिले पत्थरका बना हुआ १ नेमिनाथ भगवानका मंदिर पडता है। यह मंदिर अत्यंत प्राचीन होने पर भी ठीक है। इसमें प्राचीन बडी मनोहर ४ फुट ऊंची श्रीनेमिनाथ भगवानकी प्रतिमा विराजमान हैं। मंदिरके

आगे ३ प्राचीन गुफा हैं। जिनमें पत्थरमें खुदी हुई बहुतसी दिगंबर प्रतिमा और बौद्ध प्रतिमा हैं। यहांकी रचना भी एरौला क्षेत्र सरीखी है। यहांके दर्शन कर यात्रियोंको औरंगाबाद आना चाहिये। शहरमें भी अनेक चीजें देखने योग्य तलाशकर देख लेनी चाहिये। यह शहर प्राचीन लंबा चौडा विशाल है। करीब ६० के करीब जैनियोंके घर हैं।

यहांसे करीब २० मीलकी दूरी पर श्री कचनेरा पार्श्वनाथजी अतिशय क्षेत्र है। बीचमें चीकलठाना पीपरी आदि अनेक गांव पडते हैं। रास्ता बैलगाडीका है। यात्रियोंको यहां आना चाहिये।

श्रीकचनेरा पार्श्वनाथजी (अतिशयक्षेत्र)

यह ग्राम प्राचीन मामूली अच्छा है। यहां पर १ विशाल शिखरबंद मंदिर और एक धर्मशाला है। प्रति वर्ष मेला लगता है। मंदिरमें ३ वेदी हैं। बहुतसी प्रतिमा विराजमान हैं। एक वेदीमें १ प्रतिमा श्रीपार्श्वनाथ भगवान की विराजमान हैं जो कि कटीगर्दनकी है परन्तु अत्यंत अतिशयवान हैं। ग्रामके पास एक टीला है। उसपर चतुर्मुख श्रीनंदीश्वरकी प्रतिमा विराजमान हैं। श्रावकोंके घर १५ है। भक्तिपूर्वक यात्रियोंको यहांका दर्शन करना चाहिये।

कचनेरा क्षेत्रसे १२ मीलकी दूरीपर चीकलठाना स्टेशन है। बैलगाडीसे यहां यात्रियोंको आना चाहिये। और

वहांसे टिकट लेकर मीरखेडकी स्टेशन चला जाना चाहिये चीकलठाना और मीर खेडके बीचमें १ परबणी नामका बडा शहर पडता है। यहां हिंदुओंका बडा तीर्थ है। यदि देखनेकी इच्छा हो तो यहां उतर जाना चाहिये, नहीं तो सीधा मीरखेड चला जाना चाहिये।

यह मीरखेड स्टेशन पूर्णा स्टेशनसे पहिले है। छोटासा है। यहां पूर्णा नदी वहती है। यहां भी हिंदुओंका तीर्थ है। यह नदी ऊखलदजीमें जाकर मिली है।

कचनेरा पार्श्वनाथजीको जो अतिशय क्षेत्र माना जाता है। वह अतिशय इसप्रकार है—

श्रीपार्श्वनाथ भगवानकी प्रतिमा वेदीमें विराजमान थी अकस्मात् उनका शिर गर्दनसे जुदा होगया। यहांके रहनेवाले श्रावकोंको बडी चिंता हुई। उन्होंने शीघ्र ही उस खंडित प्रतिमाकी जगह दूसरी नवीन प्रतिमा विराजमान करनेका प्रयत्न किया और सब प्रकारकी तैयारियां हो गईं। तो एक श्रावक जो वहींका रहनेवाला था रात्रिमें उसे प्रतिमाजीने यह स्वप्न दिया कि—

वेदीमें दूसरी किसी प्रतिमाजीके विराजमान करनेकी आवश्यकता नहिं है। मुझे ही विराजमान रक्खो. स्वप्नमें ही श्रावकने जवाब दिया. भगवन्! आपका शिर कट चुका है, आप अब कैसे विरजामान हो सकते हैं? उत्तर मिला, यह वात ठीक है परन्तु एक काम करो जमीनके भीतर १

कोठरी बनवाओ। मेरा शिर कंधेपर रखकर मुझे कोठरीमें विराजमान कर दो और एक मास तक वहीं रक्खो, मेरा शिर मजबूत हो जायेगा फिर मुझे वेदीमें विराजमान कर देना. जिस श्रावकको यह स्वप्न हुआ था, प्रातः काल बडे आनंदसे वह उठा और उसने सब पंचोंमें अपने स्वप्नका समाचार फैला दिया। यह आश्चर्यकारी वृत्तांत सुनकर सब लोगोंको बडा आश्चर्य हुआ. आनंदित हो तत्काल उन्होंने जमीनके अन्दर कोठरी बनवाई। गरम लपसी बनाकर और उसे प्रतिमाजीके कंधेपर रखकर शिर जोड दिया. एक मास तक वह प्रतिमा उसी कोठरीमें रक्खी गई। एक मासके बाद जब देखा गया तो शिर एकदम पक्का जुड गया. वे प्रतिमाजी पुनः बडे ठाट बाटसे उसी वेदीमें विराजमान कर दी गई। तबसे इस क्षेत्रका महान अतिशय बढ गया। बोलकबोलकर अभिषेक आदि होने लगा। आजतक वे ही प्रतिमाजी वेदीमें विराजमान हैं। अभीतक शिर कटेका चिन्ह है। जिस भाईको देखनेकी अभिलाषा हो प्रक्षाल पूजा करते समय वह खुशीसे देखे। इस पंचम कालमें भी ऐसी २ अतिशयवान प्रतिमा विराजमान हैं यह जानकर बडा आनन्द होता है, यह जो ऊपर अतिशय लिखा गया है बहुत थोडे वर्षका है। यहांकी यात्रा आनंदसे करनी चाहिये।

विशेष—यहांपर एक पाठशाला भाई हीरालालजीके

उद्योगसे खुली थी परंतु ग्रामके अत्यन्त छोटे होनेके कारण वह चल न सकी। अब वह पाठशाला शाहगंज घंटाघर बडी मस्जिदके पास चौक बजार औरंगाबादमें है और कचनेरा पार्श्वनाथ जैन पाठशालाके नामसे चालू है। इसके प्रबंधकर्त्ता भाई हीरालालजी साहब हैं। यहांपर एक बोर्डिंग हाउस भी है, यात्रियोंको इन दोनों संस्थावोंका अवलोकन भी अवश्य करना चाहिए। कचनेरा पार्श्वनाथसे मीरखेड स्टेशन चला जाना चाहिए।

मीरखेड स्टेशन

मीरखेड स्टेशनसे १ मील पीपरी गांव जाना चाहिए यहांपर १ जैन मंदिर और १५ घर जैनी भाइयोंके हैं, यहां उतरकर दर्शन करना चाहिए। यहांसे करीब २ मीलकी दूरीपर ऊखलद अतिशय क्षेत्र है. पीपरीमें सेठ अप्पारावजी सज्जन धर्मात्मा व्यक्ति हैं। पीपरीसे ऊखलद तक बैलगाडी का रास्ता है यात्रियोंको बैलगाडीसे यहां आना चाहिए।

ऊखलद अतिशय क्षेत्र

यह छोटासा गांव है. पूर्णा नदी बहती है। नदीके किनारे १ धर्मशाला और १ जैन मंदिर है। मंदिरमें एक प्रतिमा श्रीनेमिनाथ भगवानकी विराजमान है जो चतुर्थ कालकी महा मनोहर अतिशयसंयुक्त है। भाजकलीके मंदि-

रमें जैसी प्रतिमा है वैसी ही ये श्रीनेमिनाथ स्वामीकी प्रतिमा यहांपर है। अच्छीतरह वहांका दर्शनकर यात्रियोंको मीरखेड लौट जाना चाहिये। मीरखेडसे अलवल स्टेशनका टिकट लेना चाहिए। बीचमें १ पूर्णा स्टेशन पडती है। यह जंकशन है। यहां गाडी बदली जाती है। सिकन्दराबाद लाइनमें अलवल स्टेशन पडती है। वहांपर उतरना चाहिए।

अलवल (स्टेशन)

यह स्टेशन सिकन्दराबादसे एक स्टेशन पहिले है। यहांसे करीब ४ मीलकी दूरीपर कुलपाक माणिक स्वामी अतिशय क्षेत्र है। रास्ता तांगा और बैलगाडीका है। यात्रियोंको अलवलसे यहां आना चाहिये।

कुलपाक माणिक स्वामी (अतिशय क्षेत्र)

यहांपर १ धर्मशाला और एक प्राचीन मंदिर है। मंदिरमें श्रीआदिनाथ भगवानकी हरित वर्णकी महा मनोहर प्रतिमा विराजमान हैं। और भी यहांपर अनेक प्रतिमा हैं। बहुतसी प्रतिमा श्वेतांबरी लोगोंने श्वेतांबरी बना डाली हैं। यहां पर १ स्फटिक पाषाणकी श्रीमाणिक स्वामीकी प्रतिमाजी थीं वे इस समय लापता हैं। न मालुम कहां गायब हो गई। सुन पडता है यहां कभी २ केशरकी वृष्टि, सुगन्धित हवा आदि चमत्कार हुवा करते हैं। यहांसे आगे देखने योग्य

शहर सिकंदराबाद है । यदि कोई भाई यहां जाना चाहे तो यहां जावे और यहांके मंदिर आदि दर्शनीय चीजों को देखे । यदि न जावे तो उसे वापिस पूर्णा जंकशन स्टेशन चला जाना चाहिये । सिकंदराबाद देखकर भी पूर्णा जंकशन ही लोट जाना चाहिये ।

सिकंदराबाद ।

यह शहर निजाम सरकार हैदराबादके अंतर्गत है । यहां पर दो विशाल मंदिर हैं । अनेक चीजें देखने योग्य हैं । यहांसे चार रेलवे लाईन जाती हैं १ मनमाड़ २ बंबई ३ कलकत्ता ४ हैदराबाद । यदि किसी भाईको हैदराबाद जाना हो तो हैदराबाद चला जाना चाहिये ।

हैदराबाद निजाम ।

यह शहर स्टेशनसे एक मीलकी दूरीपर है । तांगासे जाना होता है । शहर जाना चाहिये । और शहरमें मीनार स्थानके पास १ जैन धर्मशाला है वहां जाकर ठहरना चाहिये । यहां पर अत्यंत मनोहर और विशाल मीनारके कामके दिगम्बर मंदिर ५ हैं । ८० घर दिगम्बर जैनियोंके हैं । सब मंदिरोंमें बडी मनोज्ञ और प्राचीन प्रतिबिंब हैं । दर्शन कर बडा आनंद होता है । यह शहर राजधानी है । बहुत बडा है । यहां पर ४ मीनार १ हुसेन सागर १० प्रकारका बडा प्रसिद्ध मका (कबर स्थान) अनेक मस्जिद

मीर आलमका तालाव, राजमहल, बडा कुंड, किला, (गढ) गोलकुण्ड, कचहरी पुराना मकान आदि अत्यंत मनोहर चीजें देखने योग्य हैं। यहांसे लौटकर यात्रियोंको पूर्णा जंकशन जाना चाहिये।

पूर्णा जंकशन।

पूर्णा जंकशन गाडी बदलकर हींगोली स्टेशन जाना चाहिये। यहांसे हिंगोलीका किराया १।।) रुपया है हिं-गोलीसे करीब ४० मीलकी दूरीपर अंतरिक्ष पार्श्वनाथ नामका अतिशय क्षेत्र है। मनमाड आकोला होकर भी अं-तरिक्ष पार्श्वनाथ जाना होता है यदि कोई भाई पूर्णासे लौटकर मनमाड जाकर अंतरिक्ष पार्श्वनाथ जावे तो भी जा सकता है परन्तु लौटकर मनमाड आकर अंतरिक्ष पा-र्श्वनाथ जानेमें खर्च बहुत पडता है। आकोलासे ४० मील अंतरिक्ष पार्श्वनाथ क्षेत्र है और पूर्णासे आकोलाके ७ रुपये किराये लगते हैं। दिक्कत भी रहती है इसलिये पूर्णासे हिंगोली और हिंगोलीसे अन्तरिक्ष पार्श्वनाथ जाना ही ठीक है। कम खर्च और सुलभ है। यह बात यात्रियोंकी इच्छा पर निर्भर है वे जैसा सुभीता समझें करें। जो यात्री हिं-गोली स्टेशन पर उतरें उन्हें हिंगोली शहर जाना चाहिये। यह शहर विशाल और देखने लायक है।

हिंगोली स्टेशन।

हिंगोली शहर स्टेशनसे १ मील है। शहरमें बडे बाजारमें सेठ कुशलसाव मूयालालजीके मकानपर ठहरना चाहिये। यहां पर दिगम्बर मंदिर ४ हैं। उनमें दो बडे २ हैं जो कि सुन्दर हैं। दिगम्बर जैनी भाइयोंके घर करीब ४० के हैं। यहांकी आब हवा देखनेके लायक है। यहांसे करीब २८ मीलके वाशम शहर है। रास्ता पक्की सडकका है। बैलगाडी और मोटरकी सवारियां जानेके लिये मिलती हैं। यात्रियोंको हिंगोलीसे वाशम जाना चाहिये। मोटरका किराया फी सवारी २॥) लगता है।

वाशम शहर।

यह शहर भी हिंगोलीके समान बडा है। २ विशाल जैन मंदिर हैं। बहुतसी प्रतिमा विराजमान हैं। दोनों मंदिरोंमें दो भौरे हैं। भौरोंमें १० प्रतिमा विराजमान हैं। जो महा मनोज्ञ प्राचीन परम पूज्य तप तेजसे विभूषित हैं। यहांका दर्शन कर परम आनंद प्राप्त होता है। बाजारमें एक बालाजीका परमतका विशाल मंदिर है दो बडे बडे तालाव हैं जो कि दर्शनीय हैं। दिगंबर जैनी भाइयोंके करीब ४० के घर हैं। यहांसे करीब १२ मीलकी दूरीपर सीरपुर ग्राम है। कच्चा रास्ता बैल गाडीका है। वाशमसे

यात्रियोंको बैलगाडीसे सीरपुर चला जाना चाहिये।

वाशमसे १ रास्ता माल्यागाम आकोला जाता है। ५२ मील पक्की सडक है। मोटर, तांगा बैलगाडीकी सवारियां मिलती हैं।

१ रास्ता हिंगोली शहरको जाता है। २८ मील पक्की सडक है। बैलगाडी आदि सवारी मिलती है। यहां रेलवे स्टेशन है। रेलके लिये यहीं आना पडता है।

१ रास्ता मैंगलोर होकर कारंजा जाता है। कारंजा स्थान यहांसे ४० मीलकी दूरी पर है। पक्की सडक है। मोटर बैलगाडीसे जाना होता है एवं एक रास्ता १२ मील कच्ची सडकका सीरपुरको है। वाशम शहर देखकर अन्यत्र न जाकर सीरपुर आना चाहिये।

सीरपुर।

अंतरिक्ष पार्श्वनाथ (अतिशयक्षेत्र)

सीरपुर कसबा मामूली अच्छा है। यहां दिगम्बर जैनी भाइयोंके घर करीब ४० के हैं। १ बडी मजबूत विशाल धर्मशाला है। एक विशाल मंदिर है जो प्राचीन अत्यन्त मजबूत और ५ मंजलका है। इस मंदिरमें मूल नायक प्रतिमा भगवान पार्श्वनाथकी हैं जो महामनोहर वस्तुकी बनी हुई, तप तेज अतिशययुक्त हैं। ये परम पूज्य

प्रतिमाजी अधर-बिना किसी आधारके विराजमान हैं इसी लिये इस क्षेत्रका नाम अंतरिक्ष क्षेत्र है। इन प्रतिमाजीके सिवाय यहां दोनों लहानोंमें ४ वेदी हैं और उनमें अनेक मनोहर प्रतिमा विराजमान हैं। सबसे नीचे एक दालान है उसमें क्षेत्रपालकी मूर्ति विराजमान है। इस विशाल मंदिरके दो मंजल जमीनके भीतर और ३ तीन मंजल जमीनके ऊपर हैं। यहां सदा दूधका प्रक्षाल और घृतके दीपकसे आरती होती है। केसर भी चढती है। यहांसे आधा मीलकी दूरीपर १ एक बगीचा है। मंदिरके दर्शन कर यात्रियोंको बगीचा जाना चाहिये।

बगीचा।

यहां पर जो पार्श्वनाथ स्वामीकी प्रतिमा विराजमान हैं, चौथे कालकी हैं। यह प्रतिमा बहुत वर्ष पर्यंत जमीनके अंदर रहीं। किसी दिन एक मनुष्यको स्वप्ना हुआ तब बाहिर निकाली गई। इनके निकालनेका स्थान जहां पर बागमें चरणपादुका बनी हैं, वह है। इस बागमें एक मंदिर है। उस मंदिरमें ये प्रतिमा विराजमान कर दी गई। और बहुत वर्षतक वहीं विराजमान रहीं। सीरपुर पहिले विशाल शहर था। यह बागका मंदिर पहिले मध्य शहरमें था परंतु कालदोषसे शहर ऊजड होगया। मंदिर भी जीर्ण होने लगा, फिर दूसरा मंदिर बागमें तयार कराया गया और

पुराने मंदिरके श्रीपार्श्वनाथजीकी प्रतिमाजी लाकर इस मंदिरमें विराजमान करदी गई। अब यह मंदिर भी प्राचीन होगया है दोनों मंदिरोंकी प्राचीनता देख यह बात स्पष्ट हो जाती है कि भगवान पार्श्वनाथकी प्रतिमा जो जमीनसे निकली हुई बगके दूसरे मंदिरमें विराजमान हैं, अवश्य चौथे कालकी हैं। इस बगीचामें दो प्राचीन मंदिर दो प्रतिमा दो चरणपादुका एक बावडी आदि चीजें दर्शनीय हैं। यहांके दर्शन कर यात्रियोंको सीरपुर कसबामें आना चाहिये और घर घर ३० चैत्यालय हैं सबोंके दर्शन करना चाहिये। सीरपुरसे आकोला शहर २८ मीलकी दूरीपर है। बलगाडीकी सवारी मिलती है। यात्रियोंको आकोलाको रवाना हो जाना चाहिये। रास्तेमें एक पातर नामका गांव पडता है। वहांपर १ धर्मशाला १ मंदिर और ७ घर जैनी भाइयोंके हैं। यहां धर्मशालामें उतरकर विश्राम लेना चाहिये और मंदिरके दर्शन करना चाहिये।

विशेष--सीरपुरसे पहिले माल्यागांव पडता है। यह माल्यागांव आकोलासे सीरपुर तथा वाशम शहर जाते समय पडता है। यहां पर १ मंदिर और ४० घर जैनी भाइयोंके हैं। यहांपर १ महादेवका नादिया भी देखनेके लायक चीज है. माल्यागांवसे आगे पातर आता है यहां का समाचार पहिले लिख दिया जा चुका है।

आकोला शहर

यहांपर स्टेशनसे एक मीलके फासलेपर तथा शहरसे आधी मीलकी दूरीपर जयकुमार देवीदास चवरे वकीलका बंगला है, यात्रियोंको इस बंगलेपर उतरना चाहिये। ये वकील महाशय बडे धर्मात्मा सज्जन व्यक्ति हैं। यहांपर कुआ टट्टी मैदान सब प्रकारका आराम है और एक चैत्यालय है। यहांसे सब बातसे निवृत्त होकर भीतर शहर जाना चाहिये। यहांपर बडे २ चार मंदिर हैं और घर घर ३६ चैत्यालय हैं। उनका दर्शन करना चाहिये। यहांपर जैनी भाइयोंके करीब ५० के घर हैं। शहर देखकर बंगला लौट जाना चाहिये।

आकोलासे मूर्तिजापुर जंकशन जाना चाहिये, किराया ।=) छः आने लगते हैं सो ध्यानमें रखना चाहिये।

विशेष—आकोलासे एक रेलवे लाइन जलंब जंकशन मलकापुर होकर भुसावल बम्बई तक जाती है। जालंब स्टेशनसे १ लाइन खामगांव जाती है। खामगांव शहर स्टेशनसे आधा मील है। १ मंदिर और २० घर दिगंबर जैनी भाइयोंके हैं। मलकापुर स्टेशनसे १ मील बस्ती बसी हुई है जो अच्छी है. यहांपर दो बडे मंदिर हैं। मंदिरोंमें बहुतसी प्राचीन महामनोहर प्रतिमा विराजमान हैं। पोरवाड आदि दिगंबर जैनियोंके घर करीब ५० हैं। अच्छी सलाह है।

धर्ममें रुचि है, १ पाठशाला और १ धर्मशाला है। इन शहरोंको देखना यात्रियोंकी इच्छापर निर्भर है परंतु दर्शनीय अवश्य हैं।

मूर्तिजापुर जंकशन

स्टेशनसे दो मील नगर है। २ जैनमंदिर और २३ घर दिगम्बर जैनियोंके हैं। यहांसे ३ रेल्वे लाइन जाती है।

१ अंजनग्राम एलिचपुर तक
२ कारंजा। और
३ नागपुर तक।

यहांसे पहिले कारंजा जाना चाहिये।

कारंजा अतिशय क्षेत्र

स्टेशनसे १ मीलके फासलेपर जैन धर्मशाला और जैनमंदिर है, यात्रियोंको इस धर्मशालामें उतरना चाहिये, यहांपर ३ गादियां भट्टारक लोगोंकी हैं जोकि काष्टासंघी वलत्कार और सेनगणके नामसे प्रसिद्ध हैं। पहिले यहांके भट्टारक बडे २ दिग्गज विद्वान अध्यात्मरसके जानकार हो चुके हैं। बहुतसे संस्कृत ग्रन्थोंका इन्होंने निर्माण किया है, वर्तमानमें भी वीरसेन भट्टारक मौजूद हैं जो बडे विद्वान और बुजुर्ग हैं। तीनों भट्टारकोंकी ३ विशाल धर्मशाला हैं ३ मंदिर हैं जो बडे विशाल और मजबूत हैं, यात्रियोंकी

इच्छा जहां चाहें ठहर जावें। सब जगह आराम मिलता है। यहांपर करीब २५० घर दिगंबर जैनी भाईयोंके हैं और २ पाठशाला ।

एक मंदिरमें हजारों नवीन प्राचीन प्रतिमा विराजमान हैं। भौंरेमें १३ प्रतिमा विराजमान हैं १ सहस्रकूट चैत्यालय १ नंदीश्वर चैत्यालय है जो सर्व धातुमयी महामनोहर रमणीय है। इसी मंदिरमें १८ प्रतिमा स्फटिक रत्न मूंगा वैडूर्य चांदी सुवर्ण पुखराज आदिकी हैं। रात्रिमें दर्शन होता है।

१ मंदिरमें सहस्रकूट चैत्यालय आदि हजारो महामनोहर प्रतिमा हैं जिनके दर्शनसे चित्तमें बडा आनन्द होता है।

१ मंदिरमें १ प्राचीन चतुर्थ कालकी प्रतिमा तथा चार ४ प्रतिमा पंचमेरु आदिकी इसप्रकार हजारों प्रतिमा विराजमान हैं।

ये तीनों मंदिर बडे ही कीमती हैं। इनकी शोभा देख कर चित्त बडा ही प्रसन्न होता है। यात्रियोंको इस स्थानको अच्छीतरह देख भालकर स्टेशन आना चाहिये और एलिचपुरकी टिकट लेनी चाहिये। कारंजासे एलिचपुरका किराया १॥=) है। एलिचपुर जाते समय बीचमें मूर्तिजापुर स्टेशनपर गाडी बदली जाती है सो ध्यान रहै। बीचमें अंजनगांव नामका कसवा भी पडता है। यात्रियोंकी इच्छा, वे अंजनगांव उतरें या न उतरें।

कारंजा शहर बढिया है। व्यापारका स्थान है। बहुत सी चीजें देखने योग्य हैं। कारंजासे १ रास्ता वाशम शहर जाता है। पकी सडक बैल गाडीसे जाना होता है। यहांपर कुछ अंजनगावका हाल भी हम लिख देते हैं—

अंजनगांव

यह कसबा स्टेशनके पास बसा हुआ है, स्टेशनके पास ही ३ विशाल मंदिर हैं। १ मन्दिर मोतीसावजी सिघईका है जो बडा कीमती और विशाल है। अनेक प्रतिमा विराजमान हैं जो अपूर्व वीतरागताकी कारण प्राचीन हैं। जैनी भाइयोंके घर ३० हैं। यहांपर सेठ मोतीरावजी एक बडे धनवान सज्जन व्यक्ति हैं। यहांके तीनों मंदिर भी कारंजाके मंदिरोंके समान ही मनोहर और कीमती हैं। यहां से एलिचपुर जाना चाहिये।

एलिचपुर स्टेशन

स्टेशनसे १ मीलके फासलेपर सेठ मोतीलालजी किसनलालजीकी धर्मशाला है। यह पेचकी धर्मशाला कही जाती है, तांगासे जाना होता है. यात्रियोंको इस धर्मशालामें ठहरना चाहिये। इस धर्मशालामें कुआ, बाग और १ बडा सुन्दर मंदिर है, धर्मशालाके पासके मैदानमें १ कपासका पेच और १ आगपेटीका पेच है. यहांपर ठहरनेका सब प्रकारका

आराम है। वहां इस मन्दिरका दर्शनकर यात्रियोंको एलिचपुर सुलतानपुरा जाना चाहिये। यहांपर तांगा बैलगाडीसे जाना होता है। सेठ नत्थुसा पतुसाजी यहां रहते हैं। यात्रियोंको इनके मकानपर ठहरना चाहिये।

एलिचपुर सुलतानपुरा

यहांपर एलिचपुर शहर पुराना बडा शहर है, इसमें ५२ (पुरा) मुहल्ला हैं। इसके कुछ आगे सुलतानपुरा है। वहांपर सेठ नत्थुसाव पातुसावजी रहते हैं जो कि प्रतिष्ठित धर्मात्मा बडे धनवान सज्जन व्यक्ति हैं। इनका मकान देखने योग्य मनोहर है। इनके मकानमें १ चैत्यालय है। जिसमें १ प्रतिमा ८ अंगुल प्रमाण मूंगाकी है। अन्य भी अनेक प्रतिमा विराजमान हैं। इनके मकानके पास थोडी दूर पर इन्हीं सेठ साहबका निजके द्रव्यसे बना हुआ १ विशाल मंदिर है जो कि हजारों रुपयोंके जडाऊ कामसे शोभित है और विचित्र रचनाका धारक है। इनके अंदर करीब १ हजारके प्रतिमा विराजमान हैं। यहांका दर्शनकर साथमें १ आदमी लेकर यात्रियोंको दौलपुरा जाना चाहिये वहां पर २ मंदिर हैं वहांका दर्शन करना चाहिये फिर लौट कर पेचकी धर्मशाला चला जाना चाहिये। ऐलिचपुरमें दिगम्बरियोंके घर करीब ५० के हैं। यहांसे आधा मील की दूरीपर परतवाडा केम्प है वहां पर जाना चाहिये। बैलगाडी आदि जाते हैं।

परतवाडा कॅंप (एलिचपुर छावनी)

परतवाडा गांव रोनकदार है । बजार भी अच्छा है । १ मंदिर है । खण्डेलवाल जैनी भाइयोंके घर ८ हैं । सभी लोग सज्जन धर्मात्मा हैं । यहांसे श्री मुक्तागिरि क्षेत्र ८ मील है । ४ मीलतक पक्की सडक है । सडकके किनारे १ खुरपी नामका ग्राम आता है । यहांपर १ धर्मशाला और १ मंदिर है जिसमें १ प्रतिबिंब विराजमान है । यहां पर भट्टारकजीकी मृत्यु हुई थी उनकी चरणपादुका हैं । यात्रियोंको यहांका दर्शन कर मुक्तागिरि जाना चाहिये ।

श्रीमुक्तागिरि सिद्धक्षेत्र

यह स्थान साढे तीन करोड मुनिराजोंका मोक्षस्थान होनेसे परम पूज्य है । तलहटीमें १ धर्मशाला और एक मंदिर है जो मनोहर हैं । मंदिरके अन्दर नवीन प्राचीन बहुतसी प्रतिमा विराजमान हैं । पहाडको चढाई पाव मीलके अनुमान है । चढनेके लिये सीढियां लगी हुई हैं. पर्वत गुफा मंदिर प्रतिमा आदि सभी चौथे कालकी रचना जान पडती है श्रीमुक्तागिरि क्षेत्र सम्बंधी विशेष हाल—

किसी समय यहांके पर्वतपर एक भेड चरने आयी थी वह किसी कारणसे मरने लगी । पास ही एक मुनि महाराज विराजमान थे । उन्होंने भेडको मरता जान करुणा

कर धर्मोपदेश दिया। णमोकार मन्त्र सुनाया। मरते समय शुभ भावोंके हो जानेसे वह भेड देव हो गई। इसलिये इस पहाडका नाम मेढगिरि (मेढूगिरि) विख्यात हो गया। जो भेडका जीव देव हुआ था उसने इस सिद्धक्षेत्रपर अपनी मृत्यु जानकर भक्तिवश हो अनेकवार मोतियोंकी वर्षा की इसलिये तबसे यह पहाड मुक्तागिरि कहा जाने लगा। वर्तमानमें भी यहां केसरकी वृष्टि, रातमें दुन्दुभि बाजे आदि अतिशय होते रहते हैं। सुना जाता है देवगण पूजाके लिये आया जाया करते हैं, यहां छोटे बडे कुल २६ मंदिर हैं। पहाडके ऊपर १ गुफा है जिसमें भगवान पार्श्वनाथका एक महा मनोहर मन्दिर है। यहां ही यात्री लोग पूजा करते हैं। १ गुफा १ मंदिरमें भी है जो गहरी लम्बी है और जिसमें २ प्रतिमा श्रीशांतिनाथ भगवानकी विराजमान हैं। यहां अन्धकार अधिक रहता है इसलिये दीपकसे दर्शन करना पडता है। पहाड़पर और भी अनेक रचना हैं जो कि अत्यन्त मनोहर और दर्शनीय है। यहांसे कुछ मीलके फासलेपर पहाडके अन्दर दर्शन हैं वहां जाना चाहिये। साथमें १ मजबूत आदमी रखना चाहिये। रास्ता पहाडीका कुछ कठिन है। पहाड़से पहाडपर जाता है, यहां प्राचीन १ गुफा है, मंदिर है. हजारों खंडित अखंडित प्रतिमा हैं। यहांका सब हाल मुक्तागिरिके पुजारी मुनीम माली आदिसे पूछ लेना चाहिये। मुक्तागिरि पहाडपर ४

शिलालेख भी हैं। यहांका दर्शनकर यात्रियोंको परतवाडा केम्प आ जाना चाहिये। परतवाडा आकर स्टेशनसे कुरम स्टेशन जाना चाहिये। कुरम स्टेशनका यहांसे १।) किराया लगता है। मूर्तिजापुर जंकशनपर गाडी बदली जाती है।

विशेष—परतावाडासे १ मार्ग अमरावतीको भी है। ३२ मील पक्की सडक है। बैलगाडी मोटर गाडी तांगा आदिमें जाना होता है। परंतु यात्रियोंको कुरम स्टेशन ही जाना चाहिये।

कुरम स्टेशन

कुरम १ खासा शहर है। किसी भाईको यदि बस्ती जाना हो तो जावे यदि नहीं तो भातकुली चला जाना चाहिये। बैल गाडीसे जाना होता है। कुरम शहर भी दर्शनीय है। २ जिनमंदिर और ४५ घर दिगंबर जैनी भाइयोंके हैं। स्टेशनसे ६ मील और शहरसे १० मीलके फासलेपर भातकुली क्षेत्र है।

भातकुली आतिशय क्षेत्र

भातकुली १ छोटासा गांव है। नदी बहती है। यहां दो विशाल धर्मशाला हैं और ३ विशाल मन्दिर हैं जो अतिशय मनोहर हैं। ये दोनों धर्मशाला और तीनों मंदिर कारंजावाले भट्टारकजीके बनाये हुए हैं। यहां एक मन्दिरमें २ वेदी और उनमें करीब ५० के प्रतिमा विराजमान हैं।

१ मन्दिरमें तीन प्रतिमा बडी २ विराजमान हैं। उनमें लाल वर्ण और श्यामवर्णकी दो प्रतिमा श्रीपार्श्वनाथ भगवानकी हैं। और १ प्रतिमा श्वेतवर्णकी श्रीआदिनाथ भगवानकी विराजमान है। और भी अनेक प्रतिमा विराजमान हैं जो अत्यन्त मनोहर हैं। १ मंदिर जो बीचका है उसमें तीन प्रतिमा श्रीआदिनाथ भगवानकी विराजमान हैं जो चतुर्थ कालकी प्राचीन, जमीनसे निकली हुई अतिशयसंयुक्त महा मनोहर हैं। यह अतिशय क्षेत्र मनोवांछित सिद्धि प्रदान करता है। प्रतिदिन दूधका प्रक्षाल और घृतका दीपक जलता रहता है। यहां जैनी भाइयोंके दो घर हैं। यहांसे १० मीलके फासलेपर अमरावती अतिशय क्षेत्र है वहां यात्रियोंको जाना चाहिये। अमरावती बैलगाडीसे जाना होता है।

श्रीअमरावती (अतिशयक्षेत्र)

यहांपर स्टेशनके पास १ धर्मशाला बनी हुई है वहां ठहरना चाहिये। जो मनुष्य शहरके भीतर ठहरना चाहें उनको बुधवारीके मंदिरमें ठहरना चाहिये। स्टेशनसे शहर १ मील है दो आने सवारी तांगाका लगता है। यह अमरावती शहर चारो ओरसे कोटसे घिरा हुआ अच्छा रमणीक शहर है। यहां ५ मंदिर बडे २ हैं जो महामनोहर हैं। ७ चैत्यालय घरोंमें विराजमान हैं। जैनी भाइयोंके घर करीब २०० के हैं। यहांके १ मंदिरमें ३ वेदी और एक

ओर है। सैकडों प्राचीन महा मनोहर प्रतिमा विराजमान हैं. १ विशाल मंदिर परवार भाइयोंका है। इसमें ५—६ वेदी हैं। अनेक महा मनोहर प्राचीन प्रतिमा विराजमान हैं। इस मंदिरके भीतर १ आलमारीमें करीव १५ प्रतिमा स्फटिक मणिकी १पुखराजकी २ चांदीकी १ मूंगाकी १ हीरेकी आदि २१ महा मनोहर प्रतिबिंब विराजमान हैं। यहां दर्शन कर बडा आनन्द होता है।

अमरावतीमें सेठ पन्नालाल वंशीधरजी, नंदलाल सिंघई आदि सज्जन व्यक्ति हैं। यहां १ पाठशाला है, शहरमें कई चीजें देखनेकी हैं। यात्रियोंको अमरावतीसे बडनेरा जाना चाहिये। मार्ग रेलका है ।=) किराया लगता है।

बडनेरा जंकशन।

यहांपर स्टेशन शहरके वीचमें है। बडनेराके पुराना और नयेके भेदसे दो भेद हो गये हैं। नया बडनेरा मुसाफिर खानेसे पहिली ओर वसा हुआ है जो कि देखनेके लायक सुन्दर शहर है। पुराना बडनेरा स्टेशनसे उत्तरकी ओर वसा हुआ है। इस पुराने बडनेरामें २ मंदिर हैं और इनमें महा मनोज्ञ प्राचीन प्रतिमा विराजमान हैं। यहां पर जैनी भाइयोंके घर करीव ८ हैं। यहांके दर्शन कर यात्रियोंको धामन स्टेशन जाना जाहिये।

विशेष—बडनेरासे १ मूर्तिजापुर २ नागपुर और ३

अमरावती इस प्रकार तीन रेलवे लाइन जाती हैं। बडने-रासे धामन जानेपर बीचमें १ चांदुर नामका गांव पडता है। वहां १ मंदिर और जैनी भाइयोंके करीब २५ घर हैं।

धामन स्टेशन।

यहांपर यात्रियोंको उतर जाना चाहिये। यहांसे १२ मीलकी दूरीपर कुन्दनपुर अतिशय क्षेत्र है वहां पर चला जाना चाहिये। रास्ता बैलगाडीका है। बैलगाडीसे जाना होता है।

श्रीकुंदनपुर अतिशयक्षेत्र।

यह अतिशय क्षेत्र अमरावती वर्धा नदीके किनारे आर्वीगांवसे ६ मील पश्चिमकी ओर तथा धामन गांवसे १२ मील है। यहां पर राजा भीष्मकी पुत्री रुक्मिणीका नोवे नारायण श्रीकृष्णके साथ विवाह मंगल हुआ था, यह वही कुंदनपुर है। यहां पर अत्यन्त विशाल तीन मंदिर हैं। तीनों मंदिरके मध्यभागमें १ महा मनोहर अत्यंत विशाल दिगम्बर जैनियोंका मंदिर है। उसकी दाहिनी ओर वैष्णवोंका श्री वीठोबा रखुमाईका १ विशाल मंदिर है। इस मंदिरमें तीन बडे २ भौंरे हैं। इसमें १ भौंरा मुक्तागिरजी क्षेत्र तक है दूसरा वर्धा नदी तक और तीसरा मैंगलुर (कारंजा) तक चला गया है। यहांका दिगंबरी मंदिर बहुत प्राचीन है। अनेक प्राचीन प्रतिमा इसके अंदर विरा-

जमान हैं। १ धर्मशाला है जो अत्यंत विशाल है और उसमें १ विशाल दालान है। यहां पर तीन मंदिर और धर्मशालाके सिवाय और भी यहांकी अनेक रचना देखने योग्य हैं।

ये तीनों मंदिर पहिले जैनियोंके थे परंतु ठीक संभाल न होनेके कारण इनमें दो मंदिर वैष्णवोंके हो गये। जो विट्ठोबा कृष्ण महाराजकी मूर्ति है वह श्रीनेमिनाथ भगवानकी प्रतिमा है। और जो रखुमाई (रुक्मिणी बाईकी) मूर्ति है वह राजुलकी मूर्ति है यहांपर बहुतसे हिंदु तीर्थ यात्राके लिये आते हैं। यह क्षेत्र एक प्रसिद्ध क्षेत्र है यात्रियोंको यह स्थान देखकर फिर धामन स्टेशन वापिस चला जाना चाहिये और धामन स्टेशनसे नागपुर दितवारी का टिकट लेना चाहिये। धामन और नागपुरके बीचमें पुलगांव वर्धा आदि शहर पडते हैं। सब जगह बडे २ मंदिर और संतोषजनक संख्यामें जैनियोंके घर हैं। यदि यात्रियोंकी इच्छा हो तो वे इन शहरोंके मंदिरोंके दर्शन करते नागपुर जावें। नागपुर जंकशनसे रेलगाडी बदलकर नागपुर दितवारी ष्टेशन जाना चाहिये।

नागपुर दितवारी।

स्टेशनसे १ मीलकी दूरीपर दितवारी बाजारमें १ दिगम्बर पंचायती मंदिर है, वहां पर जाना चाहिये वहां १ धर्मशाला और १ पाठशाला है। धर्मशालामें ठहर जाना

चाहिये। यह मंदिर बड़ा कीमती मनोहर है। यहां धर्मशालामें १ कुआ है। यात्रियोंको एक बातका आराम मिलता है। इस मंदिरमें ४ वेदी और एक भौंरा है। इनमें हजारों प्रतिमा विराजमान हैं जो महा मनोहर और शांति प्रदान करनेवाली हैं। यहां पर जैनी भाइयोंके घर करीब १०० हैं १० बड़ २ मंदिर हैं। एक विशाल मंदिरमें ४ मंदिर शामिल हैं। इसलिये १३ मंदिर भी कहे जा सकते हैं। इस १३ मंदिरोंमें ८ मंदिर दितवारीमें है जो पास २ हैं। १ मंदिर सुन्दरसावजीका कुछ दूर है। ३ मीलकी दूरीपर १ मंदिर पुरानी शुक्रवारीमें है। १ नवीन शुक्रवारीमें जो एक मीलकी दूरीपर है। १ मन्दिर इतवारामें बहुत दूर है। तलाश कर सबके दर्शन करना चाहिये। यहां पर शहरमें ४ विशाल तालाब, पलटन, गढ, अजायबघर जिसमें बहुतसी जैन प्रतिमा हैं। तेली खेरी बगीचा, महाराज बाग, तेलसी बाग, तेलकेरी आदि चीजें देखने योग्य हैं।

नागपुरसे ३ रेलवे लाइन जाती हैं– १ रामटेक तक जाती है। १ कामठी गोंदिया जंकशन डूंगरगढ राजनांदगांव, रायचूर दुर्ग विलासपुर झाड सैकड़ा खड़गपुर आदि होती हुई कलकत्ता जाती है। १ मूर्तिजापुर आकोला भुसावल बम्बई तक जाती है।

गौंदियाद्रुग रायचूर विलासपुर डूंगरगढ राजनांदगांव अकलतरा आदि स्थानोंपर एक एक दो दो जैन मं-

दिर और काफी दिगम्बर जैनियोंके घर हैं। राय चूर विलासपुर अलकतरामें दो दो मंदिर हैं राय चूरमें २ प्रतिमा स्फटिक मणिकी हैं। रायचूर और विलासपुर बडे २ शहर हैं। हर समय मौका नहिं मिलता, यात्रियोंको यहांके शहर भी देख जाने चाहिये। इन शहरोंमें जानेवाले यात्रियोंके सुभीताके लिये हम कुछ रेलवे गाडियोंका हाल लिखे देते हैं-

गौंदिया जंकशनसे ३ तीन लाइन जाती हैं १ नागपुर १ जबलपुर १ कलकत्ता।

बिलासपुर जंकशनसे ३ लाइन जाती हैं। १ कटनी मुंडवारा १ कलकत्ता १ नागपुर।

रायचूर जंकशनसे ४ लाइन जाती हैं। १ बिलासपुर कटनी १ खड्गपुर कलकत्ता १ कामठी नागपुर १ अम्रहानपुर कुरद आदिको जाती है। अम्रहानपुर जंकशनसे एक राजीम तक जाती है।

झाडसैकडा जंकशनसे ३ लाइन जाती हैं। १ विलासपुर नागपुर १ सीनी १ सवाईपुरतक।

सीनी जंकशनसे ४ लाइन जाती हैं। १ नागपुर, १ कलकत्ता १ पुरलिया १ गोरुमा। खड्गपुर जंकशनका हाल आगे लिखा जायेगा।

यदि यात्रियोंको इन शहरोंमें कहीं भी जाना पसन्द न हो तो उनको नागपुर देखकर कामठी चला जाना चाहिए। नागपुरसे रेल किराया कामठी तकका दो आना है।

कामठी जंकशन

स्टेशनके पास १ वैष्णावोंकी धर्मशाला है यात्रियोंको यहां ठहरना चाहिये। धर्मशालासे आधी मीलके फासलेपर १ जैनमंदिर है जो परवारोंके जैनमंदिरके नामसे विख्यात है। तलाशकर यात्रियोंको वहां जाना चाहिये। यह बड़ा भारी मंदिर है। खुदाईका काम बहुत अच्छा हो रहा है। बहुत कीमती है। यहां मंदिरमें ५–६ वेदी हैं। १ भौंरा है। भौंरेमें बहुतसी अनेक प्राचीन प्रतिमा विराजमान हैं। वेदियोंमें महामनोहर प्रतिमा विराजमान हैं। यहांका दर्शन आनन्दप्रद है। यहांपर जैन दिगम्बरियोंके घर २० हैं। शहर मामूली देखने लायक है। देखना हो तो पूछकर देख लेना चाहिये।

कामठीसे ३ रेलवे लाइन जाती हैं १ रामटेक १ नागपुर १ गोंदिया। यात्रियोंको कामठीसे श्रीरामटेक अतिशय क्षेत्र जाना चाहिये।

श्रीरामटेक अतिशय क्षेत्र

स्टेशनके पास ही १ विशाल वैष्णव लोगोंकी धर्मशाला है। ठहरनेकी कोई मनाई नहीं है। यहां ठहर जाना चाहिये। यहांसे ३ मील रामटेक शहर है, बैल गाडीसे जाना चाहिये। शहरसे कुछ दूर शांतिनाथ भगवानका मंदिर है वहां जाना चाहिये।

यहांका जंगल बडा पवित्र स्थान है। यहांपर १ विशाल धर्मशाला है। १० बडे २ मंदिर है। इनमें २ मंदिर बहुत ही कीमती हाथी घोडा पुतली आदिके कढावसे शोभित हैं. पत्थरके बने हुए दर्शनीय हैं। इनमें भी १ मंदिर बडा ही मनोज्ञ और प्राचीन है। इसमें चतुर्थ कालकी अतिशयसंयुक्त चौदह गजकी, १ प्रतिमा २ प्रतिमा ४ गजकी खड्गासन शांतिमुद्राकी धारक श्रीशांतिनाथ भगवानकी विराजमान हैं। इनका दर्शन इतना अपूर्व है कि हटनेको जी नहीं चाहता और भी बडी २ मनोज्ञ प्रतिमा विराजमान हैं। जिनके दर्शनसे बडा आनंद होता है।

यहांसे १ मीलके फासलेपर रामटेक पहाड है, यहां अष्टम बलभद्र श्रीरामचन्द्रजी ठहरे थे। इसलिये इस स्थानका नाम श्रीरामटेक है, तथा पहाडके नामसे ही गांवका नाम यही है। पहाडके ऊपर वैष्णवोंके बडे २ मंदिर कोट कुण्ड तालाव आदि प्राचीन चीजें बडी ही मनोहर और दर्शनीय हैं।

देखनेसे मालूम होता है कि पहाडके ऊपरके मन्दिर किसी समय जैनियोंके थे. यहांके विशाल मंदिरमें श्रीशांतिनाथ भगवानकी प्रतिमा विराजमान थी परंतु जैनियोंकी अनवधानतासे अब यहां वैष्णव लोगोंका अधिकार होगया है यहांका सब दृश्य देखकर यात्रियोंको रामटेक जरूर आजाना चाहिये। जो पुरानी चीजें देखने योग्य हों तलाशकर

देखें। यहां तारणपंथी समैया जैनियोंके घर २० हैं। यहां से रामटेक स्टेशन जाना चाहिये- और वहांसे नागपुर दिलवारीकी टिकट लेनी चाहिए। रेलका किराया ।=) लगता है।

नागपुरसे सिवनी जाना चाहिये। सिवनीका किराया २) रुपये है। नागपुरसे छोटी लाइन छिंदवाडा तक जाती है। छिंदवाडा उतर जाना चाहिये और फिर दूसरी गाडीसे सिवनी जाना चाहिये।

छिंदवाडा जंकशन

नागपुरसे जो छिंदवाडा तक गाडी जाती है उसके ५–६ घंटे बाद सिवनीको जानेवाली गाडी मिलती है। यात्रियोंको चाहिये कि इस बीचमें वे छिंदवाडा शहर देख आवें। यह शहर स्टेशनसे दो मीलके फासलेपर है। तांगासे जाना होता है। शहर बढिया है। जैन मंदिर ८ हैं। जैनी भाइयोंके घर ६० हैं। एक सभा और १ पाठशाला है। यहां से फिर वापिस स्टेशन चला आना चाहिये और वहांसे सिवनी चला जाना चाहिये।

सिवनी शहर

स्टेशनसे १ मीलके फासलेपर शहरमें धर्मशाला है वहां जाकर ठहरना चाहिए। यह शहर अच्छा है। २ तालाव बडा बडा बंगला बगीचा आदि देखने योग्य हैं। इस शहरमें जैनी भाइयोंके १०० घर हैं ४ मंदिर १ पाठशाला

१ कन्याशाला १ सदावरत (दानशाला) है। १ सभा भी स्थापित है। यहां सेठ पूरनसावजी निवास करते हैं जो एक अच्छे धर्मात्मा सज्जन हैं। इन्होंने बहुतसे धर्मके कार्य किये हैं और आजकल भी सदा करते रहते हैं। भाई कन्हैयालालजी रतनलालजी कुंवरसेनजी चैनसुखजी छावडा भी यहीं निवास करते हैं जो धार्मिक कार्योंके करनेमें वीर व्यक्तियां हैं।

विशेष हाल।

धर्मशालाके पास एक विशाल मंदिर है। यह मंदिर बहुत ऊंचा राजमहलके समान विशाल है। कीमती रंगदार जडाऊ कामसे शोभित साक्षात् स्वर्णपुरीके विमानके समान मनोहर है। इसमें १८ मंदिर हैं। जिनमें विशाल मनोहर धातु पाषाण स्फटिक मणि आदिकी १ हजारके करीब प्रतिमा विराजमान हैं। १ मन्दिर पूरनसावजीके मकानके पास दूसरा है। वह भी कीमती है। उसके पीछेकी वेदीमें बहुतसी प्रतिबिंब विराजमान हैं। यहां बडे ठाट बाटसे पूजन होती है। यहांका दर्शन बडा ही अपूर्व और आनन्दप्रद है। सिवनीसे यात्रियोंको जबलपुर जाना चाहिये। बीचमें क्योलारी नैनपुरजंकशन पिंडरई स्थान पडते हैं। उनके मंदिरोंके दर्शन करके जबलपुर जाना चाहिये। जबलपुर जाते समय नैनपुर जंकशनपर गाडी बदली जाती है। क्यो-

लारी आदि स्थानोंमें उतरना यात्रियोंकी इच्छापर निर्भर है परन्तु जो भाई उतरना चाहें उनको नीचे लिखा हाल ध्यानमें रखना चाहिये।

क्योलारी।

यह छोटासा कसवा स्टेशनके पास है। यहांपर १ विशाल नदी बहती है। २ जैन मंदिर और १५ घर जैनी भाइयोंके हैं।

नैनपुर जंकशन।

यह भी छोटासा कसवा स्टेशनसे एकदम पास है। यहांपर १ चैत्यालय और ४ घर जैनी भाइयोंके हैं। यहां से तीन रेलवे लाइन जाती हैं— १ गोंदिया १ सिवनी नागपुर १ पिंडरई जबलपुर।

पींडरई।

यह एक रोनकदार कसवा है। स्टेशनसे १ मीलकी दूरीपर है। यहांपर ५-६ जैन मंदिर हैं। दिगम्बर जैनी भाइयोंके घर ६० से अधिक हैं। यहांसे जबलपुर शहर जाना चाहिये।

जबलपुर शहर।

स्टेशनसे १ मीलकी दूरीपर लार्ड गंजमें धर्मशाला है यात्रियोंको वहां जाकर ठहरना चाहिये। यहांपर हनुमान तालके ऊपर २५ और शहरमें २१ मंदिर हैं जो कि

अत्यन्त विशाल और मनोहर हैं तलाशकर सबके दर्शन करना चाहिये। यह शहर बडा सुन्दर है। यहांपर १ धुवां-दार पहाड है। जिससे पानी पडता है और उस पानीसे धुवां निकलता है और जिसको बहुत दूरतकके मनुष्य देखने आते हैं, अवश्य देखना चाहिये। इस पहाडके पास १ दिगम्बर जैन मंदिर है। सेठ गोकुलदासका महल इस्लाम हाईस्कूल कस्तूर चंद हाईस्कूल अंग्रेजी फौज आदि चीजें देखने योग्य हैं। यहांपर जैनी भाईयोंके घर करीब २०० के हैं।

जबलपुरसे ३ रेलवे लाईन जाती है। १ कटनी मुंडवारा १ गौंदिया १ इटार्सी खंडवा।

जबलपुरसे २१ मीलकी दूरीपर कौनी अतिशय क्षेत्र है। बैलगाडीका रास्ता है। यात्रियोंको बैलगाडीसे कौनी अतिशय क्षेत्र जाना चाहिये।

श्रीकौनीजी अतिशय क्षेत्र।

कौनी १ छोटासा गांव है। जबलपुरसे २१ मील और पो० पाटनसे ३ मीलकी दूरीपर है। यहांपर जैन मन्दिर ११ हैं। सब ही प्राचीन हैं परंतु बडे २ मनोहर हैं। इनमें बहुतसी प्राचीन प्रतिमा विराजमान हैं। जैनियोंके घर ८ हैं। यहांकी यात्राकर जबलपुर लोट जाना चाहिए और जबलपुरसे रेलवे मार्गसे कटनी मुंडवारा चला जाना चाहिये।

कटनी मुडवारा जंकशन।

यहांपर एक कटनी नामकी नदी है। गांवका नाम मुंडवारा है इसलिये इस गांवका नाम कटनी मुंडवारा है। यह कसबा अच्छा है। २ बडे २ मंदिर हैं। जैनियोंके घर हैं। यह स्थान स्टेशनके पास है और स्टेशनके पासही धर्मशाला है।

यहांसे ४ रेलवे लाइन जाती हैं-- १ दमोह सागर १ जबलपुर १ सतना गया १ बिलासपुर खड्गपुर। कटनी मुंडवारासे यात्रियोंको सतना जाना चाहिए।

सतना स्टेशन।

यह शहर अच्छा है। बडे २ दो मंदिर हैं जो कि महामनोहर और विशाल हैं। जैनियोंके घर हैं। यहांसे यात्रियोंको छतरपुर शहर होते हुए श्रीखजराहा अतिशय क्षेत्र जाना चाहिये। बैलगाडीसे जाना होता है। सतनासे नयागामतक पक्की सडक है, बीचमें छतरपुर शहर पडता है।

छतरपुर शहर।

छतरपुर शहर बहुत अच्छा स्थान है। राजाका राज्य है। यहांके राजा साहब एक सज्जन महाशय हैं। यहांपर बडे २ प्राचीन मंदिर और १८ चैत्यालय है। मंदिरोंकी रचना बडी मनोहर है दिगंबर जैनी भाइयोंके २५ घर हैं।

यहांपर राजाका महल गढ तालाव आदि चीजें देखने योग्य है। यहांसे यात्रियोंको अजयगढ जाना चाहिए।

श्रीअजयगढ क्षेत्र।

यह स्थान राजाका राजधानी है। पहाड और १ किला है। किलेके पास जमना और गंगा नामके दो कुंड है। अजयगढके दरवाजेमें प्रवेश करते ही एक पत्थरमें उकेरी हुई ५० प्रतिमाओंका दर्शन प्राप्त होता है। आगे थोडी दूर जानेपर १ विशाल गहरा पानीका भरा तालाव है। तालावकी गिरी हुई दीवारमें बहुतसी प्राचीन प्रतिमा विराजमान हैं। जिसमें १ प्रतिमा १५ फीट और दूसरी १० फीटकी बडी मनोहर हैं। इसी दीवारकी बगलमें १ मानस्तंभ है जिसमें हजारों महा मनोहर प्रतिबिंब विराजमान हैं यहांसे १॥ मीलकी दूरीपर एक स्थान है जहांपर खंडित अखंडित हजारों प्रतिमा विराजमान हैं। उनका दर्शन करना चाहिये। अन्य भी बहुतसी प्राचीन चीजें हैं उन्हें देखना चाहिये। पीछे छतरपुर आ जाना चाहिये। छतरपुरसे श्रीखजराहा अतिशय क्षेत्र करीब ३ मीलकी दूरीपर है। बैलगाडीसे जाना होता है। यात्रियोंको छतरपुरसे श्रीखजराहा अतिशय क्षेत्र चला जाना चाहिये।

श्रीखजराहा आतिशय क्षेत्र।

यह खजराहा गांव छोटासा है। यहांपर २१ जिन

मंदिर हैं जो कि प्राचीन करोडों रुपयेकी लागतके कीमती महा मनोहर हैं। इन मंदिरोंके अंदर हजारों प्राचीन प्रतिबिंब विराजमान हैं जो महा मनोज्ञ और शांति प्रदान करनेवाली हैं। यहांके दर्शन करनेसे चित्तको बडी शांति मिलती है।

यहांसे थोडी दूरके फासलेपर १ स्थान और है, वहां १६ विशाल हिन्दुओंके मंदिर हैं जो करोडों रुपयोंकी लागतके और दर्शनीय हैं। यहांकी जगह अच्छीतरह देखकर यात्रियोंको सतना लौट जाना चाहिये। सतना स्टेशनसे दमोह जिला जाना चाहिये. दमोह जाते समय रेलगाडी कटनी बदलनी पडती है। यह ध्यान रहे।

विशेष—ऊपर जो खजराहा क्षेत्रको जानेका मार्ग लिखा गया है वह सुगम और नजदीक है। यात्रियोंको इसीसे जानेमें सुभीता पडता है परन्तु खजराहा क्षेत्रको जानेके लिये ५ मार्ग और भी हैं और वे नीचे लिखे अनुसार हैं—

१ सतनासे सीधा जाता है और उस मार्गसे खजराहा क्षेत्र २८ मील पडता है। १ दमोहसे जाता है और उससे ६० मील पडता है, १ नैनागिरिसे जाता है और वहांसे ४५ मील पडता है। १ मलाराह स्टेशनसे है और वहांसे ६४ मील पडता है. और १ झांसीके पास खुद खजराहा स्टेशन से जाता है। एवं उससे खजराहा क्षेत्र ६० मीलकी

दूरीपर है। जिस भाईको जहांसे जानेका सुभीता हो वे वहांसे चले जांय। कहांसे जाना चाहिये और कहांसे न जाना चाहिये यह यात्रियोंकी इच्छापर निर्भर है।

दमोह जंकशन

यह शहर स्टेशनके पास है। शहर सुन्दर देखने योग्य है, यहांकी अनेक चीजें दर्शनीय हैं। मनोहर और बडे २ यहां ७ मंदिर हैं। एक विशाल जैन धर्मशाला है जहांपर सब बातका आराम मिलता है। दिगम्बर जैनी भाइयोंके घर बहुत हैं। यहांपर एक अत्यन्त सज्जन धर्मात्मा बाबू गोकुलचन्दजी वकील रहते हैं। यहांकी शैली उत्तम है। यहांसे करीब २० मीलके फासलेपर श्रीकुण्डलपुर अतिशय क्षेत्र है। बैल गाडीकी सवारीसे जाना होता है। यात्रियोंको दमोहसे कुण्डलपुर जाना चाहिये। दमोह और कुण्डलपुरके बीचमें १ पटेरा नामका कसबा पडता है। यहांसे कुण्डलपुर ३ मील रह जाता है। पटेरा उतर पडना चाहिये और वहांके दर्शनकर फिर कुण्डलपुर जाना चाहिये।

पटेरा (पोष्ट)

यह स्थान १ अच्छा कसबा है। यहां ३ मंदिर और २ चैत्यालय हैं। दो मंदिरोंके अन्दर बहुतसी मनोज्ञ जैन प्रतिबिंब विराजमान हैं। यहां जैनी भाइयोंके घर करीब २० हैं। यहांके दर्शनकर कुंडलपुर जाना चाहिये।

श्रीकुण्डलपुरजी अतिशय क्षेत्र

यहां १ विशाल पहाड है। पहाडके नीचे मैदानमें १ विशाल धर्मशाला ३ बडे २ तालाव १ उदासीन आश्रम और कई एक मंदिर हैं। पहाडके ऊपर ४८ मन्दिर हैं। कुल मिलाकर मन्दिरोंकी संख्या यहां ६३ हैं जो कि महा मनोहर नये तथा प्राचीन हैं। इनके अन्दर हजारों महा मनोहर प्राचीन और नवीन प्रतिमा विराजमान हैं। यह जैनियोंका एक प्रसिद्ध क्षेत्र है। पहिले यहां ३ मास तक बडा भारी मेला जुडता था। देशान्तरोंसे बडे बडे व्यापारी आते थे। जवाहिरातका अधिक संख्यामें व्यापार होता था सब मन्दिरोंके बीचमें एक बडा भारी मन्दिर पहाड काटकर बनाया गया है और वह श्रीमहावीरस्वामीका मंदिर बोला जाता है। इसमें मूलनायक प्रतिमा श्रीमहावीर स्वामीकी विराजमान हैं। यह प्रतिमाजी पहाडमें उकेरी हुई विशाल ः गजकी लम्बी पद्मासन शांतिमुद्राकी धारक महामनोहर अतिशयसंयुक्त हैं। यह मंदिर ५-६ गज नीचे जमीनमें है। सुना जाता है कि--

यहांकी श्रीमहावीर स्वामीकी प्रतिमाको तोडने किसी समय बादशाह आया था। जिस समय उसने प्रतिमाजीके अंगूठेमें टांगी लगाई थी उससमय हजारों मन दूध उससे निकला था। बस दूधके प्रवाहके मारे तमाम मंदिर भर

गया था। दूधके सुगन्धित प्रवाहसे एकदम अगणित भ्रमर निकल पडे और वे बादशाहकी सेनाको काटने लगे। सब लोग परम संकटमें पड गये. बादशाह स्वयं अन्धा होगया। मेघ वर्षने लगा, आंधी चलने लगी। बादशाहको अधिक वेदना हुई और वह तोबा २ कहकर भगवानका स्मरण करने लगा। उपसर्ग शांत हो गया और वह यह प्रतिज्ञा-कर कि अब यहां मैं कभी न आऊंगा चला गया। उसके बाद फिर वह इस क्षेत्रपर कभी नहीं आया। यह इस क्षेत्रका प्राचीन अतिशय है। इस समय भी यहां अनेक अतिशय हुआ करते हैं।

इस पहाडपर चढनेके ४ मार्ग हैं। सीढी बनी हुई हैं। चढाई करीब आधा मील सरल है। यहांके मंदिरोंका घेरा ३ मीलमें हैं। वंदना ३ घंटेमें हो सक्ती है जो मन्दिर पहाडके ऊपर हैं उनमें कई स्थानपर शिला लेख और यंत्र भी खुदे हुए हैं। यहांकी यात्राकर यात्रियोंको नैनागढ सिद्ध क्षेत्र जाना चाहिये। नैनागढ क्षेत्र कुंडलपुरसे ४६ मीलके फासलेपर है। बैलगाडीसे जाना होता है कुण्डल-पुरसे नैनागिरि जाते समय कई बडे २ ग्राम पडते हैं। सबमें जैन मंदिर और जैनी भाइयोंके घर हैं। उनमें तीन बडे २ ग्रामोंका हाल इस प्रकार है—

पटेरा पोष्ट

इस गांवका हाल ऊपर लिखा जा चुका है।

हटा

यह ग्राम कुण्डलपुरसे ९ मीलकी दूरीपर है। यह एक प्राचीन सुन्दर कसबा है। यहां अत्यन्त मनोहर ४ मंदिर हैं। जैनी भाइयोंके घर ५० के अन्दाज हैं। यहां प्राचीन अनेक चीजें देखने योग्य हैं। तलासकर यात्रियोंको देख लेनी चाहिये।

बांवोरी

यह भी अच्छा कसबा है। यहांपर १ मंदिर और बहुतसे घर जैनी भाइयोंके हैं। इस गांवसे आगे एक १ बडा गांव और पडता है जिसमें मंदिर अच्छा है। यहांसे कुछ दूर नैनागिर सिद्धक्षेत्र है।

नैनागिरि सिद्धक्षेत्र

यह एक छोटासा गांव है। पहाडके पासके मैदानमें १ धर्मशाला है। ७ मन्दिर धर्मशालाके पास हैं। धर्मशालासे पाव मीलकी दूरीपर पहाड है। यह पहाड जमीनसे लगा हुआ छोटासा है. इसपर १५ जिनमंदिर हैं। ये प्राचीन मनोहर हैं और इनमें प्राचीन नवीन दोनों प्रकारकी प्रतिमा विराजमान हैं। यहांपर भगवान पार्श्वनाथका समवसरण आया था। यहांसे वरदत्त आदि बहुतसे मुनि मोक्ष पधारे हैं। यहांसे यात्रियोंको द्रोणगिरि क्षेत्र जाना चाहिए। द्रोणगिरि क्षेत्रका नाम फलहोडी बडगाम प्रसिद्ध

है आजकल यह सैंदपा बडगांवके नामसे मशहूर है। नैनागिरिसे द्रोणागिरि क्षेत्र ३४ मील है। बैलगाडीसे जाना होता है. बीचमें ५—६ गांव पडते हैं। सबमें जिनमन्दिर और जैनी भाइयोंके घर हैं। दर्शन करते करते जाना चाहिये, हीरापुर और उसके आगेका गांव ये दो गांव बडे पडते हैं।

द्रोणगिरि सिद्धक्षेत्र

द्रोणगिरिका वर्तमानमें सेंदिपा नाम है, यह ग्राम छोटासा है. इस गांवके दोनों ओर २ नदियां बहती हैं, बीचमें यह गांम वसा हुआ है। यहां १ धर्मशाला एक मंदिर है. ग्रामसे थोडीदूर करीब एक फर्लांगकी चढाईका पहाड है, पहाडके ऊपर चढनेके लिए सीढीं लगी हुई हैं। यह पहाड बडा लम्बा चौडा है. इसपर २२ मंदिर हैं जो एक ही स्थानपर हैं और पास पास शोभित हैं। पासमें ही एक गुफा है, इस गुफासे श्रीगुरुदत्त आदि मुनिगण मोक्ष पधारे हैं। पहाडपर शिला लेख भी है। यह स्थान बडा पवित्र और सुहावना है। सेंदिपा गांवमें जैनी भाइयोंके घर १५ हैं। द्रोणगिरिकी यात्राकर यात्रियोंको श्रीआहारजी अतिशय क्षेत्र जाना चाहिए। द्रोणगिरिसे श्रीआहारजी २४ मील के फासलेपर है, १० मीलके फासलेपर बीचमें एक मगुवा नामका गांव आता है, बैल गाडीसे जाना होता है।

भगुवा

यह कसबा अच्छा है। यहां तीन मंदिर हैं। १ बीच कसबेमें है। यहां एक पहाड़ है २ मंदिर उसके ऊपर हैं। जैनी भाइयोंके घर यहां तीस हैं। यहांसे १४ मीलके फासलेपर श्रीआहारजी क्षेत्र है। भगुवामें एक प्राचीन मठ और एक तालाब दर्शनीय चीजें हैं।

श्रीआहारजी अतिशय क्षेत्र

यह ग्राम छोटा है, ४ घर जैनी भाइयोंके हैं. गांवके बाहर पासमें ही दो जैनमंदिर हैं और उनके पास १ धर्मशाला है, यहांके १ मंदिरमें मूलनायक प्रतिमा श्रीआदिनाथ भगवानकी है. यह प्रतिमा बड़ी मनोज्ञ और शांत है। बीचमें १ प्रतिमा १८ गज लम्बी कायोत्सर्गासन कारकलके मंदिरजीकी प्रतिमाके समान हैं। इस प्रतिमाजीके दोनो ओर २ प्रतिमा सात २ गजकी लम्बी विराजमान हैं। चौबीस महाराजकी प्रतिमा पत्थरमें उकेरी हुई बाहर मंदिरके दालानमें विराजमान हैं। बहुतसी खंडित प्राचीन प्रतिमा आलेमें विराजमान हैं।

दूसरे मंदिरमें १ प्रतिमा श्रीपार्श्वनाथ भगवानकी विराजमान हैं। इस मंदिरके बाहर और पीछे गढेमें हजारों प्रतिमा खंडित पड़ी हैं जो कि गैरहालतमें हैं। यहांका दर्शन बड़ा ही अपूर्व और आनन्दवर्धक है।

विशेष।

यहांकी दशा देखकर चित्तमें खेद होता है, यह क्षेत्र प्राचीन है मंदिर प्रतिमाजी सब गैरहालतमें है. किसी धर्मात्मा जैनी भाईको यहांका जीर्णोद्धार करना चाहिए, बडा उपकार और पुण्य होगा। यहां बहुतसे रुपयोंकी भी आवश्यकता नहीं, बहुत थोडे रुपयोंमें काम चल जायगा, ऐसे ऐसे प्राचीन स्थानोंकी रक्षा करना जैनियोंका धर्म है। वास्तवमें जैनधर्मका गौरव इन्हीं प्राचीन पदार्थोंके आधीन है।

आहारजी अतिशय क्षेत्रके दर्शनकर यात्रियोंको श्रीपपोराजी अतिशय क्षेत्र जाना चाहिए, यह क्षेत्र आहारजीसे १२ मीलके फासलेपर है। बैलगाडीसे भी जाना होता है।

विशेष—श्रीआहारजी और श्रीपपोराजी का रास्ता टीकमगढसे भी है।

श्रीपपोराजी अतिशय क्षेत्र

यह स्थान जंगलमें १ विशाळ मैदानमें है। इसके चारो ओर कोट खिचा हुआ है। इस कोटके अन्दर ७६ मंदिर हैं जो कि बडे मनोहर कीमती प्राचीन नवीन दोनों प्रकारके हैं. इन ७६ मंदिरोंमेंसे २ मंदिर बडे ही विशाळ हैं। चौवीस २ देहरियोंके हैं. एक मंदिर बहुत प्राचीन है जिसमें १ प्रतिमा ७ गज ऊंची खड्गासन विराजमान हैं। यह मंदिर और प्रतिमा अतिशय क्षेत्र कहे जाते हैं। यहां एक

धर्मशाला और एक पाठशाला है, पाठशाला पं० मोतीलाल-जीके सुप्रबन्धसे चल रही है, धर्मशालामें कुवा आदिका सुभीता है। पपौराजीसे २ मीलके फासलेपर १ पग नामका गांव है। यहां सेठ भैरजी चिमनजी दो भाई सरल स्वभावी धर्मात्मा सज्जन व्यक्ति हैं। २ विशाल मंदिर हैं जो उक्त दोनों भाईयोंके बनाये हुए हैं। पगग्राममें करीब २० घरके जैनी भाइयोंके हैं, यहांकी यात्राकर यात्रियोंको टीकमगढ चला जाना चाहिये। श्रीपपौराजी क्षेत्रसे टीकमगढ ३ मील है, पक्की सडक है. बैल गाडीसे टीकमगढ जाना होता है।

टीकमगढ

यह शहर अच्छा है। जैनी भाइयोंके बहुतसे घर हैं, एक धर्मशाला है, ७ मंदिर हैं जो मनोहर और दर्शनीय हैं। यहां एक मंदिरमें ६ जगह और एकमें ३ जगह दर्शन हैं प्रतिमा बडी मनोहर विराजमान हैं। बहुतसी प्रतिमा प्राचीन हैं, मन्दिर अत्यन्त मजबूत बने हुये हैं। टीकमगढका गढ देखने लायक है। यहांसे यात्रियोंको ललितपुर जाना चाहिये। टीकमगढसे ३४ मीलके फासलेपर ललितपुर है, पक्की सडक है, बैलगाडीसे जाना होता है. बीचमें १ महरौनी शहर पडता है वहां उतर जाना चाहिये।

महरौनी

यह शहर सडकके किनारे बसा हुआ है, अच्छा सु-

दर शहर है, यहां जैनी भाइयोंके घर तीनसोके करीब सुने गये हैं। टीकमगढ सरीखे १३ विशाल मंदिर हैं। शहर तथा अनेक चीजें देखनेके लायक हैं। यहांसे ललितपुर २२ मील है।

ललितपुर शहर

यह एक उत्तम शहर है, यहां सेठ नत्थूराम टडैया एक सज्जन धर्मात्मा व्यक्ति रहते हैं, यहां दो मंदिर हैं जो कि बडे २ हैं। मजबूत रंगके कामके अत्यन्त सुन्दर हैं, इन मंदिरोंके दर्शन करनेसे चित्तको बडी शांति मिलती है. १ मंदिरजीमें ७ वेदी हैं, महामनोहर प्रतिमा विराजमान हैं। यहांका दर्शनकर यात्रियोंको क्षेत्रपाल स्थान पर जाना चाहिये।

क्षेत्रपाल स्थान

क्षेत्रपाल स्थान शहरसे १ मीलकी दूरीपर स्टेशनकी ओर है, वहां ठहरनेकी भी जगह है। ललितपुरमें जैनी भाइयोंके घर ५० के करीब होंगे। जो भाई स्टेशनसे आवें उनको क्षेत्रपाल धर्मशालामें ही ठहर जाना चाहिये. क्षेत्र-पालका स्थान स्टेशनसे आधा मील है, क्षेत्रपालसे एक मीलके फासले पर शहर है। क्षेत्रपालका विशेष हाल इस-प्रकार है—

क्षेत्रपाल धर्मशाला

यह स्थान शहरसे १ मील और स्टेशनसे आधी मील है, बीचमें बडा ही रमणीक बना हुआ है. यहांपर पहिले भट्टारक लोग निवास करते थे। उन्हींका बनाया हुआ यह स्थान है, क्षेत्रपालके चारो ओर कोट खिचा हुआ है। कोटमें तीन दरवाजे और इसके भीतर १ धर्मशाला बगीचा कुआ आदि हैं. दूसरा कोट धर्मशालाके भीतर बडा मजबूत है, उसमें ४ मंदिर हैं जो कि बडे मनोहर और विशाल हैं। इन मंदिरोंमें ४ प्रतिमा प्राचीन हैं जो कि विशाल आकारकी धारक हैं। अन्य नवीन प्रतिमा हैं, जो मनुष्य यहां उतरते हैं उनको बडा आनन्द मिलता है। यहां सब बातका आराम है, ललितपुरके आस पास बहुतसी जगह यात्रास्थान हैं। तलाशकर उनके दर्शन करने चाहिये, इन यात्राओंको जाते समय मामूली सामान साथमें रखना चाहिये. बाकी सब सामान क्षेत्रपाल धर्मशालाकी किसी कोठरीमें ताला बन्दकर रख देना चाहिये। भय किसी बातका नहीं। सब यात्रा समाप्त हो जाय तब ललितपुर लौट आना चाहिये और वहांसे चन्देरी क्षेत्र चला जाना चाहिये।

ललितपुरसे चन्देरी क्षेत्र २० मीलकी दूरीपर है, पक्की सडक है। बैल गाडी तांगा मोटर हर प्रकारकी सवारियां मिलती हैं।

चन्देरी अतिशय क्षेत्र

ललितपुरसे चन्देरी जाते समय बुढारा केलवाडा आदि बडे २ ग्राम पडते हैं, सबमें एक २ मंदिर और जैनी भाओंके घर हैं. एक वेगवती नदी भी पड़ती है। उसका पुल बंधा हुआ है। यह एक विशाल नदी है, नदीसे मायापुरा ग्राम आता है. फिर अतिशय क्षेत्र चन्देरी है। चन्देरी एक बडा भारी शहर है। इसके चारो ओर कोट खिंचा हुवा है, कोटमें दरवाजा है। आधा शहर आबाद और आधा ऊजड है. बहुतसी प्राचीन चीजें यहांकी देखने लायक हैं। यहांपर बडे २ प्राचीन ३ मंदिर हैं, इनमें हजारों प्राचीन प्रतिमा विराजमान हैं, यहां एक मंदिरमें चौवीस तीर्थंकरोंका जो जो वर्ण था उसी २ वर्णकी २४ देहरियोंमें चौवीस प्रतिमा विराजमान हैं। दर्शन करते ही अपूर्व आनन्द प्राप्त होता है, ऐसी मनोहर चौवीसो भगवानोंकी भिन्न २ वर्णोंकी प्रतिमा सर्वत्र नहीं प्राप्त हो सकतीं। यहांसे एक मीलके फासलेपर १ पहाड है, उसमें पत्थर काटकर बनाई हुई कायोत्सर्गासन प्रतिमा गुफाओंमें विराजमान हैं। जिनमें सबसे बडी एक विराजमान है जिसके दर्शनसे चित्त मारे आनन्दके भर जाता है, यहांसे १ मीलकी दूरीपर एक हाटकपुरा गांव है. वहां १ मंदिर है, यात्रियोंको वहांका दर्शन करना चाहिये। फिर चन्देरीमें आ जाना चाहिये।

चन्देरीसे १२ मीलके फासलेपर मालथौन अतिशय

क्षेत्र है, गांवका भी नाम मालथौन है। कच्ची सडक है। बैलगाडीसे जाना होता है। रास्तेमें छोटे २ चार गांव पडते हैं।

मालथौन श्रीअतिशय क्षेत्र

यह स्थान मालथौन गांवसे १ मीलकी दूरीपर नदी से थोडी दूर जंगलमें है, इस स्थानपर १ धर्मशाला तथा १ मंदिर है। मंदिरमें १०–१५–२०–२४ गज तककी ऊची प्रतिमा विराजमान हैं। इन सब प्रतिमाओंका आसन खड्गासन है, एक विशाल शिला लेख भी है, यहांका स्थान बडा ही मनोहर और सुहावना है। दर्शनकर चित्त बडा प्रसन्न होता है, यहांसे यात्रियोंको ललितपुर लौट जाना चाहिये। ललितपुरसे २४ मीलके फासलेपर श्रीबालाबेट अतिशय क्षेत्र है. बैल गाडीसे जाना होता है। यात्रियोंको ललितपुरसे बालाबेट क्षेत्र चला जाना चाहिये।

श्रीबालाबेट अतिशय क्षेत्र

यहां जानेके लिये कुछ रास्ता अच्छा और कुछ पहाडी है। यह ग्राम छोटासा है। यहां १ प्राचीन मंदिर है, मंदिरमें ३ वेदी हैं। बीचकी वेदीमें महामनोहर अतिशयसंयुक्त श्रीपार्श्वनाथ भगवानकी प्रतिमा विराजमान हैं।

सुना जाता है कि इस प्रतिमाजीको चोर चुराकर ले गये और जमीनमें गाड दिया था। बालाबेटके श्रावकको स्वप्न हुआ कि प्रतिमा अमुक स्थानपर जंगलमें गडी हुई

हैं । जो स्थान स्वप्नमें बताया गया था उसी स्थानपर प्रतिमा निकली और उनको लाकर वेदीमें विराजमान कर दिया गया । जिस समय पार्श्वनाथ भगवानकी प्रतिमा मंदिरजीमें विराजमान की गईं थीं उस समय अमृतके समान मीठे जलकी वृष्टि हुई थी । इस समय भी यहां अनेक अतिशय हुआ करते हैं, यहांके मंदिरोंमें और भी अनेक प्रतिमा विराजमान हैं, जिनके दर्शनसे बड़ा आनंद प्राप्त होता है, यहांका दर्शनकर यात्रियोंको फिर ललितपुर लौट जाना चाहिये, और रेलसे ललितपुरसे तीसरा स्टेशन जाखलौन है वहां जाना चाहिये । किराया ≡)॥ लगता है ।

जाखलौन स्टेशन ।

यह बस्ती स्टेशनसे २ मीलकी दूरीपर है । बैलगाड़ीसे जाना होता है । यह ग्राम अच्छा है । १ मंदिर और जैनी भाइयोंके घर है । जाखलौनसे ४ मीलकी दूरीपर सुमैंका पर्वत नामका अतिशय क्षेत्र है । बैलगाडीसे जाना होता है यात्रियों को जाखलौनसे वहां चला जाना चाहिए ।

श्रीसुमैंका पर्वत अतिशय क्षेत्र ।

इस स्थान पर आनेके लिये पहाड़ी रास्ता है । एक मनोहर जगह पर यहां १ गुमटीदार देहली बनी हुई है । जिसमें करीब १॥ हजार वर्ष पहिलेकी महा मनोहर प्राचीन श्रीशांतिनाथ स्वामीकी चरण पादुका विराजमान हैं । इस

प्राचीन चरण पादुकाके दर्शनसे चित्तमें बडा आनंद होता है। यहांका दर्शन कर पीछे जाखलौन लोट जाना चाहिए। जाखलोनसे ८ मीलकी दूरीपर श्रीदेवगढ अतिशय क्षेत्र है बैलगाडीसे जाना होता है।

श्रीअतिशय क्षेत्र देवगढजी।

यह स्थान जंगलका है। यहां एक बडा पहाड है। १ बडी नदी बहती है। देवगढ नामका एक छोटासा ग्राम हैं। उसमें एक धर्मशाला है वहां ठहरना चाहिये। धर्मशाला से १ मीलकी दूरीपर पहाड है। प्रातःकाल स्नान कर हाथमें द्रव्य लेकर यात्रियोंको इस पहाड पर आना चाहिये। पहाडके पास पत्थरमें खुदी हुई पानीकी वावडी है। वहां पर द्रव्य धोना हो तो धो लेना चाहिये। यह वावडी महामनोहर देखने लायक है। यहांसे पहाडके ऊपर जाना चाहिये। पहाडपर १ विशाल कोट बना हुआ है। उसके भीतर ४५ मंदिर हैं जो प्राचीन परन्तु मजबूत लाखों रुपयोंकी लागातके बने हुए हैं और हजारों महा मनोहर प्राचीन प्रतिमा इनके अंदर विराजमान हैं। एक मंदिरमें १ गुफा है। उसमें १५ गजकी खड्गासन १ चन्द्रप्रभ स्वामीकी प्रतिमा विराजमान है। जिस मंदिरकी गुफामें यह प्रतिमा जी विराजमान है वह मंदिर सब मंदिरोंमें बडा है। वहांपर एक मानस्तंभ है जो कि अपूर्व और देखने योग्य है। कोटके ३ दरवाजे हैं और उसके पास जिसके घाट बन्धे हुए

हैं ऐसे दो विशाल तालाब हैं। १ अत्यन्त गहरी नदी है। नदीके किनारे ४ विशाल गुफा हैं यह प्राचीन रचना सब देखने योग्य है। जिस धर्मात्माने यहांका बडा मंदिर बनवाया था उसे धन्य है। इस समय यह मंदिर कुछ जीर्ण शीर्ण हालतमें हो गया है। यदि कोई भाई इसका जीर्णोद्धार करादे तो बडा पुण्य हो। वह भी धन्यवादका पात्र समझा जावेगा। जीर्णोद्धार एक महा पुण्यका कारण है। यहांसे उतर कर धर्मशाला चला जाना चाहिये और वहांसे ८ मीलकी दूरीपर १ चांदपुर नामका अतिशय क्षेत्र है वहां चला जाना चाहिये। बैलगाडीसे जाना होता है। चांदपुर जाते समय एक आदमी अवश्य साथमें लेलेना चाहिये।

श्रीचांदपुर अतिशय क्षेत्र।

यह पवित्र क्षेत्र भी जंगलमें है और जीर्ण शीर्ण हालतमें पडा हुआ है। यहांकी भी मरम्मत करानेकी बडी भारी आवश्यकता है। ऐसे २ प्राचीन क्षेत्रोंको बेमरम्मत की हालतमें देखकर बडा खेद होता है। ऐसे क्षेत्रोंकी मरम्मतमें थोडे रुपयोंकी आवश्यकता होती है। धर्मात्मा जैनी भाइयोंको इस बातपर ध्यान देना चाहिये। यहां पर रेलवेकी चौकीके पास १ विशाल अखंडित मंदिर है तीन प्रतिमा बडी २ विराजमान हैं। उनमें १ प्रतिमा १४ गजकी और २ सात सात गजकी विशाल हैं, दीवालमें चौबीस

महाराजकी महा मनोहर प्रतिमा विराजमान हैं । यहांकी प्राचीन प्रतिमाओंको देखकर चित्तमें जैनधर्मका बडा भारी गौरव होता है । आसपासमें भी यहां अनेक प्रतिमा विराजमान हैं जो कि महा मनोहर हैं । सब के दर्शन करना चाहिये ।

यहां पर थोडी दूरके फासलेपर १ कोट है । कोटमें १ फूटा हुआ महादेवका मंदिर है । ३ नांदिया बने हुए हैं जो देखने योग्य हैं । यहांका सब दृश्य देखकर २ मीलकी दूरीपर रेलवे स्टेशन है वहां पूछकर जाना चाहिये और वहांसे टिकट लेकर वीना चला जाना चाहिए ।

वीना इटावा जंकशन ।

यह शहर स्टेशनसे १ मीलकी दूरीपर है । अच्छा शहर है । यहांपर जैनी भाइयोंके बहुतसे घर हैं ३ बडे २ मंदिर हैं । ये मंदिर ललितपुरके मंदिरों सरीखे विशाल हैं । दर्शन करनेसे चित्तको बडी शांति मिलती है । यहांके दर्शनकर यात्रियोंको सागर शहर जाना चाहिये ।

वीनासे रेलवे लाइन ४ जाती हैं १ कोटा, १ भोपाल, १ मथुरा देहली, १ सागर ।

सागर शहर ।

स्टेशनसे १ मीलकी दूरीपर धर्मशाला है वहां यात्रियोंको ठहरना चाहिये । यह एक विशाल शहर देखने ला-

यक है। यहांपर ३७ जैन मंदिर हैं। दिगम्बर जैनी भाइयोंके घर २०० के अनुमान हैं। २ पाठशाला और ५-६ धर्मशाला हैं। यहांपर १ विशाल तालाब है जिसका घेरा ५-६ मीलके बीचमें है। इस विशाल सागरके नामसे ही इस शहरका नाम सागर है। यहां अच्छी तरह तलाशकर यात्रियोंको दर्शन करना चाहिये। यहांसे बीना अतिशय क्षेत्र जाना होता है। करेली जानेवाली सडकसे बीना क्षेत्र ४८ मील पडता है। बैलगाडी और तांगा दो प्रकार की सवारियां बीना जानेके लिये मिलती हैं। रेलवेके रास्तेसे बीनाजी अतिशय क्षेत्रको जबलपुर इटार्सी भोपाल और सागर इस प्रकार ४ स्थानसे जाया जा सकता है। सब के बीचमें श्रीबीनाजी क्षेत्र है।

श्रीअतिशय क्षेत्र बीनाजी।

सागरसे कुरेली जानेवाली सडकसे आनेपर यह बीना क्षेत्र देवरीसे ४ मीलकी दूरीपर है। यहांपर तीन ३ विशाल मंदिर हैं जो कि अत्यंत मनोहर और कीमती हैं यहां पर १ प्रतिमा श्रीशांतिनाथ भगवानकी ६ गजकी और १ प्रतिमा श्रीवर्धमान स्वामीकी ४ गजकी श्यामवर्ण खड्गासन महा मनोहर विराजमान हैं और भी अनेक मनोहर प्रतिमायें विराजमान हैं। ये सब प्रतिमा प्राचीन हैं। एक भौंरा है। और भी कई चीजें दर्शनीय हैं। यहांसे यात्राकर यात्रियोंको सागर लौट जाना चाहिये।

वीनाजीसे १ रास्ता सागर १ इटारसी १ जबलपुर और १ भोपाल इसप्रकार ४ रास्ता जाते हैं परंतु सबमें सागर समीप पडता है। इसलिये सागर ही जाना चाहिये सागरसे ललितपुर जाना चाहिये। यदि यहां धर्मशालामें कुछ सामान रक्खा हो तो उसे लेकर स्टेशन जाना चाहिए और वहांसे दैलवाडा स्टेशन जाना चाहिये। ललितपुरसे दैलवाडाका टिकट ॥) लगता है। दैलवाडाके पास सिरौंन नामका अतिशय क्षेत्र है वहांपर चला जाना चाहिये।

श्रीसिरोन शांतिनाथजी (अतिशय क्षेत्र)

यहां पर ५-६ विशाल मंदिर हैं जो करीब १ हजार वर्ष पहिलेके बने हुए अत्यंत प्राचीन हैं। उनमें २ मन्दिर तो अत्यन्त ही प्राचीन हैं। इस क्षेत्रके चारो ओर कोट है। १ नदी बहती है। १ धर्मशाला है। ६ घर जैनीभाइयोंके हैं। यहांपर मन्दिरमें २० गज ऊंची खड्गासन १ प्रतिमा श्रीशांतिनाथ भगवानकी विराजमान हैं जो कि अत्यन्त प्राचीन और महा मनोहर हैं। और भी खंडित अखंडित बहुतसी प्रतिमा विराजमान हैं जिनके दर्शनसे बडा आनंद होता है। यहांपर खोदनेपर जमीनसे बहुतसी प्राचीन प्रतिमा निकलती हैं। यहांका दर्शन कर यात्रियोंको दैलवाडा स्टेशन आना चाहिये। और वहांसे तालबेट स्टेशनका टिकट लेकर तालबेट उतर जाना चाहिये।

तालबेट स्टेशन।

तालबेट स्टेशनसे ६ मीलकी दूरीपर श्रीपवा अतिशय क्षेत्र है। तांगा और बैलगाडीकी सवारी मिलती है। यात्रियोंको तालबेट उतरकर पवाजी चला जाना चाहिये।

श्रीपवाजी अतिशय क्षेत्र।

यह गांव छोटासा है। जैनी भाइयोंके घर २ हैं। ग्राम से १ मीलकी दूरीपर १ पहाड है। पहाडके चारो ओर कोट है। चढनेके लिये सीढियां बनी हुई हैं। कोटके भीतर २ विशाल मंदिर हैं। एक मंदिरमें १ भोंरा है। इस भोंरामें अनेक महा मनोहर प्राचीन प्रतिमा विराजमान हैं। उनमें से ३ प्रतिमा ४ फुट, २ प्रतिमा २॥ फुट और एक प्रतिमा २ फुट ऊंची पद्मासन विराजमान हैं। चित्तको बडी ही शांति प्रदान करनेवाली हैं। यहांका दर्शन कर तालाबेट स्टेशन लौट जाना चाहिये वहांसे झांसी जानी चाहिये। बीचमें खजराहा स्टेशन पडता है। जो भाई यहांसे खजराहा जाना चाहें, जा सकते हैं। खजराहा अतिशय क्षेत्र का हाल ऊपर लिखा जा चुका है।

झांसी जंकशन।

स्टेशनसे ३ मीलकी दूरीपर शहर है। शहरमें १ धर्मशाला है। २ मंदिर और १ चैत्यालय है। यहांके मंदिर बडे ही मनोज्ञ है। बहुतसी महा मनोहर प्रतिमा इनमें वि-

राजमान हैं। एक सहस्रकूट धातुमयी चैत्यालय है। १ मंदिर झांसी छावनीमें है। यात्रियोंको सब मंदिरोंके दर्शन करने चाहिये। झांसीका बाजार शहर आदि कई चीज देखने योग्य हैं।

झांसीसे ४ रेलवे लाइन जाती हैं १ सोनागिर गवालियर आगरा मथुरा अंबाला शिमला तक। १ बरुआ सागर महोबा चित्रकोट आदि होकर माणिकपुर तक। १ बीना इटावा और १ कानपुरकी ओर जाती है।

झांसीसे ४ मीलकी दूरीपर १ कुरगमा नामका अतिशय क्षेत्र है। यात्रियोंको वहां जाना चाहिये। जानेके लिए तांगा मिलते हैं।

श्रीकुरगमाजी अतिशय क्षेत्र।

यह स्थान १ बागमें १ बाबूका बंगला है। इसे यहांके लोग पुराना बाडा बोलते हैं। इस स्थानका पता झांसीमें अच्छी तरह पूछ लेना चाहिये। जमीनसे निकला हुआ यहां एक प्राचीन विशाल मंदिर है इसमें महामनोहर बहुत सी प्राचीन प्रतिमा विराजमान हैं जो कि बडी मनोहर हैं। यहांसे दर्शन कर झांसी लोट जाना चाहिये। यदि उचित प्रबंध हो तो धर्मशालामें उचित सामान छोड देना चाहिए और महोबा अतिशय क्षेत्र चला जाना चाहिये। महोबा माणिकपुर लाइनमें पडता है। झांसी और महोबेके बीचमें बरुवा सागर रानीपुर मेनाल कुल पहाड आदि बडे २ गांव

पडते हैं। इनका देखना यात्रियोंकी इच्छापर निर्भर है।

श्रीमहोवा अतिशय क्षेत्र

महोवा स्थान स्टेशनके पास है। बस्तीमें १ मंदिर है २४ प्रतिमा जो कुवेसे निकलीं थी इसके अंदर विराजमान हैं। यह स्थान पहिले एक शहर था। अब भी यहांपर अनेक प्राचीन चीजें देखने लायक हैं। सब आदमीको साथ लेकर सब चीजें देख लेनी चाहिये। यहांसे लौटकर झांसी चला जाना चाहिये। झांसीके पास सिद्ध क्षेत्र श्रीसोनागिरजी है, वहां जाना चहिये। रेलसे जाना होता है।

श्रीसिद्धक्षेत्र सोनागिरजी

सोनागिर खुद स्टेशन है, स्टेशनके पास १ धर्मशाला है। धर्मशालासे २ मीलके फासलेपर सोनागिर एक छोटा गांव है और १ पहाड है। यहां ४ विशाल धर्मशाला हैं। पहाडके नीचे वा ऊपर सब मिलाकर ६४ मंदिर हैं। पहाड छोटासा विना चढावका है, सब मंदिर यहां समीप समीप विराजमान हैं। करीब सब १ मीलके घेरेमें हैं। यहांकी वंदना करनेमें ५–६ घंटाका समय लगता है, इस क्षेत्रसे नंग अनंग कुमार आदि साढे पांच करोड मुनीश्वर मोक्ष पधारे हैं। यहांकी यात्राकर स्टेशन आ जाना चाहिये, और वहांसे गवालियरकी टिकट लेनी चाहिये। सोनागिरि पहाडपर बहुतसे शिला लेख हैं। इस पहाडका प्राचीन नाम

भमसाचल है। यह स्थान बड़ा ही रमणीक है।

गवालियर जंकशन

स्टेशनसे २ मीलके फासलेपर लश्कर चम्पाबाग है, वहां २ धर्मशाला हैं. यात्रियोंको इन धर्मशालाओंमें ठहरना चाहिये। यहांसे माली वा अन्य किसी आदमीको साथ ले लश्कर शहर जाना चाहिये। शहरमें बडे २ मंदिर और चैत्यालय कुल २२ हैं। चम्पाबागमें और चौक बाजारमें पंचायती बडे मन्दिर हैं जो कि चित्रकारीके कामके कीमती हैं। सबका अच्छीतरह दर्शन करना चाहिये। यहांसे पासमें ही गवालियर शहर है। पक्की सडक है, तांगासे गवालियर शहर जाना चाहिये. मार्गमें किलेके नीचे सडकके किनारे १ गांव पडता है। गांवसे २ फर्लांगके फासलेपर १ पहाड है। वहां बडी २ गुफा हैं और पत्थरमें उकेरी हुई बडी २ विशाल प्रतिमा हैं। इनका अवश्य दर्शन करना चाहिये। बहुतसे भाई यहां नहीं जाते हैं, यह उनकी बडी भूल है। यहांकी रचना बडी ही मनोहारिणी है। यह स्थान किलेके पास जंगलमें है। किलेका स्थान दूसरा है और वहां जो प्रतिमा विराजमान हैं वे यहांकी प्रतिमाओंसे भिन्न हैं, यहांका दर्शनकर यात्रियोंको गवालियर शहर आना चाहिये।

यह गवालियर शहर प्राचीन है। यहां १६ जिनमंदिर हैं। १ मंदिर भट्टारकजीका है, जिसमें काले हरे पाषाणकी

महामनोहर प्रतिमा विराजमान हैं। यहांका दर्शनकर किलेकी प्रतिमाओंके दर्शनकेलिये जाना चाहिये।

किलेको जानेके लिये फारम (लिखित आज्ञा) लेना पडता है कचहरीमें जाकर पहिले फारम लेना चाहिये। किलेमें अनेक रचना है, खुद नहीं देखी जा सकती इस लिये एक जानकार आदमीको साथ ले लेना चाहिये, यह किला वडा भारी है। देखनेमें ४–५ घंटा समय लगता है।

किला गवालियर।

यह किला लाल किलेके नामसे प्रसिद्ध है। इसमें बहुतसे बडे २ कीमती जिन मंदिर हैं। इनमें हजारों १०, १५–२० गज तक ऊंची प्राचीन मनोहर प्रतिमा विराजमान हैं। यहांपर १ प्रतिमा ३२ गज ऊंची श्रीशांतिनाथ भगवानकी विराजमान हैं जो कि महामनोहर और अद्भुत हैं। सुना जाता है कि प्रतिमाजी ३५ वर्षमें बनकर तयार हुई थीं। सबका दर्शन करना चाहिए। इस विशाल किलेमें अन्य मतियोंका मंदिर, श्रीमानसिंहजीका सुनहरी महल, मोतीमहल, इन्द्र भवन महल, फूल बाग, नौलखाबाग इत्यादि बहुतसी चीजें देखने योग्य हैं।

इस गवालियर शहरका पहिले नाम दूसरा था। पहिले यहांका राजा जैनी था उसके बनाए हुए किलेके भीतर और बाहरके मंदिर हैं।

ग्वालियर शहरसे ५–६ लाइन जाती हैं । १ सोना-गिरि १ आगरा १ पन्नीहार १ सायपुरा १ संचाइपुरा आदिको जाती है। गवालियर शहरसे पन्नीहारजी जाना चाहिये । रेलवेका रास्ता है । छोटी लाइन जाती है । किराया ।–) लगता है । मिलता

श्रीपन्नीहारजी अतिशय क्षेत्र।

यह ग्राम स्टेशनसे १ मीलकी दूरीपर है। यह ग्राम छोटासा पर प्राचीन है । १ जैन मंदिर और ४ घर जैनी भाइयोंके हैं । मंदिरके दर्शन कर सामान वहीं छोड दे। यहांसे आधी मीलकी दूरी पर १ भोंरा है, दीया बत्ती और १ मालीको संग लेकर भोंरा जाना चाहिये । यहां पर जंगल में चारो ओर कोटसे घिरा हुआ १ विशाल मंदिर है । १ छत्री है । १ प्रतिमा बाहर विराजमान हैं । भीतर मंदिरमें १ संकुचित ३ मंजलका एक विशाल भोंरा है । सीढी लगी हुई हैं बैठ २ कर दीयासे देखकर भीतर भोंरेके जाना चाहिये । भोंरेके भीतर महामनोहर प्राचीन १४४ प्रतिमा विराजमान हैं । यहांकी प्रतिमाओंको देखकर आश्चर्य होता है कि ये प्रतिमाजी भोंरेमें कैसे विराजमान कीगई होंगी।

यहांसे १ मीलकी दूरीपर १ पहाड है । यहां छोटा सा पहाड है । इसके ऊपर १ बडे दालान सहित १ विशाल मंदिर है । इस मंदिरमें ३ प्रतिमा काल वर्ण २४ गज ख-

पद्मासन ऊंची विराजमान हैं। यहांके दर्शनसे चित्त बडा ही आनंदित होता है।

उस धर्मात्मा पुरुषको धन्यवाद है कि जिसने विपुल धन खर्चकर यहांके मंदिर आदिका निर्माण किया था। खेद है कि ऐसे २ महत्त्व पूर्ण क्षेत्रोंकी भी जैन समाजकी ओरसे कुछ भी संभाल नहीं। तीर्थक्षेत्रकमेटीको इस ओर ध्यान देना चाहिये। यहांके दर्शन कर यात्रियोंको लश्कर स्टेशन जाना चाहिये। वहांसे बडी लाईन स्टेशन ग्वालियर जाकर धौला स्टेशन चला जाना चाहिये। बीचमें मोरेना पडता है यहां उतर जाना चाहिये।

मोरेना।

यह स्थान स्टेशनके पास है। व्यापारकी १ विशाल मंडी है। यहापर स्वर्गीय पं० गोपालदासजी द्वारा स्थापित श्रीगोपाल दिगम्बर जैन विद्यालय है। यह एक जैन समाजमें आदर्श विद्यालय है। उच्चकोटिके न्याय धर्मशास्त्र आदि ग्रंथोंका यहां अध्ययन कराया जाता है। यह हर एक जैनी भाईके देखनेका और तन मन धनसे सहायता करनेका स्थान है। यहां विशाल मंदिर और पाठशालाका भवन है। यहांसे धौला स्टेशन जाना चाहिये।

धौला।

यहांका पुल और बहर देखने योग्य है। यहांसे आ-

गरा फोर्ट स्टेशन जिसको आगरा किला स्टेशन भी कहते हैं वहां जाना चाहिये।

आगरा फोर्ट।

स्टेशनसे आधी मीलकी दूरीपर मोती कटराकी धर्मशाला है। यहां आकर यात्रियोंको ठहर जाना चाहिये। १ धर्मशाला बेलनगंजमें भी है। आगरामें छोटे बडे ३१ मंदिर हैं। कई महल्ला और कई स्टेशन हैं। यह १ प्राचीन शहर सुन्दर और विस्तृत है। यहां जैनी भाइयोंके बहुतसे घर है। यहांपर नाई मंडीके १ श्वेताम्बरी मंदिरमें श्रीशीतलनाथ भगवानकी बडी ही मनोहर प्रतिमा विराजमान हैं। यहांके सब दर्शन करने चाहिये।

आगरासे ४ मीलकी दूरीपर १ सिकन्दर गांव है। वहांपर १ जैन मंदिर है। १ सिकन्दर बादशाहकी कब्र है जो देखने लायक है। शहर आगरामें किला, किलेमें तोपखाना, शीश महल, मच्छी भवन, मोती मस्जिद, नदीका बडा पुल, ताजबीबीका रोजा, जुम्मामस्जिद, एत्मादद्दौलाका मकबरा, वजीरकी कबर, अजायब घर, किनारी बाजार आदि बहुतसी चीजें देखने योग्य हैं। यात्रियोंको आगरासे फीरोजाबादकी टिकट लेनी चाहिये। बीचमें १ टूंडला जंकशन पडता है वहांपर गाडी बदली जाती है।

श्रीफिरोजाबाद अतिशय क्षेत्र।

यह शहर स्टेशनसे १ मीलकी दूरीपर है। शहरमें श्री चंद्रप्रभ भगवानका विशाल मंदिर है और वहीं १ धर्मशाला है। यात्रियोंको वहां जाकर ठहरना चाहिये। यहांपर सब मंदिर ७ हैं। एक पंचायती मंदिर है जिसमें हीरेकी आठ अंगुल प्रमाण कायोत्सर्ग १ प्रतिमा विराजमान हैं और १ प्रतिमा श्रीचंद्रप्रभ भगवानकी महामनोहर स्फटिकमयी विराजमान हैं। यहांका दर्शनकर यात्रियोंको शिकोहाबाद आना चाहिये। फिरोजाबादसे शिकोहाबादका रेल किराया ≈) लगता है।

शिकोहाबाद।

यह शहर स्टेशनसे २ मीलकी दूरीपर है। पुराना शहर है। १ मंदिर और सत्तर घर जैनियोंके हैं। यदि किसी भाईको शहर जानेकी इच्छा हो तो वह चला जाय। यदि न हो तो स्टेशनसे सीधा सूरीपुर बटेश्वर चला जाना चाहिये।

श्रीसूरीपुर बटेश्वर अतिशय क्षेत्र।

शिकोहाबाद स्टेशनसे सूरीपुर तांगा जाते हैं। जमुना जीके घाट तक पक्की सड़क है ।=) सवारी लगता है। ११ मील पडता है। घासका पुल कच्चा है। उस तरफ २ मील की दूरीपर बटेश्वर गांव है। पुलसे बटेश्वर तक भी तांगा

जाते हैं और वहांसे ।=) सवारी और लगता है तथा लौटते समय घाटके ऊपर हर समय तांगे मिलते हैं।

बटेश्वर एक छोटासा गांव है। प्राचीन और अच्छा है। बडे २ गढ और मकान हैं। यहांपर बटेश्वर महादेवजीके बहुत मंदिर हैं। यमुनाजी बह रही हैं। घाट बना हुआ है। यह हिन्दु लोगोंका १ बडा तीर्थ है। सैकडों हिंदुलोग यहां आया जाया करते हैं और पिंडदान स्नान तर्पण आदि करते हैं। गांवके वीचमें १ जैन मंदिर है। यह मंदिर बहुत बडा और ऊंचा है। भट्टारकजीने यह मन्दिर बनवाया था। इस मन्दिरको यहांपर जतीजीका मन्दिर बोलते हैं। मंदिरके नीचे एक धर्मशाला है। सुना जाता है—यहांपर भट्टारकजीने कट्टर ब्राह्मणोंको वादमें जीतकर यह मंदिर बनवाया था। इस मंदिरकी नीव जमुनाजीमें है। इसके बनानेमें बहुत रुपया लगा था। भट्टारकजीकी गद्दीका यहांपर एक पंडित रहता है। उसीके जुम्में इस मन्दिरकी देख रेख है। इस मंदिरमें ४ प्रतिमाजी अत्यंत प्राचीन हैं। १ प्रतिमा श्यामवर्ण बडी अद्भुत श्रीअजितनाथ भगवानकी हैं और भी बहुतसी महा मनोहर प्रतिमा विराजमान हैं।

यहांपर १ मीलकी दूरीपर १ जंगल है। वहांपर कई प्राचीन मंदिर और १ नवीन मन्दिर है। १ नई छत्री और १ दालान है। छत्रीमें भगवान नेमिनाथकी प्राचीन चरण पादुका विराजमान हैं। दालानमें १ प्रतिमाजी श्रीनेमि-

नाथ भगवानकी राजमान हैं जो कि महा मनोहर अतिशय संयुक्त है। और भी यहां खंडित अखंडित बहुत सी प्रतिमा विराजमान हैं। १ चरण पादुका है। जिस समय यात्रिगण इस जंगलके स्थानपर आवे साथमें मालीको अवश्य लेते आवें। इस स्थानका नाम शौरीपुर है। यहां बावीसवें तीर्थंकर श्रीनेमिनाथ स्वामीका जन्म हुआ था। भगवान नेमिनाथका जन्म द्वारिकाका भी शास्त्रोंमें लिखा है यह स्मृतिका दोष है वास्तविक बात क्या है ? यह भगवान केवलीके केवलज्ञानमें झलकती है। हमें दोनों ही बात प्रमाण हैं। इन दोनों क्षेत्रोंकी अवश्य यात्रियोंको यात्रा करनी चाहिये। यह स्थान बडा ही रमणीक और सुन्दर है यहांकी वंदना और वटेश्वर ग्रामके मन्दिरकी पूजा वंदनाकर स्टेशन शिकोहावाद जाना चाहिये। वहांसे कायमगंजको गाडी जाती है। वहांका टिकट लेना चाहिए, किराया १।) लगता है। वीचमें फरुखावादकी स्टेशन पडती है। कायमगंज जानेके लिये वहां गाडी वदलनी पडती है। फरुखावाद शहर अच्छा है। जाते समय वा आते समय इस शहरको देखना चाहिये। उसका कुछ हालात नीचे लिखे अनुसार है—

फरुखाबाद जंकशन।

स्टेशनके पास दोनों ओर २ धर्मशाला वैष्णवोंकी हैं। १ मीलकी दूरीपर शहर है। शहरका =) सवारी तांगाके

लगते हैं। यह शहर प्राचीन पर अच्छा है। यहांपर ३ मंदिर हैं। १ मंदिर सदर बाजारमें हकीम पूत्तूलालजीके पास है हकीम पूत्तूलालजी यहांके १ नामी और परोपकारी वैद्य हैं। १ मन्दिर लोइया पट्टीमें हैं। १ मन्दिर जैन मुहल्लामें है जो बनारसीके मंदिरके नामसे मशहूर है। इहां दिगंबर जैनी भाइयोंके घर बहुत हैं। यहांसे कायमगंज जाना चाहिये।

कायमगंज स्टेशन।

स्टेशनसे १ मीलकी दूरीपर यह बस्ती है। १ जैन मंदिर और कुछ श्रावकोंके घर हैं। कायम गंजसे ५॥ मील श्रीकंपिलाजी अतिशय क्षेत्र है। पक्की सड़क है =) सवारी तांगामें लगती है। कायमगंजसे कंपिलाजी जाने और कायमगंजको फिर लौट आनेका ।) सवारी लगती हैं।

श्रीकंपिलाजी अतिशय क्षेत्र

यह १ छोटासा गांव है। यहांपर १ धर्मशाला और १ विशाल दिगम्बर जैन मन्दिर है, यहां भगवान विमलनाथके गर्भ जन्म आदि ४ कल्याणक हुए हैं। मंदिरमें ३ प्रतिमा श्रीविमलनाथ भगवानकी बहुत प्राचीन महामनोहर विराजमान हैं। यहां १ मन्दिर और १ धर्मशाला श्वेताम्बर जैनियोंकी भी है, यहांकी यात्राकर यात्रियोंको कायमगंज स्टेशन चला जाना चाहिये, और वहांसे कानपुर छोड़े

लेनसे चला जाना चाहिये। कायमगंजसे कानपुरका १॥।~) रेलकिराया लगता है।

कानपुर शहर

स्टेशनसे १ मीलके फासलेपर शहरमें जैन धर्मशाला है। सवारी ट्राम घोडागाडी आदिकी मिलती है। धर्मशालामें एक प्रसिद्ध और विशाल औषधालय है, अत्यन्त सज्जन परोपकारी वैद्य कन्हैयालालजी उसके संचालक हैं। हजारों रोगियोंको विना मूल्य दवा वितरण की जाती है, यात्रियोंको यहां आकर ठहरना चाहिये. शहरमें ३ विशाल मंदिर और २ चैत्यालय हैं। यहां कांचका श्वेताम्बर जैनियोंका मंदिर दर्शनीय है, जैनमंदिरके पास ही है, शहर आदि और भी बहुतसी चीजें देखने योग्य हैं। कानपुर देखकर फिर छोटी लाइनकी स्टेशन, जिस पर कि उतरे थे उसीपर आना चाहिये और लखनऊ चला जाना चाहिये. कानपुरसे लखनऊका ॥~) किराया लगता है।

कानपुरमें जैनी भाइयोंके बहुतसे घर हैं। ५-६ रेलवे लाइन जाती हैं, १ झांसी १ आगरा १ कायमगंज १ लखनऊ और १ इलाहाबाद।

लखनऊ शहर

यह शहर बहुत प्राचीन है। यहां ३ रेलवे स्टेशन हैं.

तीनों स्टेशनोंके पास ३ धर्मशाला बनी हुई हैं। सबका खुलासा हाल नीचे लिखे अनुसार है—

१ सबसे बडा स्टेशन नौबागका है, वहांसे २ मीलकी दूरीपर चौकबाजार चूडीवाली गलीमें १ धर्मशाला और २ मंदिर पास पासमें हैं. एक मंदिर बडा पंचायती धर्मशालामें है उसमें ६ वेदी हैं और हजारों महामनोहर प्रतिमा विराजमान हैं। दूसरा मंदिर गलीमें है।

छोटी लाइनकी एक सिटी स्टेशन है, वहांसे १ मील स्याह गंजमें १ धर्मशाला है। १ बडा मंदिर है जिसमें ३ वेदी हैं। प्राचीन नवीन बहुतसी प्रतिमा विराजमान हैं।

छोटी लाइनका १ दूसरा स्टेशन और है वहांसे १॥ मीलके फासलेपर डालीगंज नामका जैन मोहल्ला है वहांपर १ धर्मशाला १ मंदिर और १ बाग है। यह जगह बडी रमणीय है। यहांकी हवा साफ जंगल कूप आदि सब बातका आराम है।

१ मंदिर फिरंगीके महलके पास नई सडकपर है, एक चैत्यालय चौक बाजारके पास है। १ मंदिर चौक बाजारके पास दो मीलके फासलेपर दूसरे मुहल्लामें है। यह मंदिर खंडेलवालोंका मंदिरके नामसे मशहूर है। यात्रियोंको तलाशकर यहां सब मंदिरोंके दर्शन करने चाहिये। यहांपर शहर, चौक गार्ड दरवाजा, हुसेनाबाद (प्राची भवन) इमामबाडा, तस्वीर घर, घंटाघर, बडा तालाब इत्यादि चीजें

देखने योग्य हैं। ये सब चीजें चौक बजारके पास हैं। यहां से २ मीलके फासलेपर आसफदोलाका महल (आलम बाग) है। वहां एक अच्छा बाजार है । २ मील श्याहानजब १ मील अनाथव घर है। बडापुल, लोहेका पुल, कचहरी आदि सब देखने योग्य हैं। सब तलाशकर देखने चाहिये।

जो भाई दर्शन वा किसी चीजके देखनेके लिये जांय तो जाते वक्त तांगा कर लें। आते समय सब जगह तांगा मिलता है। ऐसा करनेसे किरायेका सुभीता पडेगा। लखनऊमें जैनी भाइयोंके घर करीब १०० के हैं। यहां सिटी स्टेशनसे बारावंकीका टिकट लेना चाहिये। किराया ।–) लगता है।

बारावंकी–नवावगंज

यहांकी स्टेशनका नाम बारावंकी और शहरका नवावगंज है। यहांसे २॥ मीलकी दूरीपर जैन मुहल्ला है। तांगे जाते हैं, ।) फी सवारी लगती है। जैन मुहल्लाके लिये एक और भी मार्ग है जो कि कुछ कच्ची और कुछ पक्की सडकका है। यह सीधा और थोडी दूरका है। शहर जाते समय १ नाला पडता है। जैन मुहल्लामें १ धर्मशाला और ३ बडे बडे सुन्दर मंदिर हैं। दिगम्बर जैनी भाइयोंके घर ६० हैं। ये सब घर पास पास हैं। इसलिये इसका नाम जैनमुहल्ला है। यहांका शहर अच्छा है। यहांसे १० मीलके फासलेपर त्रिलोकी क्षेत्र है। तांगासे जाना होता है।

त्रिलोकी क्षेत्रका हाल सब बाराबंकी नबावगंजमें पूछ लेना चाहिये।

बाराबंकीसे ४ लाइन जाती हैं। १ लखनऊ २ अयोध्या ३ गोंडा ४ बलिरामपुर। बाराबंकीसे पहिले यात्रियोंको श्रीत्रिलोकपुर क्षेत्र जाना चाहिये।

श्रीत्रिलोकपुर क्षेत्र

यह एक छोटासा गांव है। १ पंचायती मंदिर है, इसी मंदिरजीके पास वैष्णवोंका १ मंदिर है। कुआ बगीचा और १ धर्मशाला है। १ बडा दालान है। दालानके पास एक कोठरीमें ३ फीट ऊंची श्यामवर्ण महा मनोहर श्रीनेमिनाथ भगवानकी १ प्रतिमा विराजमान हैं। यह प्रतिमाजी करीब १०० वर्षसे वैरागी साधुके अधिकारमें हैं, उस साधुके कुटम्बमें अब एक स्त्री रह गई है उसीका इस प्रतिमापर अधिकार है। कोठरीमें अन्धेरा है। वह स्त्री ॥) लेकर दीपासे प्रतिमाजीके दर्शन करा देती है। यहां जैन सम्प्रदायके बहुत थोडे घर हैं। यहांकी प्रतिमाजीके दर्शन करनेसे बडा आनन्द होता है। यहांसे लौटकर यात्रियोंको बाराबंकी जाना चाहिये या ४ मीलके फासलेपर त्रिलोकपुरसे एक बिन्दोरा स्टेशन पडता है वहां जाकर बलरामपुरका टिकट लेना चाहिये बीचमें गोंडा जंकशन गाडी बदली जाती है सो ध्यान रहे।

गोंडा जंकशन

यह शहर बडा है। १ जैन मंदिर है स्टेशन नजदीक है। जैनी भाइयोंके घर भी हैं। यहांका गुड चीनीका कारखाना देखने लायक है। यहां गाडी बदलकर बलरामपुर जाना चाहिये।

बलरामपुर

यहां स्टेशनसे १ मीलके फासलेपर वैष्णवोंकी धर्मशाला है वहां ठहरना चाहिये। यहांपर जैनियोंका कोई नाम निशान नहीं। शहर ठीक है। २ तालाव राजा साहवका महल छत्री आदि चीज देखने लायक हैं। यहांसे १० मीलकी दूरीपर सेटमेंट नामका क्षेत्र है। यह प्रसिद्ध है। इस क्षेत्रका जानेके लिये कुछ पक्की और कुछ कच्ची रास्ता है। तांगा जाता है, यात्रियोंको मामूली सामान लेकर तांगासे वहां जाना चाहिये।

श्रीसेटमेट क्षेत्र

यह क्षेत्र बलरामपुरसे एकदम पश्चिमकी ओर है सडकके किनारेपर है। १० मीलके फासलेपर १ जंगल आता है वहींपर यह स्थान है। यहां छोटीसी एक कच्ची धर्मशाला बनी हुई है। यहां ब्रह्मा देशके लोग रहते हैं। ब्रह्माकी धर्मशाला पूछ लेनी चाहिये, (ब्रह्मा नामका एक साधु है) यहां इस धर्मशालामें १ कहार नौकर रहता है.

उसे साथ लेकर सोमनाथके मंदिर जाना चाहिये, यह मं-दिर खाली है. जीर्ण और फूटी दशामें है । यहांपर एक प्रतिमा विराजमान थीं उसे गवर्नमेण्ट उठा ले गई। यहां प्राचीन नगरीके सब चिन्ह हैं, इस नगरीको जैनी और बौद्ध दोनों पूजते हैं। इस नगरीका नाम श्रावस्ती नगरी है, यह श्रीसंभवनाथकी जन्म पुरी है। इस नगरीकी पूजा कर बलरामपुर लौट आना चाहिये । बलरामपुरसे इस क्षेत्र पर जाने आनेका तांगाका भाडा ३) लगते हैं। बलरामपुर स्टेशनसे गोरखपुर चला जाना चाहिये । रेल किराया १।) रुपया लगता है ।

गोरखपुर जंकशन

स्टेशनसे १ मीलके फासलेपर अलीनगर नामका मु-हल्ला है, वहां एक विशाल और सुन्दर दि० जैन धर्मशाला है। इस धर्मशालामें ही ५-६ मन्दिर हैं। इनमें महामनोहर प्रतिबिंब विराजमान हैं, यह शहर अच्छा विस्तृत है. चि-डिया घर अजायब घर गोरखनाथका मंदिर देखने योग्य हैं। यहांसे २ मीलकी दूरीपर १ असरण नामका मुहल्ला है। वहां बाबू अभिनंदनप्रसादका बंगला है । ये बाबू साहब वकील हैं गोरखपुरमें एक प्रसिद्ध व्यक्ति हैं. इनका बंगला देखना चाहिये तथा यहां १ चैत्यालय है उसका दर्शन करना चाहिये। १ कोठरीमें कुछ वैष्णवोंकी मूर्तियां

हैं। वे भी दर्शनीय हैं। यहांसे यात्रियोंको नौनखार स्टेशनकी टिकट ॥) में लेनी चाहिये।

नौनखार स्टेशन

यहांसे २ मीलके फासलेपर खुकुन्दा नामका गांव है, कच्ची रास्ता है। वहां जाना चाहिये। यह प्रसिद्ध गांव है।

खुकुन्दा गांव

यह १ प्राचीन ग्राम है, ग्रामके इसी ओर १ मन्दिर १ धर्मशाला १ कुआ हैं यह सब प्राचीन रचना है। यहां ३ प्रतिबिंब विराजमान है जो कि श्यामवर्णकी महा मनोहर हैं। स्थान भगवान पुष्पदन्तकी जन्म नगरी किष्किन्दापुरी है। यहां सब रचना जीर्ण शीर्ण दशामें है। यहांपर किसी धर्मात्मा भाईको अवश्य जीर्णोद्धार कराना चाहिये। तीर्थ स्थानोंकी परंपराकी रक्षार्थ यह कहना परमावश्यक है। बडा पुण्य होगा। यहां १ ब्राह्मण पुजारी रहता है। यहांसे ८ मीलके फासलेपर श्री ' कहाव गांव ' नामका अतिशय क्षेत्र है वहां जाना चाहिये। कच्चा रास्ता है, बैल गाडीसे जाना होता है बीचमें बादरपुर चक्रागांवमें होकर मार्ग गया है। १ आदमी साथमें ले लेना चाहिये।

श्रीकहावगांव अतिशय क्षेत्र

यह स्थान लठाका दर्शन इस नामसे प्रसिद्ध है। कहांव ग्रामके पास जंगलमें १ बहुत ही प्राचीन मानस्तंभ है।

नहीं मालुम अकेला यह स्तम्भ यहां कैसे विराजमान है। इस स्तम्भकी चारो ओर एक कोट बना हुआ है। इस स्तम्भमें ४ प्रतिबिंब ऊपर और १ प्रतिबिंब नीचे विराजमान हैं। देखनेसे जान पडता है यह स्तम्भ हजारों वर्षका होना चाहिये। इसपर कनडी भाषामें लिखा हुआ १ बडा शिला लेख है। लोगोंका विश्वास है कि इसी मानस्तंभके प्रभावसे इस ग्राममें रोग प्लेग आदि कभी नहीं हुआ। यह जगह परमपूज्य है। मालुम होता है इस स्तंभके पासमें पहिले एक विशाल जैन मंदिर होगा। यहांका दर्शन कर २ मीलके फासलेपर १ तालाव नामका स्टेशन है। वहां जाना चाहिये अथवा पासमें ही चतरामपुरका भी स्टेशन है. वहां चला जाना चाहिये। वहांसे सोहावलका टिकट लेना चाहिये। पासमें ही यहां नौनखारके वीचमें १ भटनी शहर है। उसका स्टेशन भी है यदि यात्री वहां जावे तो जा सकते हैं।

कहावगांव जानेका दूसरा रास्ता

खुकुंदा ग्रामसे लौटकर नौनखार स्टेशन आना चाहिये। नौनखारसे ।) देकर चतरामपुरका टिकट लेना चाहिये। इस मार्गके वीचमें भटनी जंकशन पडता है, चतरामपुरसे २ मील कहावगांव और वहांसे पाव मील लठाका दर्शन है। लौटकर फिर चतरामपुर आना चाहिये और

फिर वहांसे सोहावल जाना चाहिये। रेल भाडा ।।=) लगता है।

सोहावल स्टेशन

स्टेशनसे रत्नपुरी (नौराई) १।। मीलके फासलेपर है। १ मीलतक पक्की सडक और आधा मील कच्ची सडक है। रत्नपुरी—नौराई यहां प्रसिद्ध ग्राम है। यहांपर मार्गके ऊपर ही १ श्वेताम्बरी धर्मशाला है, उसमें ठहरना चाहिये यहां एक ब्राह्मण रहता है दिगम्बर श्वेतांबर दोनों मंदिर इसीके जुम्मेमें हैं। सामान धर्मशालामें छोड देना चाहिये। और पुजारीको संग लेकर भीतर गांवमें जाना चाहिये। यहां दि० जैन २ मंदिर हैं, १ धातुकी प्रतिमा श्रीपार्श्वनाथ भगवानकी विराजमान हैं। यह जगह बड़ी पवित्र है यह श्रीधर्मनाथ भगवानकी जन्मपुरी है। यहां यात्रा कर यात्रियोंको स्टेशन जाना चाहिये और वहांसे फैजाबादका टिकट लेना चाहिये। रेलभाडा फैजाबादका =) लगता है।

फैजाबाद जंकशन।

स्टेशनसे १ मीलकी दूरीपर बस्ती है। बहुत प्राचीन और अच्छी है। १ दिगम्बर जैन मंदिर और १ श्वेतांबर जैन मंदिर है। दि० जैनी भाइयोंके ७ घर हैं। वहांसे यात्रियोंको अयोध्या जाना चाहिए। रेलभाडा अयोध्याजी का ।।) लगता है। फैजाबादसे ३ रेलवे लाइन जाती हैं १

इलाहाबाद १ मोहाबक १ अयोध्या । इनमेंसे अयोध्या जाना चाहिये।

श्रीअयोध्या आतिशय क्षेत्र।

स्टेशनसे २ मीलकी दूरीपर जैनधर्मशाला है। तांगा या बैलगाडीसे वहां जाना चाहिए। यहां बंदर बहुत हैं। संभालकर सब काम करना चाहिये। किवाड बन्दकर रोटी बनाना चाहिये और बाल बच्चोंकी अच्छी तरह सम्भाल रखनी चाहिये। यहांपर धर्मशालामें १ मंदिर है और भी ४ जगह है। धर्मशालासे २ मीलके फासलेपर देहरी और चरण पादुका हैं। सब दर्शन करना चाहिये।

यह नगरी अनादिकालीन २४ तीर्थंकरकी जन्मभूमि परम पवित्र है परन्तु इस अवसर्पिणी कालमें काल दोषसे यहांपर ऋषभ अजित अभिनन्दन सुमति और अनन्तनाथका ही जन्म हुआ है। चौवीसो भगवानका मोक्ष जानेका स्थान सम्मेद शिखर है परन्तु काल दोषसे ४ तीर्थंकर चंपापुरी पावापुरी कैलास और गिरिनारसे मोक्ष पधारे हैं। यहां राजा दशरथ रामचन्द्र आदि पुण्याधिकारियोंने भी जन्म लिया था। श्वेतांबर लोगोंके भी यहां १ धर्मशाला और १ मंदिर है। हिंदु लोगोंका यह बडा तीर्थ है। यहांपर वैष्णवोंके मंदिर पांचसौसे ज्यादा होंगे सरजू नदीका घाट बना है यह सब चीज यहां देखने योग्य

है। यहांपर सरजू नदीमें बडी २ नावे हैं दूसरीपार उतराई का)। लगता है। उसपार छोटी लाइनकी १ स्टेशन है। वह लकडमंडीका स्टेशनके नामसे मशहूर है यहांसे १ रेल मनकापुर और १ लखनऊ जाती है। मनकापुरका कुछ विवरण इस प्रकार है--

मनकापुर जंकशन।

यहांसे १ रेलवे बनारस और १ गोरखपुर जाती है। गोरखपुरसे १ गोंडा बाराबंकी लखनऊ जाती है। १ बलरामपुर जाती है। गोंडा जंकशन होकर भी बलरामपुर जाती है। १ रेलवे गोरखपुरसे भटनी जंकशन होकर मोहाबल फैजाबाद अयोध्या तक जाती है। भटनीसे १ रेलवे बनारस और १ गोरखपुर जाती है।

अयोध्यासे दूसरे रास्ते गोरखपुर किष्कंधापुर कहावगांव भटनी बलरामपुर गौंडा बाराबंकी लखनऊ जा सकते हैं। चंद्रपुरी सिंहपुरी होकर बनारस भी जा सकते हैं। यात्रियोंको अयोध्यासे इलाहाबाद जाना चाहिये। रेल किराया ४) रुपया लगते हैं। गाडी फैजाबाद बदली जाती है।

इलाहाबाद शहर।

स्टेशनसे १ मीलकी दूरीपर बडा चौक बाजार है। वहांपर १ दिगम्बर जैन धर्मशाला है। वहां जाकर ठहरना चाहिये। यह एक विशाल शहर है ३ चौक बाजार हैं सब

चीज दर्शनीय है। धर्मशालाके पास ४ बडे बडे मंदिर और ३ चैत्यालय हैं। १ मंदिरमें ४ वेदी हैं प्राचीन महामनोहर श्यामवर्ण ६ प्रतिमाजी विराजमान हैं। तीन मंदिर और भी बडे २ हैं जिनमें गन्धकुटीकी रचना मनोहर है। १ चैत्यालयमें श्रीचंद्रप्रभ स्वामीकी १ स्फटिकमयी शांत महा मनोहर प्रतिमा विराजमान हैं। यहांसे ३ मीलकी दूरीपर वेणीघाट प्रयागराज है। तांगासे जाना होता है।

प्रयागराज।

यहां १ किला है, किलेके अंदर १ भोंरा है। भोरेमें अनेक वादियां २ मूर्तियां वैष्णव और शैव मतानुयायीके देवोंकी हैं। १ ताखमें २ प्रतिबिंब प्राचीन छोटी श्रीआदिनाथ भगवानकी हैं। एक वड वृक्षका लकड है जो कि वहां प्रयाग वडके नामसे प्रसिद्ध है। इसी प्रयागराजमें भगवान ऋषभ देवका तप कल्याण हुआ था। किला बहुत बडा है, बहुतसी चीजें देखनेकी हैं। तलाशकर वा किसी आदमी को संग लेकर सब देखनी चाहिये। किलेके बाहर निकल त्रिवेणीकी शोभा देखकर इलाहाबाद आ जाना चाहिये। इलाहाबादमें बडा भारी तीर्थ होनेके कारण बहुतसे ठगबाज पंडे रहते हैं उनकी बातोंमें नहीं आना चाहिये। इलाहाबादमें जैनी भाइयोंके घर ५० के करीब हैं। यहांसे सब ओर रेलवे जाती हैं। इलाहाबादसे यात्रियोंको भरवारी

स्टेशन का टिकट लेना चाहिये। ।=) आना रेल भाडा लगता है।

भरवारी स्टेशन।

यह मामूली अच्छा ग्राम है। यहांसे दक्षिण दिशाकी ओर २० मीलकी दूरीपर फपौसा नामका अतिशय क्षेत्र है आने जानेमें ३ दिन लगते हैं वहां कुछ भी नहीं मिलता ३ दिनका सामान साथमें लेजाना चाहिये। फपौसा क्षेत्र पर बैलगाडी या घोडा गाडीसे जाना होता है।

श्रीफपौसाजी अतिशय क्षेत्र।

यहां १ छोटासा ग्राम है। यमुना नदी बहती है। १ धर्मशाला और १ छोटासा पहाड है। इस पहाडकी चढाई १ फर्लांगकी है। पहाडके ऊपर एक बडा भारी दालान है १ मंदिर है, उसमें ३ प्रतिमा प्राचीन चतुर्थकालकी विराजमान हैं। और भी अनेक प्रतिमा विराजमान हैं जो महा मनोहर हैं, इस स्थानपर भगवान पद्मप्रभु स्वामीका तप और ज्ञान कल्याण हुआ था। यहांकी यात्राकर गढवाय जाना चाहिए। इस स्थानसे गढवाय ४ मीलकी दूरी पर है. बैल गाडीसे जाना होता है।

गढवायका मंदिर

यहांपर १ विशाल मैदानमें १ धर्मशाला १ कुआ और २ मंदिर हैं। २ प्रतिमाजी श्वेतवर्ण चतुर्मुख श्रीपद्म प्रभु

स्वामीकी महा मनोहर विराजमान हैं, १ प्राचीन चरण पादुका विराजमान हैं। धर्मशालाके पास १ प्राचीन खंडित प्रतिमा विराजमान हैं, पासमें ही १ कुशंबा नामका ग्राम है। वहां यमुनाजी बहती हैं। पहिले यहां कौशांबी नगरी थी और बडी भारी थी। यहांपर भगवान पद्मप्रभुका जन्म कल्याण हुआ था। गढवायका १ मंदिर आरानिवासी स्वर्गवासी बाबू देवकुमारजीके पुरखाओंका बनाया हुआ है। यहांकी यात्राकर भरवारी स्टेशन लौट आना चाहिये और वहांसे इलाहाबाद वापिस जाकर बनारसका टिकट लेना चाहिये।

काशी बनारस।

काशीमें राजघाट छावनी आदि बडी छोटी लेनोंके ३ स्टेशन हैं। काशी जानेवालेको राजघाट स्टेशन उतरना चाहिये। राजघाटके पास बाबू बिहारीलालजीकी मैदागिन धर्मशाला है, यह धर्मशाला स्टेशनसे करीब १ मील की दूरीपर है, तांगासे जाना होता है और फी सवारी दो आना लगता है। मैदागिन धर्मशालामें उतरनेसे सब बातका आराम मिलता है क्योंकि यह धर्मशाला बीच शहरमें है किसी चीजके लाने लेजानेमें तकलीफ नहीं होती १ विशाल धर्मशाला मेलूपुरा स्थान पर भी है परन्तु वह स्टेशनसे दूर है। बनारस शहर बहुत प्राचीन है। यहां पर श्रीसुपार्श्व और पार्श्वनाथ भगवानका जन्म हुआ था अब

भी यह शहर रौकनदार है। यहांपर हाथकी बनी हजारों कारीगरीकी चीजें तयार होती हैं, वैष्णव लोगोंका यह १ प्रधान तीर्थ है। गंगा नदी यहांपर बहती है, उसका एक से एक बढिया घाट बना हुआ है। हिंदु वैष्णवोंके हजारोंकी तादादमें मंदिर हैं उनमें विश्वनाथका मन्दिर बहुत बड़ा और दर्शनीय है, यहांपर चौक बाजार औरंगजेबकी मस्जिद राजा लोगोंके ठहरनेका मकान भैरवनाथ और दुरगाका मंदिर असीसंगम दशाश्वमेध मणिकर्णिका बरुणा संगम गंगा घाट अगस्त अमृत नाग तीनो कुंड इत्यादि बहुतसी चीजें देखने योग्य हैं। यहांपर जैनी भाइयोंके घर करीब २० के हैं। यहांसे सब ओर रेलवे जाती है।

बनारस जैन मंदिर।

३ मंदिर भदेनी घाट पर हैं। ये मंदिर बडे ही मनोहर हैं इनकी प्रतिमाओंके दर्शनसे चित्त मारे आनंदके पुलकित हो जाता है. यहींपर काशी स्याद्वाद दि० जैन महा विद्यालय है जैनियोंमें न्याय व्याकरण आदिके धुरन्धर विद्वान उत्पन्न करनेवाला जैन समाजमें यह एक विद्यालय है। ऊपर मंदिर और नीचेकी धर्मशालामें यह विद्यालय है। यात्रियोंको अवश्य इस विद्यालयका निरीक्षण करना चाहिये।

४ मंदिर मेलूपुरा स्थानपर हैं १ देहरीमें चरण विराजमान हैं। २ मंदिर श्वेतांबर दिगम्बरोंका मिलता है इसमें

दिगंबर प्राचीन प्रतिबिंब विराजमान हैं। इसी श्वेतांबरी मंदिरकी बगलमें १ विशाल दिगंबर जैन मंदिर है। इस मंदिरमें ३ वेदी हैं। नवीन प्राचीन बहुतसी महा मनोहर प्रतिमा विराजमान हैं। बाहर आकर सडकके किनारे १ मंदिर खड्गसेन उदयराजजीका है, यह मंदिर बडा ही मनोहर और विशाल है, इसमें ३ वेदी हैं। चतुर्थकालकी प्राचीन और नवीन बहुतसी मनोहर प्रतिमा विराजमान हैं।

शहरमें आकर १ जौंहरीजीका चैत्यालय है, यहांपर हीराकी प्रतिमा विराजमान हैं। ७॥ सात बजे तक दर्शन होता है। यह प्रतिमा बहुत कीमती है इसलिये ७॥ तक पूजाकर लोग बाजारमें व्यापारके निमित्त चले जाते हैं। यहां जल्दी आना चाहिये।

शहरमें ही १ पंचायती मंदिर हैं जिसमें ७ प्रतिमा स्फटिकमयी हैं, हरे लाल पाषाण आदिकी भी बहुत सी प्रतिमा विराजमान हैं।

१ खड्गसेन उदयराजजीका चैत्यालय है इसमें १ प्रतिमा स्फटिककी विराजमान हैं।

१ मंदिर मैदागिन धर्मशालामें है। यह १ विशाल मंदिर है। यहांपर ४ वेदी हैं और सब जगह महामनोहर प्राचीन प्रतिमा विराजमान हैं। इस प्रकार बनारसमें सब मिलाकर ११ मंदिर हैं, सबके अच्छी तरह दर्शन करने चाहिए। यहांसे सिंहपुरी चंद्रपुरी जाना चाहिये, खानेका

सामान सब साथमें लेलेना चाहिये । अलीपुर स्टेशनसे सिंहपुरी चंद्पुरी जानेके लिये रेल भी है । सिंहपुरीकी स्टेशन सारनाथ और चन्द्पुरीकी कादीपुर है । बैलगाडी और घोड़ा गाडीसे भी जाना होता है । यात्रियोंकी इच्छा वे जिस तरह जा सकें चले जांय । अलीपुरसे सारनाथका रेलभाडा दो आना है । परंतु ष्टेशनसे मंदिर दूर है अतः घोडागाडीहीसे जाना चाहिये ।

सिंहपुरी

सारनाथ स्टेशनसे १ मीलके फासलेपर धर्मशाला है। मंदिर बहुत बढिया बंगलाका फेशनका है। यहां श्रीश्रेयांसनाथ स्वामीका जन्म हुआ था । मंदिरमें मूलनायक प्रतिमा श्रीश्रेयांसनाथ भगवानकी विराजमान हैं । यहांपर १ अजायब घर है । सैकडों प्राचीन बौद्ध आदिकी प्रतिमाओंका संग्रह है, इसे भी देखना चाहिये । फिर स्टेशनपर आकर कादीपुरका टिकट ले लेना चाहिये । सारनाथसे कादीपुरके =) आना लगते हैं ।

चन्द्रपुरी

कादीपुर स्टेशनसे चार मील चन्द्रपुरी (चन्द्रवटी) जाना चाहिये । स्टेशनपर बैलगाडी मिलती है । सडक १ मील पक्की और १ मील कच्ची है । चंद्रपुरी गांव छोटा सा है, यहां गंगा नदीके किनारे १ दि० जैन मंदिर और १ धर्मशाला है । यहां भगवान चन्द्रप्रभुका जन्म हुआ था.

यह जगह बडी रमणीय है, यहां १ मंदिर और १ धर्मशाला पासमें ही श्वेतांबर लोगोंकी भी है। यहांकी यात्राकर कादीपुर स्टेशन आना चाहिए और वहांसे बनारसका टिकट ले लेना चाहिए। बनारसमें आकर अपना सामान लेकर राजघाट स्टेशन जाना चाहिए और वहांसे आराका टिकट लेना चाहिए। बनारससे आराका १॥।-) लगता है.

श्रीआरा अतिशय क्षेत्र

आरा टेशनसे १ मीलके फासलेपर चौक बजारमें बाबू हरिप्रसादकी धर्मशाला है वहां उतरना चाहिए, तांगा मिलते हैं और फी सवारी =) आना लगता है। इस धर्मशालामें बाबू हरिप्रसादजीका बडा मनोहर चैत्यालय है। इसमें १ प्रतिमा सुवर्ण और २ चांदीकी हैं। यहां श्रीसम्मेदशिखर पहाडका चित्र अपूर्व खिंचा हुआ है। यह चैत्यालय बडी लागतका जान पडता है, २ मीलके इर्दगिर्दमें आरामें सब मंदिर ३४ हैं। एकसे एक बढिया मन्दिर बना हुआ है, इन मंदिरोंसे आरा स्वर्गपुरीके समान जान पडता है। जैनी अग्रवाल भाइयोंके यहां करीब १०० के घर हैं. बाबू देवकुमारजी यहां एक बडे ही धर्मात्मा नामी पुरुष हो गये हैं। उनका खासका बनाया हुआ १ मंदिर और १ सरस्वती भवन है। आपकी ही बनाई हुई एक नशियाजी, शहरसे २ मीलके फासलेपर है। तांगे जाते हैं।

यहां अवश्य जाना चाहिए, वहां २ नशियाजी पास २ हैं। ६ मंदिर हैं। यहां बड़ी २ प्राचीन मनोहर प्रतिमा विराजमान हैं। २ प्रतिमा खंडगिरिसे लाई हुई चतुर्थ कालकी विराजमान हैं, यह नशियाजीकी जगह चौपटे जंगल स्थानमें बडी ही मनोहर है। यहां १ उत्तम धर्मशाला भी है। उपर्युक्त बाबू साहबकी ओरसे यहां १ विधवाश्रम और कन्याशाला है जिसका काम अच्छा चल रहा है। बाबू देवकुमारजीके ही ३ मंदिर काशी में १ मंदिर चंद्रपुरीमें और १ मंदिर गढवाथमें बनाए हुए हैं। अल्पायुमें ही इस धर्मात्मा व्यक्तिका स्वर्गवास हो गया यदि इनका कुछ दिन जीना और होता तो न मालुम जैनधर्मके लिए यह कितना गौरवका काम कर जाते। आराकी सब रचना खोज करके देखनी चाहिए। यहांसे यात्रियोंको पटना गुलजारबाग जाना चाहिए। यह स्थान बांकीपुरसे आगे है। रेल भाडा ।।) लगता है।

विशेष—जिस भाईको नेपालकी शहर करनी हो तो वह आरासे बांकीपुरकी टिकट ले और वहां उतर परे। वहांका हाल इसप्रकार है—

बांकीपुर

यह स्थान समुद्रके किनारे है। यहांसे अग्निबोटमें बैठकर गंगा नदीके दूसरे पार जाना चाहिये, वहां १ रेलवे-

स्टेशन है । १॥) देकर सींगोलीका टिकट लेना चाहिये । सींगोलीसे नेपाल देश थोडी दूर है, नेपाल पहाडी प्रदेश है । वहां बडे २ ऊंचे पहाड हैं । सुना जाता है कि जिस समय मेघ वर्षकर बन्द होता है उस समय नेपालके ऊंचे पहाडोंसे कैलाश पर्वत दीख पडता है । यह नेपाल देश दक्षिण दिशामें है, पहिले इस देशमें जैनधर्मका बडा भारी प्रचार और जैनियोंकी बडी भारी बस्ती थी । जिसका कुछ चिन्ह वहां घूमनेसे मालूम पडता है, यहां जगह जगहपर प्राचीन मंदिरोंके चिन्ह और प्राचीन प्रतिमा मिलती हैं, इस समय यह देश बडा ही मांसाहारी म्लेच्छ देश सरीखा है. यहां मिथ्यावादियोंने जैन धर्मके मंदिर और मूर्तियां सब नष्ट कर डाले । यहांपर अब भी कहीं कहीं पर शिला लेख मिलते हैं ।

यह स्थान पहिले धर्मका खास स्थान समझा जाता था । जिस समय यहां बारह वर्षका अकाल पडा था उस समय भद्रबाहु स्वामी धर्म और संयमकी रक्षाके लिये दक्षिण नेपालकी ओर गये थे । इनके साथ बहुतसे मुनियोंका संघ था । जो मुनि भद्रबाहु स्वामीके साथ गये थे उनका तो तप चरित्र ठीक रहा किन्तु जो मुनि अयोध्या आदिमें रह गये थे उनका संयम आदि सब शिथिल हो गये, उसी समयसे श्वेतांबरी आदि शिथिलाचारी मतोंकी उत्पत्ति हो गई । बारह वर्षके बाद जिस समय उक्त स्वामी फिर दक्षि-

आदेशसे इस देशमें पधारे उस समय बहुतसे मुनिगण तो उनके उपदेशसे सिलट गये किन्तु बहुतोंकी प्रकृतियां उच्छृंखल हो गई थी इस लिये वे अपने ही मंतव्यपर कायम बने रहे और उन्होंने अपने अपने मंतव्योंके अनुसार अनेक मतोंकी प्रवृत्ति कर डाली।

स्वामी भद्रबाहुके देहावसानके बाद उनके पदपर उन्हींके शिष्य राजा चन्द्रगुप्त हुए और उनने जैन धर्मकी प्रभावना की। यह विशेष वर्णन भद्रबाहु चरित्रसे जान लेना चाहिए।

आसाम

नेपालकी ओर आसाम देश है। आसाममें मणिपुर ग्वालपाडा मदारीपुर गौहाटी डवरूगढ कांचीपुर विलासपुर आदि बडे २ शहर हैं। यहां व्यापार अच्छा है जो आदमी यहां आकर व्यापार करता है, थोडे ही दिनोंमें वह धन-पात्र हो जाता है। यहां नौकरोंकी तनखा भी अधिक है और खर्च भी अधिक है। यहां बंगाली और मारवाडी बडे २ व्यापारी रहते हैं। ये लोग धनपती भी हैं। यह देश कलकत्तेकी अपेक्षा भी व्यापारके हकमें बढा चढा है। यहां धर्मकी बडी हानि है। लोग भ्रष्टाचारी दीख पडते हैं। धर्मात्माको रहनेके लिए यहां प्रबंध नहीं है। कुछ दिन से जैनी मारवाडियोंने यहां धर्मकी जाग्रति की है। बहुतसी जगह जैनियोंने अब चैत्यालय बनवा लिए हैं। इस देशमें

मिट्टीका तेल और पत्थरका कोयला जमीनसे निकलता है। उसके बडे २ कारखाने हैं जो देखने योग्य हैं। कलकत्तासे यहां सभी जगहके लिए रेल आती है, यहां ब्रह्मपुत्र नदी है और ब्रह्मपुत्रसे आगे तिब्बत देश है। यहां लोग मांस मच्छीके खानेवाले है। कीचड बहुत रहता है, जिसमें अगणित जीव सदा उत्पन्न होते रहते हैं। तिब्बतका हाल इस प्रकार है—

तिब्बत

यह देश सबसे ऊंचा पहाडी देश है। यहां बडे २ ऊंचे पहाड हैं। यहां भील लोग अधिकतर रहते हैं। ये लोग काले निष्ठुर बडे जबर्दस्त होते हैं। किसीसे भी इनको भय नहीं होता। मौका पाकर ये मनुष्योंपर छाप मार देते हैं। यहांके १ पहाडसे ब्रह्मपुत्र नदीका उदय हुआ है। ब्रह्मपुत्र नदीकी दोनों ओर स्टेशन है। यह बडा भारी दरियाव है। कैलाश पर्वतकी दक्षिण दिशामें इस ब्रह्मपुत्र नदीका बहाव है, सुनते हैं यहांसे कैलाश कभी २ दीखता है, अन्यत्र इनका हाल लिखा हुआ है। कैलाश पर्वतका भी कुछ हाल इसप्रकार है—

श्रीकैलाश पर्वत सिद्ध क्षेत्र

लोगोंका कहना है कि यह पहाड जमीनसे बहुत ऊंचा कालवर्णका नये सोनेके समान दीख पडता है। इसपर

बहुतसी सुवर्णमयी रचना दीख पडती है । शास्त्रोंमें लिखा है कि इस पर्वतपर १ विशाल मंदिर और ७२ चैत्यालय चक्रवर्ती भरतके बनवाये हुए हैं। यह श्रीआदिनाथ भगवानका मोक्षस्थान हैं। व्याल महाव्याल बहुतसे मुनिगण यहांसे मोक्ष पधारे हैं। पर्वतके दक्षिण भागमें मानसरोवर है। जिसपर कि अंजना पवनंजयके विवाहका कार्य हुआ था। कैलाश पर्वतकी खाई बडी भयंकर खुदी हुई है। इसलिए इस समय वहां जाना कष्टसाध्य है। यहां कैलाश क्षेत्रका अवसर जान वर्णन किया गया है और जो भाई इधर आना चाहें उनके लिए यहांका कुछ हाल लिख दिया है किन्तु जो भाई अत्यंत कष्टसाध्य जान इधर नहीं आ सकते उन्हें आरासे पटना गुलजार बागका टिकट ले वहां जाना चाहिये।

श्रीपटना गुलझार बाग सिद्ध क्षेत्र

स्टेशनके पास ही १ धर्मशाला और १ मंदिर है पासमें ही सिद्धक्षेत्र १ टेकरीके ऊपर १ मंदिर और चरण पादुका हैं, यहांसे पूज्य सेठ सुदर्शनने मोक्ष प्राप्त किया था यहांसे २ मीलकी दूरीपर पटना शहर है। तांगे जाते हैं। वहां जाना चाहिये। यह शहर बहुत पुराना और दर्शनीय ह, प्राचीन नाम इसका पाटलीपुत्र है। शहरमें तमोली गलीमें पंचायती १ विशाल मंदिर है, बडी २ मनोहर प्रतिमा विराजमान हैं। दूसरा मन्दिर कचोरी गलीमें हैं। तीसरा

मंदिर बूढा बाबा, चौथा टीमार्में है यह मंदिर भी बडा है, ३ वेदी हैं। पांचवा मंदिर बाजारमें और छठा पटनासिटी स्टेशनके पास है। इस प्रकार कुल मंदिर पटनामें ६ हैं। बूढा बाबा मंदिरके पास १ धर्मशाला है । वहां ठहरना चाहिए, यहांपर यात्रियोंको १ आदमी संगमें रखना चाहिये जिससे वह सब मंदिरका दर्शन करादे, और शहर भी दिखादे। यहांपर बहुतसी हाथकी कारीगरीकी चीजें देखने योग्य हैं, यहांका दर्शन कर यात्रियोंको पटना सिटी स्टेशन आना चाहिये और वहांसे विहारका टिकट लेना चाहिए। पटनासे विहारका ॥) लगता है। गाडी वख्त्यारपुर बदली जाती है ।

विहार शहर।

स्टेशनसे १ फर्लांगकी दूरीपर १ गलीमें १ धर्मशाला है और १ जैन मंदिर है, यहांसे १ मीलकी दूरीपर शहरमें १ श्वेतांबरी मंदिरमें १ दिगंबरी मंदिर है १ धर्मशाला है। वहां जाकर दर्शन करना चाहिये इस मंदिरमें ४ प्रतिमा महा मनोहर विराजमान हैं। १ श्वेतवर्णकी प्रतिमा श्रीचंद्रप्रभ भगवानकी है। यहांपर श्वेतांबरी ३ मंदिर हैं जो देखने योग्य हैं। १ आदमीको संग लेकर सब देख आना चाहिये। यह शहर भी बडा है । बहुतसी चीजें देखने योग्य हैं।

विशेष—विहारसे पावापुरी जानेका बैलगाडीका रास्ता है। और वह ८ मील पडता है। यात्रियोंकी इच्छा चाहें विहारसे वे सीधे पावापुरी चले जांय, चाहें विहारसे कुण्डलपुर चले जांय। विहारसे कुण्डलपुर ६ मील बैलगाडी का रास्ता है और पावापुरसे कुण्डलपुर १० मील बैल गाडीका रास्ता है। हमारी रायसे पहिले बैलगाडी से ही कुण्डलपुर जाना चाहिये और रेलवेसे जाय तो विहारसे बडगाम रोडका टिकट लेना चाहिए किराया =) लगता है।

बडगांव रोड।

यहांसे २ मीलकी दूरीपर श्वेतांबर जैन मंदिरमें जाना चाहिये। स्टेशन पर जानेके लिये तांगे मिलते हैं। यही बडगाम कुण्डलपुर बोला जाता है; पहिले श्वेतांबर दिगंबर दोनोंके यही ठहरनेका स्थान था परंतु कुछ झगडा होनेसे दिगंबर धर्मशाला और मंदिर यहांसे १ मीलकी दूरीपर बना दिया गया है। श्वेतांबर मंदिरकी धर्मशालामें ठहर जाना चाहिये। वहांसे आधी मीलकी दूरीपर प्राचीन दर्शनीय स्थान है। धर्मशालामें सामान छोडकर इस स्थानपर आना चाहिये। यहांपर जमीनके भीतर १ विशाल नगरी मंदिर बौद्ध और जैनकी मूर्तियां निकली हैं वह अवश्य देखना चाहिये। इस प्राचीन स्थानके बारेमें यहांके लोगोंका कहना है कि—यह बौद्ध धर्मका विद्यालय और

छात्रालय है। पहिले यहांपर १२ हजार विद्यार्थी विद्याभ्यास करते थे और उनके भोजनका प्रबंध यहां १ राजा की ओरसे था। ६०० अध्यापक यहां पढानेके लिये नियत थे। यहांसे देखकर और श्वेतांबर धर्मशालासे सामान लेकर १ मीलकी दूरीपर दिगंबर धर्मशालामें आना चाहिये।

जन्मभूमि श्रीकुंडलपुर क्षेत्र।

यहां १ धर्मशाला १ मंदिर है। यह श्री महावीर भगवानकी जन्मपुरी है। यहांपर पूजन वन्दना कर लौटकर बडगाम स्टेशन आना चाहिये और =)॥ टिकट लेकर राजगृही स्टेशन जाना चाहिये।

विशेष—कुण्डलपुरसे १ रास्ता १० मील बैलगाडीका पावापुरी जाता है यात्रियोंकी इच्छा वे चाहे वहांसे पावापुरी जांय वा राजगृही चले जांय। पावापुरसे राजगृही १४ मील बैलगाडीका रास्ता है। हमारी रायसे पहिले राजगृही जाना चाहिये।

श्रीराजग्रही अतिशय क्षेत्र।

स्टेशनके पास ही २ विशाल दिगंबर धर्मशाला और २ श्वेतांबरी धर्मशाला हैं। यहां ठहरना चाहिये। यहांपर श्वेतांबरी मंदिरमें १ जुदा दिगम्बरी मंदिर है एवं श्वेतांबरी मंदिरमें भी २ महामनोहर श्यामवर्ण दिगम्बर प्रतिमा विराजमान हैं। यहां सबका दर्शन कर पंच पहाडोंकी वंदना

केलिये जाना चाहिये । यहां ५ पहाड पास २ हैं इस लिये इसका नाम पंच पहाडी है। पांचों पहाडोंपर चढने का रास्ता बडा कठोर है। रास्तामें कंकर पत्थर हैं, सावधानीसे जाना चाहिये। आने जानेका बंदना करनेमें पांचों पहाडोंका घेरा करीब २० मीलके पडता है। दो दिनमें बंदना अच्छी होती है। कईवार इन पांचों पहाडोंके ऊपर श्रीमहावीर भगवानका समवसरण आया था। राजगृही नगरीके स्वामी मण्डलेश्वर राजा श्रेणिक थे, जिन्होंने ६० हजार प्रश्न कर जीवोंको धर्ममार्गका ज्ञान कराया था। यह राजगृही क्षेत्र भगवान मुनिसुव्रत नाथका जन्मस्थान है। कहीं २ पर शास्त्रोंमें जंबूस्वामीकी मोक्ष राजगृहीसे लिखी है परन्तु प्रसिद्ध मोक्षस्थान इनका चौरासी मथुरा है। इस विभिन्न मतका भगवान केवली निवारण कर सकते हैं।

यहांपर बहुतसे कुण्ड हैं जो कि निर्मल उष्ण जलसे लबालब भरे हुए हैं। स्नान करनेसे खेद दूर हो जाता है, इन कुण्डोंके शिवकुंड राधाकुंड सूरजकुण्ड चन्द्रकुण्ड अयोध्याकुण्ड आदि नाम है। कुंडोंके पास १ विशाल नदी है, पुल बंधा हुआ है। पुलके पास हिंदुलोगोंका महादेवका मंदिर है, हजारों हिंदु यहां आते और पिंडदान आदि किया करते हैं। कुंडोंकी एक ओर जंगलमें कबरस्थान है मुसलमान लोग इसे तीर्थ मानते और यात्राके लिये आते

हैं। श्वेतांबर दिगंबर सभी यहां आते हैं। सब तीर्थस्थान जुदे २ हैं। यह राजगृही पुण्य स्थान है। यहींपर पूज्य सुकुमाल और उनके मामाका जिनको कि श्वेतांबर लोग शालभद्र कहते हैं, स्थान था। सुकुमाल मुनिने इसी जंगल में तपकर सर्वार्थसिद्धि विमान प्राप्त किया था। पांचों पहाडोंका वर्णन नीचे लिखे अनुसार है—

पहिले पहाडका नाम विपुलाचल है। यहांपर ४ मंदिर और चरणपादुका प्राचीन हैं। दूसरा पहाड उदयगिरि है। यहां पर २ मंदिर २ प्रतिमा और २ चरण पादुका प्राचीन बडे ही मनोहर हैं। तीसरे पहाडका नाम रत्नगिरि है। यहांपर १ बडा मंदिर है उसमें महा मनोहर चतुर्थकालकी ६ प्रतिमा विराजमान हैं और १ चरण पादुका है। चौथा पहाड सोनागिरि है। यहांपर २ प्रतिबिंब और १ चरण पादुका है। पांचवे पहाडका नाम वैभारगिरि है। यहां पर ५-६ मंदिर हैं इनमेंसे १ मंदिर पहाडकी दूसरी तरफ बहुत दूरीपर है। यहांपर १ प्राचीन मंदिर और १ प्राचीन भौंरा है। इस समय वह गढेकी हालतमें गैरमरम्मत पडा हुआ है। बहुतसे यात्री यहांपर नहीं आते यह उनकी बडी भूल है यहांपर अवश्य आना चाहिये। यहांपर १३ प्रतिमा १ गढेमें महा मनोहर प्राचीन विराजमान हैं। यहांपर पहाडके सब मंदिर प्राचीन हैं यहांपर एकबार मरम्मत कराने का विचार किया गया था परन्तु श्वेतांबर भाइयोंके

झगड़ा हो जानेके कारण मरम्मत कार्य स्थगित कर दिया गया। यहांपर मंदिर प्रतिमा सभी प्राचीन हैं। भक्ति-भावसे सबको यात्रा करनी चाहिये। यहांसे ११ मीलकी दूरीपर श्रीपावापुरीजी सिद्धक्षेत्र है। बैल गाडीसे जाना होता है। यात्रियोंको पावापुरी जाना चाहिये।

श्रीपावापुरीजी सिद्धक्षेत्र

यहांपर महापद्म नामक सरोवरके बीच १ छोटीसी टेकरीसे श्रीमहावीर स्वामी ७२ मुनियोंके साथ मोक्ष पधारे हैं। तालाबके बीचमें १ बडा भारी मंदिर बना हुआ है। वहांपर ३ चरण पादुका प्राचीन हैं। यहांपर १ विशाल धर्मशाला और ५-६ दिगम्बर मन्दिर हैं। श्वेतांबरलोगोंकी ३ बडी २ धर्मशाला हैं और ५-६ मंदिर हैं। दिगम्बरी मंदिरोंमें जो प्रतिमा विराजमान हैं बडी ही शांत मनोहर और पवित्र हैं। यह स्थान सरोवरके बीचमें बडा ही सुहावना जान पडता है। १ मंदिर ग्रामके भीतर है वह मंदिर श्वेतांबरोंका है परंतु दिगम्बरी प्रतिमा विराजमान हैं। वहांपर दर्शन कर आना चाहिये। पावापुरीमें भगवान महावीरके निर्वाण कल्याणके उपलक्षमें कातिक वदी १५ को एक बडा भारी मेला होता है यहांसे श्रीगुणावासिद्ध क्षेत्र करीब १३ मीलकी दूरीपर है। बैलगाडीसे जाना होता है। वहां जाना चाहिये। यह नवादा ग्रामके पास है।

श्रीगुणावा सिद्धक्षेत्र

यह स्थान नवादासे १॥ मीलके फासलेपर महा पवित्र मनोहर जंगलके अन्दर है। सडकके किनारेपर है, यहां दिगम्बर और श्वेतांबरियोंके समूल १ धर्मशाला है। १ मंदिर चंपापुरके समान विशाल तलावके बीचमें है, यहांसे श्रीगौतम स्वामी मोक्ष पधारे हैं । यहांका दर्शनकर १॥ मील नवादा जाना चाहिये।

नवादा

यहां भागलपुरसे भी आना होता है और रेलवे टिकट १॥≈)॥ लगता है। ईसरीसे गया होकर भी आना होता है और ईसरीसे २॥|≈) और गयासे १) रुपया लगता है बनारससे गया होकर भी आना होता है और ३॥≈)। टिकट लगता है। कटनी मुंडवारासे भी गया होकर आना होता है और ६) टिकटका लगता है। आरा पटना वख्त्यारपुरसे विहार तक वा राजगृहीतक आना होता है और फिर बैल गाडीसे नवादा आया जाता है। नवादा उतरनेवाले भाइयोंको पहिले गुणावा पावापुरीकी यात्राकर कुण्डलपुर तक बैल गाडीमें आना चाहिए। वहांसे रेलवे द्वारा राजगृही फिर विहार जाना चाहिए। वख्त्यारपुर गाडी बदल कर पटना आरा जा सकते हैं।

गुणावा स्टेशनके पास १ धर्मशाला और १ चैत्या-

क्ष है। १० घर जैनी भाइयोंके हैं। यहांसे २ रेलवे लाइन जाती हैं १ गया १ लक्खीसराय भागलपुर कलकत्ता जाती है, परन्तु यात्रियोंको यहांसे नाथनगर जाना चाहिए नाथनगरका रेलभाडा १॥=) लगता है।

नाथनगर

स्टेशनसे आधी मीलकी दूरीपर दि० जैन धर्मशाला है। तांगासे जाना होता है। वहां ठहरना चाहिये। यहींपर तेरापंथी और वीसपंथीकी २ बडी २ कोठियां हैं। २ धर्मशाला और महा मनोहर २ मंदिर हैं। तेरापंथी मंदिरमें ५ वेदियां हैं। महा मनोहर अनेक प्रतिमा विराजमान हैं। गेहुंवा वर्णकी महामनोहर मूलनायक १ प्रतिमा श्रीवासुपूज्य भगवानकी विराजमान हैं और भी बहुतसी प्रतिमा हैं। वीसपंथी मंदिरजीमें १ वेदी है। प्रतिमाजी कुछ कम विराजमान हैं। यहांसे थोडी दूरपर १ चम्पा नामका नाला है। फी सवारी तांगामें =) लगता है।

चम्पा नाला चंपापुरी

नाथनगर और चंपापुर पास पासमें हैं परंतु नाथनगरसे चंपानालाका यह मंदिर करीब २ मील है। यहांपर एक विशाल श्वेतांबर धर्मशाला है। नीचे श्वेतांबरियोंके ही ४ मंदिर हैं। ऊपर १ दि० मंदिर है। जिसमें बहुत प्राचीन महामनोहर प्रतिमा विराजमान हैं। यहां एक चरणपादुका

भी है । जिसके गन्धोदकके लगानेसे बहुतसे रोग शान्त हो जाते हैं । पहिले यही मंदिर दिगंबर श्वेतांबरोंका शामिल था । यही धर्मशाला थी परन्तु झगडाकर अब भेद हो गया । धर्मशाला श्वेतांबरी भाइयोंके काबूमें हो गई. अनेक प्राचीन प्रतिमायुक्त दिगंबर जैन मंदिर है वह एक छोटेसे पहाडके ऊपर है इसीको यहांके लोग चंपापुरी मंदारगिरि भगवानका मोक्ष स्थान बोलते हैं । चंपापुरी १ बडा कसवा है जो कि सुन्दर है । यहांका दर्शनकर नाथनगर चला जाना चाहिए और वहांसे २ मीलके फासलेपर भागलपुरमें दिगम्बर जैन धर्मशाला है वहां ठहर जाना चाहिए ।

भागलपुर

यह स्थान स्टेशनका भी है । स्टेशनसे आधो मीलके फासलेपर १ दि० जैन धर्मशाला है । स्टेशनपर उतरनेवाले यात्रियोंको इसी धर्मशालामें उतरना चाहिए । भागलपुरकी धर्मशाला बडी मजबूत है । धर्मशालामें ४ मन्दिर बहुत सुन्दर हैं । १ प्रतिमा श्रीवासुपूज्य भगवानकी विराजमान है जो कि बडी प्राचीन है । यहांसे यात्रियोंको मंदारगिरि जाना चाहिए । भागलपुरसे मंदारगिरि ३० मील है । अधिक सामान भागलपुरकी धर्मशालामें छोडकर मामूली सामान साथमें ले जाना चाहिए । यहांसे मंदारगिरि जानेके

लिए मोटर बैल गाडी आदि सब प्रकारकी सवारियां मिलती हैं। भागलपुरसे मंदारगिरि तक तांगाका ७) रु० लगता है। बग्गीका १०) बैलगाडीका ४) और मोटरमें २) सवारी लगता है। मंदारगिरिकी बन्दनाकर भागलपुर वापिस लौट आना चाहिए।

विशेष—जो यात्री स्टेशनपर उतरनेवाले हैं और रेलसे ही जाना चाहते हैं उनको भागलपुरसे मंदारगिरिकी बन्दनाकर फिर भागलपुर आकर नाथनगर जाना चाहिए नाथनगरसे चम्पा नालाकी बन्दनाकर फिर नाथनगर स्टेशन आकर जहां जाना हो रेलवेमें बैठकर चला जाना चाहिये।

श्रीमंदारागिरिजी सिद्ध क्षेत्र

भागलपुरसे ३० मीलकी दूरीपर गांव है। पक्की सडक है। वहां धर्मशाला और १ चैत्यालय है, यहांसे १ मीलके इस ओर मंदारगिरि पहाड है। पहाडके नीचे १ छोटासा गांव १ कुवा और १ तालाव है। पहाडकी चढाई करीव १ मीलकी सीधी है। सीढियां लगी हुई हैं। पहाडके ऊपर २ बडे २ तालाव हैं, वहांपर १ गुफामें १ साधु रहता है। गुफामें पत्थर काटकर १ नरसिंहकी मूर्ति बनाई गई है। जो १ मंदिरमें विराजमान है। यहां बहुतसे अन्यमती हिंदु लोग तीर्थयात्राके लिये आते हैं। सबसे ऊपर जाकर २

जैन मंदिर हैं, ये दोनों ही मंदिर प्राचीन हैं। एक मंदिरमें चरणपादुका हैं और एक मंदिरमें किसी भी स्थानपर कुछ भी विराजमान नहीं है। यहांसे बारहवें तीर्थंकर श्रीवासु-पूज्य भगवानका निर्वाण कल्याण हुआ है। यहांकी यात्रा-कर वापिस भागलपुर आना चाहिये। यहां दिगम्बर जैनी भाइयोंके कुछ घर हैं। भादों सुदी १४ निर्वाण कल्याणके उपलक्षमें यहां मेला होता हैं। यह मेला लाडू चढानेके निमित्त होता है।

भागलपुरसे १ रेलवे लाइन खाना खन्डेला मधुपुर होकर कलकत्ता जाती हैं। १ लाइन मधुपुरसे गिरिडीह होकर सम्मेदशिखरजी जाती है। १ नवादा होकर गया चली जाती है। भागलपुरकी यात्राकर यात्रियोंको गयाजी जाना चाहिये।

विशेष।

यद्यपि भागलपुरसे गिरीडीह होकर सम्मेदशिखर जाना ठीक है लेकिन गया भद्रीयापुर बीचमें छूट जाता है। सम्मेदशिखरसे यहां आनेमें अधिक परिश्रम और खर्चा उठाना पडता है। इसलिये यात्रियोंको गया होकर पीछे सम्मेदशिखर जाना चाहिये।

गयाजी शहर

यह एक बडा शहर है, हिन्दु लोगोंका बडाभारी

तीर्थ है। हर समय बडी भीड रहती है, हजारों लोग बारहो मास यहां आते जाते रहते हैं। रेल स्टेशन मुसाफिरोंसे सदा खचाखच भरी रहती है। बैठनेमें भी बडा क्लेश उठाना पडता है। शहरमें सैकडों वैष्णव और शैव लोगोंके मंदिर हैं। यहां फाल्गु भागीरथी नदी बहती है, यहां आ-कर लोग पिंडदान तर्पण श्राद्ध और ब्राह्मण भोजन आदि बहुत कराते हैं। यहां हिन्दुओंके मन्दिर पुल घाट बडी मस्जिद आदि चीजें देखनेके लायक हैं, स्टेशनसे १॥ मील के फासलेपर २ दिंगबर जैन धर्मशाला दो मुहल्लोंमें हैं। दोनोंकी दूरी बराबर है। जहां चाहैं वहां यात्री उतर सकते हैं। सब बातका आराम है। दोनों धर्मशालाओंमें २ बडे २ मंदिर हैं जो कि बहुत बढिया हैं। यहां जैनी भाइयोंके घर करीब ३० के हैं। यहांके सेठ केसरीमलजी सरावगी १ सज्जन धर्मात्मा व्यक्ति हैं। यहांसे यात्रियोंको कुलुहा पहाड जाना चाहिए। इस पहाडको लोग जैनी पहाड भी कहते हैं।

गयाजीसे कुलुहा पहाड ३८ मीलके फासलेपर है यह स्थान जैनी पहाडके नामसे भी मशहूर है। हिंदु लोग यहां बहुत आया जाया करते हैं। जानेके लिये जिंदापुर ढौंवी ग्रामतक २० मील पक्की सडक है। ढौंवी ग्रामसे बांई तरफ कच्चा रास्ता मुडता है, ढौंवीसे ९ मीलके फासलेपर हटर-गंज थाना है, यहां विश्राम कर लेना चाहिये। फिर यहां खाने पीनेका सामान लेकर लीलांजन तथा फल्गु नदी

उतरकर ६ मील हतवरिया गांव जाना चाहिये। यहां एक धर्मशाला है वहां ठहर जाना चाहिये। यहांसे कुलुहा पहाड एक मील है।

श्रीकुलुहा पहाड अतिशय क्षेत्र
जैनी पहाड

यह पहाड एक विशाल जंगलमें है। २ मीलके करीब इसकी चढाई है, पहाडपर हजारों प्रतिमा और सैकडों मंदिर प्राचीन हैं। परंतु जैनी भाइयोंकी गफलतसे अन्यमती लोगोंके हाथमें यह पहाड पड जानेके कारण बहुतसी प्रतिमा अन्यमतियों द्वारा फोड दी गई हैं और सिंदूर आदि लगाकर विडंबना रूप कर दी गई हैं। गयाजी बहुत दूर पड जानेके कारण जैनी लोग यहां बहुत कम आते जाते हैं. परन्तु हिंदु लोगोंका आवागमन बराबर अधिक संख्यामें बना रहता है। यह पहाड बडा भारी है। ४ मीलके घेरेमें यहां अनेक प्राचीन रचना हैं। १ आदमीको साथ लेकर सब पहाड घूमकर देख लेना चाहिये। यहां इस समय भी कई जैन मंदिर मौजूद हैं। प्रतिमाजी भी बहुतसी हैं। इसी परम पूज्य पहाडपर दशवे तीर्थंकर श्रीशीतलनाथ भगवानने दीक्षा धारणकर तप किया और घातिया कर्मों का नाशकर केवलज्ञान पाया था, फिर जहांतहां विहारकर भव्य जीवोंको उपदेश दिया और सम्मेदशिखरजीसे मोक्षमें जा

कर विराजमान हो गये। कुलुहा पहाडपर शीतलनाथ भगवानके २ कल्याण हुए और गर्भ और जन्म कल्याण इसी पहाडके पास भद्रलपुरीमें हुये थे। यह भद्रलपुरी इस समय भद्रलाके नामसे मशहूर है, यह १ छोटासा गांव है और पहाडसे १ मीलके फासलेपर है, इसमें इस समय १ चैत्यालय और कुछ जैनी भाइयोंके घर हैं। इस परमोत्तम तीर्थ श्रीकुलुहा पहाडकी आजकलकी दुर्दशा देखकर बडा ही खेद होता है। समस्त गयानिवासी जैनी भाइयोंसे हमारा यह अनुरोध है कि वे अवश्य कुलुहा पहाडकी यात्राको प्रकट करें और स्वयं भी वहां जाया आया करें।

यहांसे ४ रेलवे लाइन जाती हैं १ ईसरी गोमा १ छपरा १ नायनगर १ मोगलसराय। यात्रियोंको गयाजीसे ईसरी स्टेशन जाना चाहिये। रेलभाडा १।॥≈) है।

ईसरी स्टेशन

स्टेशनके पास १ दि० जैन धर्मशाला है। यहांसे श्रीसम्मेदशिखर पहाड दीखता है। यहांसे मधुवन जानेके २ रास्ता हैं। १ रास्ता १४ मील पक्की सडकका है। बैलगाडीसे जाना होता है। और फी गाडी आजकल २) लगता है। दूसरा पगडंडीका रास्ता है। साथमें एक आदमी लेने पर ॥) उसे देने पडते हैं।

ईसरीसे १ लाइन गोमा आदरा होकर खड्गपुर जाती है।

१ रेल गोमासे बेंडल होकर कलकत्ता जाती है । आदरा जंकशनसे १ सीनी होकर खड्गपुर जाती है । १ आसनसोल जाती है । ईसरीसे यात्रियोंको मधुवन पहुंच जाना चाहिए। सम्मेद शिखर जानेके लिये एक रास्ता गिरीडीह होकर भी जाता है उसका हाल इस प्रकार है—

गिरीडिह जंकशन ।

मधुपुर जंकशनसे एक रेलवे शाखा गिरीडिह आती है । गिरीडीह बस्ती स्टेशनके पास है । यह एक अच्छी बस्ती है, तेरापन्थ बीसपन्थ और श्वेतांबर लोगोंकी जुदी जुदी ३ धर्मशाला हैं । तेरापन्थ और श्वेतांबर धर्मशाला-ओंमें एक एक मंदिर है। तेरापन्थ धर्मशालाके पास ३ घर दिगम्बर जैनी भाइयोंके है । यहांसे मधुवन १८ मील है । रास्ता पक्की सडकका है, तांगा बैलगाडी मोटर आदि सभी सवारियां मिलती हैं । गिरीडीहमें खाने पीनेका सब सामान मिलता है। रास्तेके बीचमें १ बड़ी नदी पडती है वहांपर १ श्वेतांबरी मंदिर और धर्मशाला है ।

गिरीडीहसे रेल मधुपुर तक जाती है । रेल भाडा ३।।) कलकत्तेका लगता है, १ कींयुल जंकशन जाती है, कींयुल जंकशनसे ४ लाइन जाती है १ नवादा गया १ नाथ नगर भागलपुर आदि १ मधुपुर आसनसोल बेंडल होकर कलकत्ता १ मुगलसराय आदि । बीचमें बख्त्यार-

पुर जंकशन आता है वहांसे १ लाइन पटना आदि जाती है। १ विहार राजगृही तक जाती है। यात्रियोंको ईसरी गिरीडीह दोनोंसे मधुवन आनेका रास्ता बतला दिया है, उनकी खुशी, वे जिस रास्तासे मधुवन आनेमें सुभीता समझे जावें।

मधुवनकी कोठियां

पहाड, पार्श्वनाथ स्वामीका मंदिर और टौंक बहुत दूरसे दीख पडते हैं। पहाडकी तलेटीमें ३ बडी २ कोठी और ४ धर्मशाला हैं। तीनों कोठियोंमें १ बडी कोठी बीस पंथ आम्नायकी है। इसमें १० मन्दिर आदि अनेक रचना बडी ही दर्शनीय हैं। १ कोठी श्वेतांबर आम्नायकी है। १ कोठी तेरापन्थ आम्नायकी है जिसमें ८ मंदिर बहुत ही सुंदर हैं। यहांका दर्शन पूजन हमेशा करना चाहिए। कोठियोंसे नीचे ३ चबूतरे और मैदान है। जिस समय कोठियोंकी ओरसे रथ निकलते हैं उस समय तीनों कोठियोंके श्रीजी जुदे २ तीनों चबूतरों पर जाकर विराजमान होते हैं। हजारों नर नारी यहां आनंद नृत्य भजन आदि करते हैं। इन चबूतरोंसे पहाड खुलासा रूपसे दीखता है इसलिये बहुतसे आदमी जो पहाड पर नहीं जा सकते यहींसे पहाडकी पूजन करते हैं। तीनों कोठियोंके पास बाजार हैं। बाहरके दुकानदार यहां आकर कारसे चैत तक

रहते हैं। खाने पीने पूजनका सामान पान सुपारी लकडी आदि सब सामान वहां मिलता है। प्रति समय वहां मैदानमें पानी बहता रहता है इसलिये यात्रियोंको स्नान आदिका बडा सुभीता रहता है। यहांपर पहाडके ऊपर गोदी, डोली लेजानेवाले और भी सब प्रकारके मजदूरी करनेवाले भील लोग हैं। क्वारसे चैत्र तक बराबर ये लोग मधुवनमें रहते हैं बाद जब यात्रियोंका आना जाना बन्द हो जाता है तब ये लोग भी चले जाते हैं। यात्री यहांपर क्वारसे चैत्र तक ही आते हैं। फिर गरमीसे पहाड तपता है पानी खराब हो जाता है इसलिये फिर कोई यात्री नहीं आता। कोठियोंमें सिर्फ मुनीम गुमास्ते आदि जो नोकर हैं वे ही रह जाते हैं। यहांपर मुनीम पुजारी चौकीदार आदि बहुतसे नोकर हैं। यात्रियोंको जिस चीज की आवश्यकता होती है ये लोग ही सब बंदोबस्त करते हैं। इसलिये यात्रियोंको कोई तकलीफ नहीं उठानी पडती। जिस भाईको जिस चीजको जरूरत हो कुछ समय पहिले इन लोगोंसे कह देना चाहिये। डोली आदिके लिये १ दिन पहिले कह देना चाहिए।

यहांका खर्च बहुत है इसलिये यात्रियोंको शक्त्यनुसार अच्छा भंडार भरना चाहिये। जिस समय यहां यात्रियोंका जाना आना हो निकलता है उस समय बहुतसे कंगले भी आकर इकठे होते हैं। पहाडपर जाते समय इन

के वास्ते कुछ ले जाना चाहिए और आते समय देता आना चाहिये। इकट्ठाकर शक्त्यनुसार कुछ बाट भी देना चाहिए।

पहाडपर जानेवाले भाइयोंको २ वा ३ बजे उठकर स्नान शौच आदिसे निवृत्त हो जाना चाहिये और ४ बजे के भीतर पूजनका द्रव्य पुस्तक आदि लेकर पहाड पर रवाना हो जाना चाहिए। मार्गमें भगवानके गुणोंका चिंतवन करते स्तुति गायन आदिके साथ जाना चाहिये। पहाडपर जूती नहीं पहिनना चाहिये, पेशाब आदिकी हाजत लगे तो नहिं करना चाहिये क्योंकि इस पहाडकी ठीकरी ठीकरीतक पवित्र है सब जगहसे अनन्त मुनि सिद्ध हुये हैं। जहां तक हो पावोंसे ही यात्रा करना ठीक है फिर सामर्थ्यके ऊपर निर्भर है।

श्रीसम्मेदशिखरजी पहाड

धर्मशालासे २॥ मीलके फासलेपर गन्धप नामका नाला है। वहां १ श्वेतांबर धर्मशाला है. यदि पेशाबकी बाधा हो तो यहां दूर कर देनी चाहिये। यहांसे १॥ मीलकी दूरी पर सीता नाला है। यहां द्रव्य न धुई हो तो धो लेना चाहिये, प्रक्षालके लिये जल भी भर लेना चाहिये। सीता नालासे करीब १ मीलकी दूरीतक सीढियां हैं फिर १ मील कच्ची सडक है। पहाडकी कुल चढाई छह मीलकी है। पहिले ही श्रीगौतम स्वामीकी टोंक तथा कुंथनाथ भग-

थानकी टोंक आती हैं। यहां कुछ देर विश्रामकर दोनों टोंकोंकी वन्दना करना चाहिये। यहांकी वन्दनाकर पूर्व दिशाकी ओर जाना चाहिये। क्रमसे नेमिनाथ अरनाथ मल्लिनाथ श्रेयांसनाथ पुष्पदन्त पद्मप्रभु मुनिसुव्रतनाथ चंद्रप्रभ इन टोंकोंकी वन्दना करनी चाहिये। ये टोंक बहुत ऊंची और दूरीपर हैं। फिर वहांसे आदिनाथ शीतलनाथ अनंतनाथ सम्भवनाथ वासुपूज्य अभिनंदननाथकी टोंकोंकी वंदनाकर जलमंदिर होकर फिर गौतम स्वामीकी टोंकपर लौट आना चाहिये और पश्चिम दिशाकी ओर चला जाना चाहिये। वहां श्रीधर्मनाथ सुमतिनाथ शांतिनाथ वर्धमान सुपार्श्वनाथ विमलनाथ अजितनाथ नेमिनाथजीकी टोंकोंकी वन्दनाकर पार्श्वनाथ भगवानकी टोंकोंकी वन्दना करनी चाहिये। भगवान पार्श्वनाथकी टोंक सबसे बडी और ऊंची है। यहां कुछ देर विश्रामकर थकावट दूर कर लेनी चाहिये। फिर यहांसे करीब ६॥ मीलके फासलेपर नीचे धर्मशाला है उतर आना चाहिये। आकर नीचेके सब मंदिरोंके दर्शन करना चाहिये फिर जलपान आदि क्रियाओंमें प्रवृत्त होना चाहिये।

श्रीसम्मेदशिखर पहाडका आने जाने और वन्दना करनेमें करीब २० मीलका चक्कर पडता है। इस पर्वतराजका प्रभाव अचिन्त्य है। कुछ विशेष थकावट नहीं मालूम पडती थोडी देर बाद फिर शरीर ज्योंका त्यों हो जाता है। कोई

प्रकारकी बाधा भी नहीं होती। यहां बालक वृद्ध युवा सभी प्रकारके लोग जाते हैं और वे वन्दना करनेमें जरा भी नहीं थकते दीख पडते। सुना जाता है इस पहाडपर रात्रिमें देव दुदुंभियां बजती हैं। देवगण पूजनको आते जाते रहते हैं, जलवृष्टि सदा हुआ करती है। यह अनादिकालीन परम पवित्र तीर्थराज हैं। यहांसे अनन्तानंत चौवीसी और मुनिगण कंकर कंकरसे मोक्ष पधारे हैं। इस समय काल दोषके प्रभावसे २० ही तीर्थंकर यहांसे मोक्ष गये हैं। यहां टोंक २४ बनी हुई हैं। चौवीसो टोंकोंपर एक एक छत्री और चरणपादुका विराजमान हैं। जलमंदिरमें प्रतिमा हैं। एक पानीका कुण्ड है, १ गौतम गणधरकी टोंक है। २–४–८–१० जितनी वन्दना करनेकी इच्छा हो करना चाहिये। कंगलोंको दान करुणा भावसे देना चाहिये। भाग्यके उदयसे कोई त्यागी मुनि क्षुल्लक ब्रह्मचारी आदि मिल जाय उनको भक्तिभावसे आहार दान देना चाहिये। त्यागियोंका मिलना और उनको आहारदान देना बडे भाग्यका कार्य है, निःसंकोच भावसे दान आदि कार्य करने चाहिये। विनाशीक लक्ष्मीका मोह करना कर्मजालमें फसना है। श्रावक कुलका पाना बडा कठिन है। यात्रा करके फिर परिक्रमा देनी चाहिये।

विशेष—यदि मनुष्य जन्म पाकर जिस मनुष्यने तीर्थयात्रा नहीं की, उसका जन्म निरर्थक है। अन्य तीर्थोंकी

न बन सके तो श्रीसम्मेदशिखरकी यात्रा तो अवश्य करनी चाहिये। सम्मेदशिखरकी एकबार शुद्ध भावोंसे वन्दना करनेपर नरक तिर्यंच आदि कुगतियोंका कष्ट मिट जाता है, और फिर ४९ भवमें अनेक संसारके उत्तमोत्तम सुखों को भोगकर मोक्ष प्राप्त हो जाती है यह शास्त्रका वचन है. सम्मेदशिखरका क्या माहात्म्य है यह शिखरमाहात्म्य ग्रन्थसे जान लेना चाहिये।

सम्मेदशिखरकी यात्राके साथ चंपापुरी पावापुरी राजगृही आदिकी भी यात्रा हो जाती है। शास्त्रका वचन है कि—जिस मनुष्यने मनुष्य जन्म श्रावकका कुल धन संपदा कुटुंब आदिका सुख पाकर भी तीर्थयात्राके लिये प्रयत्न नहीं किया उस मनुष्यका मनुष्य जन्म पशुके समान है। लक्ष्मी अंगारोंके समान है कुटुंबी कौआके समान हैं इसलिये धर्मात्मा भाइयोंको चाहिये कि—वे मनुष्य जन्म और श्रावक कुल पाकर अवश्य ही यात्राके लिये प्रयत्न करें। यहां कुछ दोहे लिखे जाते हैं—

काल करे सो आजकर आज करे सो अब्ब।
पलमें परलय होयगी फेरि करेगा कब्ब ॥ १ ॥
पाव घरीकी खबर ना कहा कालकी वात।
कुण जाने क्या होयगा कब ऊगे परभात ॥ २ ॥
आज कालको छांडकर करले जो कुछ अब्ब।
आग जरंता झोंपडा सोया सो ही लब्ब ॥ ३ ॥

परम पूज्य श्रीसम्मेदशिखरजीकी यात्राकर ईसरी आना चाहिये और वहांसे ३=) रेल भाड़ा देकर कलकत्ता हावड़ा आ जाना चाहिये। मधुवनसे लोग गिरीडीह भी जा सकते हैं। यह बात यात्रियोंकी इच्छापर निर्भर है, जहां वे जाना चाहें जावें।

कलकत्ता

स्टेशनपर हर प्रकारकी सवारियां मिलती हैं। यात्रियोंकी इच्छा वे जिस सवारीमें बैठना चाहें, बैठ सकते हैं। स्टेशनसे करीब आधी मीलके फासलेपर कलकत्तेका मुख्य बाजार हरीशन रोड है। वहां १ बाबू सुरजमलजीकी एक बाबू रामकृष्णदासजीकी और १ बाबू बद्रीप्रसादजी जौहरीकी इसप्रकार बहुत बडी ३ धर्मशाला है। हिन्दुमात्रके उतरनेकी इन धर्मशालाओंमें आज्ञा है। पानीका नल टट्टी रसोईका कमरा आदि सभी बातोंका यहां आराम है। यात्रियोंकी इच्छा वे जहां चाहें उतर जा सकते हैं। अपनी चीज संभालकर रखना चाहिये। धर्मशालाओंमें हर एक किस्मका आदमी आता जाता रहता है। १ धर्मशाला बेलगछिया स्थानपर है। यह स्थान स्टेशनसे करीब ४ मीलके फासलेपर है। यहां दिगम्बर जैन ही ठहर सकते हैं। यदि यात्रियोंकी इच्छा इस धर्मशालामें आनेकी हो तो यहां आकर ठहर सकते हैं। यहां भी सब बातका आराम है, आब

हवा अच्छी है जरा शहर दूर पडता है, इतना ही कष्ट है। खाने पीनेकी सामग्री तो यहां भी मिल जाती है, यात्रियोंकी जैसी इच्छा हो वैसा वे करें।

कलकत्तेमें कुल ४ मंदिर हैं। १ हरीसन रोडके पास मछुवाबाजारमें सडकके किनारे है। यह नये मंदिरके नामसे मशहूर है और बडा मनोहर है। १ चावलपट्टीमें मंदिर है। वह पुराना मंदिर है। १ पुरानीवाडीमें मंदिर है। एक वेलगछियामें मंदिर है। शहरसे ट्रामर्मे बैठकर आना पडता है यह बाग तालाब कुवा आदिसे शोभित स्थान श्यामबाजारसे कुछ आगे है। नया मंदिर पुराना मंदिर और वेलगछियाका मंदिर ये ३ मंदिर यहां बडे ही कीमती और रमणीय हैं। इनमें महामनोज्ञ अनेक नवीन प्राचीन स्फटिक आदिकी प्रतिमा विराजमान हैं, इन सब मंदिरोंके दर्शनसे बडा आनन्द होता है। कलकत्ता शहर अंग्रेजी राज्यका एक प्रधान शहर है। इसके देख लेनेसे अन्य शहरके देखनेकी इच्छा नहीं रहती। व्यापारके लिये यह एक प्रधान शहर है। यद्यपि मांस मच्छी आदिका विशेष प्रचार होनेसे यह म्लेच्छ शहर जान पडता है तथापि शहर बहुत बडा है। कलकत्तेके देखनेके लिये खासकर यहां ४–६ रोज ठैहरना चाहिये और कुछ रुपया खर्चकर सब चीज देख लेनी चाहिये। यद्यपि इस विशाल शहरमें बहुतसी चीजे

देखने लायक हैं परन्तु जो यहां देखने योग्य समझी जाती हैं वे इसप्रकार हैं—

हरीसन रोड बडाबजार तथा वहांकी कोठियां। बाबू बद्रीदास जौंहरीका बगीचा और मंदिर। यहां आसपासमें और भी ४ मंदिर श्वेतांबरोंके हैं बडे मनोहर देखने लायक हैं। बावू दुलीचंदजीका बगीचा टकसाल घर हकसाहबका अंग्रेजी बजार किला, किलेका मैदान गंगा नदीका घाट अग्निबोट बडे २ जहाज बडे २ व्यापारियोंकी कोठियां बडा डांकखाना लाट साहबकी कोठी बैंक बडे २ मारकेट अलीपुर चिडियाघर अजायब घर मल्लिकका मकान हवडा स्टेशन इत्यादि २। कलकत्तेसे आगे समुद्रसे मद्रास बंबई आदिको रास्ता जाता है। रेलवेसे मदारीपुर डिबरूगढ मनीपुर आदिको जाता है। कलकत्तेसे जहाज और रेलसे चारो ओर जाना होता है। यहां खर्चा और पैदाइश दोनों ही अधिक हैं। यहां मारवाडी बंगाली और अंगरेज लोग बहुतसे रहते हैं। सब ही बडे २ व्यापारी और धनवान हैं। हर एक देशका आदमी कलकत्तामें पाया जाता है। कलकत्तेका व्यापार अपूर्व है। यहां शिथिलाचारकी प्रवृत्ति विशेष है।

कलकत्तेसे पश्चिमकी ओर बाली उत्तरपाडा नामके दो स्थान हैं। दोनों जगह एक एक मंदिर है। जैनी भाई भी रहते हैं। वहांपर भी यात्रियोंको अवश्य जाना चाहिये।

रेल और अग्निबोट दोनोंसे जाया जाता हैं। रेलके रास्ता-पर एक हुगली नामका भी स्थान है वहांसे करीव २ मील-की दूरीपर १ चींचडा (चिसुरा) नामका स्थान है वहांपर १ मंदिर है वहां भी जाना चाहिये। कलकत्तेसे खड्गपुर टिकट लेना चाहिये। किराया १≈) लगता है।

खड्गपुर जंकशन

स्टेशनके पास १ बडा मुशाफिर खाना है। शहरमें १ श्रावक हीरालालजी की दुकान तथा वैष्णवोंके मंदिरमें ठहरनेका स्थान है। यहां सब अंग्रेज लोग और रेलवेके नोकर रहते हैं। यहांका बाजार और रेलवेका कारखाना देखने योग्य हैं। यहांपर खानेकी चीजें उत्तमोत्तम मिलती हैं। यहांसे ४ रेलवे लाइन गई हैं— १ कलकत्ता आसाम दार्जिलिंग तक जाती है। १ खुरदारोड बेजवाडा मद्रास हो कर रामेश्वर चली जाती है। १ आदरा गोमाह गया मोग-लसराय इलाहाबाद आदि होकर पेशावर जाती है। १ सीनी विलासपुर रायचूर आदि होती हुई बम्बई जाती है परंतु खड्गपुरसे यात्रियोंको कटक शहर जाना चाहिये। कटकतक का रेल किराया २॥) लगता है।

कटक शहर

कटक शहर स्टेशनसे बिलकुल पास है। शहरमें जाने-केलिए स्टेशन पर हरएक प्रकारकी सवारी मिलती है।

स्टेशनसे करीब १ मीलकी दूरीपर भाजी बाजार है वहां जाना चाहिये। वहांपर १ दिगंबर जैन मंदिर है। बहुतसी प्राचीन चतुर्थ कालकी महा मनोहर प्रतिमा विराजमान हैं। पासमें ही १ चैत्यालय भी है उसमें भी अनेक प्राचीन प्रतिमा विराजमान हैं। कटक शहर बहुत पुराना है। यहां की १ नदी बहुत बडी है। दिगंबर जैनी भाइयोंके घर करीब ३० के हैं। जिस घरमें चैत्यालय है उस घरके मालिक एक सेठ बडे ही धर्मात्मा व्यक्ति हैं। कटकके आस पास ग्रामोंमें बहुतसी प्रतिमा हैं उक्त सेठ साहबसे सब पूछकर सब जगह दर्शन करने चाहिये। इन ग्रामोंमें जानेके लिये तांगा और बैलगाडी मिलती हैं। साथमें १ आदमी अवश्य रखना चाहिये। यह कटक पहिले जमानेमें कांचीपुरके नामसे प्रसिद्ध था। यहां आस पासमें हजारों प्रतिमा प्राचीन चतुर्थकालकी महामनोहर जमीनके अंदरसे निकलती हैं। जैनी भाइयोंको मनुष्य जन्म और श्रावक कुल पाकर यहांका दर्शन अवश्य करना चाहिये। जिन ग्रामोंमें प्राचीन प्रतिमा निकली हुई हैं उन ग्रामोंके नीचे लिखे अनुसार नाम हैं—

१ कंठावणिया गांवमें चौवीसीकी २ प्रतिमा ८ फुट ऊंची विराजमान हैं। कटकसे ३० मीलकी दूरीपर पेद्रा नामक गांवमें ११ प्रतिमा हैं। १ गुफा है। गुफामें ७२० प्रतिमा अखंडित हैं बाकी हजारों खंडित हैं। कटकसे १५

मीलकी दूरीपर साईवार गांवमें ७ प्रतिमा अखंडित हैं । कटकसे ६ मील पटिया ग्राममें ७ प्रतिमा और २ मंदिर हैं । कटकसे २० मीलकी दूरीपर जगमारा गांवमें ३ प्रतिमा जंगलमें हैं । कटकसे ४० मील झांजपुरमें ७ प्रतिमा हैं । कटकसे २० मील हरीहरपुरमें ७ प्रतिमा हैं और भी बहुतसी जगह प्रतिमा और मंदिर हैं परन्तु जैनी भाइयोंके न होनेसे सब गैरमरम्मत दशामें पडे हुए हैं ।

विशेष--जिन महानुभावोंको इन उपर्युक्त गांवोंमें जानेकी फुरसत हो तो वे जावें, नहीं तो कटकस्टेशनसे ।) का टिकट लेकर वे भुवनेश्वर चले जांय ।

भुवनेश्वर

भुवनेश्वर स्टेशनसे ६ मीलकी दूरीपर खंडगिरि सिद्ध क्षेत्र है । बैलगाडीमें फी सवारी।) लगता है । बीचमें भुवनेश्वर गांव पडता है । यह ग्राम अवश्य देखना चाहिये । यह हिंदुलोगोंका बडा भारी तीर्थ है । हजारों लोग यहां यात्रार्थ आते जाते हैं । यहां १ विशाल तालाव है । तालावके पास बहुतसे प्राचीन मंदिर महादेवजीके बने हुए हैं १ विशाल धर्मशाला है । तालावका घाट बन्धा हुआ है । ग्रामके भीतर कई मंदिर महादेव और बुद्धदेवके हैं यहांकी मंदिर आदि प्राचीन रचना देखनेसे यह जान पडता है कि पहिले यहां १ बडा शहर होगा । यहां पर सबसे बडा

भुवनेश्वरका मंदिर है जो कि १ विशाल कोटके अंदर है। इस मंदिरके भीतर ४ परकोटे हैं । भीतर बडा अंधकार रहता है। ३ मूर्तियां महादेवकी और ३ नादिया बडे बडे हैं। इस मंदिरके पास एक कोटमें बहुतसी देवी देवताओंकी मूर्तियां हैं। लोगोंका कहना है कि भुवनेश्वरका मंदिर तीन लाख रुपयोंसे बना था परन्तु आज कल ऐसी इमारत १० लाख रुपयोंसे तयार हो सकती है । भुवनेश्वरकी सब रचना देखकर खंडगिरि जाना चाहिये। भुवनेश्वरसे खंड-गिरि ४ मील है।

श्रीखंडगिरि सिद्धक्षेत्र

यहां ३ धर्मशाला १ छोटासा ग्राम और २ पहाड हैं खंडगिरिपर १ फर्लांगकी चढाईके बाद एक बडा मंदिर और १ छोटा मंदिर है। मंदिरमें प्राचीन चतुर्थ कालकी ६ मनोहर प्रतिमा विराजमान हैं, मंदिरके नीचे परोला रोड सरीखे पत्थर काटकर बनाई गई ५-६ गुफा हैं। ३ गुफाओंमें पत्थरमें उकेरी हुई यक्ष यक्षिणी संयुक्त बहु-तसी प्रतिमा विराजमान हैं। ३ चौवीसीकी प्रतिमा बडी मनोहर और शांतिमय है। पहाडके ऊपर १ प्राचीन मंदि-रका पत्थर पडा हैं। १ कुवड है, १ फूटी हुई गुफा है। जिसके ऊपर कुछ प्रतिमा विराजमान हैं।

दूसरा पहाड उदयगिरि है। खयडगिरिके दर्शनकर

उदयगिरिपर आना चाहिये। यहां पहाडमें स्थान २ पर सैकडों बडी २ गुफा कोठरिया हाथी आदिकी मूर्तियां हैं। यह सब रचना पहाड़ काटकर बनाई गई है लाखों रुपयोंकी लागतके हैं परंतु प्रतिमा कहीं भी विराजमान नहीं, न मालूम क्या हो गया? कौन लेगाया और कहांपर जाकर विराजमान कर दीं। सुना जाता है यह कलिंग देश है। यहीं से राजा दशरथके पुत्र आदि ५०० मुनि मोक्ष पधारे हैं। सुनते हैं कोटि शिला भी इसी जंगलमें है परंतु कालदोषके प्रभावसे उसका पूरा पता नहीं लगता। यहांकी यात्राकर यात्रियोंको भुवनेश्वर स्टेशन लौट जाना चाहिये। वहांसे ॥=) देकर पुरीका टिकट लेना चाहिए। बीचमें खुरदा जंकशन पडता है। यदि गाडी बदलनेकी संभावना हो तो पूछ लेना चाहिये। पुरी जगन्नाथपुरीके नामसे मशहूर है, यह हिंदुओंका सबसे पूज्य स्थान है सदा ही हजारों हिंदु राजा महाराजा तक इस तीर्थकी वंदनार्थ आते हैं। यह हिंदुओंका जगत्प्रसिद्ध तीर्थ है। यह भी अवश्य देख जाना चाहिये।

जगदीशपुरी।

स्टेशनसे २ मीलकी दूरीपर शहर है। तांगामें फी सवारी =) लगता है, यहांपर पण्डे लोग बहुत रहते हैं। रेलसे उतरते ही यह संग लग लेते हैं। जैनी कहकर उनसे पिंड

छुटाना चाहिए। पुरी शहर अच्छा है। तीर्थ होनेसे यहां सब बातका सुभीता है। कई धर्मशाला हैं एक धर्मशालामें ताला मारकर अपना सामान रख देना चाहिये और १ पण्डाको ।।) देना कहकर साथ लेकर जगन्नाथका मंदिर जाना चाहिए। यहांपर बडी भारी भीड रहती है। जगदीशका बडा भारी हजारों छोटे २ मंदिरोंसे युक्त यह मंदिर है। लोग १। करोड लागतका इसे बताते हैं। चोतर्फा कोट बना हुआ है। जगदीशके मंदिरके चारो ओर तेतीस करोड देवताओंके मंदिर बने हुए हैं। सब घूमकर देखना चाहिए। खास जगदीशके मंदिरमें १ कृष्णकी १ बलदेवकी १ सुदामाकी इस प्रकार तीन बडी २ मूर्तियां हैं। चांदी सोने का काम इस मंदिरका दर्शनीय है। यह सब रचना देख कर जगन्नाथका रसोई खाना देखना चाहिये।

यहांपर हजारों मन चावल रोज पकाया जाता है। छोटे बडे सभी लोग प्रसाद कह कर इसे खाते हैं। जगन्नाथका भात जगत्प्रसिद्ध है। किसी भी मनुष्यको जगन्नाथके भातके खानेमें ग्लानि नहीं होती। यहांका सब दृश्य देखकर मंदिरके बाहर निकल आना चाहिए। चोतर्फा फिरकर मंदिरके ऊपर उकेरी हुई साधु आदि की विडंबनामय मूर्तियां देखना चाहिये। मंदिरके १ मीलकी दूरीपर जगदीशका ४ तालाब है जो कि बडा रमणीक है। वहांपर जगदीशकी सवारी आती है। यहां पर राजालोगोंके

कई मकान और छत्रियां देखने लायक हैं। शहरसे कुछ लेना हो तो लेलेना चाहिये फिर पुरीसे खुरदा रोड चला जाना चाहिये। पुरीसे खुरदा जंकशनके ।।) लगते हैं।

खुरदा रोड।

स्टेशनसे २ मीलकी दूरीपर जंगलमें वैष्णव लोगोंका १ वैजनाथका मंदिर है। उसमें चांदी सोनेकी अद्भुत मीना कारी है। जिस भाईको यह मंदिर देखना हो वह स्टेशन पर तलाश कर देख आवे। खुरदा रोडसे १ रेल मद्रास जाती है और १ खड्गपुर जाती है।

विशेष—जिन भाइयोंको जैनबद्री मूलबद्री जाना हो वे खुरदासे मद्रास चले जांय। यह रास्ता सीधा और कम खर्चे का है जिस भाईको जैन बद्री न जाना हो वे लौट कर खड्गपुर आ जांय और फिर जहां उन्हें जाना हो चले जांय परन्तु जैनबद्री मूलबद्री जानेवालेको खुरदा रोडसे सीधा मद्रासका टिकट लेना चाहिये, रास्तेमें कहींपर भी नहीं उतरना चाहिये। रेल किराया १७॥≈) लगता है। मद्रास जाते समय बीचमें कोई भी तीर्थस्थान नहीं पड़ता।

मद्रास

स्टेशनके पास १ अन्यमतियोंकी धर्मशाला है वहींपर ठहर जाना चाहिये। शहरमें १ चैत्यालय और कुछ जैनी भाइयोंके घर हैं। वर्तमानमें १ नया मंदिर बन रहा है, यह

शहर भी हिंदुस्तानमें तीसरे नम्बरका है, देख लेना चाहिए। मद्रासससे ३ रेलवे लाइन जाती हैं १ रामेश्वर १ वैजवाडा खुरदारोड तक १ आरकोनम् । मद्राससे तींडीवनम्का टिकट लेकर वहां जाना चाहिये।

तींडीवनम्

स्टेशनसे १० मीलकी दूरीपर वायव्यकोणमें सीतामुर (चीतांबुर) क्षेत्र है। जानेकेलिये तांगाकी सवारी मिलती है। वहां जाना चाहिये।

श्रीसीतामुर (चीतांबुर) क्षेत्र

यह कसबा ठीक है। यहां ५० घर दिगंबर जैनी भाइयोंके हैं। २ मंदिर बहुत बढिया प्राचीन हैं। इनमें बहुतसी प्राचीन प्रतिमा विराजमान हैं, यहां किसी भट्टारकने शास्त्रार्थमें ब्राह्मणोंसे विजय पायी थी उन ब्राह्मणोंकी सम्मतिसे ही मंदिरोंका यहां निर्माण हुआ है। यहांसे १ मीलकी दूरीपर १ वीलुक्म् नामका गांव है। वहां १ प्राचीन मंदिर और प्रतिमा हैं वहां जाना चाहिये। गुणसागर मुनिकी चरणपादुका भी हैं सबके दर्शनकर लौटे। वापिस फिर तींडीवनम् आवे। तींडीवनमूसे २५ मीलकी दूरीपर पोन्नूर नामका क्षेत्र है वहां जाना चाहिये। तांगासे जाना होता है

श्रीपोन्नूर क्षेत्र

यह कसबा जिला चीनोरमें पहाडकी तलहटीमें है।

यहां दि० जैन भाइयोंके बहुतसे घर हैं। १ प्राचीन जैन मंदिर और प्रतिमा हैं। पहाड़पर श्रीएलाचार्य (कुन्दकुन्दाचार्य) की बहुत प्राचीन अतिशययुक्त चरणपादुका विराजमान हैं। यहांकी यात्राकर फिर तींडीवनम् आ जाना चाहिये। फिर मद्रास आकर वहांसे कांजीवरम् स्टेशनका टिकट लेना चाहिये।

कांजीवरम्

यहांसे ६ मीलकी दूरीपर अरपाकं नामका क्षेत्र है। यह क्षेत्र कांजीवरम्से दक्षिणकी ओर है। तांगोंसे जाना होता है।

श्रीअरपाकं क्षेत्र

कांजीवरम्से नीरपाथीकनरम् गांवमें होकर इस क्षेत्र पर आना होता है। यहां वस्ती आबाद है, जैनियोंका यह प्रसिद्ध क्षेत्र है। यहां एक प्राचीन धर्मशाला और छोटा १ मंदिर है। यह मंदिर खुदाईके कामका बड़ा सुंदर बना हुआ है। कीमती है, यह छोटासा है परंतु हजारों मंदिरोंमें अपूर्व है। बड़ी ही मनोहारिणी इसकी रचना है। इस मंदिरमें श्रीआदिनाथ भगवानकी बड़ी मनोहर प्रतिमा विराजमान है। यह मंदिर और प्रतिमा हजारों वर्ष पहिलेकी हैं। यहां दि० जैनियोंके घर ७५ हैं यह स्थान हिंदु लोगोंका भी बड़ा तीर्थ है। हजारों हिन्दु लोग यहां आया

जाया करते हैं। बहुतसे हिन्दुओंके यहां मंदिर बने हुए हैं एकसे एक कीमती बढिया देखने लायक हैं। कुछ दूर १ नरयामपुथुर गांव है, वहां ६ घर जैनियोंके हैं। यहां लोग दर्शनोंको आते जाते हैं। यहांकी यात्राकर फिर कांजीवरम् लौट जाना चाहिये। कांजीवरम्से पोन्नूरका टिकट लेना चाहिये। पोन्नूरसे ६ मीलके फासलेपर तीरुमले नामका क्षेत्र है वहां जाना चाहिये।

श्रीतीरुमले क्षेत्र

पहाडकी तलेठी मंढी मंगळम् तक रास्ता ठीक है, वहां तक सवारी जाती है। आगे २ मील पहाडी खराब रास्ता है। तीरुमले गांव ठीक है। यहां तीमला नामका पहाड १००० फीट ऊंचा है, ३०० फीट ऊपर चढनेके बाद ४ मंदिर आते हैं। पहाडकी तलहटीसे इन मंदिरों तक सीढी लगी हुई हैं। फिर आगे पहाडपर १ बडी गुफा है। गुफामें बडी २ प्रतिमा विराजमान हैं, यह गुफा रंगदार बडी कीमती लाखों रुपयोंकी लागतकी देखने योग्य है इस गुफासे आगे पहाडकी चोटीपर ३ मंदिर हैं जो कि प्राचीन और बडे कीमती हैं। २ प्रतिमा यहां बहुत बडी विराजमान हैं शेष बहुतसी छोटी प्रतिमा हैं। श्रीआदिनाथ भगवानके मुख्य गणधर श्रीऋषभसेनकी चरणपादुका भी विराजमान हैं। यहां शिलालेख है; अन्य भी बहुतसी रचन

देखने लायक हैं। यहांकी यात्राकर पोन्नूर स्टेशन लौट आना चाहिये और वहांसे वेकुनम् क्षेत्र चला जाना चाहिये।

श्रीवैकुनम क्षेत्र

यह एक विशाल क्षेत्र है। यहां प्रसिद्ध है, मैं इस क्षेत्र के दर्शन नहिं कर सका इसलिये इसके विषयमें कुछ नहीं लिख सक्ता। यात्रियोंको तलाशकर इस क्षेत्रकी वन्दना करनी चाहिये। फिर वापिस पोन्नूर आकर मद्रास चला आना चाहिये। मद्राससे रेलमें बैठकर नीडमंगलम् जाना चाहिये और वहांसे ९ मीलके फासलेपर जिला तंजोरमें श्रीमनारगुडी क्षेत्र चला जाना चाहिये।

श्रीमनारगुडी क्षेत्र

यहां एक प्राचीन कुटी है। यहां प्राचीन ऋषि मुनि आकर ध्यान करते थे, उन्हींके द्वारा प्रतिष्ठित इस कुटीमें १ पार्श्वनाथ भगवानकी प्रतिमा विराजमान है जो कि बडी मनोहर और पूज्य हैं, यह प्रतिमाजी यहींसे निकली थीं। यह कुटी और प्रतिमा दोनों ही बडी पूज्य हैं। यहां एक मंदिर मनारगुडी गांवमें है जो कि अत्यंत प्राचीन है। इस मंदिरमें मूलनायक १ प्रतिमा श्रीमल्लिनाथ भगवानकी बडी ही मनोहर शांति प्रदान करनेवाली विराजमान हैं। इसके सिवा और भी अनेक प्रतिमा विराजमान हैं। यहां ३१ घर दिगम्बर जैनियोंके हैं। यहांकी यात्राकर फिर पोन्नूर

स्टेशन लौट जाना चाहिये और वहांसे मद्रास चला जाना चाहिये ।

मद्रासके आगे और यदि कुछ देखनेका विचार हो तो सेतुबन्धरामेश्वर लंकापुरी आदि देखना चाहिये । सेतबंधरामेश्वर हिंदुओंका एक बडा भारी तीर्थ है उसका हाल इसप्रकार है ।

सेतुबंध रामेश्वर

यहां हिन्दु लोगोंके ४ धाम हैं । इनको हिन्दु लोग तीर्थ बोलते हैं । १ जगदीश (जगन्नाथ) २ रामेश्वर ३ द्वारिकाधीश ४ बद्रीनाथ ये उन चारों धामोंके नाम हैं, यहां समुद्रके बीचमें हिन्दु लोगोंका १ बडा भारी अनमोल मंदिर है । इसमें महादेवकी मूर्ति है, वहां यह कहावत है कि— यह मंदिर राजा रामचन्द्रजीका स्वयं बनवाया हुआ है । यहांसे समुद्रमें जहाज चलते हैं २ दिनमें जहाजमें बैठकर लंका पहुंचना हो जाता है । जिस भाईको लंका देखना हो वह लंका चला जाय यदि यह रावणकी लंका है तो उसका वर्णन प्रसिद्ध है, उल्लेख करनेकी आवश्यकता नहीं ।

समुद्रसे अग्निबोटके द्वारा भी बैंगलुर जाया जाता जिस भाईको अग्निबोटसे बैंगलुर जाना हो तो यहांसे चला जाना चाहिये । यदि इस रास्तासे जाना पसंद न हो तो वह रामेश्वरसे मद्रास फिर बैंगलुर चला जावे

बेंगलूर स्टेशन।

स्टेशनसे १ मीलकी दूरीपर चीक पेंठमें १ दिगंबर जैन मंदिर और १ दिगंबर जैन धर्मशाला है। मंदिरमें ३ प्रतिमा प्राचीन विराजमान हैं और भी अनेक प्रतिमा विराजमान हैं जो बडी ही मनोहर हैं। यहांपर बडे ठाठबाटसे पूजन होती है जिसको देखकर चित्त बडा ही आनंदित होता है। बेंगलूर शहर बडा है। यहांसे ४ रेलवे लाईन जाती हैं। १ गुंटकल जंकशन १ बीरूर १ मद्रास १ म्हैसुर आरसीकेरी जाती है। बेंगलुरसे अग्निवोट सब जगह जाता है। यहांसे यात्रियोंको आरसीकेरी स्टेशन जाना चाहिये।

आरसीकेरी स्टेशन

स्टेशनके पास १ छोटी हिंदुलोगोंकी धर्मशाला है एक जैन मंदिर है जिसमें १ प्रतिमा धातुमयी महामनोहर गोम्मटस्वामीकी विराजमान हैं और भी अनेक पाषाणकी प्रतिमा विराजमान हैं। १ सहस्रकूट चैत्यालय भी फूटी टूटी हालतमें है। यह मंदिर सडकके किनारे एक जैन ब्राह्मण के घरमें है। यहांपर जैन ब्राह्मण और महाजनोंके घर हैं।

यहांपर जैन मंदिरको जैनवस्ती बोलते हैं। जैन मंदिर के नामसे यहां कोई जानता नहीं यह बात ध्यानमें रखनी चाहिये। यहांसे करीब ३० मीलकी दूरीका बैलगाडीसे १ रास्ता जैनबद्री जानेका है। जब रेल नहीं थी तब इसी

रास्तेसे जाना होता था। रेल हो जानेपर अब लोग रेलसे जाते आते हैं। आरसीकेरीसे ४ रेलवे लाइन जाती हैं। १ टीपटूर बेंगलुर १ गुंटकल जंकशन १ बीरूर १ मंद्गिरि होकर म्हैसूर जाती है। बीरूरसे १ लाइन सीमोगाहा जाती है १ लाइन हुबली जाती है। सिमोगाहासे हुंमच पद्मावती क्षेत्रको बैलगाडीसे जाना होता है। गुंटकल बडा जंकशन स्टेशन है। वहांसे ७ लाइन जाती हैं १ बाडीतक १ गदग हुबली लोनडा तक १ बेजवाडा खुरदारोड खडगपुर कलकत्ता तक १ आरकौनम् मद्रास तक १ बेंगलुर १ बलारी १ धर्मारम् जाती है। यात्रियोंको आरसीकेरी स्टेशनसे छोटी लाइनमें मंद्गिरि स्टेशनका टिकट लेना चाहिये। रेलभाडा १) लगता है।

मंद्गिरि स्टेशन।

यहां एक छोटा गांव है। १ बडी नदी है। नदीके दूसरी पार जाना चाहिए। वहांसे १४ मीलकी दूरीपर जैन बद्री पहाड व भगवान गोम्मटस्वामी हैं। जैन बद्रीको यहां श्रवणबेलगोला कहा जाता है इस नामसे यह स्थान यहां मशहूर और पूछा जा सकता है। यहांपर बैलगाडीसे आना होता है। १ बैलगाडीका किराया ३) लगता है, ६ सवारी तक बैठकर आती हैं यहांपर नई एक धर्मशाला बन रही है। कुछ बन भी चुकी है।

श्रीजैनबद्री श्रवणवेलगोला (जैनकाशी)

श्रवणवेलगोला गांव अच्छा है। यहांपर १ बडा तालाव है, तालावके दोनों ओर २ पहाड हैं। उन पहाडोंको वहां विन्ध्यागिरि कहते हैं, पहाडके नीचे रास्ताके किनारे १ मंदिर है। इस मंदिरका दर्शन कर पहाड पर जाना चाहिये। पहाड छोटा है, आधो मीलकी चढाई है। सीढी लगी हैं। पहाडके ऊपर एक कोट लगा हुआ है। इसके भीतर १ बडा भारी और २ छोटे २ मंदिर हैं १ मानस्तंभ है। १ पानीका भरा कुण्ड है। यहांसे ऊपर जाने केलिये और भी सीढियां लगी हुई हैं। ऊपर जाना चाहिये। वहां पर एक दूसरा कोट है। कोटके पास दो देहरी और मनोज्ञ प्रतिमा विराजमान हैं। फिर ऊपर जानेके लिए सीढियां लगी हुई हैं। वहांपर १ तीसरा कोट है। यहांपर १ प्राचीन धर्मशाला ३ मंदिर १ मानस्तम्भ और परिक्रमा बनी हुई हैं। फिर ऊपर जाकर चौथा कोट है। वहां पर २४ गज ऊंची शांत खड्गासन प्राचीन परम पूज्य श्रीबाहुबळ स्वामीकी प्रतिमा विराजमान हैं। और इस प्रतिमाजी के चारो ओर अनेक प्रतिमा विराजमान हैं। सब प्रतिमाओंका भक्तिभावसे दर्शन करना चाहिये।

प्रतिमाओंके ऊपर पहाडोंपर सीढी व मानस्तंभोंके ऊपर नीचे गांवके मंदिरमें सब जगह शिला लेख मिलते हैं शिला

लेखोंके ऊपर भागमें कहीं २ पर प्रतिमाजी भी विराजमान हैं। यह स्थान बडा ही पवित्र है। पहिले इस प्रांतमें जैन धर्मका बडे जोरसे प्रचार था। यहां अब भी यह विशि-ष्टता है कि चारो वर्णोंमें यहां जैन धर्मका प्रचार है, और प्रांतोंकी अपेक्षा यह प्रांत बडा भद्र परिणामी शांत है। यहां विक्रमाजीत चामुण्डराय आदि राजा भूतवली पुष्पदंत वसु-नंदी माघनंदी अकलंकभट्ट विजयसेन नेमिचंद्राचार्य आदि बडे २ आचार्य हो गये हैं जिनकी बनाई हुई कृतियां आज जैन धर्मका सारे संसारमें मस्तक ऊंचा किये हैं। यहां पर भद्रबाहु स्वामी भी विराजते थे। श्रीकुन्दकुन्द स्वामी अमृतचंद्र अमितगति राजा चन्द्रगुप्त मुनि आदिने भी इसी प्रांतमें तपश्चरण किया है। लाखों रुपयोंकी कीमतके इस प्रांतमें बडे २ मंदिर, बडी २ प्राचीन प्रतिमा हीरा पन्ना स्फटिक आदिकी महा मनोहर प्रतिमा इसी प्रांतमें विशेष-तया पाई जाती थीं। मंदगिरि वन्दनाकर दूसरे पहाड श्री चंद्रगिरिकी वंदनाकेलिये जाना चाहिये।

श्रीचंद्रगिरि।

यह पहाड बिलकुल छोटा है। ऊपर जानेके लिये सी-ढियां लगी हुई हैं। सुना जाता है इस पहाड पर भद्रबाहु स्वामी और (राजा) चंद्रगुप्त मुनि ध्यान धरते थे। यहां १ कुटीमें श्रीभद्रबाहु स्वामीकी प्राचीन बडी चरणपादुका

हैं। यह कुटी पहाडपर जाते समय सामने ही दीख पडती है, इस कुटीका दर्शन कर आगे जाना चाहिये। आगे १ वडा कोट खिंचा हुआ है। कोटमें ५-६ शिलालेखोंसे भूषित ५-६ छत्रियां और १२ मंदिर बडे २ और कीमती बने हुए हैं। इनके अंदर जो प्रतिमा विराजमान हैं बडी ही कीमती और मनोहर हैं। यहांपर २ प्रतिमा श्रीमहावीर स्वामी और १ प्रतिमा श्रीपार्श्वनाथ भगवानकी १२ गज ऊंची कायोत्सर्ग महा मनोहर विराजमान हैं, २ मानस्तंभ हैं। सबका दर्शनकर पहाडके नीचे उतर आना चाहिए।

पहाडके नीचे ३ बडे २ और ४ छोटे २ मंदिर हैं। इनके अंदर हजारों प्रतिमा विराजमान हैं। १ मंदिरमें भट्टारकजीका मठ है। इस मठमें कई प्रतिमा सुवर्ण चांदी मोती मूगा आदिकी हैं। कई सिद्धांत ग्रंथ ताड पत्रपर लिखे विराजमान हैं। ये सब कनडी लिपिमें हैं। गांवमें घर घर १४ जैन मंदिर हैं पहाडके नीचे दो मानस्तंभ भी हैं सबका दर्शन करना चाहिये। यहां गांवमें २ बडी धर्मशाला हैं ७० घर चारो वर्णोंके दिगम्बर जैन हैं। यहांपर दिगम्बर जैन धर्मका ही प्रचार है। श्वेतांबर लोगोंकी यहां स्थिति और उनके मंदिर आदि नहीं है।

जैनबद्रीसे मूलबद्री करीब ४० मीलके है। बैलगाडी जाती है, हरएक बैलगाडीका ३५) रु० तक किराया लगता है। जानेमें ४ दिन लगते हैं, एक बैलगाडीमें ६ सवारी

जाती हैं। बैलगाडी रात रातमें चलती है। दिनमें ठहर जाती है इनके मुकाम बने हुए हैं। जगह जगह रास्तामें मंदिर और यात्रा हैं। आनन्दसे उतरकर पूजा भोजन निद्रा आदि करने चाहिये किसी बातका जरा भी कष्ट नहीं होता। रात होनेपर फिर चल देना चाहिये। वैसे रेलसे जैनबद्री जाया जा सकता है परन्तु बैलगाडीमें आने जानेमें खर्चा भी कम पडता है और थोडे दिन लगते हैं। चक्कर भी कम लगता है और सबसे बडा आनन्द यह है कि जगह जगहकी यात्रा और मंदिरोंके दर्शन होते चले जाते हैं।

विशेष—यह बात भी यहां ध्यानमें रखना चाहिये कि मूलबद्रीसे आते जाते दोनों समय रेलसे आया जाया जा सकता है परन्तु बीचकी यात्रावोंके लोभसे यदि रेलसे मूलबद्री जाया जाय तो आना बैलगाडीसे चाहिये और यदि आया बैलगाडीसे जाय तो जाना बैलगाडीसे चाहिये. यहांकी यात्रा कोई नहीं बाकी रह जाना चाहिये। बैलगाडीपर जानेवाले भाइयोंको ५-६ दिनका खाने पीनेका सामान साथमें ले लेना चाहिये। मूलबद्री जानेके लिये पक्की सडक है। किसी बातका भय नहीं है। मूलबद्री जाते समय हुंमच पद्मावती नामका अतिशय क्षेत्र पडता है। उसका वर्णन इसप्रकार है—

हुंमचपद्मावती क्षेत्र

हुंमचपद्मावती नामकी एक अच्छी बस्ती है। यहांपर

जैनियोंके बहुतसे घर हैं। यहां एक भट्टारकजी भी विराजते हैं जो लक्ष्मीवान गिने जाते हैं। यहांपर कई मंदिर हैं। बडी २ विशाल प्रतिमा और गुफा हैं जो कि शिला लेखोंसे भूषित हैं। १ धर्मशाला है, यहांके मंदिरोंमें १ मंदिर बहुत ही विशाल हजारों स्तंभोंसे युक्त है यह मंदिर बडा ही कीमती है। हजारों महामनोहर प्रतिमा इसके अंदर विराजमान हैं, यहां पद्मावती नामकी देवीकी बडी मान्यता है। इसी लिये यह वस्ती हुंमचपद्मावतीके नामसे मशहूर है। यहांकी यात्राकर फिर आगे चलना चाहिये। मूलबद्रीसे करीब १२ मील इसी तरफ एक बेनूर नामकी वस्ती पडती है वहां उतरकर यात्रा करनी चाहिये।

विशेष—हुंमच पद्मावतीको करीब ४० मील पक्की सडक सीमोगाहा स्टेशनसे भी आया जाता है परंतु वहांसे आना ठीक नहीं पडता।

बेनूर

यह एक छोटी वस्ती है। यहां १ नदी है, नदीके किनारे १ कोट है कोटके भीतर चौपट मैदान है। मैदानमें श्रीगोम्मट स्वामीकी १० गज खड्गासन १ प्रतिमा विराजमान हैं। जो कि महामनोहर और शांत हैं। कोटके दरवाजेके पास २ मंदिर भी हैं। इन मंदिरोंके पीछे १ बडा भारी मंदिर है जिसमें हजारों प्रतिमा विराजमान हैं और

भी ४ मंदिर हैं जो कि एकसे एक मनोहर हैं। यहां सब मिलाकर ७ मंदिर हैं और १ गोम्मट स्वामी हैं। यहांकी यात्राकर मूलबद्रीको चल देना चाहिये। रास्तामें और भी दो एक गांवोंमें दर्शन हैं उनको भी कर लेना चाहिये।

विशेष—जो मनुष्य मूलबद्रीको रेलसे जाते आते हैं। उनको यहां आना चाहिये और वापिस मूलबद्री ही चला जाना चाहिए। मूलबद्रीसे यहां तक बैलगाडी जाती है और मोटर गाडीकी भी सवारी मिलती है।

श्रीमूलबद्री अतिशय क्षेत्र

यह महान् क्षेत्र जैनपुरी है। प्राचीन कालमें यहांपर बहुतसे लक्षाधिपति कोट्यधिपति जैनी व्यापारी और राजा हो गये हैं। पहिले यहां जवाहिरातका बडा भारी व्यापार था। इस समय भी यह वस्ती बहुत बडी है। इस प्रान्तके गांव गांवमें हजारों रुपयोंकी लागतका मंदिर और प्रतिमा मौजूद हैं खास मूलबद्रीमें करोडों रुपयोंकी लागतके बडे भारी विस्तृत मजबूत १९ मंदिर हैं। जिनके दो मंजल तीन मंजलोंमें मिलाकर ३१ जगह दर्शन हैं। इनके अंदर बडी ही मनोहर प्रतिमा विराजमान हैं। जिनके दर्शनसे चित्त बडा ही आनंदित होता है। ४ बडी २ धर्मशाला बाग तालाब कुवे हैं और एक बोर्डिंग है। यहां श्रीचारुकीर्तिजी नामके एक वृद्ध भट्टारक निवास करते हैं जो कि

संस्कृत विद्याके पाठी भद्र परिणामी और सबके साथ मिष्ट वचनोंमें व्यवहार करनेवाले हैं। इन्हीं भट्टारकजीके हाथमें सब मंदिरोंका प्रबन्ध है। सब बातका इन्तजाम अच्छा है। जो यात्री यहां आते हैं उनकी ये बडी खातर करते हैं और सबोंके साथ हितमितका व्यवहार रखते हैं।

सब मंदिरोंमें यहां २ मंदिर बहुत विशाल हैं। आठ करोड रुपयोंकी लागतके हैं। इन मंदिरोंकी शोभा देख कर चित्त आश्चर्यमय हो जाता है। आज कलके जमानेमें ऐसे ऐसे विशाल मंदिरोंका निर्माण होना बडा दुःसाध्य है। इन दो मंदिरोंमें १ मंदिर श्रीचंद्रप्रभ स्वामीका कहा जाता है। यह विशाल मंदिर ४ मंजलका है। पहिली मंजलमें श्रीचंद्रप्रभ भगवानजीकी मूर्ति विराजमान हैं जो कि ५ गज ऊंची खड्गासन ९ मन वजनकी सुवर्णकी बनी हुई हैं। और भी बहुतसी प्रतिमा विराजमान हैं। दूसरी मंजलमें महामनोहर सहस्रकूट नामका चैत्यालय है। जो कि १४ मन वजनका सुवर्णका बना हुआ है। इस सहस्रकूट चैत्यालयमें १००८ प्रतिमा सांचेमें ढली हुई महा मनोहर हैं। यहां २ देहरी दोनों तरफ हैं उनमें बहुतसी प्रतिमा विराजमान हैं और भी बहुतसी जगह प्रतिमा विराजमान हैं इस प्रकार इस दूसरी मंजलमें ४ जगह दर्शन हैं। तीसरी मंजलमें हजारों प्रतिमा धातु पाषाण और स्फटिककी हैं प्रायः

यहां सब स्थानोंपर स्फटिकमयी प्रतिमा विराजमान हैं। दर्शन करते समय ध्यान रखना चाहिये।

दूसरा मंदिर श्रीपार्श्वनाथ भगवानका है जो कि विशाल ४ परकोटोंसे शोभित गंभीर है जिसमें मूलनायक प्रतिमा पाषाणमयी ६ गज ऊंची खड्गासन श्रीपार्श्वनाथ भगवानकी विराजमान हैं और भी स्थान स्थानपर धातु पाषाण आदिकी बहुतसी प्रतिमा विराजमान हैं। यहांपर प्रायः सब मंदिरोंके अंदर अंधेरा है इसलिये जिस समय यात्रिगण दर्शन करनेके लिये जांय अवश्य दीया बत्ती साथमें लिए जांय।

इसी मंदिरके बगलमें १ मंदिर चौबीसीका है। इस मंदिरमें ३७ प्रतिमा रत्न सुवर्ण चांदी वैडूर्यमणि मूंगा नीलम पन्ना स्फटिक आदिकी विराजमान हैं जिस जगह ये प्रतिमा विराजमान हैं उसके ४ ताले लगते हैं और चारों तालोंकी तालियां ४ मनुष्योंके पास रहती हैं। जिस समय चारों तालीवाले इकट्ठे होते हैं उस समय यहांके दर्शन होते हैं। इस मंदिरके दर्शन करनेके लिये पहिले पंच लोग तथा भट्टारक लोगोंको सूचना देनी होती है तब दर्शन होते हैं। यहांपर जयधवल आदि सिद्धांतग्रन्थ विराजमान हैं। ये ताड पत्रपर लिखे हुए हैं। सबका भक्तिभावोंसे दर्शन करना चाहिए। यहांपर अच्छी तरह ४ दिन ठहर

कर दर्शन करना चाहिये। फिर फिरसे यहां आना नहीं होता है।

इस दक्षिण प्रांतमें तीनोंकाल पूजा बडे आनन्दसे होती है चौथे कालकासा दृश्य दीख पडता है। रात्रिमें दीपावली लगाई जाती है उस समय दर्शन करनेमें बडा आनन्द मिलता है। आरती भी होती है। बाजा बजता रहता है। यहांपर चारो वर्णोंमें जैन धर्मका प्रचार है इसलिये बहुतसे घर जैनियोंके हैं। जैन वैश्य लोगोंके भी करीब ४० के घर हैं। यहांसे कारकल क्षेत्र करीब १० मीलके हैं। जानेके लिये बैलगाडी मोटर गाडीकी सवारी मिलती है। मूल बद्रीसे यात्रियोंको कारकल जाना चाहिए।

श्रीकारकल अतिशय क्षेत्र।

यहांपर मंदिरमें ही धर्मशाला है। सब जगह ठहरनेका सुभीता है परंतु उतरना भट्टारकजीके मठमें ही ठीक है। यहांपर भी १ भट्टारकजी निवास करते हैं जो कि वुजर्ग हैं। सब मंदिरोंका काम इन्हींके हाथमें हैं। यहांपर सब मिलाकर १८ मंदिर हैं जो कि लाखों रुपयोंकी लागातके हैं। यहांपर सब जगह मिलाकर २७ जगह दर्शन हैं। इन मंदिरोंके ऊपर और नीचेके मंजलोंमें हजारों महा मनोहर प्रतिमा विराजमान हैं २ पहाड हैं। १ पहाड पूर्वकी ओर है और पूर्व दिशामें ही ७ मंदिर हैं। पहाडके ऊपर एक

विशाल कोट बना हुआ है बीचमें १८ गज खड्गासन प्रतिमा शांत श्रीगोम्मट स्वामी भद्रबाहु स्वामीकी विराजमान हैं। इस प्रतिबिंबका महा अभिषेक माघ शुक्ला ५ विक्रम संवत् १९७७ में बडे समारोहके साथ हुआ था। २० हजार मनुष्योंकी भीड हुई थी। यह महा अभिषेक इस प्रांत के पंचोंने किया था १५ दिन तक बडा ही आनंदवर्षण हुआ था। श्रीगोम्मट स्वामीजीकी प्रतिमा दूरसे दीखती है, यह पहाड़ १ फर्लांगकी चढाईका छोटासा है। ऊपर चढने केलिये सीढियां लगी हुई हैं। दरवाजे के दोनों बगलमें २ कोठरी हैं। बाहर १ मानस्तंभ है। इस पहाडसे नीचे उतरते समय रास्तापर पहाडके पास १ मंदिर है, १ भट्टारक जीके मठमें है १ मंदिर मठसे पूर्व दिशाकी ओर तालाबके पास है।

इस पहाडके सामने ही दूसरा पहाड है यह भी छोटा सा है। इसके ऊपरका मंदिर बडा मजबूत और कीमती है. इसके चारो ओर १२ प्रतिमा प्रत्येक सात २ गजकी खड्गासन श्यामवर्णा विराजमान हैं जो कि बडी ही मनोहर और शांति प्रदान करनेवाली हैं। और भी सैकडों प्रतिमा विराजमान हैं। यह मंदिर एक करोड रुपयोंकी लागतका है। यहांके दर्शन कर लेनेके बाद पश्चिमकी ओर जानेपर रास्तामें १ चन्द्रप्रभु भगवानका मंदिर पडता है, इस मंदिरमें १२ प्रतिमा चतुर्मुख खड्गासन बडी मनोहर विराज-

मान हैं। ऊपरके मंजलमें भी दर्शन है सबका अच्छीतरह दर्शन करना चाहिए। अब यहांसे पश्चिम दिशाकी ओर जाना चाहिये साथमें जानकार एक आदमी भी ले लेना चाहिये जिससे कोई यात्रा न रह जाय।

पश्चिम दिशाकी ओर १ मीलके घेरेमें ११ मंदिर बहुत बडे २ हैं। इसके अन्दर सैकडों प्रतिमा विराजमान हैं। ३ मानस्तंभ हैं। नीचे ऊपर बडी सावधानीसे पूछ २ कर सब जगहके दर्शन कर लेने चाहियें। फिर अपने मुकाम पर आ जाना चाहिये।

मंदिरसे आधी मीलकी दूरी पर कारकल शहर है। वहां सब प्रकारका सामान मिलता है। जानेके लिये मोटर और बैलगाडीकी सवारी मिलती है। यदि कुछ लेनेकी आवश्यकता हो तो वहांसे ले आना चाहिये। कारकलमें जैनी श्रावकोंके घर हैं। इस क्षेत्रपर पूजा आदिका विधान भी मूलबद्रीके समान होता है। यहांसे ३४ मीलके फासलेपर वारंग ग्राम नामका अतिशय क्षेत्र है। बैलगाडीकी सवारीसे जाना होता है। कारकलकी यात्राकर यात्रियोंको वारंग ग्राम जाना चाहिये।

वारंग ग्राम

यह १ छोटासा ग्राम है। यहां १ मंदिर और एक मानस्तंभ है। मंदिर बहुत बढिया है। बहुतसी प्रतिमा

विराजमान हैं जो कि महामनोहर हैं शांत । १ प्रतिमा स्फटिकमयी महा मनोहर विराजमान है यहां एक बडा भारी तालाव है तालावमें किश्तियां चलती हैं ।

तालावके वीचमें १ बडा भारी मंदिर है। किश्तियोंमें बैठ कर इस मंदिरमें आना चाहिये, यहां मंदिरके वीचमें चतुर्मुख १२ प्रतिमा विराजमान हैं और भी अनेक प्रतिमा विराजमान हैं सबका अच्छीतरह दर्शन कर लेना चाहिये । यह स्थान १ जंगलमें पहाडके ऊपर है, लौटकर कारकल ही आ जाना चाहिये। वारंगसे १ मार्ग सीमोगाह जंकशन-को भी जाता है।

विशेष--इस देशकी कनाडी आदि भाषा हैं, लिपि भी यहांकी भिन्न है। पढे लिखे यात्रियोंको इस लिपिका ज्ञान अवश्य कर लेना चाहिये, बहुतसी सहायता मिलती है और एक भाषाकी लिपिका ज्ञान भी होता है। कारकलसे ८ मीलकी दूरीपर ' मदरापटन ' स्थान है। वहांपर जाना चाहिये, जानेके लिये बैलगाडी मिलती है।

मदरापटन

यहां १ बडा भारी मंदिर है और हजारों प्रतिमा हैं। तलाशकर अच्छी तरह दर्शन करना चाहिये और भी यहां अनेक रचना दर्शनीय हैं। सब देख लेना चाहिये. यहांसे लौटकर कारकल आना चाहिये, कारकलसे मूलबद्री लौट

जाना चाहिये। मूलबद्रीसे २२ मीलके फासलेपर मंगलूर शहर है। वहां जाना चाहिये, जानेके लिये बैलगाडी और मोटरकी सवारी मिलती है।

विशेष—ऊपर हम बता चुके हैं कि जैनबद्रीसे मूलबद्री को रेलगाडी और बैलगाडी दोनों रास्तासे आया जाया जाता है परंतु बैलगाडीसे जानेमें लाभ है। यदि १ तरफ रेलगाडीसे चला भी जाय तो दूसरी ओरसे बैल गाडीसे ही जाना ठीक है। मूलबद्रीसे मंगलूर शहर मुरजी रेलवे लाइनसे भी आना होता है, यदि कोई भाई रेलवेसे आना चाहे तो उसे वैनूरकी यात्राकर मूलबद्री आना चाहिये और वहांसे रेलमें मंगलूर आना चाहिये।

मंगलूर

यह शहर बडा ही सुन्दर समुद्रके किनारे है। यहांसे आगे रेल नहीं जाती। बम्बई वैंगलूर रामेश्वर लंका कलकत्ता विलायत आदिको यहांसे जहाज जाते हैं। यहां बडी भारी नदी समुद्र और चारों ओर बाजार देखने लायक है। स्टेशनसे १ मीलके फासलेपर कषायी गलीमें १ जैन मंदिर (जैन बस्ती) और धर्मशाला है। यहांपर १ जैन बोर्डिंग हाउस भी है और यात्रियोंके ठहरनेके लिये वहां भी स्थान हैं। यात्रियोंकी इच्छा वे जहां चाहें ठहर सकते हैं। यह शहर देख लेनेके बाद मंगलूर आना चाहिये। मंग-

लूरसे बंगलूरका रेल भाडा ७) लगता है। बीचमें बहुतसी स्टेशन और ग्राम पडते हैं। बहुतसे ग्रामोंमें जैन मंदिर हैं। और जैनी श्रावकोंके घर हैं। पोतनुर और जोलारपेठ नामके दो बडे २ शहर पडते हैं। यहांसे चारों ओर रेलवे लाइन गई है। यहां १ बडा भारी जैन मंदिर है और श्रावकोंके बहुतसे घर हैं। यहां चारों वर्णोंमें जैन धर्मका प्रचार है तथा जैन वैश्य लोगोंमें पंचम चतुर्थ गडवाड गोट मोट आदि और भी शाखाओंका प्रचार है और इनके घर यहां अधिक हैं।

मंगलूरसे सिर्फ एक रेलवे लाइन जाती है, रास्तेमें छोटे २ कई जंक्शन पड़ते हैं। छोटी लाइन इस प्रान्तमें दो दो चार २ ग्राम तक जाती है। १ बडा त्रीचनापली नामका स्टेशन पडता है वहांसे दो लाइन जाती हैं। एक त्रीपतूर जंकशन पडता है वहांसे मद्रास वेल्लूर और मंगलूर रेलवे जाती हैं। पोतनुर जंकशनसे मद्रास मुम्बई मंगलूर जोलारपेठ, इसप्रकार ४ जगह ४ लाइन जाती है जोलारपेठसे १ मद्रास १ मनमाड १ बंगलूर आरसीकेरी तक जाती है। यात्रियोंको ७) देकर मंगलूरसे बंगलूर जाना चाहिये और बंगलूर शहरसे महेश्वर शहर चला जाना चाहिये। यहांसे महेश्वर शहरका १।) किराया लगता है। यहां देशी तथा मारवाडी श्रावकोंके बहुतसे घर हैं।

महशूर

स्टेशनसे १ मीलके फासलेपर जैन धर्मशाला है जाने केलिये तांगा बैलगाडी आदिकी सवारी मिलती हैं। धर्मशालामें १ बोर्डिंग हाउस है, कुआ टट्टी आदि सब बातोंका यहां आराम है। यहां १ मंदिर है, महा मनोहर प्रतिमा विराजमान हैं। महेश्वर शहर राजधानी है, यहांपर राजाका महल बना हुआ है उस महलके पास खास राजाका बनाया हुआ १ उत्तम मंदिर है। यहां सेठ वर्धमान राजैय्या अनन्त राजैय्या और आदिराजैय्या रहते हैं। बडे धर्मात्मा और सज्जन व्यक्ति हैं। तीनों भाइयोंके घर पर एक एक जुदा चैत्यालय है सबका दर्शन करना चाहिये। यहां जो कुछ पूछना हो उक्त सेठ महाशयोंसे पूछ कर नोट कर लेना चाहिये। महशूर शहर अच्छा है देखना हो तो देख लेना चाहिये यहां का भाजी बाजार, राजाका महल बडा बाजार राजाका बाग जो कि शहरसे १॥ मीलके फासलेपर है और महेश्वरी देवीका मंदिर आदि बहुतसी चीजें हैं महशूरसे श्रीगोम्मटपुरा अतिशय क्षेत्र पास है जानेके लिये तांगा बैलगाडीकी सवारी मिलती है। हम तांगासे ही महशूर गये थे परंतु पीछे सुना गया कि कोई रेलवे स्टेशन भी गोम्मटपुराके पास है और वहांसे जाया जाता है सो पूछ लेना चाहिये। महशूर खास महशूर महाराजाका राज्य है। पहिले यहांके महाराजके कुटुंबीजन जैनी थे।

इसलिये राजमहलके पास राजाकी ओरसे मंदिर बनाया हुआ है परंतु वर्तमान महाराज जैन धर्म नहीं पालते। यहां जैनियोंके घर बहुत हैं। यहां २-३ त्यागी भी रहते हैं और प्रान्तोंकी अपेक्षा इस प्रांतमें त्यागियोंकी संख्या अच्छी है। सब लोग भगुवा वस्त्र धारण करते हैं।

श्रीगोम्मटापुरा अतिशय क्षेत्र

यह स्थान महशूरसे पश्चिमकी ओर १० मीलकी दूरी पर है। पक्की सड़कसे जानेपर जंगलमें सडकसे उत्तरकी ओर १ मीलके फासलेपर १ गांव है और वहांसे १ मील श्रीगोम्मटका पहाड पडता है। यद्यपि सडकसे सामने ही दीख पडता है परंतु २ मीलके फासलेपर है। तांगे गांव तक आते हैं। गांवसे आगे पगडंडीका रास्ता है इसलिये पैदल जाना होता है। इस पहाडके ऊपर १ विशाल मंदिर है। मंदिरमें १ प्रतिमा श्रीगोम्मट स्वामीकी विराजमान है, १४ गज ऊंची खड्गासन श्याम वर्ण महा मनोहर हैं और भी आस पासमें बहुतसी प्रतिमा विराजमान हैं जो कि प्राचीन और मनोहर हैं।

सुना जाता है कि इस पहाड पर किसी समय बिजली पडी थी। उस बिजलीसे पहाडके दो खंड हो गये थे परंतु प्रतिमाजी ज्यों की त्यों अखंड रही आई थी उनके किसी भी अवयवका आघात नहीं हुआ था। इस पहाडके दो

भाग हैं। १ भाग मंदिरके पीछेकी ओर है और १ भाग बल्ली ओर है। पहाडपर चढनेका रास्ता बल्ली ओरके भागसे है परन्तु ठेठ मंदिर पर चढकर नहीं जा सकते। मंदिर से डेढ गजके फासला पर जाया जाता है। बीचमें काठका तख्ता था और किसी पदार्थके सहारे मंदिरमें जाना होता है। यह रास्ता अभीतक इसी हालतमें पडा है किसीने भी संभाला नहीं, जैनी भाइयोंको इस ओर ध्यान देना चाहिए यह एक बडा अतिशय क्षेत्र है। मार्ग ठीक न होनेसे यात्री कम आते हैं। किसी उदार जैनी भाईको थोडासा खर्चकर यहांपर मंदिरमें जानेका रास्ता साफ करा देना चाहिये। ऐसे प्राचीन क्षेत्रोंकी मरम्मतसे पुण्यका बडा भारी लाभ होता है। पहाडके इस ओरके भागसे भगवानके दर्शन अच्छी तरहसे हो जाते हैं।

विशेष—बहुतसे भाई तीर्थ यात्राको निकलते हैं और वे नामी २ तीर्थोंकी यात्राकर अपनेको धन्य मानकर लौट जाते हैं। वे यह समझ कि जब नामी तीर्थोंके दर्शन हो गये तब छोटे तीर्थोंमें जानेसे क्या लाभ है, छोटे तीर्थोंकी यात्रा, न कुछ मान वे छोड जाते हैं। परन्तु उनकी यह बडी भारी भूल है। छोटे २ तीर्थोंपर भी बहुतसी ऐसी प्राचीन चीजें दीख पडती हैं जिनसे समस्त संसारमें जैन धर्मका गौरव विस्तृत हो जाता है और वे बडे २ तीर्थोंमें देखने में नहीं आतीं। इस पुस्तकके आधारसे यह मालूम

होगा कि यह छोटे २ तीर्थोंमें कितनी २ कीमती चीजोंका उल्लेख किया गया है। कैसे २ धर्मात्माओंने अपना विपुल धन खर्चकर विशाल मंदिर और प्रतिमाओंका निर्माण कराया था। अभीतक बीसों तीर्थ स्थान ऐसे हैं कि जो नामसे तो छोटे और अप्रसिद्ध है परंतु उनके मंदिर और प्रतिमा बहुत लागात की हैं। जिनके देखनेसे बड़ा भारी जैन धर्मका गौरव प्रगट होता है। इसलिये सब महानुभावोंसे यह हमारी अभ्यर्थना है कि वे जिस समय तीर्थ यात्राको निकलें छोटे बडे सभी तीर्थोंको तलाशकर उनकी अवश्य वंदना करें और देखें कि उनके बुजर्ग पक्के जैनधर्म के भक्त भाइयोंने कष्टसे संचित अपना कितना विपुल धन धर्मायतनोंके लिये व्यय किया है। तीर्थ जाते समय यदि हमारे कुछ अधिक दिन खर्च हो जांय वा कुछ अधिक धन खर्च हो जाय तो उसका लोभ न करना चाहिये। बडी स्थिरता और शांतिसे तीर्थ यात्रा करनी चाहिए और हर समय यह ध्यान रखना चाहिये कि जब हमारे बुजर्गोंने लाखों रुपया खर्चकर जैन धर्मकी प्रभावना केलिये ये आयतन खडे किये हैं तब क्या हमें उन आयतनोंके दर्शन भी नहीं करने चाहिये। वर्तमानमें जिस धर्मकी जितनीभी प्राचीन चीजें मिलेंगी उसी धर्मका संसारमें विशेष गौरव माना जायगा। दिगम्बर जैन धर्मकी बहुतसी प्राचीन चीजें वर्तमानमें उपलब्ध हैं। इसलिये इनका अवश्य अवलोकन

करना चाहिये और धनपात्र महानुभावोंको उनको संभा-लनेके लिये योजना कर देनी चाहिये । ऐसे ही कार्योंके करनेसे मनुष्य जन्म और प्राप्तधन सफल हो सकता है ।

गोमटपुराकी यात्राकर यात्रियोंको महशूर लोट आना चाहिये और वहांसे रेलभाडा ५॥) देकर हुवली जंकशन चला जाना चाहिये । रास्तेमें मंदगिरि क्षेत्र पडता है । आरसीकेरीपर गाडी बदली जाती है, यह ध्यान रखना चाहिये ।

विशेष— जिन भाइयोंको महशूरसे जैनबद्री जाना हो वे ॥।) देकर मंदगिरिका टिकट ले फिर जैनबद्रीकी यात्रा कर लोटकर आरसी केरी होकर हुवली चले जांये । जैनबद्री मंदगिरि और आरसी केरीका हाल पीछे लिख दिया गया है । महशूरसे १ रेलवे लाइन बेंगलूर और १ आरसीकेरी तक जाती है ।

हुवली जंकशन ।

स्टेशनसे २ मीलके फासलेपर मारवाडी बाजारमें जैन धर्मशाला है । वहां जाकर उतर जाना चाहिये । जाने केलिये तांगा बैलगाडीकी सवारी मिलती है । भाडा =) आना फी सवारी लगता है यहां । धर्मशालामें ३ मंदिर हैं जो कि बडे मनोहर हैं । उल्लेख करनेयोग्य २ प्रतिमा बडी प्राचीन और १ चांदीकी चौवीसी महाराजकी बडी मनोहर विरा-

जमान हैं और भी बहुतसी प्रतिमा है । इस धर्मशालाके पास १ नया मंदिर और है। थोडी दूरपर १ श्वेतांबरी मंदिर है। जिसमें दिगम्बर प्रतिमा विराजमान हैं। सबका दर्शन करना चाहिये। यहांपर विशेष देखने योग्य कोई चीज नहीं एक कपडेका पेंच और बाजार है देखना हो तो देख लेना चाहिये। यहांपर जैनी भाइयोंके घर ४५ के अंदाज होंगे। यहांपर एक वृद्ध त्यागीजी रहते हैं।

यहांसे ५-६ रेलवे लाइन जाती हैं। १ आरसीकेरी १ मीरज जंकशन होकर कोल्हापुर १ शोलापुर १ नौनदा १ बडग आदि होती हुई गुंटकल जंकशन जाती है। यहां से आरटाल पार्श्वनाथ अतिशय क्षेत्र २४ मीलके फासले पर है । जानेके लिये बैलगाडीकी सवारी मिलती हैं। यात्रियोंको हुबलीसे आरटाल अतिशय क्षेत्र चला जाना चाहिये।

श्रीआरटाल अतिशय क्षेत्र

यह अतिशय क्षेत्र जिला धारवाडके बंकापुर तहसील- में धुडसीके पास है। पक्की सडका रास्ता है, यहां हुबली और मद्रास दोनों जगहोंसे आना होता है एवं हुबलीसे २४ मील और मद्रासमे २८ मील पडता है। बस्तीके भीतर १ बड़ा भारी प्राचीन मंदिर है। मूलनायक प्रतिमा श्रीपार्श्वनाथ भगवानकी विराजमान हैं जो कि प्राचीन मनो-

हर और अतिशयवान हैं, और भी बहुतसी मनोहर प्रतिमा जहां तहां विराजमान हैं। थोडेसे घर यहां जैनी भाइयोंके हैं। यहांके दर्शनकर फिर हुबली लौट जाना चाहिये और वहांसे बेलगांव स्टेशन चला जाना चाहिये। आरटालसे मद्रास स्टेशन भी पास है परन्तु हुबली जानेमें सुभीता और सामीप्य है।

श्रीबेलग्राम अतिशय क्षेत्र

यहांका स्टेशन बहुत बडा देखने योग्य है। यहांसे मीरज कोल्हापुर पूनाको रेल जाती है। यह शहर स्टेशनसे १ मील है। यहांपर दिगम्बर जैनी भाइयोंके घर २०० के करीब हैं। यहांपर बडे २ प्राचीन ४ मंदिर हैं। सब मंदिरोंमें तरह तरहकी रंग बिरंगी बडी मनोहर शांत प्रतिमा विराजमान हैं। शहरसे पूर्व दिशाकी ओर १ बडा भारी किला है। यह किला जैन मंदिरोंको तुडवा कर उनके पत्थरोंसे बनवाया गया है। किलेके दीवार खम्भा आदिपर जगह जगह जिन प्रतिमा और प्रातिहार्य उकेरे हुये हैं। जहां पर वर्तमानमें किला है, सुना जाता है, उस स्थानपर १ हजार बडे कीमती जैन मंदिर थे परन्तु दुष्ट बादशाहने सबको तुडवा डाला था केवल ३ मंदिर नमूनामात्रके लिये रह गये थे। जो मंदिर वर्तमानमें मोजूद हैं वे भी बडे २ कीमती हैं जिन महापुरुषोंने इन मंदिरोंका निर्माण कराया होगा

उनका बहुतसा धन व्यय हुआ होगा । बादशाहकी दुष्टता सुन बडा ही यहां आकर दुःख होता है ।

यहांपर किलेमें बहुतसी रचना देखने लायक है शहर बाजार पुल स्टेशन आदि कई चीजें यहां देखने योग्य हैं जो देख लेना चाहिये । सब देख भालकर यहांसे हुबली ही लौट जाना चाहिये ।

वेल ग्रामसे ३ रेलवे लाइन जाती हैं । यदि किसी भाईको कहीं जाना हो तो तलाश कर लेवे नहीं तो हुबली आ जाना चाहिये । हुबलीसे गदगका टिकट लेकर शोलापुर लाईनसे गदग आ जाना चाहिये । गदगसे १॥ मीलकी दूरीपर बादामी अतिशय क्षेत्र है वहां चला जाना चाहिये ।

श्रीबादामी अतिशयक्षेत्र ।

बादामी बस्ती मामूली ठीक है । यहांसे २ मीलकी दूरीपर १ पूर्व दिशामें और १ दक्षिण दिशामें इस प्रकार २ पहाडी किले हैं १ किलेमें हिंदुलोगोंकी ३ और जैनियोंकी १ गुफा है और उनमें मंदिर हैं । मंदिर और गुफाओंमें जानेके लिये सीढियां लगी हुई हैं । १ गुफामें हिंदु लोगोंकी शिव नागजी देवी नोग्रहोंकी मूर्तियां है जो बडी कीमती और कामदार हैं ।

जैन गुफा बडी भारी विस्तृत हैं उसके भीतर चार दालान स्तंभ गुमटी और मंदिर है । १ दालानमें प्रतिमा

३ फुट ऊंची खड्गासन १ प्रतिमा विराजमान हैं। २ रेमें ८ प्रतिमा बडी २ और २२ छोटी छोटी इस तरह ३० प्रतिमा विराजमान हैं। ३ रेमें श्रीगोम्मटस्वामी और श्रीपार्श्वनाथ स्वामीकी २ प्रतिमा ५-६ गजकी खड्गासन विराजमान हैं और १ चौवीस महाराजकी मनोहर प्रतिमा विराजमान हैं। चोथे हातामें सैकडों प्रतिमा विराजमान हैं। १ मान-स्तंभ भी है उसपर भी सैकडों प्रतिमा हैं। यहां पर गुफा और मंदिर प्रतिमा सभी प्राचीन अद्भुत और मनोहर हैं। पर्वा नदीके किनारे भी मंदिर हैं सबका दर्शन कर लौटकर गदग स्टेशन आ जाना चाहिये। गदग एक अच्छा शहर है यदि देखनेकी इच्छा हो तो वह देख लेना चाहिये नहीं तो वहांसे सीधा बीजापुर स्टेशनका टिकट लेलेना चाहिए।

श्रीबीजापुर अतिशय क्षेत्र शेशहः फणा पार्श्वनाथ

स्टेशनसे १ मीलकी दूरीपर शहर है। शहर बहुत अच्छा और दर्शनीय है। यहांपर २ बडे बडे मंदिर और १ धर्मशाला, दिगंबर जैनी भाइयोंके २८ घर हैं। यहांसे १॥ मीलकी दूरीपर शेशहः फणा पार्श्वनाथ अतिशय क्षेत्र है वहां जाना चाहिये। साथमें १ आदमी अवश्य लेलेना चा-हिये। यहां जमीनके भीतर १ मंदिर है। यह मंदिर प्राचीन चतुर्थ कालका है। एक श्रावकको स्वप्न हुआ उसके

स्वप्नके अनुसार खुदवाने पर यहां यह मंदिर निकला था, इसमें १०८ फणोंकी धारक श्रीपार्श्वनाथ भगवानकी प्रतिमा विराजमान हैं जो कि महा मनोहर अतिशयवान है। इस प्रतिमाके दर्शनमात्रसे चित्तको बडी शांति मिलती है। यह मंदिर छोटासा है परंतु करोडों रुपयोंकी लागातका है। इतना कीमती सुन्दर मंदिर शायद ही किसी क्षेत्रपर होगा। यहांकी यात्राकर बीजापुर लौट जाना चाहिये। बीजापुरसे १७ मीलकी दूरीपर श्रीबाबानंगर अतिशय क्षेत्र है। बैल गाडीसे जाना पडता है। यात्रियोंको बीजापुरसे श्रीबाबा-नंगर चला जाना चाहिये।

श्रीबाबानंगर अतिशय क्षेत्र

यह बस्ती अच्छी है। यहां प्राचीन मंदिर बहुत हैं। प्रतिमा भी बहुत विराजमान हैं। १ हरितवर्ण पाषाणकी १॥ हाथ ऊंची पद्मासन प्रतिमा श्रीपार्श्वनाथ भगवानकी बडी ही मनोहर अतिशय संयुक्त विराजमान है। इस प्रतिमाके दर्शन करनेसे शरीर आनन्दसे पुलकित हो जाता है।

यहांका अतिशय

फोउद्दीन नामक किसी बादशाहने बाबानंगरमें आकर बहुतसी प्रतिमा और मंदिरोंको तुडवा दिया था। उपर्युक्त हरित वर्णकी श्रीपार्श्वनाथकी प्रतिमाको सुन्दर खिलौना जान बादशाहकी लडकीने अपने खेलनेके वास्ते

रख लिया। बादशाहको भी इस प्रतिमाकी कुछ अलौकिक विचित्रता देख इस प्रतिमाजीपर प्रेम हो गया। उसने न तुडवा कर एक कमरेमें उसे बंद कराकर रखवा दिया। कदाचित उस बादशाहकी स्त्रीके पेटमें भयंकर दर्द उठ खडा हुआ। तीन दिनतक जो भी इलाज होसका कराया परन्तु पीडा जरा भी शांत न हुई। बादशाहको बडी चिंता हुई, उसी चिंतामें उसे यह स्वप्न हुआ कि कोठेके अन्दर जो जैन प्रतिमा विराजमान है उसके चरण प्रक्षालके जलके पीनेसे पेटका दर्द शांत हो सकता है। बादशाहने वैसा ही किया और देखते देखते दर्द शांत हो गया। इस चमत्कारसे बादशाहपर बडा भारी प्रभाव पडा, उसने प्रतिमा और मंदिरोंके तुडवानेका अनर्थ छोड दिया. उसी समय उसने कोठेमें बन्द श्रीपार्श्वनाथ भगवानकी प्रतिमाजीके लिये मंदिर तयार कराया। प्रतिमाजीकी मंदिरमें जाकर विराजमान कर दी। खर्चके लिये प्रबन्ध कर दिया और वह बना बनाया मंदिर वहांके दि० जैनियोंको सुपुर्द कर दिया। आज तक भी उपर्युक्त प्रतिमाजीका वही अतिशय इस प्रांतमें प्रसिद्ध है। दूर दूरके रोगी यहां आते हैं और गन्धोदकके महात्म्यसे उनका रोग नष्ट हो जाता है। इस पवित्र क्षेत्रकी वंदनाकर बीजापुर लौट जाना चाहिए।

श्रीशोलापुर अतिशय क्षेत्र

स्टेशनसे करीब ३ मीलके फासलेपर शहर है, जानेके लिये तांगा आदिकी सवारी मिलती है। शहरमें ५–६ मंदिर हैं। सभी मंदिर विशाल और मनोहर हैं। इनके अंदर बडी २ मनोहर प्रतिमा विराजमान हैं। १ मंदिरमें १ भौंरा है। घर घर ६ चैत्यालय हैं। सबका अच्छी तरह दर्शन करना चाहिये। यहांपर शहर बाजार कपडेका मिल आदि चीजें देखने लायक हैं। शोलापुरमें दि० जैनी भाइयोंके घर बहुत हैं। यह एक धनसंपन्न नगरी है। यहां १ कन्याशाला १ पाठशाला और १ सभा स्थापित है। यहांके दर्शनकर दुधनी स्टेशन जाना चाहिये। दुधनीसे ५–६ मीलके फासलेपर श्रीआतनूर नामका श्रीचंद्रप्रभ भगवानका अतिशय क्षेत्र है वहां जाना चाहिये।

श्रीआतनूर अतिशय क्षेत्र

यह गांव वर्तमानमें छोटा है। परंतु पहिले यहां एक बडा भारी शहर था क्योंकि इस गांवके पास बहुतसे प्राचीन जैन मंदिर और उनमें प्राचीन प्रतिमाजी विराजमान हैं। जमीन खोदनेपर भी जहां तहां हजारों प्रतिमा निकलतीं हैं, सेठ माणकचन्द अमीचन्दने जमीन खुदवा कर १ मंदिर निकलवाया है। उस मंदिरमें श्यामवर्ण २ हाथ ऊंची महामनोहर सातिशय एक प्रतिमा श्रीचंद्रप्रभ भगवानकी विराज-

मान है। २ प्रतिमा श्रीचौवीसी महाराजकी और ३ प्रतिमा १॥ ऊंची अन्य भी विराजमान हैं। सबका दर्शनकर दुधनी स्टेशन लौट आना चाहिये। दुधनीसे १८ मीलके फासले-पर आष्टे श्रीविघ्नेश्वर पार्श्वनाथ अतिशय क्षेत्र है वहांपर चला जाना चाहिये। जानेके लिये बैलगाडियां मिलती हैं।

श्रीआष्टे अतिशय क्षेत्र श्रीविघ्नेश्वर पार्श्वनाथजी

दुधनी स्टेशनसे आलन्द गांव २ मीलके फासलेपर है आलंदसे श्रीआष्टे क्षेत्र १६ मील है। आलन्द मदकनी नीर-गुडी आलुर अचलुप होकर आष्टे जाना चाहिये। यह एक अच्छी वस्ती है। कुछ घर दि० जैनी भाइयोंके हैं। यहां १ बडा भारी प्राचीन मंदिर है। मूलनायक प्रतिमा श्रीपा-र्श्वनाथ भगवानकी सातिशय विराजमान हैं। यह क्षेत्र शोलापुर जिलेमें बडा महनीय और प्रसिद्ध है। ७००) रुपया सालाना यहां मंदिरमें आता है। बहुतसे यात्री बोल कबूल चढाने और यात्रा करनेको यहां आते जाते रहते हैं। दुधनीसे आष्टे तकका पकी सडकका रास्ता है। यहांसे लौटकर दुधनी जाना चाहिये और सांवलगांवका टिकट लेकर वहां चला जाना चाहिये। सांवलगांवसे २ मील श्रीहोंणसलगी नामका अतिशय क्षेत्र है वहां चला जाना चाहिये। जानेके लिये तांगा और बैल गाडीकी सवारियां मिलती हैं।

श्रीहोंणसलगी अतिशय क्षेत्र

यह गांव छोटासा है। ७ घर दि० जैनी भाइयोंके हैं. १ प्राचीन पार्श्वनाथ पद्मावतीका मंदिर है। यह मंदिर यहां प्रसिद्ध है। मंदिरमें १२ प्रतिमाजी महामनोहर प्राचीन विराजमान हैं। १२ यक्ष यक्षिणियोंकी मूर्तियां हैं। सब ५-६-७ फुट ऊंची बडी बडी हैं। १ प्रतिमा पद्मावती-देवीकी बडी नामी है। हजारों लोग इस क्षेत्रके दर्शन पूजनके लिये आते जाते रहते हैं। यहांकी यात्राकर शोलापुर लौट जाना चाहिये।

शोलापुर जंकशन है यहांसे १ रेल वाडी १ बारसी रोड और १ गदग जाती है। शोलापुरसे बारसी रोडका टिकट लेना चाहिये। रेल भाडा ।।।=) लगता है।

बारसीरोड (कुर्दवाडी) जंकशन

यह १ बडा जंकशन है। यहांसे ५ रेलवे लाइन जाती हैं। १ धौंड पूना १ शोलापुर १ मनमाड १ बारसी टाउन लातुर तक और १ पंढरपुर जाती है। यहां हिंदु लोगोंका माननीय तीर्थ पंढरपुर पास होनेसे चारों ओरके हिंदुलोग यात्री उतरते हैं इस लिये बारहो मास बारसी रोड स्टेशन पर भीड बनी रहती है। बारसी रोडमें खाने पीनेका सब सामान मिलता है। यह बस्ती तरकीपर है। दिनों दिन बढती चली जाती है। बस्ती स्टेशनसे एकदम सटी हुई है। यहां

श्रीपार्श्वनाथ स्वामीका १ मंदिर और २ चैत्यालय हैं। यहांसे दर्शनकर छोटी लाइनसे बारसीटाउन स्टेशन जाना चाहिये। रेल भाड़ा ।≈)।। लगता है। बारसी रोडमें जैनी भाइयोंके ७ घर हैं।

बारसीटाउन स्टेशन

स्टेशनसे १ मीलके फासले पर जैन धर्मशाला और पार्श्वनाथ भगवानका मंदिर है। मंदिर बहुत अच्छा है। बहुतसी प्रतिमा महा मनोहर विराजमान हैं। यहांपर सब खाने पीनेकी चीज मिलती है। यहांका बाजार दर्शनीय है। जैनी भाइयोंके अच्छे घर हैं। यहांसे २२ मीलके फासलेपर श्रीकुंथलगिरि सिद्धक्षेत्र है। कच्ची सडक है बैल गाडीसे जाना चाहिये। ५-६ दिनके लिये खानेका सामान अवश्य ले लेना चाहिये। कुंथलगिरि जानेका रास्ता जरा ठीक नहीं, भय रहता है। इसलिये अधिक रात्रिमें नहीं चलना चाहिये। रास्तेमें १ भौम ग्राम आता है।

भौम ग्राम

यह एक प्राचीन और बड़ी वस्ती है। वस्तीके बीचसे १ नदी निकल गई है इसलिये इसके दो भाग हो गये हैं. आधी वस्तीमें १ जैन मंदिर इधर है और आधी वस्तीमें १ जैन मंदिर उधर है। यहां उतरकर दर्शन कर लेना चाहिये फिर कुंथलगिरि जाना चाहिये।

श्रीकुंथलगिरि सिद्धक्षेत्र

यहां १ धर्मशाला और १ छात्रावास है। १० मंदिर हैं। मंदिर एकसे एक बढ़िया और मजबूत हैं, इनके अंदर बड़ी ही मनोहर शांत प्रतिमा विराजमान हैं। १ मंदिरमें १ भौंरा है। भौंरेके भीतर दर्शन हैं, एक मंदिर ऊपर है। एक मंदिर मूलनायकका पहाड़पर है। यह पहाड़ छोटासा १ फर्लांगकी चढाईका है। चढनेके लिये सीढियां लगी हुई हैं। ३ मंदिर हैं पहाड़के चारो ओर कोट है। मूलनायक मंदिरमें श्रीदेशभूषण कुलभूषण मुनियोंकी प्राचीन महा मनोहर चरणपादुका विराजमान हैं। ये दोनों मुनिवर इसी पवित्र स्थानसे मोक्ष पधारे हैं, यहांका हर एक दृश्य मनोहर है। इस मूलनायक मंदिरमें ४ जगह दर्शन हैं। यहां पूजा प्रक्षाल जैनबद्री मूलबद्रीके अनुसार होती है, यहांका दर्शनकर बारसीटाउन लौट जाना चाहिये और वहां ।–) का एडसी स्टेशनका टिकट लेना चाहिए। येडसी स्टेशनसे १४ मील उस्मानाबाद है। जानेके लिये मोटर और तांगे मिलते हैं। फी सवारी १) लगता है, उस्मानाबादका दूसरा नाम धाराशिव भी है।

श्रीधाराशिव (उस्मानाबाद) अतिशय क्षेत्र गुफाका दर्शन।

यह गांव राजाका है, सुन्दर है। २० घर जैनी भा-

इयोंके हैं। १ दिगम्बर जैन मंदिर है यात्रियोंको यहां उतरना चाहिये। २ चैत्यालय हैं। यहां ४ प्रतिमाजी बडी मनोहर विराजमान हैं और भी बहुतसी प्रतिमा हैं जो प्राचीन मनोहर हैं। यहां ७ घरोंमें ७ चैत्यालय और हैं, सबका दर्शन करना चाहिये। यहांसे गुफा करीब २ मीलकी दूरीपर है। ताली कुन्जी और पालीको संग लेकर वहां जाना चाहिये। गुफाका १ मीलका रास्ता सीधा है और १ मीलका चढाव उतारका है। पहाडका पत्थर काटकर एरोला सरीखी ४ विशाल गुफा यहांपर हैं। ये गुफा बहुत प्राचीन लाखों रुपयोंकी लागतकी हैं। यहांपर २ प्रतिमा श्रीपार्श्वनाथ भगवानकी १ प्रतिमा महावीर स्वामीकी और १ प्रतिमा आदिनाथ भगवानकी श्यामवर्ण अतिशय पुराने ढंगकी सातिशय महा मनोहर विराजमान हैं। १ कुण्ड है। जिसमें सदा पानी भरा रहता है। सुनते हैं यहांपर १ बडा भारी सर्प रहता है वह प्रतिमाओंकी रक्षा करता रहता है, यदि जैनीके सिवाय कोई प्रतिमाजीसे स्पर्श करता है तो उसे वह कष्ट पहुंचाता है, दर्शन और पूजनके समय सर्प वहां नहीं रहता। यह क्षेत्र अपूर्व है परन्तु जैनी भाई इधर नहीं आते इसलिये यह बेमरम्मती हालतमें पडा हुआ है। जैनियोंको यहां अवश्य आना चाहिए।

धाराशिवकी यात्राकर लौटकर येडसी स्टेशन आना चाहिये और यहांसे ' तेर ' स्टेशनका टिकट लेलेना चा-

हिये। येडीसीसे यह दूसरा ही स्टेशन है। उस्मानाबादसे बैलगाडीकी रास्ता भी तेरा स्टेशन आया जाता है। १० मीलकी दूरीपर है और बैलगाडीमें ४ सवारी बैठती हैं किराया २) लगता है।

तेर स्टेशन।

तेर एक छोटा गांव है, स्टेशनसे २ मीलकी दूरीपर है। सवारी मिलनेका कोई साधन नहीं। गांवसे पश्चिम दिशाकी ओर १ मील नागथाना है। पूछकर वहां जाना चाहिये। गांवमें १ घर जैनियोंका है। नागथाना अतिशय क्षेत्र यद्यपि तेरसे कुछ दूर है परन्तु तेरमें ही शामिल होनेसे उसका नाम तेर अतिशय क्षेत्र मशहूर है। नागथाना में मीया जातिके लोगोंका एक नाग नामका मंदिर है इस• लिये नागथानाके नामसे यह क्षेत्र प्रसिद्ध है। जैन मंदिरके नामसे लोग नहीं समझते।

श्रीतेर अतिशय क्षेत्र (नाग थाना)

यह क्षेत्र चौपटे जंगलमें है। यहांपर १ प्राचीन मजबूत धर्मशाला और २ मंदिर हैं। एक मंदिरमें देदीप्यमान श्याम वर्ण महामनोहर श्रीमहावीरस्वामीकी प्रतिमा विराजमान हैं दर्शन करते ही शरीर आनंदसे पुलकित हो जाता है। ७ प्रतिमा और भी विराजमान हैं। २ प्रतिमा मंदिरके बाहिर खंडित पडी हैं। दूसरे मंदिरमें २४ प्रतिमा श्रीचौवीस

महाराजकी हैं। यह स्थान, मंदिर और प्रतिमा बहुत प्राचीन हैं। यहांपर ३ दफा श्रीमहावीर भगवानका समवसरण आया था। यहांकी यात्राकर स्टेशन तेर लौट जाना चाहिये और वहांसे बारसी टाउन होकर बारसी रोड चला जावे।

उस्मानाबादसे तेर जानेका बैलगाडीके रास्ताका ऊपर उल्लेख कर दिया गया है। तेरसे लातुर तक रेल जाती है। लातूर शहर अच्छा है। यदि देखना हो तो ॥) टिकट लेकर लातूर देख आना चाहिये। लातूरका हाल नीचे लिखे अनुसार है।

लातूर शहर।

बारसीटाउनके शहरकी अपेक्षा लातुर शहर बड़ा है। देखने योग्य है। यहांपर बहुतसी बादशाही चीजें दर्शनीय हैं। यहांपर २ मंदिर प्राचीन हैं। मंदिरोंमें बहुतसी महामनोहर प्राचीन प्रतिमा विराजमान हैं। भौंरा आदि भी हैं यहांका दर्शन कर फिर बरसी टाउन लौट जाना चाहिये और वहांसे बारसीरोड चला जाना चाहिये।

बारसी रोडके पास हिंदुओंका प्रसिद्धस्थान पंढरपुर है, यदि किसी भाईको पंढरपुर देखनेकी अभिलाषा हो तो वह ॥।) की टिकट लेकर पंढरपुर चला जाय फिर लौटकर यहीं आकर पूना लाइनमें दिक्साल स्टेशन चला जाय यदि किसी भाईको पंढरपुर न जाना हो वह सीधा दिक-

साल चला जाय । पंढरपुरका कुछ हाल नीचे लिखे अनु-
सार है ।

पंढरपुर

बारसी रोडसे ३२ मीलके फासलेपर पंढरपुर शहर है. पाण्डव लोगोंने इसे बसाया था । रेलवे खास पंढरपुर तक आती है । स्टेशनसे १ मीलके फासलेपर धर्मशाला है वहां ठहरना चाहिये । यहां २ मंदिर १ कन्याशाला १ पाठशाला और १ धर्मशाला है । यहां जैनी भाइयोंके ४० घर हैं । मंदिर और प्रतिमा बडे मनोज्ञ हैं । पंढरपुर शहर बडा रोनकदार प्राचीन सुन्दर शहर है । हिंदु लोगोंका यह बडा भारी तीर्थ है । तीर्थका स्थान होनेसे इस शहरकी आबादी और भी अधिक बढ़ गई है । हजारों यात्री यहां आते जाते रहते हैं । सब प्रकारका सामान यहां मिलता है । यहांपर वैष्णव लोगोंका बडा भारी १ प्राचीन मंदिर है उसमें कृष्णकी १ काठकी मूर्ति और भी बहुतसी मूर्तियां विद्यमान हैं । यहांका यह मंदिर दर्शनीय है । यहां १ नदी है, जिसके पक्के घाट सैकडों हिन्दुओंके मंदिरोंसे युक्त हैं । किश्तियोंसे नदीके उसीपार भी जाना होता है । वहां भी बहुतसे मंदिर हैं । वहीं पिंडदान आदि क्रियायें की जाती हैं ।

विशेष

यहांके जैनी भाइयोंका कहना है कि यह हिन्दुओंका मंदिर पहिले जैनियोंका मंदिर था। इसमें भगवान नेमिनाथ स्वामीकी प्रतिमा विराजमान थी। यहांके जैनियोंकी शिथिलता और निर्बलता देखकर हिन्दुओंने इस मन्दिरको अपना लिया और भगवान नेमिनाथकी प्रतिमा हटा कर उसकी जगह कृष्णकी मूर्ति स्थापित कर दी। यह बहुत थोडे वर्षोंकी बात है, यह मंदिर पहिले जैनियोंका था हिंदुओंने जबरन इसे अपनाया है इस बातके प्रमाण भी एक भाईके पास मौजूद हैं।

जिस भाईके पास प्रमाण है इस जगह उस भाईकी लोग अधिक इज्जत करते हैं, जिस समय यहां रथ निकलता है यहांके जैन उसे रथके आगे आगे बडी इज्जतसे ले जाते हैं। यहांके जैनियोंका इस मंदिरपर पूर्ण हक है। बहुतसे लोग जानते हैं कि पहिले यह पार्श्वनाथका मंदिर था जबरन कृष्णका मंदिर बनाया गया है। २० वर्ष पहिले दरवाजेके ऊपर भगवान पार्श्वनाथकी प्रतिमा उकेरी हुई थी परन्तु उसे तुडवाकर हिन्दुओंने उसकी जगह गणेशकी मूर्ति रखा दी है। मंदिरके स्तम्भपर कुछ शिलालेख भी था परन्तु वह भी मिटा दिया गया। जैनियोंकी गफलतसे बीसों ऐसे पवित्र स्थान दूसरोंने अपना लिये हैं।

तब भी जैनी जरा भी नहीं चेतते। जो कुछ भी बचे स्थान हैं उनकी रक्षा करना भी वे अपना कर्तव्य नहीं समझते हैं। यह बडा खेद है।

यात्रियोंको चाहिये कि वे पंढरपुरसे बारसी रोड लौट जांय फिर वहांसे दिक्साल चले जांय। दिक्सालसे २२ मीलकी दूरीपर दही गांव नामका अतिशय क्षेत्र है। वहां जाना चाहिये, रास्ता बैल गाडीका है। दिक्सालमें बैल गाडियां मिलती हैं।

श्रीदही गांव अतिशय क्षेत्र

यह गांव छोटा है, यहां एक मंदिर और १ मानस्तंभ है। मन्दिर बहुत ही बढिया लाखों रुपयोंकी लागतका है, यहांका मानस्तम्भ भी बडा ही कीमती है जो कि बहुत ऊंचा होनेसे दूरसे दीख पडता है। मंदिरमें बहुत बडी प्राचीन शान्त मूलनायक प्रतिमा श्रीमहावीर स्वामीकी विराजमान हैं और भी अनेक प्रतिमा विराजमान हैं जो कि महामनोहर हैं। यहां भगवान महावीरस्वामीका समवसरण आया था। यहांकी यात्राकर दिक्साल लौट जाना चाहिये और वहांसे पूना शहर चला जाना चाहिये।

पूना शहर।

स्टेशनसे २ मीलकी दूरीपर शुक्रवारी पेंठमें जैन धर्मशाला है बैलगाडी या तांगामें बैठकर वहां चला जाना

चाहिये। फी सवारी तांगामें ।) और बैलगाडीमें ≈) लगता है। वहांपर धर्मशालासे थोडे फासलेपर शुक्रवारीमें लकडी बाजारमें १ मंदिर है। वहांका दर्शन कर मालीको संग लेकर दितवारी पेंठ जाना चाहिये। वहांपर ४ उत्तमोत्तम मंदिर हैं सबके दर्शन करना चाहिये। पूना शहर देखने योग्य बंबई शहरके समान किसी २ स्थलमें यह रमणीक है। यहांसे कुण्डल रोडकी टिकट लेना चाहिये। कुण्डलरोडसे २ मीलकी दूरीपर श्रीकुण्डलक्षेत्र (कलिकुंड पार्श्वनाथ) अतिशय क्षेत्र है वहां चला जाना चाहिये।

कुण्डलरोड स्टेशन कोल्हापुर मिरज लाइनमें है। मिरज और सांगलीकी उरली तरफ है। पूनासे ४ रेलवे लाइन जाती हैं १ कल्याण १ धोंड १ मिरज १ हैदराबाद जाती है।

श्रीकुंडल अतिशय क्षेत्र कलिकुंड पार्श्वनाथ।

यह क्षेत्र कुण्डल क्षेत्रके नामसे प्रसिद्ध है। यहां एक बडा भारी मंदिर है। मूलनायक प्रतिमा श्रीपार्श्वनाथ भगवानकी विराजमान हैं जो कि महा मनोहर रत्नोंकी कांतिके समान शुभ्र विशाल हैं। और भी बहुतसी मनोहर प्रतिमा विराजमान हैं। यहां पर अनेक प्राचीन रचना देखने योग्य है। इस क्षेत्रसे २ मीलकी दूरीपर २ पहाड हैं वह स्थान झरीभारी पार्श्वनाथके नामसे प्रसिद्ध है। वहां भी

जाकर दर्शन कर लेना चाहिये फिर कुंडल रोड आकर हाथ कलंगडा स्टेशनका टिकट लेलेना चाहिये। हाथ कलंगडा स्टेशन कोल्हापुरसे उत्तरकी ओर है और वहां जानेके लिये मिरज जंकशनपर गाडी बदली जाती है।

हाथ कलंगडा स्टेशन।

यहांसे ३ मीलकी दूरीपर श्रीकुंभोज अतिशय क्षेत्र है, यह क्षेत्र पहाड पर है। स्टेशनसे बैलगाडीमें बैठकर कुंभोज गांव होता हुआ यहां जाना चाहिये। १॥) रु० में बैलगाडी जाती है और हरएक बैलगाडीमें ४ सवारी जाती हैं। यदि उलट फेरकी गाडी की जायगी तो पहाडकी तलहटी तक ठेट ले जाती है। कुम्भोजमें १ विशाल मंदिर है। बहुतसी प्राचीन प्रतिमा विराजमान हैं। ५० घर जैनी भाइयोंके हैं यहांका दर्शन कर कुम्भोज अतिशय क्षेत्र जाना चाहिये।

श्रीकुंभोज अतिशय क्षेत्र बाहुबली पहाड।

यह पहाड छोटासा है तथापि मिरज सांगली हाथ कलंगडा आदिसे स्पष्ट दीख पडता है। पहाडकी चढाई करीब आधे मील है। चढनेके लिये सीढियां लगी हुई हैं। पहाड के ऊपर १ धर्मशाला ४ मंदिर दिगंबर जैनियोंके है १ कुवा और १ बगीचा भी है तथा १ धर्मशाला और १ मंदिर श्वेतांबरोंका है। यह स्थान बडा ही मनोहर है ध्यान और अध्ययनके लिए यहांका एकांत स्थान बडा ही सुहावना

है। यहांपर हमें दिगंबर जैन मुनि श्रीआदिसागरजी और श्रीपायसागरजी क्षुल्लकका दर्शन हुआ था। यहांपर १ छोटीसी कुटी ध्यान करनेकी है जो कि बडी मनोहर है। १ सहस्रकूटचैत्यालय और पाषाणमयी १ प्रतिमा श्रीगोम्मट स्वामीकी है। यहांके मंदिरोंमें प्राचीन ढंगकी बडी मनोहर बहुत सी प्रतिमा विराजमान हैं। यह बडी मनोहर स्थान है जहां पर भगवान बाहुबलिने १ वर्ष पर्यन्त प्रकृष्ट ध्यान किया था और यहींपर उन्हें केवलज्ञान उत्पन्न हुआ था जिसका देवोंने अद्भुत उत्सव मनाया था। यह पवित्र क्षेत्र समस्त पापोंका हरण करनेवाला है। श्रीबाहुबलि स्वामीका नाम कुम्भोज था उसी कुम्भोज नामका यहां प्रचार है। यहांकी यात्राकर कुम्भोज ग्राम होकर हातकलंगडा स्टेशन लौट जाना चहिये।

हातकलंगडा १ छोटासा ग्राम है। स्टेशनसे आधी मीलकी दूरीपर है १ मंदिर और १२ घर जैनियोंके हैं। यहांसे कोल्हापुरके ≈)॥ लगते हैं। वहां जाना चाहिए।

कोल्हापुर शहर।

शहर स्टेशनके एकदम समीप है। स्टेशनके पास ही १ दिगंबर मंदिर और १ धर्मशाला है। १ मंदिर और १ धर्मशाला श्वेतांबरोंके भी हैं। १ धर्मशाला वैष्णवोंकी भी है। धर्मशालासे १ मीलकी दूरीपर १ बोर्डिंग हाउस

है और यह बंबई निवासी स्वर्गीय सेठ माणिकचंद्रजी द्वारा निर्मापित हीराचंद गुमानजी जैन बोर्डिंग हाउसके नामसे है। यात्रियोंकी इच्छा, वे बोर्डिंग धर्मशाला आदि किसी स्थानपर ठहर सकते हैं। कोल्हापुर शहरके भीतर ७ मंदिर जुदे महल्लोंमें है। सबोंको दर्शन करनेमें करीब ३ मीलका चक्र लगता है। मालीको संग लेकर सब मंदिरोंके दर्शन कर लेना चाहिये।

इन मंदिरोंमें १ मंदिर बहुत प्राचीन है। बहुत बडी २ प्राचीन महा मनोहर प्रतिमा इस मंदिरमें विराजमान हैं। ७ प्रतिमा श्रीजैनबद्री मूलबद्रीके ढंगकी है। १ मानस्तंभ भी है, करीब ७० घर जैनी भाइयोंके हैं, यहांपर १ संस्कृत पाठशाला है। पायसागर नामके ब्रह्मचारी और १ भट्टारक जी यहां निवास करते हैं। यहांका शहर प्राचीन है। चौक बाजार देखने लायक है। यहांसे २८ मीलकी दूरीपर श्री स्तवनिधि (भैरवका) अतिशय क्षेत्र है। रेलगाडी बैल गाडी दोनोंसे जाना होता है कोल्हापुरसे १० कोशकी दूरीपर श्रीद्रोणागिरि (सेदपा) क्षेत्र है। कोल्हापुरकी यात्रा कर यात्रियोंको श्रीस्तवनिधि क्षेत्र जाना चाहिये।

श्रीस्तवनिधि आतिशय क्षेत्र।

यह क्षेत्र पोष्ठ निपानी जिला बेलगांवमें है। इस क्षेत्रको आनेके लिये १ रास्ता स्टेशन त्रिकोडीसे भी है जो कि

३० मील पड़ता है। यहांपर १ धर्मशाला और ५—६ प्राचीन मंदिर हैं। और भी अनेक प्राचीन रचना देखने योग्य है यहांके मंदिरोमें हजारों बडी २ महा मनोहर प्राचीन प्रतिमा विराजमान हैं। यह स्थान बडा ही मनोहर ध्यान करने योग्य है। यहांपर पहिले बहुतसे मुनि ध्यान करते थे। यहांकी यात्रा कर कोल्हापुर जाना चाहिये और वहांसे मिरज स्टेशन चला जाना चाहिये।

मिरज स्टेशन।

मिरज और सांगली दोनों पास पास हैं, मिरज शहर अच्छा है। सांगली एक छोटासा गांव है। हर एकमें दो दो मंदिर है। मिरजमें जैनी भाइयोंके घर १०० और सांगलीमें १० है। दोनों स्थानोंके मंदिरोंमें बहुतसी प्राचीन प्रतिमा विराजमान हैं सबके दर्शन करने चाहिये।

मिरजसे ४ रेलवे लाइन जाती हैं १ कल्याण १ कोल्हापुर १ लोंनटा हुबली १ मारवाड जंकशन जाती है। मिरजसे सीधा टिकट बम्बईका लेना चाहिये। बीचमें पूना और कल्याण शहर पडते हैं। पूनाका हाल ऊपर लिखा जा चुका है। जिस भाईको कल्याण देखनेकी इच्छा हो वह कल्याण देख सकता है कल्याण मामूली शहर है। यहांसे ३ रेलवे लाइन जाती है १ मनमाड १ बंबई और एक पूना, यहांसे बंबई जाना चाहिये।

बंबई।

बम्बईमें बहुत स्टेशन हैं। यात्रियोंको ठेट बोरी बंदर स्टेशन उतरना चहिये। यहांपर बहुत धर्मशाला हैं जिनमें किराया देकर ठहरा जा सकता है। १ धर्मशाला माधो बागमें बहुत बडी हैं अपनी दिगंबर जैन धर्मशाला स्वर्गीय सेठ माणिकचंद्र द्वारा निर्मापित हीराबागमें है। वहां पर कुछ किराया नहीं लगता सब बातका आराम मिलता है यात्रियोंको इसी बागमें ठहरना चाहिये। यहांपर १ मंदिर धर्मशालाके पास है। १ मंदिर चंपागलीमें है जो कि बीस पंथके नामसे प्रसिद्ध है। १ चैत्यालय तारदेव जैन बोर्डिंग हाऊसमें है। १ मगनबाई विधवाश्रममें है। २ चैत्यालय चौपाटी स्थानपर है जिनमें १ सेठ माणिकचन्द्रजीके मकान पर है और दूसरा सेठ सुभागसाहके मकान पर है। सब मंदिरोंके दर्शन करनेमें करीब १२ मीलका चक्र पडता है।

यहांपर शहर, कपडेके मिल, रेशमी मिल अजायब घर टकमालघर बडा कोर्ट एलफसटनबाग कुलाबाका गिरजा जहाज गोदाम बोरी बंदर ष्टेशन रत्नाकर चौपाटी जरी बूटीका कारखाना आदि चीजे देखने योग्य हैं। यह शहर अंग्रेजी राज्यमें बडा नामी और सुन्दर शहर है यहां पर हर एक चीज मिलती है। व्यापारका मुख्य स्थान है। यहां पर भाटिया गुजराती पार्सी मारवारी सभी लोग बडे बडे व्यापारी हैं। सभी श्रीमान् हैं।

बंबईमें जैन दिगंबरियोंके बहुतसे घर हैं। यहांके मनुष्योंके खानपानके आचरणमें कुछ शिथिलता जान पडती है। यहांसे जहाज बेंगलुर मंगलुर मद्रास आदिको जाते हैं। रेलवे भी सब ओर जाती है। यात्रियोंको बंबईसे सूरत शहर जाना चाहिये। सूरतको ग्रांट रोड ष्टेशनसे गाडी जाती है और रेलभाडा २॥) लगता है।

सूरत जंकशन।

यहांपर १ धर्मशाला और १ मंदिर ष्टेशनके पास है। भीतर शहरमें चन्दावाड में १ धर्मशाला है जो ष्टेशनसे २ मीलकी दूरीपर है, ≈) सवारीसे तांगा जाता है। सैकडों महा मनोहर प्राचीन प्रतिमा इनके अन्दर विराजमान हैं। सेठ मूलचन्द किसनदास जी यहां रहते हैं। उनका प्रेस है जिससे जैनमित्र आदि समाचार पत्र प्रकाशित होते हैं, सूरतमें ३ मंदिर और भी हैं सब मिलाकर यहां ७ मंदिर हैं। यहांपर १ भट्टारकजीकी गादी भी है। दिगंबर और श्वेतांबर दोनों प्रकारके जैनियोंके यहां बहुत घर हैं। श्वेतांबरी मंदिर बहुत हैं उनमें ४ मंदिर अधिक दर्शनीय हैं। यहांका बाजार देखने योग्य है।

यहांसे ३ रेलवे लाइन जाती हैं—१ जलगांव १ बंबई और १ बडोदा। यहांसे यात्रियोंको बारडोली स्टेशन जाना चाहिये। जलगांव लाइनसे जाना होता है, ।―) टिकटका

लगता है। वारडोलीके पास विघ्नहरण पार्श्वनाथ महुवा क्षेत्र है। बारडोली स्टेशनसे १ लाइन सीधी जल-गांव जाती है।

वारडोली स्टेशन।

स्टेशनसे २ मीलकी दूरीपर वारडोली शहर है। तांगा से जाना होता है। शहर अच्छा है। १ श्वेतांबर मंदिर है। यहांसे ८ मीलकी दूरीपर महुवा विघ्नहरण श्रीपार्श्वनाथ क्षेत्र है। बैलगाडी जाती है और हरएक बैलगाडी ५) लेती है। रास्ता कुछ खराब है।

श्रीमहुवा अतिशय क्षेत्र।
(विघ्नहरण पार्श्वनाथजी)

महुवा शहर अच्छा है, १ नदी बहती है। ३० घर दिगम्बर जैनी भाइयोंके हैं। १ मंदिर प्राचीन बडा ही मनोहर है। वह पार्श्वनाथजीके मंदिरके नामसे प्रसिद्ध है। मंदिरजीमें १ बाग १ कुआ और ४ छोटे मंदिर हैं। अनेक प्रतिमा बिराजमान हैं जो कि महा मनोहर और शांतिमय छविकी धारक हैं। १ प्रतिमा श्यामवर्ण अत्यन्त प्राचीन भगवान पार्श्वनाथकी विराजमान है। इन्ही प्रतिमाजीको विघ्नहरण पार्श्वनाथजी कहते हैं। इस प्रतिमाजीका यहां बडा भारी अतिशय लोग मानते हैं। सबका ख्याल है कि भगवान पार्श्वनाथके स्मरण करनेमात्रसे शीघ्र विघ्न नष्ट

हो जाते हैं। इस प्रतिमाजीका यह यश बडी दूरतक विस्तृत है। अंग्रेज ईसाई बौद्ध मुसल्मान आदि हरएक जातिके मनुष्य इस प्रतिमाजीकी मान्यता करते हैं और बोलकबूल लेकर आते हैं। यहांकी यात्राकर यात्रियोंको वारडोली स्टेशन आना चाहिये और वहांसे रेलमें बैठकर अंकलेश्वर चला जाना चाहिये। वारडोलीसे अंकलेश्वरका रेलभाडा ॥~) लगता है।

श्रीअंकलेश्वर अतिशय क्षेत्र
(चिंतामणि पार्श्वनाथ)

अंकलेश्वर शहर स्टेशनसे १ मीलकी दूरीपर है, शहर अच्छा है। ४ बडे २ मंदिर हैं जो कि महामनोहर और पास पास विराजमान हैं। हजारों प्रतिमा इन मंदिरोंमें विराजमान हैं। पूजा प्रक्षालकी उचित व्यवस्था है। २० घर दिगम्बर जैनियोंके हैं।

एक भौरेमें चतुर्थकालीन प्राचीन बालूकी बनी हुई श्यामवर्ण १ प्रतिमा श्रीचिंतामणि पार्श्वनाथजीकी विराजमान हैं। प्रतिमा बडी ही मनोहर और अद्भुत हैं। इन प्रतिमाजीकी शोभा अवर्णनीय है। एकवार दर्शन कर लेने पर मन उस प्रतिमामें ही लीन हो जाता है। प्रतिमाके स्मरण करनेपर क्षुधा तृषाकी बाधा भी नहीं सताना चाहती। वास्तवमें ये प्रतिमा चिंतामणि ही हैं। यहांका दर्शन

कर श्रीसजोद अतिशय क्षेत्र जाना चाहिए। यह क्षेत्र अंकलेश्वरसे पश्चिम दिशाकी ओर है, ७ मीलकी दूरीपर है। पक्की सडक है। बैलगाडीसे जाना होता है।

श्रीसजोद अतिशय क्षेत्र

यह १ छोटासा गांव है। सडकके किनारे बांये हाथ पाव मीलकी दूरीपर है, यहां १ मंदिर और दो घर श्वेतांबर जैनियोंके हैं। मंदिरमें १ प्राचीन भौंरा है। अंकलेश्वरके समान भौंरेके भीतर अत्यन्त मनोहर सातिशय एक प्रतिमा श्रीशीतलनाथ स्वामीजीकी विराजमान है। यहांके दर्शनकर अंकलेश्वर स्टेशन लौट जाना चाहिये और वहांसे ≈) का टिकट लेकर भरोंच चला जाना चाहिये।

विशेष—अंकलेश्वरकी श्रीचिन्तामणि पार्श्वनाथकी प्रतिमा और सजोदकी श्रीशीतलनाथ स्वामीकी प्रतिमा जमीनके भीतर इसी गांवमें निकली थीं। १ प्रतिमा अंकलेश्वर जाकर विराजमान कर दी गई। इन प्रतिमाओंके शरीरकी दीप्ति रत्नों सरीखी है। सजोद ग्राममें १ मंदिर हिंदुओंका भी है, बहुतसे हिंदु लोग तीर्थ यात्राके लिये यहां आते जाते रहते हैं. यहांका मंदिर और कुंड दर्शनीय है।

भरोंच

यह १ बहुत बडा शहर है, एक विशाल नदीके किनारे

बसा हुआ है । स्टेशनसे १ मीलके फासले पर एक दि० जैन मंदिर है १०० घर दि० जैनियोंके हैं । यहां शहर बाजार नदीका पुल नदीके किनारेका किला, किलेकी दीवार बादशाही काम कबरें आदि बहुतसी चीजें देखने लायक हैं । यहां पिंड खजूर काजू छुहारा मेवा आदि बढ़िया और सस्ती मिलती है । गुजरात प्रदेशका यह शहर दर्शनीय है । यहां अवश्य उतरना चाहिये, यहांसे बडोदा चला जाना चाहिये ।

बडोदा शहर

स्टेशनसे दो मीलके फासलेपर चौक बाजार दरवाजेके पास नईपोलमें सेठ लालचन्दजीकी जैन धर्मशाला है वहां जाकर ठहरना चाहिये । तांगा वहांतक पहुंचानेके लिये ।) सवारी लेता है । यहां १ मंदिर है, १ मंदिर यहांसे कुछ दूर है दोनों मन्दिरोंका दर्शन करना चाहिये ।

बडोदा राजाकी राजधानी है । यहां राजाका महल बाग कचहरी बाजार आदि चीजें देखने लायक हैं, यहांका दृश्य देखकर ॥≈) देकर पावागढकी टिकट लेना चाहिये । बीचमें चम्पानेर स्टेशन पडती है वहां गाडी बदली जाती है । चम्पानेर जंकशन है । वहांसे १ रेल बरोदा पावागढ (चंपानेर रोड) और १ अहमदाबाद जाती है । बडोदामें दि० जैनी भाइयोंके ३० के करीब घर हैं । श्वेताम्बरोंके

बहुत घर हैं । ७ मंदिर भी उनके बडे बडे देखनेलायक बने हैं ।

बडोदासे ३ रेलवे लाइन जाती हैं १ आलंद अहमदाबाद १ चांपानेर और १ सूरत जाती है ।

श्रीपावागढ सिद्धक्षेत्र
(चम्पानेर रोड)

हर समय गाडी आनेके समयपर दि० जैन धर्मशाला-की ओरसे मुनीम या पुजारी या जमादार १ कुलीको संगले कर स्टेशनपर खडा रहता है । स्टेशनपर उसको पुकार लेना चाहिये । स्टेशनसे करीब २ फर्लांगके फासलेपर दिगंबर जैन धर्मशाला है । यह एक बडी भारी धर्मशाला है, यहां सब बातका आराम मिलता है । पावागढ बस्ती अच्छी है । खाने पीनेका हरप्रकारका सामान मिलता है । यहां एक मंदिर धर्मशालाके भीतर है । यहांसे १॥ मीलकी दूरीपर पावागढका पहाड है । करीब ढाई मीलकी चढाई है । धर्मशालामें गोदी ले जानेवाले मनुष्य और डोलियां मिलती हैं, पहाड और धर्मशालाके बीचके रास्तेमें १ लाखों रुपयोंकी कीमतका गढ है, वह दर्शनीय है । पहाडपर ७ परकोटा सीढियां दरवाजा तालाब मकान आदि चीजें देखने लायक हैं । कुल मंदिर पहाडपर ४ हैं जो कि थोडी थोडी दूरके फासलेसे हैं, एक देहरी है जिसमें रामचन्द्र-

जीके पुत्र लवण अंकुशकी चरणपादुका हैं। इन मंदिरोंमें बडी मनोहर प्रतिमा विराजमान हैं। चौथे मंदिरके पास एक तालाव है, वहां १ देवीका मंदिर है. हजारों हिंदु लोग यहां दर्शनार्थ आते जाते रहते हैं। देवीपर किसी प्रकारकी हिंसात्मक बलि नहीं चढाई जाती. सिर्फ नारियल चढाये जाते हैं। श्रीपावागढ सिद्धक्षेत्रसे श्रीरामचन्द्रजीके दो पुत्र और लाटनरेन्द्र आदि साडे पांच करोड मुनिराज मोक्ष पधारे हैं। यह पर्वत बडा ही सुहावना है, यहांकी यात्राकर स्टेशन लौट जाना चाहिये और चांपानेर बडोदा गाडी बदलकर आनंद चला जाना चाहिये। अथवा—

पावागढसे गोधराका टिकट लेना चाहिये और वहां गाडी बदलकर आनन्द जाना चाहिये। यह आनंद जानेका दूसरा मार्ग है. यह मार्ग समीप भी है और भाडा भी कम लगता है।

गोधरा जंकशन

शहर एकदम स्टेशनसे लगा हुआ है, यह शहर भी बडा मनोहर और दर्शनीय है। यहां दि० जैन मंदिर ४ हैं जो कि विशाल और मनोज्ञ हैं। दि० जैनी भाइयोंके बहुतसे घर हैं, यहांसे १ रेलवे चांपानेर १ बडोदा एक आनन्द और १ रतलाम जाती है, आनंद जाना चाहिये।

आनंद जंकशन

यह शहर भी देखने लायक है, यहां दि० जैन मंदिर २ हैं और बहुतसे घर दि० जैनी भाइयोंके हैं । यहांसे १ रेलवे अहमदाबाद १ बडोदा और १ खम्भात जाती है. यहांसे कांवे लाइनमें १ पेटलाद स्टेशन पडती है वहांका टिकट लेना चाहिये । आनंदसे पेटलाद तीसरा स्टेशन है ।

पेटलाद जंकशन

यहांपर १ प्राचीन उत्तम मंदिर है यहां उतरकर दर्शन करना चाहिये । यहांसे खम्भात जाना चाहिये । खम्भात तकका रेल भाडा ।–) लगता है. पेटलादसे १ लाइन कांवे तक जाती है और १ छोटी लाइन खम्भात तक जाती है ।

श्रीखंभात अतिशय क्षेत्र

यह शहर स्टेशनसे १।। मीलके फासलेपर है । यह एक बडा सुन्दर और उत्तम शहर है, यहां १ जैन धर्मशाला और १ प्राचीन दि० जैन मंदिर है । इस मंदिरमें मूलनायक प्रतिमा श्रीविमलनाथकी विराजमान हैं जो कि महामनोहर प्राचीन १।। हाथ ऊंची पद्मासन हैं । ७५ के करीब और भी प्रतिमा विराजमान हैं जो कि महामनोहर हैं ।

यहां पहिले बडे २ आलीशान मंदिर थे जो कि सैकडोंकी संख्यामें थे । वर्तमानमें उनके खण्डहर पडे हैं । जब देहलीके बादशाहने हमला किया था तब यहांके सब

मंदिरोंको नष्ट भ्रष्ट कर दिया था। उसने समस्त शहरको लुटवा लिया था, पहिले यह शहर बडा भारी और हिन्दुस्थानमें नामी था. जवाहिरातका किसी दिन यहां बडा भारी व्यापार चलता था। बडी २ दूरके व्यापारी जहाजोंसे आकर यहां उतरते थे। यह सुंदर शहर समुद्रके किनारे है. इस समय भी यह शहर नामी है अब भी जवाहिरातका यहां व्यापार होता है। जडाऊ जेवरका यहांका काम बडा प्रसिद्ध है।

यहां मुहम्मदशाहकी १ मस्जिद है। जिसके खंभे और दीवारें जैन मंदिरोंके पत्थरोंसे बनाये गये मौजूद हैं। उन पत्थरोंपर जैन प्रतिमा उकेरी हुई हैं जिससे जैन धर्मकी प्राचीनता द्योतित होती है। यहां उक्त मस्जिद नवाब साहबका महल बडे २ कीमती मकान और खण्डहर आदि चीजें देखने लायक हैं। यहांका दृश्य देखकर यात्रियोंको अहमदाबाद जाना चाहिये। अहमदाबाद जानेके लिये आनंदमें गाडी बदलनी पडती है।

अहमदाबाद

स्टेशनसे २ मीलके फासलेपर चौक बाजारमें त्रिपोल दरवाजेके पास झवेरापुर रोडमें १ दि० जैन बोर्डिंग हाउस है. जिसका निर्माण स्वर्गीय सेठ माणिकचन्दजी द्वारा हुवा है, यहां १ दि० जैन धर्मशाला और २ प्राचीन दि० जैन

मंदिर हैं। इस मंदिरमें महामनोहर अनेक प्राचीन प्रतिमा विराजमान हैं। धर्मशालामें यात्रियोंको सब बातका आराम मिलता है। यहां आकर ठहर जाना चाहिये। स्टेशनपर मोटर तांगा आदि हर एक प्रकारकी सवारी मिलती है। ।=) सवारी भाड़ा लगता है. यह शहर गुजरात देशका १ प्रधान बडा भारी शहर है। इसमें कांच लोहा कपडा आदिके हजारों कारखाने हैं। यहां शहर बाजार गांधी-जीका मकान आदि देखने लायक हैं, शहरमें दि० जैन मंदिर ४ हैं जो कि थोडी २ दूरपर विराजमान हैं। दि० जैनियोंके करीब ३० घर हैं। यहां जैनियोंकी व्यवस्था ठीक नहीं है। मंदिर और प्रतिमाओंकी एक प्रकारसे यहां दुर्दशा दीख पडती है। उक्त मंदिरोंमें १ मंदिर बडा है। उसमें १ भौंरा है. मंदिर और भौंरेमें हजारों प्राचीन प्रतिमा वि-जरामान हैं। श्वेतांबर मंदिर यहां बहुत हैं। बडे भारी और देखने लायक हैं। श्वेतांबर जैनियोंकी संख्या भी यहां बहुत है। अहमदाबाद देखकर यात्रियोंको ईडर शहर जाना चाहिये।

ईडर शहर

यह शहर राजाकी राजधानी है. यहां दिगम्बर जैन मंदिर ६ हैं जो कि बडे २ आलीशान और प्राचीन हैं। इन मंदिरोंमें हरएक वर्णकी रंग विरंगी हजारों प्राचीन

प्रतिमा विराजमान हैं । यह शहर जैनियोंका एक नामी शहर था. यहांका राजा जैनी था प्रजा भी जैनी थी और बडे २ विद्वान भट्टारक यहां विराजते थे। इस समय भी यहां भट्टारकोंकी २ गादी हैं । यहांके भंडारोंमें हजारों जैन शास्त्र हैं परन्तु ठीक संभाल न होनेसे कीडोंका कलेवर पुष्ट कर रहे हैं। ठीक सम्भाल नहीं रक्खी जाती । खोले तक नहीं जाते। यहां १ मंदिर श्रीशांतिनाथ भगवानका सबसे बडा है। दि० जैनी भाइयोंके घर १४० के करीब हैं। बंबई निवासी सेठ माणिकचन्द्र लाभचन्द्रकी ओरसे यहां १ पाठशाला है जिसमें लडके लडकियां पढने आते हैं। यहां शहरमें प्राचीन मकान राजाका महल बाग आदि चीजें देखने लायक हैं।

ईडरसे ४ कोशके फासलेपर १ पोहिना नामका गांव है वहां २ प्राचीन मंदिर हैं और उनमें प्राचीन प्रतिमा विराजमान हैं, पोहिनामें जैनियोंके घर भी हैं। तांगा और बैलगाडीसे जाना होता है वहां जाकर दर्शन कर लेना चाहिये और वहांसे ईडर लौट आना चाहिये।

ईडरसे १० मीलकी दूरीपर वडाली अमीझरा पार्श्वनाथ अतिशय क्षेत्र है यात्रियोंको वहां जाना चाहिये। तांगा और बैलगाडीसे जाना होता है। यदि वडालीको रेल जाती हो तो पूछकर रेलसे चला जाना चाहिये।

श्रीवडाली अतिशय क्षेत्र
अमीझरा पार्श्वनाथ

यहांपर १ प्राचीन मंदिर है उसमें प्राचीन चतुर्थकाल की महामनोहर पद्मासन १ प्रतिमा श्रीपार्श्वनाथ भगवानकी विराजमान हैं। यहांपर इस प्रतिमाजीके दर्शन करनेकेलिए दूर दूरके मनुष्य आते हैं। यहां दिगंबरोंका एक भी घर नहीं; श्वेतांबरोंके करीब २०० के घर हैं। इस मंदिरकी पूजा श्वेतांबर भाइयोंकी ओरसे होती है। यहांकी यात्रा कर यात्रियोंको लौटकर ईडर जाना चाहिये और वहांसे भावनगर चला जाना चाहिये। रास्तामें कई स्थानोंपर गाडी बदलती है सो बराबर ध्यान रखना चाहिये।

भावनगर

ष्टेशनके पास १ छोटीसी जैन धर्मशाला है। शहरमें गोगरि दरवाजा हूमडोंके मुहल्लामें १ मंदिर और १ धर्मशाला है। दूसरे मंदिरका रास्ता सेठ भगवान छगन सुतरवाला यह पूछकर जाना चाहिये। एक दिगंबर मंदिरमें दोनों मंजलमें प्रतिमा है। ऊपरकी मंजलमें एक प्रतिमा श्यामवर्ण और एक चरण पादुका बहुत ही प्राचीन सुंदर हैं। यहां दिगम्बर जैनी भाइयोंके करीब ३० घर हैं। एक पाठशाला है। भावनगर शहर बहुत अच्छा रोनकदार है श्वेतांबर लोगोंके ४ मंदिर बडे कीमती और दर्शनीय हैं।

भावनगरसे आगे रेल नहीं जाती । समुद्र है अग्निबोट जहाज आदि जाते हैं। भाव नागरमें दो ष्टेशन हैं १ स्टेशनसे गांव बिलकुल सटा हुआ है । भावनगरसे यात्रियोंको पालीताना जाना चाहिये। गाडी सींहोर ष्टेशन बदलनी पडती है सो ध्यान रखना चाहिये।

पालीताना शहर।

स्टेशनसे करीब १ मीलकी दूरीपर नदीके इसी ओर एक दिगंबर जैन धर्मशाला है। तांगा दो आना सवारी लेता है। यात्रियोंको इस धर्मशालामें ठहर जाना चाहिये। नदीके दूसरा ओर शहरमें १ दिगंबर जैन मंदिर है जो कि अत्यन्त दीप्तिमान महा मनोहर है। इस मंदिरमें सर्व धातु की महा मनोहर अनेक प्रतिमा विराजमान हैं। एक सम्मेद शिखरके पहाडकी नकल है। सबका दर्शन करना चाहिये।

यहांपर शहर श्वेतांबरोंकी धर्मशाला राजासाहबका महल आदि चीजें देखने योग्य हैं यहांसे १ आदमीको संग लेकर यात्रियोंको श्रीशत्रुंजय सिद्ध क्षेत्रकी वंदनाकेलिये जाना चाहिये। शत्रुंजयका दूसरा नाम सिद्धाचल भी है। पालीतानासे एक मील सीधा रास्ता है। पहाडकी तलहटी तक तांगा बैलगाडी जाते आते हैं। पहाडकी तलहटीमें बाजार है। खाने पूजने आदिका सब सामान मिलता है

पानीका कुंड है, ठहरनेका स्थान है। गोदी या डोली लेजाने वाले मनुष्य तलहटीमें मिलते हैं।

श्रीशत्रुंजय सिद्धक्षेत्र
सिद्धाचल

इस पहाडका चढाव २॥ मीलके करीब है बहुत सरल है। चढनेके लिये सड़क और सीढियां हैं। रास्तामें श्वेतांबर मंदिर कुण्ड तालाब आदि कई चीजें हैं। पहाडके ऊपर बडे भारी २ कोट हैं कोटोंके भीतर श्वेतांबर मंदिर हैं। इन मंदिरोंकी संख्या करीब ३॥ हजार बोली जाती है। इन मंदिरोंमें बहुतसे मंदिर बडे कीमती और मनोहर हैं। ४ बडे भारी कुण्ड हैं। कई मकान बने हैं पहाडकी शोभा अद्भुत है। श्वेतांबर लोगोंका यह बडा भारी तीर्थ गिना जाता है। यहां श्वेतांबरी यात्री बारहो मास प्रायः आया जाया करते हैं। बहुतसे शैलानी लोग भी इस स्थानको देखने आते जाते रहते हैं। दूसरे कोटके भीतर १ विशाल दिगम्बर जैन मंदिर है जिसमें बहुतसी आनंददायक शांत छवि महामनोहर प्रतिमा विराजमान हैं, इस पर्वतसे ३ पांडव आदि आठ करोड मुनिराज मोक्ष पधारे हैं। पहाडके मंदिरकी पूजा भक्तिकर नीचे धर्मशालामें आ जाना चाहिये और स्टेशन जाकर जूनागढका टिकट ले लेना चाहिये।

जूनागढ शहर

स्टेशनसे १ मीलके फासलेपर दिगंबर जैन धर्मशाला है, तांगामें बैठकर इस धर्मशालामें उतर जाना चाहिये। जूनागढमें एक बडा भारी मंदिर है, मनोहर प्रतिमा विराजमान है सबका दर्शन करना चाहिये।

जूनागढ राजाकी राजधानी है, शहर, दरबारका महल, कचहरी, किला, किलेकी तोप, ४ बडे २ तालाव, किलेके भीतरकी कचहरी महल किलेमें बादशाही मस्जिद बौद्धधर्मकी गुफा आदि यहां बहुतसी प्राचीन चीजें देखने योग्य हैं। यहांसे गिरनार पर्वतकी तलहटीमें जाना चाहिये. करीब ३ मीलके फासलेपर है, जूनागढसे ८-६ दिनका खाने पीनेका सामान अवश्य ले लेना चाहिये, मार्गकी शोभा बडी मनोहर है, तलहटीमें १ धर्मशाला है। जूनागढमें दिगम्बर जैनियोंका एक भी घर नहीं है। रेलगाडी वेरावल तक जाती है आगे समुद्र है।

तलेटीकी धर्मशाला

यहां कुछ वस्ती है। यहां १ धर्मशाला श्वेतांबरी और एक दिगंबरी है, २ मंदिर हैं। मुनीम पुजारी आदि रहते हैं यहां ठहरनेमें सब बातका आराम है। प्रातः काळ स्नान आदि क्रियावोंसे निवृत्त होकर द्रव्य साथमें लेकर यहांसे पर्वतकी ओर जाना चाहिये, दरवाजेपर फी मनुष्य एक

आना महसूल लगता है सो देना चाहिये । पहाडपर चढते समय जय जयकार शब्द बोलना चाहिये । दरवाजेसे पांचों टोंक सहस्रारवनतक सीढियां लगी हुई हैं। सीढियोंकी संख्या बीस ऊपर सात हजार बताई जाती है । कई स्थान अन्य-मती साधु लोगोंके हैं, पहाडकी सब वंदना कर चकर कुल चढाई उतराई १६ मीलके लगभग पडती है ।

श्रीगिरनार (ऊर्जयंत) पहाड सिद्धक्षेत्र

नीचेसे २॥ मीलकी चढाईके बाद सोरठका महल आता है । यहां २ दुकान हैं, खाने पीनेका सामान मिलता है । १ श्वेतांबर धर्मशाला है, २७ मंदिर श्वेतांबर जैनियोंके हैं । उनमें ७ मंदिर बहुत बढिया हैं, बडी २ विशाल प्र-तिमा चरणपादुका तलाव मंडप आदि रचना है । यहांसे थोडी दूरपर १ कोटमें दो मंदिर बडे रमणीक और विशाल हैं, ये दोनों मंदिर दिगम्बरी हैं । बडी २ मनोज्ञ प्रतिमा इनके अंदर विराजमान हैं, यहींपर पासमें ही राजुलजीकी गुफा है । यहींपर उग्रसेनकी पुत्री राजुलने तप तपा था । इस गुफामें बैठकर जाना पडता है । गुफाके अन्दर राजु-लकी १ प्रतिमा और चरणपादुका हैं ।

इस जगहसे १ मीलकी ऊंचाईपर दूसरी तीसरी टोंक हैं, रास्तेमें श्वेतांबर मंदिर वैष्णवोंके मंदिर मकान उनके

साधुवोंकी कुटी [ठाकुरद्वार आदि पडते हैं । इन टोंकोंपर भगवान नेमिनाथने विराजकर तप किया था। दोनों टोंकों पर चरणपादुका हैं, यहां १ गोरखनाथजीकी धूनी है। गुसाईं साधु रहते हैं, पहाडका सब हक इन्हीं लोगोंके हाथ में है। दिगम्बर श्वेतांबर हिंदु मुसलमान सब प्रकारके यात्री यहां आते हैं वे जो भेट पूजा आदि पहाडपर चढाते हैं सब उक्त गुसाईं लोग लेते हैं, चीमटा चीमटी लकडी आदि धूनीकी जगह बहुत रक्खे रहते हैं। हिंदू दत्तात्रयी मानकर गिरनार पहाडको पूजते हैं। मुसलमान इसे आदम बाबाके नामसे पुकारते हैं। गिरनार पहाडपर चढनेके लिये जो सीढियां बनी हैं वे हिंदू मुसलमान आदि सबोंकी सहाय-तासे बनी हैं।

यहांसे १ मीलकी ऊंचाईपर चौथी पांचवीं टोंके हैं। यहांसे रास्ता ठीक नहीं है, सावधानीसे जाना चाहिये। चौथी टोंक भगवान नेमिनाथके केवलज्ञानका स्थान है इस टोंकपर १ गुमटी १ चरणपादुका १ प्रतिमा प्राचीन पांचवीं टोंकके समान है, इसकी पूजा वन्दना नीचेसे या पांचवीं टोंकके सामनेसे होती है।

पांचवीं टोंकपर जानेके लिये सीढियां लगी हुयीं हैं। लेकिन वे बहुत पुरानी और संकुचित हैं इसलिये बडी सा-वधानीसे चढना चाहिये, जल्दी नहीं करनी चाहिये। यहां श्रीनेमिनाथ भगवान (दत्तात्रय आदमबाबा) कर्म काट

मोक्ष पधारे हैं। यहां १ प्रतिमा और १ चरणपादुका अत्यन्त सुन्दर विराजमान हैं, यह स्थान इतना बडा है कि पंद्रह आदमी एक साथ बैठकर पूजन कर सकते हैं, यहां भी जो चढावा चढ़ाया जाता है सब उपर्युक्त गुसाई लेते हैं। यहांसे करीब दो मील उतरकर नीचे सहसारवन है वहां आना चाहिये। मार्गमें वैष्णवोंके कुण्डलीला गणेशधारा मकान गौमुखी आदि पडते हैं, सहसावन बडा सुन्दर है आम्र आदि वृक्ष फल फूल आदिसे महा सज्जित रहता है। यहां आकर बडी शांति मिलती है। यहां दो देहरी २ चरणपादुका और १ शिलालेख है यहां भगवान नेमिनाथने दीक्षा धारण की थी, सबका दर्शनकर फिर जिस रास्तासे जाना हुआ था उसी रास्तासे तलेठी धर्मशालामें आ जाना चाहिये। यहां यात्रियोंकी इच्छा है वे जितने दिन चाहें ठहर सकते हैं। और जितनी वन्दना करना चाहें कर सकते हैं, यदि कोई यात्री असमर्थ हो तो वह डोली मांगकर उससे यात्रा करे। यह तीर्थ भी बडा पवित्र तीर्थ है। भक्तिपूर्वक वन्दना करनेसे समस्त पाप नष्ट हो जाते हैं।

इस परम पवित्र स्थानसे श्रीनेमिनाथ शंबु प्रद्युम्न आदि ७२ करोड मुनिराज मोक्ष पधारे हैं। इस क्षेत्रकी वंदना कर अपनेको धन्य समझना चाहिये और मनुष्य जन्म सफल मानना चाहिये। यहांकी यात्राकर स्टेशन लौट जाना चाहिये और वहांसे वेरावल स्टेशनका टिकट

खोलेना चाहिये, वेरालका भाडा १) लगता है। यदि कोई भाई गिरनारसे कहीं आगे जाना चाहें तो वह अपनी इच्छानुसार जा सकते हैं।

वेरावल स्टेशन

यहांसे आगे रेल नहीं समुद्र है इसलिये जहाज अग्निबोट आदिसे जाना पडता है। स्टेशनके पास थोडी दूरपर वैष्णव लोगोंका सोमनाथका मंदिर है, वह देखने लायक है। उसका हाल इस प्रकार है--

सोमनाथका मंदिर

समस्त हिंदुस्थानमें हिंदुओंका यह बडा भारी नामी तीर्थ स्थान है। प्राचीन कालमें अगणित हिंदुगण यहां आते जाते थे। जिस समय सूर्य चंद्र ग्रहण पडता था उस समय एकसाथ २०–३० लाख हिंदु लोग इस तीर्थ पर इकट्ठे हो जाते थे। यह मंदिर बडा विशाल था। इसके खंभे और भित्तियोंमें जवाहिरात जडी थीं। सन १०२६ ईसवी में बादशाह महम्मद उद्दीनने इसपर चढाई की थी। इस को तोड फोडकर खंड २ कर डाला। दरवाजेके सामने ५–६ गज ऊंची हिंदुलोगोंकी १ मूर्ति थी बादशाहने उसको भी तुडवा डाला। उसमें अरबोंकी जवाहिरात भरी थी सब ऊंटोंमें लदाकर अपने घर लेगया। यह क्षेत्र हिंदुओंका बडा भारी कीमती और नामी है। १) खर्चकर

यात्रियोंको हिंदुओंका यह प्राचीन मनोहर स्थान अवश्य देख आना चाहिये। यहांसे १ रास्ता अग्निबोटसे द्वारिकापुरी जाता है ॥) लगता है और एक दिन जानेमें खर्च होता है। यात्रियोंकी इच्छा वे वहां जावें या न जावें। यदि जाना इष्ट हो तो वहांसे स्टेशन जैतलसरका टिकट लेकर जूनागढ होते हुए जेतलसर आ जाना चाहिये।

जैतलसर जंकशन।

यह जंकशन स्टेशन है। शहर बहुत अच्छा है यहांसे गाडी बदलकर पोरबन्दर ष्टेशन जाना चाहिये। जैतलसरसे पोरबंदरका १।) लगता है।

पोर बंदर स्टेशन।

इस ष्टेशनपर उतर कर समुद्रके पास जाय ≈) टिकट देकर अग्निबोटमें बैठकर द्वारिका घाट उतर पडे। यहांसे समुद्रका रास्ता चारो ओर गया है। जहाज आदि यहां देखने योग्य हैं।

द्वारिका पुरी

घाटसे बैलगाडीकी सवारी मिलती है। यहांपर पास पासमें २ द्वारिका पुरी हैं। यहां हजारों हिंदुलोग तीर्थयात्राकेलिये आते हैं और अपने शरीरपर द्वारिकापुरीकी छाप लगवाते हैं। यहांपर १ दिगंबर जैन मंदिर है पूछकर वहां जाना चाहिये इस मंदिरमें भगवान नेमिनाथकी प्रतिमा और

चरण पादुका विराजमान हैं। यह स्थान भगवान नेमिनाथ का जन्म स्थान है। किसी किसी ग्रन्थमें उनका जन्मस्थान सूरीपुर लिखा है। हमें दोनों प्रमाण हैं। दोनों तीर्थ वंदनाके योग्य हैं। यथार्थ बातका निश्चय सिवाय भगवान केवलीके अन्यको नहीं हो सकता। यहांका दृश्य देखकर पोरबंदर ष्टेशन लौट आना चाहिये। और वहांसे राजकोट का टिकट लेना चाहिये।

राजकोट शहर

यहांपर शहरके भीतरसे १ विशाल नदी निकली है। जिससे शहरके दो टुकडे हो गये हैं। यहांपर स्टेशन २ हैं। यह शहर बडा ही रमणीक और सुहावना है। यहांपर बादशाही प्राचीन रचना बहुत है जो देखने योग्य है। यहांपर बडे २ दो जैन मंदिर हैं जो कि अत्यन्त मनोहर हैं। जैनियोंके घर बहुत हैं।

यहांसे १ रेल जामनगर तक जाती है। यह भी एक देखने लायक उत्तम शहर है। शहर जामनगर समुद्रके किनारे पर बसा हुआ है। वहांसे आगे रेल नहीं समुद्र है इसलिये जहाज आदिसे जाना आना पडता है। जामनगर से राजकोट ही लौट आना चाहिये। राजकोटसे महसाणा का टिकट लेना चाहिये।

महसाणा जंकशन

यहांपर १ धर्मशाला हिंदुओंकी स्टेशनके पास है। स्टेशनसे १ मीलकी दूरीपर शहरमें १ विशाल धर्मशाला श्वेतांबरोंकी है और वहींपर १ विशाल श्वेतांबर मंदिर है। वैसे तो यहां २७ मंदिर श्वेतांबरोंके हैं। यह मंदिर बहुत बडा है देखने योग्य है। महशाणा शहर अच्छा है।

महसाणासे ५ रेलवे लाइन जाती हैं। १ आबूरोड १ अहमदाबाद १ पाटन १ तारंगा १ वीरमगांव राजकोट। महसाणासे ।।≈) का टिकट लेकर तारंगा हिल जाना चाहिये। बीचमें १ वीशनगर और बडनगर नामके २ बडे भारी शहर पडते हैं उसके बाद तारंगा हिल स्टेशन आती है! तारंगासे आगे रेलवे नहीं जाती।

वीस नगर।

स्टेशनसे १ मीलकी दूरीपर शहर है। यह एक बडा भारी शहर है। यहांपर श्वेतांबर जैनियोंके एक मंदिरमें १ प्रतिमा दिगम्बरी भी विराजमान हैं।

बडनगर

यह एक बहुत प्राचीन बादशाही शहर है। शहर अच्छा है यहांपर १ गढ तालाब देखने योग्य है।

तारँगाहिल स्टेशन

स्टेशनके पास १ छोटासा गांव है। यहांपर १ श्वेतां-

बर धर्मशाला है। यहांसे पहाडकी तलेठी करीब ३ मील है। बैलगाडी ।) सवारीमें जाती है। पहाडकी तलेठीमें जाना चाहिये।

तलेठी

यहांसे करीब २ मीलकी दूरीपर धर्मशाला है, यहांपर कुली मजदूर डोलीवाले मिलते हैं। पहाडके कुछ हिस्सेके ऊपर होकर जैन धर्मशालामें जाना चाहिये।

दिगंबर जैन धर्मशाला

यहां १ विशाल जंगल है पहाडी प्रदेश है। यहांपर १ बहुत बडी धर्मशाला दिगम्बरियोंकी और १ श्वेतांबरियोंकी है। दिगंबर धर्मशालामें १३ मंदिर हैं। ये मंदिर बहुत प्राचीन हैं। मरम्मत की जा चुकी है। इन मंदिरोंमें सैकडों महा मनोहर प्राचीन प्रतिमा विराजमान हैं। एक विशाल मंदिर श्वेतांबर धर्मशालामें हैं। उनमें बडी भारी ७ गज ऊंची पद्मासन श्वेतवर्ण १ प्रतिमा श्रीअजितनाथ स्वामीकी विराजमान हैं। ५ पांच देहरी हैं जिनकी रचना बडी मनोहारिणी हैं। १ सहस्रकूट चैत्यालय नंदीश्वर द्वीपका ५२ पर्वत, सम्मेदशिखरजी ढाई द्वीपका नकशा सहस्र चरण पादुका गन्धकुटी आदि रचना दर्शनीय है। धर्मशालाके बाहर २ कुंड १ तालाब और जंगल है। कुछ दुकानदार यहां रहते हैं। सामान भी थोडा बहुत मिलता है। दोनों धर्म-

लोंमें २ पहाड हैं, १ पहाडकी चढाई १ मीलकी है। पहाड के ऊपर ४ देहरी हैं। बहुतसी प्राचीन प्रतिमा और चरण पादुका विराजमान हैं। इस पर्वतसे साढे तीन करोड मुनि मोक्ष पधारे हैं। यह स्थान पहिले तारवर नगर था जिसका यह सघन जंगल और खण्डहर हैं। इच्छानुसार यहांपर १-२-३ आदि यात्राकर स्टेशन लौट जाना चाहिए और वहांसे आबू रोडका टिकट लेलेना चाहिये। तारंगाहिल स्टेशनसे आबूका रेल भाडा २) लगता है, ध्यान रखना चाहिये कि आबू जाते समय महसाणा गाडी बदलनी पडती है।

आबूरोड स्टेशन।

स्टेशनके पास पहाडकी तलेटी और वहां १ छोटासा शहर है। थोडी दूरपर १ दिगंबर जैन धर्मशाला है और वहांपर १ चैत्यालय है। यहांपर सब सामान खाने पीनेका मिलता है, प्रतिदिन अच्छा बाजार लगता है। १ श्वेतांबर मंदिर १ धर्मशाला भी यहांपर है। १ विशाल नदी बहती है। यहांसे २० मीलकी दूरीपर दैलवाडा आबूका पहाड है, आबूरोडसे ४-५ दिनका सामान लेकर वहां जाना चाहिए पक्की सडकका रास्ता है। बैलगाडी मोटर गाडीकी सवारी मिलती है। रास्तेमें आबूकी छावनी भी पडती है।

श्रीदैलवाडा अतिशय क्षेत्र आबू पहाड।

यहांपर १ दिगंबर जैन धर्मशाला और १ बडा भारी

सुन्दर मंदिर है। मन्दिरमें अत्यन्त मनोहर शांत श्वेतवर्ण प्राचीन १३ प्रतिमा विराजमान हैं। इन प्रतिमाओंकी शोभा अवर्णनीय है। यहांका भक्तिभावसे पूजन करना चाहिए। यहांपर एक श्वेतांबर मंदिर भी है।

श्वेतांबरी मंदिर।

यह मंदिर एक विशाल मंदिर है। इसमें एक दिगंबर जैन मंदिर है अंदर प्रतिमा विराजमान हैं। पहिले उसका दर्शन करे। यह श्वेतांबर मंदिर बडी बडी २४ देहरियोंका है। यह मंदिर बडा कीमती और चित्रकारीके मनोहर कामसे विभूषित प्रसिद्ध है। बहुत दूर तकके मनुष्य इसे देखने यहां आते हैं। सुना जाता है कि इस मंदिरकी बनवाईमें १८ करोड रुपया खर्च हुआ था।

गुजरातमें १ भैंषा नामका बडा भारी साहूकार था उसीका बनाया हुआ यह मंदिर है। इसीने यहांके, अचलगढके मंदिर और प्रतिमाका निर्माण कराया था। इस मंदिरको देखकर यह आश्चर्य होता है कि कितनी वर्षोंमें इसका कार्य समाप्त हुआ होगा। इस मंदिरमें चौतर्फा बडी छोटी ५२ देहरी हैं। सब एकसे एक कीमती हैं मंदिरमें श्वेतवर्णकी बडी सुन्दर प्रतिमा विराजमान हैं। मंदिरके सामने पत्थरके हाथी घोडा सिंह एक कोठेमें देखने योग्य हैं। इसके बडे दालान बडे दर्शनीय हैं। मंदिर देखकर अपने स्थान पर

पहुंच जाना चाहिए। और यहांसे अचलगढ चला जाना चाहिये।

देलवाडासे अचलगढ ४ मीलकी दूरीपर है। बैलगाडा की सवारी मिलती है। पहाडी रास्ता है। अधिक सामान और कीमती वस्तुएं साथ नहीं लेजाना चाहिये।

अचलगढ

यहांपर गढके नीचे १ तालाब १ मैदान और कई हिंदु लोगोंके महादेवके मंदिर हैं। यह स्थान बडा ही रमणीय और दर्शनीय है। तालाबके घाटपर १ गऊकी मूर्ति है जो देखने योग्य है। रास्ताके ऊपर एक श्वेतांबरी मंदिर है। मंदिरके चरो ओर कोट खिचा हुआ है। कई प्राचीन मकान हैं।

यहांसे आधी मिलकी चढाईपर अचलगढ गांव बसा हुआ है। गांवके भीतर २ श्वेतांबर धर्मशाला हैं। दोनों धर्मशालाओंमें ३ मंदिर हैं। १ मंदिर अत्यंत विस्तृत और विशाल है, इस मंदिरमें श्वेतांबरी १४ प्रतिमा १४४४ मरा सुवर्णकी सुन्दर हैं। इस मंदिरके नीचे १ मंदिर और है। उसमें २४ देहरी हैं, फिर कुछ उरली तरफ १ मंदिर है उसे देखना चाहिये। साथमें मालीको रखना चाहिये यहांपर मंदिरके आदमियोंको कुछ इनाम देनेपर वे अच्छीतरह सब चीज दिखा देते हैं। यहांका सब दृश्य देखकर नीचे

उतर आना चाहिये और वहांसे देलवाडा लौटकर आबू रोड स्टेशन चला जाना चाहिये। आबू स्टेशनसे यात्रियोंको जोधपुरका टिकट लेना चाहिये, रास्तेमें मारवाड जंक्शन, जिसको खारडा शहर भी कहते हैं, पडता है, वह भी दर्शनीय है।

खारडा (मारवाड जंकशन)

यह शहर सुन्दर और रोनकदार है। एक जमींदारका बनाया हुवा है। यहांसे ३ रेलवे लाइन जाती हैं। १ आबु रोड १ लूणी और १ अजमेर।

लूनी शहर

यह शहर भी बहुत बढिया देखने लायक है. यहां कोई जैन मंदिर नहीं। अन्य कई चीजें देखने योग्य हैं। यहांसे १ रेलवे हैदराबाद करांची तक जाती है। यहांसे पाली स्टेशन जाना होता है।

पाली शहर

यह भी १ विशाल शहर है। बडा रोनकदार है. कई चीजें यहां देखने लायक हैं। जैन मंदिर कोई नहीं। यहांसे जोधपुर जाना चाहिये।

जोधपुर

यहां स्टेशनके पासमें १ दि० जैन धर्मशाला है

१ मंदिर है। शहरमें १ मंदिर श्वेतांबर दि० दोनोंका मिला हुवा है। दर्शन करना चाहिये। जोधपुर शहर १ चौपटे मैदानके अत्यन्त रमणीय स्थानपर वसा हुआ है। शहरके चारो ओर कोट है। ७ दरवाजे हैं, शहरमें घंटाघर बडा बाजार रानीकी मंडी ४ बडे तालाव राजा साहबकी कचहरी पुराना किला महेल बाग देखने लायक हैं। शहरसे ३ मीलके फासलेपर राजाकी १ छत्री जिसको वहां थडा बोलते हैं। संगमरमरकी बनी हुई है वह भी दर्शनीय है। शहरसे १ मीलके फासलेपर राजाका बडा भारी महल भी दर्शनीय है।

रेवाडी निवासी जैनी भाइयोंके जोधपुरमें ७ घर हैं। १ घर देशी ओसवाल दिगम्बर जैन भाईका है, यहांसे मेरता रोडका टिकट लेना चाहिये, जोधपुर शहरसे एक रास्ता जैसलमेर शहरको भी जाता है। यह शहर मारवाडका बडा शहर माना जाता है।

मेरता रोड जंकशन

अतिशय क्षेत्र श्रीफलोदी पार्श्वनाथ

स्टेशनके पास वस्ती है। वस्तीमें दिगम्बर जैनी भाइयोंके १२ घर हैं। वस्तीकी उरली ओर एक बडा भारी कोट है। कोटमें २ दरवाजे हैं, कोटके भीतर १ बहुत बडा प्राचीन मंदिर है, इस मंदिरमें प्रतिमा श्यामवर्णकी महा

मनोहर बालुकी बनी श्रीपार्श्वनाथ भगवानकी विराजमान हैं और भी अनेक मनोहर प्रतिमा विराजमान हैं। मारवाड प्रदेशमें यह १ नामी दिगंबर जैन मंदिर था परंतु दिगम्बरोंकी असावधानीसे अब यह श्वेतांबर हो गया, दिगंबरोंका हक अभी तक इस मंदिर पर है। आश्विन सुदी १० को प्रतिवर्ष यहां मेळा लगता है उस समय एक चौकमें बैठकर श्वेतांबर लोग पूजन करते हैं और १ चौकमें बैठकर दि० पूजन करते हैं। यात्रियोंको यह प्राचीन मंदिर अवश्य देखना चाहिये।

मेरता रोडसे ४ रेलवे लाइन जाती हैं। १ फुलेरा १ मेरता सिटी १ जोधपुर और १ बीकानेर। यहांसे पहिले मेरता सिटी आना चाहिये। रेल भाडा।–) लगता है।

मेरता सिटी

बस्ती स्टेशनके बिलकुल पास है. बहुतसी प्राचीन बादशाही चीजें देखने लायक हैं। यहांका बाजार अच्छा है, १ दि० जैन मंदिर और १० घर दिगम्बर जैनियोंके हैं। मंदिरमें बडी ही मनोहर प्राचीन प्रतिमा विराजमान हैं, यहांके दर्शनकर मेरता रोड लौट जाना चाहिये, मेरता सिटीसे आगे रेलगाडी नहीं जाती। मेरता रोडसे सामर स्टेशनका टिकट लेना चाहिये। बीचमें देगाना जंकशन पडती है यहां गाडी बदल लेनी चाहिये।

सामर स्टेशन

यह शहर स्टेशनके पास है, यहां महाराज जोधपुरका राज्य हैं। ४ बडे बडे दि० जैन प्राचीन मंदिर हैं। इनमें बहुत प्राचीन प्रतिमा विराजमान हैं।

यहां महाराजका गढ और बडे २ नमकके कारखाने हैं, उनको देखना चाहिये। दिगम्बर जैनियोंके घर यहां बहुत हैं। यहांसे टिकट कुचामन रोडका लेना चाहिये, बीचमें मकराना शहर जहांका कि मकराना पत्थर मशहूर है पडता है वह भी दर्शनीय है, वहां उतरना यात्रियोंकी इच्छापर निर्भर है।

कुचामन रोड

स्टेशनसे ७ मीलके फासलेपर कुचामन शहर है, ऊंट और बैलगाडीसे जाया जाता है। कुचामनमें ४ दिगम्बर जैन मंदिर और १०० घर दि० जैनियोंके हैं। इस शहरमें जाना न जाना यात्रियोंकी इच्छापर निर्भर है, यदि न जाना हो तो यहांसे लाडनू स्टेशनका टिकट ले लेना चाहिये। बीचमें देगाना और जसवंतगढ बडी २ स्टेशन पडती है। लाडनू जानेके लिये वहां गाडी बदली जाती है ध्यानमें रखना चाहिये।

श्रीलाडनू अतिशय क्षेत्र

जसवन्तगढसे १ रेल लाडनू तक जाती है, लाडनू

खुद स्टेशन है । शहर लाडनू स्टेशनसे एकदम लगा हुवा है, यह शहर विशाल है, यहां ५०० घर ओसवाल श्वेतांबर साधु मार्गियोंके हैं । १२० घर खुण्डेलवाल दिगम्बर जैनी भाइयोंके हैं । थोडे दिन हुये एक विशाल और कीमती दिगम्बर जैन मंदिर शहरसे कुछ बाहिरमें बनाया गया है । शहरके भीतर २ हजार वर्षका जमीनके नीचे १ महा मनोहर विशाल प्राचीन मंदिर है । इस प्राचीन मंदिर में २ हजार वर्षकी प्राचीन प्रतिमा विराजमान हैं जो कि महामनोहर और शांति छवि हैं । इन प्रतिमाके दर्शनोंसे बडा भारी आनंद होता है ।

यहांके स्त्री पुरुष धर्मके बडे प्रेमी जान पडते हैं यहां पर प्रातःकाल बडे ठाट बाटसे पूजन होती है प्रातःकालमें समस्त मंडली मंदिरमें आकर जमा होती है बडे आनन्दसे स्त्री पुरुष दोनों ही पूजाके पद्योंका उच्चारण करते हैं, और सामग्री चढाते हैं । यहांकी पूजा बडी दर्शनीय होती है । पूजाके समय आनन्दकी वर्षा सरीखी जान पडती है । शास्त्र सभा भी दिनमें २ बार होती है । बडा आनन्द मालुम पडता है ।

यहांपर १ पाठशाला १ कन्याशाला और १ सभा स्थापित है । यहांसे सुजानगढ ३ कोस या ६ मीलकी दूरी पर हैं वहां जाना चाहिये ।

सुजानगढ

यह शहर भी लाडनू शहरके समान है। यहांपर दि० जैनी भाइयोंके ८० घर हैं। १ विशाल मंदिर और एक नशियाजी हैं। बडी ही मनोहर प्रतिमा विराजमान हैं, पूजा शास्त्रसभा आदिका ठाट बाट यहां भी लाडनू सरीखा होता है।

यहांपर १ मंदिर श्वेतांबरी बडा कीमती है। करीब २ लाख रुपयोंकी लागतका बना हुआ है। यह मंदिर यहांपर दर्शनीय है। यहांसे २॥ मीलकी दूरीपर रेलवे स्टेशन है। सुजानगढसे १ गाडी चुरू और १ डेगाहाना जाती है। यहांसे यात्रियोंको नागोरका टिकट लेना चाहिये। डेगाहाना गाडी बदलनी पडती है।

नागोर स्टेशन

स्टेशनसे १ मील पूर्व दिशाकी ओर शहरके दरवाजे के पास १ दि० जैन नशियाजी हैं। नशियाजीके चारो ओर कोट खिचा हुआ है। बीचमें १ धर्मशाला और १ बडा भारी मंदिर है। यहांपर मंदिरमें बडी मनोहर प्रतिमा विराजमान हैं। धर्मशालामें कुआ टट्टी आदि सब बातोंका आराम मिलता है।

यहांसे १ मीलकी दूरीपर बीस पन्थी दिगंबर जैन मंदिर हैं वहां जाना चाहिये। यहांपर भट्टारक हर्षकीर्ति-जीकी गादी है। यहांपर भट्टारकजीके बनायेहुए २ विशाल

मंदिर बडे ही भव्य और मनोहर हैं। ये मंदिर प्राचीन ढंगके हैं। एक धर्मशाला और कुछ मकानात भी हैं। एक मंदिरजीमें छह बेदी हैं। प्रतिमा बडी मनोहर और विशाल विराजमान हैं सभी प्रतिमा प्राचीन हैं। इनके दर्शन करते ही चित्तमें वैराग्य भावना उदित हो जाती है। इन प्रतिमाओंके दर्शनका माहात्म्य बडा अद्भुत है। यहांपर लोगोंका कहना है कि मन्त्र बलसे भट्टारकजीने किसी क्षेत्रसे ये प्राचीन प्रतिमा मगाई थीं। वास्तवमें प्रतिमा बडी चमत्कारी हैं, यहांका दर्शन कर, कुछ दूरपर तेरापन्थी मंदिर है वहांपर जाना चाहिये।

नागौर शहर बडा प्राचीन है चारो ओर कोटसे घिरा हुआ है। बडा भारी शहर है। यहांकी प्राचीन मकानात और उसपरकी खुदाई बडी मनोहर है, यहांपर एक बादशाही मस्जिद ४ तालाव जिनको कि यह गिदानी कहते हैं, बाजार कचहरी प्राचीन किला, किलेमें राजा और रानी के महल सुरंग तालाव बावडी कुंड हौज सभा स्थान कचहरी २ साधुओंकी मूर्तियां मोती महल आदि चीजें देखने योग्य हैं। नागौरमें दिगम्बर जैनियोंके करीब १०० के घर हैं। यहांपर खंडेलवाल भाइयोंका विशेष रूपसे निवास है प्रांत भरमें खण्डेलवाल भाइयोंके ही अधिक घर हैं। यहांसे बीकानेरका टिकट लेना चाहिये।

बीकानेर शहर।

यहांपर ष्टेशनसे १ मीलकी दूरीपर १ दिगम्बर जैन मंदिर और धर्मशाला है. वहीं पर यात्रियोंको उतरना चाहिये। मंदिरमें ९ प्रतिबिंब बहुत ही मनोज्ञ विराजमान हैं पास ही में एक बडा भारी कुण्ड है जो दिगम्बर सरावगियों द्वारा बनवाया हुआ है।

बीकानेर शहर बहुत बडा और प्राचीन है। यहांपर श्वेतांबर बीसपंथ तेरापंथ साधुमार्गी वा मंदिरमार्गियोंके साढे पांच हजार घर हैं, ४ घर दि० जैनियोंके हैं। यहां हरएक प्रकारका व्यापार चलता है, यहां ३६ मंदिर श्वेतांबरोंके हैं। सब ही देखने लायक हैं परन्तु ९ मंदिर बहुत ही बढिया और कीमती हैं। १ मंदिरमें श्रीऋषभ देवकी श्वेत वर्णकी बडी प्रतिमा है, चिंतामणिजीके मंदिरके भंडारमें हजारों प्रतिमा हैं। सूचना देनेपर १ दिन बाद ये प्रतिमा दिखाई जाती हैं। यहां बडी २ प्राचीन प्रतिमा बतलाते हैं, यहांके लोगोंका कहना है कि जब शहरमें किसी रोगकी अधिकता होती है उस समय सब प्रतिमाओं को सिंहासनमें विराजमानकर शहरके सभी नर नारी उनका दर्शन कर लेते तब रोग एकदम नष्ट हो जाता है।

यहां राजाका राजस्थान पुराना किला, किलेमें रानि-

योंके बडे २ महल शीश महल दशहराभवन मोती महल आदि दर्शनीय हैं। १ नया महल बनाया गया है उसमें पत्थरकी खुदाईका काम सभाभवन इत्यादि चीजें देखने लायक हैं। किसी कारभारीको संग लेकर देखना चाहिये. किलेके बाहर मैदानमें तोपखाना १ तालाव, राजाकी तसबीर छत्री कचहरी कोर्ट आदि देखने लायक हैं। शहरसे २ मीलके फासलेपर लालगढ और दूसरा गढ है। उरली तरफ बडी लाइब्रेरी और एलकार लोगोंके लिये सभा बाग कचहरी आदि हैं सबको देखकर स्टेशन आ जाना चाहिये और वहांसे हिसारका टिकट ले लेना चाहिये।

विशेष—रास्तेमें रत्नगढ़ और चुरू पडते हैं रत्नगढपर गाडी बदलनी पडती है। चुरूमें १ दि० जैन मंदिर है और २२ घर दि० जैनियोंके हैं। ये भाई सब अग्रवाल हैं। रत्नगढसे १ रेल बीकानेर १ देगाहाना और १ हिसार जाती है। रत्नगढसे कच्चा रास्ता अनेक मारवाडके गांवोंमें जाती है। मारवाड देशमें पानी कम वर्षता है, कूवे भी बहुत गहरे होते हैं, बारहो मास वहां पानीकी बडी असुविधा रहती है। यहांके लोग तथा पशु कष्ट सहिष्णु बडे मजबूत और हिम्मतदार होते हैं, यहांके पशु ऊंचे होते हैं। मारवाडमें बालुके ढेर बहुत हैं। यह स्थान बडा रमणीक और शोभनीक है, चुरूसे कच्चा रास्ता रामगढ राणोली आदि बहुतसे गांवोंमें जाता है, मारवाडमें अधिक बालु

होनेसे ऊंट और ऊंट गाडीकी सवारी मिलती है बैलगाडी आदि नहीं चल सकती।

बीकानेरसे १ रेल गाडी१ रत्नगढ और १ मेरता रोड तक जाती है, हिसार जाते समय रत्नगढमें गाडी बदलनी पडती है।

हिसार

स्टेशनके पास अन्यमतियोंकी १ धर्मशाला और कुछ बस्ती है, यहांसे १॥ मीलके फासलेपर शहर है। शहर प्राचीन है इसे अग्रवाल जैनी भाइयोंने बसाया था, १ मंदिर है जो कि बडा मनोज्ञ है। ७० मकान अग्रवाल दि० जैनी भाइयोंके हैं, यहां कई पुरानी चीजें देखने लायक हैं, कवि न्यामतसिंहजीका निवास यहीं है।

यहांसे १ रेलवे भिवानी होकर देहली जाती है, एक लाइन गुहाना होते हुए देहली जाती है। १ रत्नगढ चुरू सुजानगढ जसवन्तगढ होकर देगाहाना जाती है, यहांसे टिकट देहलीका लेना चाहिये, बीचमें भिवानी उतर जाना चाहिये।

भिवानी

यह कसबा विशाल तथा रोनकदार है, ४ दि० जैन मंदिर हैं। अनुमान १०० के दि० जैनियोंके मकान हैं। १ धर्मशाला और १ पाठशाला है।

देहली शहर

स्टेशनसे १ मीलके फासलेपर सेठका कूचा अनारम-लीमें १ धर्मशाला और २ जैन मंदिर हैं। १ धर्मशाला और १ मंदिर धर्मपुरामें है, जहां इच्छा हो वहां चला जाना चाहिये, यहां बडे २ मंदिर २१ और ५ चैत्यालय सब मिलाकर २६ मंदिर हैं। इन सबोंमें १४ मंदिर बहुत बडे तथा कीमती हैं, दि० जैनी भाइयोंके १५० मकान हैं।

देहली नगरी बहुत प्राचीन है, यहां के सिंहासनपर बडे २ नृप हो गये हैं पुराने ढंगसे यह कसवा बसा हुआ है। हर एक प्रकारका यहां व्यापार होता है। यहां बडा बाजार सदरमंडी चांदनी चौक हुमायुंका मकबरा कम्पनीबाग अजायबघर जुम्मा मस्जिद जनरल बाग जंगका मकबरा काली मस्जिद किला किलेके भीतर मकान बादशाही तख्त ११ मीलके फासलेपर २३८ फुट ऊंची कुतुबकी लाठ आदि चीजें देखने लायक हैं, यहां कसीदा रेशमी जरी आदिकी चीजें और भी हर एक प्रकारका माल मिलता है।

देहलीसे १ रेलवे मथुरा १ माटोंदा १ अम्बाला, एक हिसार १ मेरठ १ हाथरस १ मुरादाबाद १ सहारनपुर १ रेवाडी फुलेरा आदि ७ लाइन जाती हैं। देहलीमें एक विधवाश्रम और १ अनाथाश्रम है। यहांसे टिकट खेखडाका लेना चाहिये। खेखडा सहारनपुर लाइनमें पडता है, बीच

में स्यादरा जंकशनपर गाडी बदलकर छोटी लाइन सहारनपुर जाती है। खेखडा देहलीसे चौथा स्टेशन है।

खेखडा स्टेशन

श्रीबडागांव अतिशय क्षेत्र।

खेखडा स्टेशनसे ३ मीलकी दूरीपर श्रीबडागांव अतिशय क्षेत्र है। तांगाकी सवारीसे जाना पडता है, यह ग्राम छोटासा है। गांवके पास जंगलमें १ छोटासा पहाड है यहांके लोग इस पहाडको श्रीपार्श्वनाथ टीला बोलते हैं। अभी थोडे ही दिन हुए कि इस टीलाको खोदा गया और उसमें से १ प्रतिमा श्रीपार्श्वनाथ भगवानकी और १ प्रतिमा ऋषभ देव भगवानकी बडी सुन्दर निकली हैं। एक छोटासा यहांपर कुवा है, पानी बहुत कम है परन्तु पीनेमें अमृत सरीखा मीठा है। अनेक रोग पीडाओंको दूर करने वाला है। यहांकी यात्राकर देहली लौट जाना चाहिये और देहलीसे गाडी बदलकर मेरठ चला जाना चाहिये।

मेरठ शहर

स्टेशनसे १ मीलकी दूरीपर केशर गंज कंवो दरवाजेके पास जैन धर्मशाला है। अन्य भी शहरमें ४ धर्मशाला और ६ सराय हैं। जहां उचित समझें यात्री उतर जावें, यहां पर बडे बडे ४ मंदिर कीमती मीनारके कामके बने हुए हैं उनमें १ मंदिर तोपखानेके पास १ छावनीमें १ सदूर बा-

जारमें और १ शहरमें हैं। तलाशकर सबका दर्शन करना चाहिये।

शहर बाजारमें १ महेश्वरका मंदिर सूरजकुंड महल आदि चीजें देखने योग्य हैं। यहांपर दि० जैनी भाइयोंके घर करीब ११० हैं। यहांसे २२ मीलकी दूरीपर हस्तिनागपुर अतिशय चेत्र है, मवानातक पक्की सडकका मार्ग है। फिर गाडी से जाना होता है। मेरठसे ४-५ दिनका खाने पीनेका सामान लेकर यात्रियोंको हस्तिनापुर जाना चाहिये।

श्रीहस्तिनापुर अतिशय क्षेत्र

यहांपर १ मंदिर और १ धर्मशाला है, यहांसे चार मीलकी दूरीपर ३ नसिया तीनों भगवानकी हैं। नसिया में चरणपादुका हैं। मंदिरमें प्राचीन प्रतिमा विराजमान हैं। मंदिर और धर्मशाला दोनों ही प्राचीन हैं। यह स्थान पांडवोंकी राजधानी है, यहांपर श्रीशांतिनाथ कुन्थनाथ और अरनाथ भगवानका जन्म हुआ था। श्रीमल्लिनाथ भगवानका समवसरण आया था। यहांसे ४ मीलकी दूरीपर १ बेहूमा नामकी बस्ती है वहां १ मंदिर है, वहापर दर्शन कर हस्तिनापुर लौट आना चाहिये। हस्तिनापुरसे मेरठ आना चाहिये और वहांसे रेलमें अलीगढ चला जाना चाहिये। बीचमें गाजियाबाद जंक्शनपर गाडी बदलती है।

अलीगढ

स्टेशनसे १ मीलकी दूरीपर सेठ सोनपाल ठाकुर दास की धर्मशाला है वहां ठहरना चाहिये। सब बातका आराम मिलता है, वहांपर १ मंदिर है १ मन्दिर लखीकी सराय में है ४ मंदिर शहरमें हैं। सब मन्दिर कीमती और बढिया हैं सबका दर्शन करे। यदि शहर देखनेकी इच्छा हो तो देख लेवे। अलीगढमें दि० जैनी भाइयोंके घर बहुत हैं अलीगढसे आंवलाकी टिकट लेना चाहिये करीब ।) लगता है।

आंवला स्टेशन

यहांसे ६ मीलकी दूरीपर रामनगर है इसे राजनगर अहिच्छित भी कहते हैं, यात्रियोंको क्षेत्र पर जाना चाहिये. बैलगाडीसे जाना होता है।

श्रीअहिक्षितजी अतिशय क्षेत्र।

राजनगर १ छोटासा गांव है, १ धर्मशाला है। यहां प्रतिवर्ष चैत्रवदी ८ से १२ तक मेला होता है। यहांपर १ मालीके घरमें श्रीपार्श्वनाथ भगवानकी चरण पादुका प्राचीन सातिशय विराजमान हैं। श्रीपार्श्वनाथ भगवानने इसी क्षेत्र को अपनी उग्र तपस्यासे पवित्र बनाया था। इसी क्षेत्र पर दुष्ट कमठने उनपर उपद्रव किया था। पद्मावती और धर- णेन्द्रने आकर वह उपसर्ग दूर किया था और उपसर्गके

अंतमें भगवान पार्श्वनाथको इसी क्षेत्रपर केवल ज्ञान हुआ था यह बडा ही पवित्र और रमणीक स्थान है। यहांकी यात्राकर यात्रियोंको हाथरसका टिकट लेकर वहां जाना चाहिए।

हाथरस

स्टेशनसे पावमीलकी दूरीपर दिगंबर जैन धर्मशाला है। वहांपर जाकर उतर जाना चाहिये। यहांपर ३ बडे २ मंदिर हैं ये सभी मंदिर सुनहरी मीनारके कामसे शोभित महारमणीक हैं। इनके अन्दर बडी ही मनोहर प्रतिमा विराजमान हैं. शहर भी उज्ज्वल और दर्शनीय है, दि० जैनी भाइयोंके घर करीब ४० हैं। यहांसे रेलवे १ मथुरा १ आगरा और १ कासगंज जाती है, यात्रियोंको यहांसे मथुरा जाना चाहिये।

मथुरा

स्टेशनसे ढाई मीलकी दूरीपर चौरासी क्षेत्र है। वहांपर १ विशाल धर्मशाला और बडा भारी मजबूत १ मनोहर मंदिर हैं। यहांसे श्रीजंबूस्वामी भगवान मोक्ष पधारे हैं। यह स्थान बड़ा ही रमणीय है, यहांका मंदिर बडी ऊंची कुर्सीपर प्राचीन ढंगका बना हुआ बडा सुहावना है। मंदिरमें ४ वेदी हैं, चारो वेदीमें महा मनोहर प्रतिमा विराजमान हैं। सामनेकी वेदीमें महा मनोहर विशाल प्रतिमा श्रीअजितनाथ महाराजकी विराजमान है। भगवान अजित-

नाथजीकी प्रतिमाके दर्शनोंसे चित्तमें बडा भारी आनन्द और उत्साह होता है। प्रतिमाजीके सामने ही भगवान जंबू स्वामीकी चरणपादुका हैं, यहांपर १ विशाल कुवा बाग नहर आदि दर्शनीय चीज हैं, सब बातका आराम मिलता है, जैन समाजमें प्राय: सस्त पंडितोंकी विद्वत्ताका उत्पादक भारतवर्षीय दि० जैन महाविद्यालय भी इसी चौरासी क्षेत्र पर है। यात्रियोंको विद्यालयका अवश्य निरीक्षण करना चाहिये।

यहांसे २ मीलकी दूरीपर मथुरा शहर है। जानेकेलिए पकी सडक है हर समय तांगा आते जाते रहते हैं, शहरमें घीया मंडीमें १ दि० जैन धर्मशाला और बडाभारी मंदिर है। एक घाटीपर मंदिर है, १ चैत्यालय राजा लक्षमणदास जीकी हवेलीमें और एक उसीके पास उनके पुराने संबंधीके घरमें है। १ चैत्यालय जमुनाजीकी परलीपार गोकुलके पास है, वहांपर नावोंमें बैठकर जाना पडता है। मथुरामें दिगंबर जैनी भाइयोंके घर कुल १२ हैं, यहांका शहर बडा ही सुंदर है सब जगह शहरमें पत्थरका फर्स बिछा हुआ है जो कि अत्यन्त सुहावना जान पडता है। यहांपर वैष्णव लोगोंके मंदिर बहुत हैं, एकसे एक विशाल और सुंदर हैं। यहांपर वैष्णवोंके मंदिर विश्रांत घाट आदि जमुनाजीके घाट जमुना बाग आदि चीजें देखने योग्य हैं।

मथुरासे ६ रेलवे लाइन गई हैं, १ आगरा १ अलीगढ

१ दहली १ रतलाम (नागदा लेन) १ वृंदावन और १ अछनेरा गई है। यहांसे भाइयोंको वृन्दावन जाना चाहिए।

वृंदावन

यह शहर स्टेशनके पास है, यहांपर १ दिगंबर जैन मंदिर और ४ घर अग्रवाल दि० जैनी भाइयोंके हैं। मंदिर बहुत प्राचीन और सुन्दर है, यहांपर वैष्णवोंके जेत खंभ टेढे खंभ आदि बहुत मंदिर हैं। इन मंदिरोंमें एकसे एक संगीन मंदिर बना हुवा है। सभी देखने योग्य हैं। वृन्दावन देखकर वापिस मथुरा चला आना चाहिये, और स्टेशन पर जाकर वहांसे पटुदा महावीर रोडका टिकट लेकर चन्दनगांव श्रीमहावीर अतिशय क्षेत्रको चला जाना चाहिए।

पटुदा महावीर रोड ष्टेशन, चंदन गांव श्रीमहावीर अतिशय क्षेत्र

चन्दन गांव स्टेशनसे ३ मीलके फासलेपर है, बैल गाडीसे जाना होता है। यह १ छोटासा गांव है, एक छोटीसी नदी बहती है। यह ग्राम चौपट मैदानमें है, यहां १ महावीर (हनुमान) की बडी भारी मूर्ति है, हिंदु लोग भक्तिभावसे इसे पूजते हैं और इसके दर्शनार्थ बडी २ दूरसे आते हैं। इसी मूर्तिके सम्बन्धसे स्टेशनका महावीर रोड नाम मशहूर है, यहां १ विशाल दि० जैन धर्मशाला है।

जैपुर निवासी भट्टारकजीकी गादी है, यहांके मंदिरका प्रबन्ध उन्हींके हाथमें है। यहां हजारों यात्री यात्राके लिये आते हैं। हमेशा यात्रा तथा बोल कबूल चढानेको यात्रियोंका आवागमन बना रहता है। चैत्रमासमें ८ दिनकेलिये यहां बडा भारी मेला होता है. यहां ३ मंदिर जादुरायके बनाये हुए बडे भारी और मजबूत हैं। पांच जगह प्रतिमा विराजमान हैं जो कि बडी ही मनोहर हैं. १ प्रतिमा सातिशय महा मनोहर प्राचीन जमीनसे निकली हुई श्रीमहावीर स्वामीकी विराजमान है। इस प्रतिमाकी मनोहारिणी सुंदरता अवर्णनीय है. इसके दर्शन करने मात्रसे दर्शकोंका अभीष्ट सिद्ध हो जाता है और शरीर मारे आनन्दके पुलकित हो निकलता है, यहां चित्त इतना आनंदित होता है कि मंदिर छोडकर जी आनेको नहीं चाहता। यहांकी श्रीमहावीर स्वामीकी प्रतिमाजीकी महिमा और यश सर्वत्र फैला हुआ है। यह बहुत प्रसिद्ध क्षेत्र है, यहां हमेशा घृतका दीपक जलता है और गीत नृत्य आदि सदा हुआ करते हैं।

यहांका अतिशय

१ ग्वाला जंगलमें हमेशा गाय चुराने जाया करता था. जिस जगहपर ये प्रतिमाजी थीं उस जगह १ गऊका हमेशा दूध निलककर पड जाता था। जिसकी गऊ थी उसने ग्वालासे दूधके बाबत पूछा तो ग्वालाको बडा आश्चर्य हुआ

और उसने कहा कि भाई ! मैं तो इसका दूध लेता नहीं कहां चला जाता है, तलाश करूंगा। तदनुसार उसने तलाश किया और जहां दूध गिरता था उस जगहको तलाश लिया।

शामको वह घर आया और वहां क्यों दूध गिरता है रातको इसी बातकी चिंता करता २ वह सो गया, रात्रिको उसे यह स्वप्न हुआ कि जहां दूध झड पडता है वहां १ प्रतिमा विराजमान है उसे निकलवावो। प्रातःकाल होते ही ग्वालाने सब लोगोंसे अपने स्वप्नका समाचार कहा सब लोग जंगलमें आकर इकट्ठे हुए और जहां दूध गिर पडता था उस जगहको खोदना शुरू कर दिया। ज्योंही वह स्थान थोडासा खोदा कि भीतरसे आवाज सुन पडी कि 'धीरे धीरे' खोदो मुझे लगती है, यह सुनकर तो लोगोंके आश्चर्यका और भी ठिकाना न रहा। उन्होंने धीरे २ हाथसे कुचेरना शुरू किया। थोडी देर बाद प्रतिमाजी निकली और कुछ उनकी नासिका खण्डित निकली प्रतिमाजीको ग्वालाके घरपर ही विराजमान कर दिया। यह समाचार जैपुर और आगराके भाइयोंको मिला वे शीघ्र इस जगह आये। दर्शन पूजन किया। लोगोंने जैपुर तथा आगरा प्रतिमाजीको ले जाना चाहा परन्तु प्रतिमाजी न जा सकीं। जिस गाडीसे वे ले जाते थे वह गाडी भी कई बार टूट गई। हारकर फिर प्रतिमाजीको उसी जगह विराजमान रहने दिया और वहां १ आदमीको पूजा प्रक्षालके

लिये नियत कर दिया। तबसे प्रतिमाकी महिमा दिन दिन बढती ही चली गयी और हजारों स्थानके लोग उनके दर्शन और यात्राके लिये आने जाने लगे।

जैपुरमें एक बाजूराय नामका जागीरदार था। उससे कुछ अपराध हो गया. वह कैद कर दिया गया। उसका घर लुटवा लिया गया और उसे शूलीकी सजाका हुक्म हो गया। बाजूरायसे उस समय और कुछ चेष्टा न बन पडी। उसने इन्हीं श्रीमहावीर भगवानकी प्रतिमाका ध्यान धरा। सुबह होते २ राजा स्वयं उससे प्रसन्न हो गया। बाजूरायको उसने छोड दिया और ५००) रुपये साला-नाकी उसे जागीर दी। जब बाजूरायने अपनेको कैदसे मुक्त देखा तो वह इन्हीं प्रतिमाजीकी कृपाका फल समझ चन्दनगांव आया। भक्तिभावसे भगवानकी पूजा की। विशाल २ मंदिर बनवाये और वह जो ५००) की जागीर मिली थी इसी मंदिरके लिये अर्पण कर दी।

आजतक वह जागीर ज्यों की त्यों है और प्रतिमाजी का अतिशय भी जग जाहिर है। यहांकी यात्राकर यात्रियों को पहुदा महावीर रोड स्टेशन आना चाहिये और वहांसे जैपुरका टिकट लेलेना चाहिये। रास्तेमें भरतपुर शहर पडता है, भरतपुर महाराजकी यह राजधानी है। इसका देखना न देखना यात्रियोंकी इच्छापर निर्भर है महावीर रोडसे जयपुरका रेलभाडा १) लगता है।

जैपुर

स्टेशनसे १ मीलके फासलेपर शहर है। यहां एक धर्मशाला सेठ नथमलजीकी और १ धर्मशाला दीवानजीकी है। इसप्रकार २ धर्मशाला हैं। जहां इच्छा हो उतर जाना चाहिए, दोनों जगह किसी बातकी तकलीफ नहीं। जयपुरमें ६५ मंदिर बडे २ और १३५ चैत्यालय हैं। इनके अन्दर हजारों नई प्राचीन प्रतिमा विराजमान हैं। एक आदमीको संग लेकर सबका दर्शन करना चाहिये। जैपुरमें पहिले जैनी लोग ही अधिकतासे रहते थे इस लिये इसको जैन-पुरी भी कहा जाता है। इसी पुण्य क्षेत्रपर पं० टोडरमलजी पं० सदासुखदासजी पण्डित रत्नचन्द्रजी पं० जयचन्दजी पं० माणिकचंदजी पं० देवीदासजी पं० कृष्णदासजी आदि अनेक विद्वानोंका जन्म हुआ था। जिनके बडे २ टीका ग्रन्थ और मूल ग्रन्थोंके आधारपर आज जैन धर्म गौरवकी दृष्टिसे देखा जा रहा है। इस समय भी जैपुरमें दि० जैनी भाइयोंके बहुतसे घर हैं। विद्वान भी मौजूद हैं। जयपुर शहर हिन्दुस्थानमें १ प्रसिद्ध शहर है। यहां किला दो बडे २ चौक बाजार राजा साहबका महल बडा तालाब प्रतिमाओंका कारखाना अजायब घर रामबाग आदि चीजें दर्शनीय है। यहांसे ३ मीलके फासलेपर घाटका मन्दिर है। वहां जाना चाहिये पक्की सडक है। तांगा आते जाते हैं

घाटका मंदिर

यहां करीब आधी मीलके घेरेमें ७ मंदिर हैं। ये सभी मंदिर विशाल और उत्तमोत्तम हैं बहुत लागतके बने हुये हैं। इनमें बडी कीमती अनेक प्रतिमा विराजमान हैं। यहां दर्शनकर फिर लौटकर जैपुर जाना चाहिये। जैपुरसे एक रेलवे लाइन कुशलगढ १ देहली १ सांगानेर १ सवाई माधोपुर १ फुलेरा अजमेर और १ आंबेर नसीराबाद अजमेर तक जाता है। यात्रियोंको जयपुरसे सांगानेर जाना चाहिये —)॥ भाडा लगता है।

सांगानेर

स्टेशनसे ३ मीलके फासलेपर सांगानेर शहर है। पहिले यह शहर बडा भारी नामी था। यहांपर पहिले बडे बडे धनवान विद्वान और व्यापारी रहा करते थे परंतु वर्तमानमें यह शहर ऊजडसा हो गया है और जयपुर आबाद हो गया है। लेकिन इस समय भी यह शहर चारों ओरसे परकोटेसे वेष्टित प्राचीन ढंगका बडा सुन्दर जान पडता है। यहांपर १ विशाल धर्मशाला और ७ मंदिर हैं जो कि बडे मजबूत प्राचीन कीमती मनोहर हैं। वास्तवमें यहांके मंदिरोंके समान जैपुरमें १ भी मंदिर नहीं है. इन मंदिरोंमें हजारों महा मनोहर प्रतिमा विराजमान हैं। दर्शन करनेसे बडा आनंद प्राप्त होता है। सांगानेरमें इससमय एक भी जैनीका

घर नहीं । यहांसे यात्रियोंको सवाई माधोपुरका टिकट लेना चाहिये ।

विशेष—सांगानेरसे सवाई माधोपुर जाते समय मार्गमें टोंक शहर पडता है । यह शहर पुराने ढंगका एक सुन्दर शहर है । नवाबका राज है । यहांपर बडे बडे ७ मंदिर हैं । १ पाठशाला और २०० घर श्रावकोंके हैं । टोंक शहरसे १॥ मीलके फासलेपर १ बडा नसिया है । यहांका काम संगमरमर पत्थरका बना हुआ बडा कीमती है । १ प्राचीन वैष्णवोंका मंदिर और १ तालाब भी यहां देखने लायक है ।

सवाई माधोपुर

यह शहर स्टेशनसे ४ मीलकी दूरीपर है, तांगा जाते आते हैं । यह शहर भी प्राचीन ढंगका बडा सुन्दर है । बाजार यहांका देखने लायक है. यहांपर १ धर्मशाला और ७ बडे २ मंदिर हैं । १५० घर दि० जैनी भाइयोंके हैं । यहांके सभी मंदिर बडे मनोहर और प्राचीन ढंगके हैं ।

स्टेशन और शहरके बीचमें कुछ फासलेपर १ चमत्कारजी अतिशय क्षेत्र है । इसे यहांपर आलीनपुर बोलते हैं, यह क्षेत्र स्टेशनसे दो मील और शहरसे २ मीलके फासलेपर है । यहांपर तांगा या बैलगाडीसे जाना चाहिये ।

श्रीचमत्कारजी अतिशयक्षेत्र आलीनपुर

यहांपर १ प्राचीन अत्यंत सुंदर मंदिर है इसके अंदर बहुतसी मनोहर प्रतिमा विराजमान हैं। मूलनायक प्रतिमा श्रीआदिनाथ भगवानकी विराजमान हैं जो कि महामनोहर सातिशय है। यहां केसरवृष्टि दुंदुभि बजना आदि देवोंकृत अनेक प्रकारके अतिशय सुननेमें आते हैं, यहांपर १ प्रतिमा श्रीमाणिक स्वामीकी स्फटिकमयी विराजमान हैं। यहांसे यात्रियोंको स्टेशन चला जाना चाहिये और वहांसे कोटा (बूंदी) का टिकट लेना चाहिये।

कोटा (बूंदी) जंकशन

स्टेशनसे ५-६ मीलकी दूरीपर शहर है ≈) सवारीमें तांगा जाते हैं। शहरमें १ दि० जैन धर्मशाला है ११ बडे २ मंदिर और ३०० घर दि० जैनी भाइयोंके हैं। इन मंदिरोंमें नई पुरानी हजारों प्रतिमा विराजमान हैं जो कि महामनोहर हैं। शहरसे दो मीलके फासलेपर नशियांजी है। वहां एक प्राचीन मनोज्ञ मंदिर बना हुआ है। हजारों सुंदर प्रतिमा विराजमान हैं। सबका अच्छीतरह दर्शन करना चाहिये।

कोटा नरेश छत्रधारी राजा हैं। यह शहर चारो ओर परकोटा और खाईसे घिरा हुआ महामनोहर है, इसमें ९ दरवाजे हैं यहां चम्बल नामकी नदी बहती है। नदीका पुल

राजा साहबका महल तोपखाना बाग तालाब बाजार आदि चीजें देखनेलायक हैं। २० मीलके फासलेपर यहांसे बूंदी शहर है बूंदी १ प्रसिद्ध और देखनेलायक शहर है वहां अवश्य जाना चाहिये।

कोटासे ४ रेलवे लाइन जाती हैं। १ नागदा १ मथुरा १ बीना इटावा और एक अभी नयी लाइन निकली है।

बूंदी शहर

यह शहर बडा भारी प्राचीन और नामी है। इस शहरके चारो ओर कोट और उसमें ४ दरवाजे हैं। ११ बडे २ दि० जैन मंदिर है। एक बडी भारी नशियाजी है। इन सबकी शोभा बडी मनोहर है. २०० घर दि० जैनी भाइयोंके हैं। १ पाठशाला है. यहांपर किला महल गढ आयुधशाला टकशालघर अस्पताल स्कूल, किलेमें हिन्दुओंका मंदिर छत्रियां फुलबाग नया बाग इत्यादि चीजें देखने योग्य हैं। यहांसे कोटा लोट जाना चाहिये तथा यहांसे बैलगाडी या तांगासे श्रीकेशवजीका पाटनगांव अतिशय क्षेत्र चला जाना चाहिये।

श्रीकेशवजीका पाटनगांव अतिशय क्षेत्र

यह एक छोटासा गांव है। यहांएक प्राचीन कालका महा मनोहर सुंदर मंदिर है. मंदिरमें बहुतसी महामनोहर चौथे

कालकी प्रतिमा विराजमान हैं। भगवान मुनि सुव्रतनाथकी एक प्रतिमा यहां बडी मनोहर है । यहां भगवान महावीर स्वामीका ७ वार समवसरण आया था इसलिये यह महान अतिशय क्षेत्र है । यहांसे लोटकर कोटा चला जाना चाहिये । यहांसे झालरापाटन रोडका टिकट लेना चाहिए।

झालरापाटन (अतिशय क्षेत्र)

स्टेशनसे २० मीलकी दूरीपर झालरापाटण शहर है । प्रति समय मोटर बैलगाडी तांगे स्टेशनपर मिलते हैं। यहां १ दि० जैन धर्मशाला है। यात्रियोंको वहां जाकर ठहरना चाहिये । यहां सब १४ मंदिर हैं और १ नशियाजी है। १ मंदिर प्राचीन विस्तृत बहुत बडा है । उसमें १४ गज-खड्गासन महामनोहर पवित्र १ प्रतिमा श्रीशांतिनाथ भगवानकी विराजमान हैं। यह प्रतिमाजी गम्टेककी प्रतिमा सरीखी है और भी चौतर्फा इस मंदिरमें छोटे २ मंदिर हैं. जिनमें हजारों प्रतिमा विराजमान हैं। यहांपर पूजा, गायन भजन आरती आदि बारहो मास बडे ठाट बाटसे होता है। पूजा आदिके समय चतुर्थकाल सरीखा अपूर्व दृश्य दीख पडता है। यहांकी मंडली धर्मात्मा तथा धर्मसे रुचि रखने-वाली है।

यहांपर बाजार छावनी सासबहूका तालाब राजा साहबका गढ महल भवानीसागर आदि चीजें देखने योग्य

हैं। यहां दिगम्बर जैनियोंके घर बहुत हैं बीसपंथ तेरापंथ दोनों ही आम्नाय यहांपर हैं। एक पाठशाला है। यहांसे पंडितजीका सारोला क्षेत्र पास है। बैलगाडीमें वहां जाना चाहिये। यदि रेल भी जाती हो तो पूछकर रेलसे चला जाना चाहिये।

पंडितजीका सारोला क्षेत्र

यह एक अच्छा कसबा है। जैनियोंके घर भी हैं। यहां मंदिरमें एक बडी भारी प्राचीन प्रतिमा विराजमान है, दर्शन करना चाहिये। यहांसे चांदखेडी अतिशय क्षेत्र पास है, बैलगाडीसे वहां चला जाना चाहिये।

श्रीचांदखेडी अतिशय क्षेत्र

इस परम पूज्य क्षेत्रपर एक बडा भारी प्राचीन मनोज्ञ कीमती मंदिर है। इसमें मूलनायक महामनोहर प्राचीन प्रतिमा श्रीआदिनाथ भगवानकी ५-६ हाथ ऊंची विराजमान हैं। इस प्रतिमाजीकी दोनों बगलोंमें सात सात हाथकी ऊंची २ प्रतिमा श्रीशांतिनाथ भगवानकी विराजमान हैं। दो प्रतिमा श्रीपार्श्वनाथ स्वामीकी दो चौबीस महाराजकी हैं। सब मिलाकर इस मंदिरमें ५७७ प्रतिमा विराजमान हैं। इन प्रतिमाओंके दर्शनसे बडा भारी आनंद प्राप्त होता है। भव भवके संकट कट जाते हैं, यहां १ शिलालेख भी

स्पष्ट खुदा हुआ है। लेखकी शिलापर जैनबद्री सरीखी मनोहर प्रतिमा उकेरी हुई है।

यहांसे पूर्व दिशाकी ओर ७ कोशकी दूरीपर एक सांगोद नामकी वस्ती है। वहां १ प्राचीन बडा विशाल मंदिर है। ३० घर दि० जैनी भाइयोंके हैं, वहांपर जाना चाहिये। वहांसे एक कोशके फासलेपर एक अतरु नामकी स्टेशन है। वहांपर जाकर टिकट बारा स्टेशनका ले लेना चाहिये।

श्रीबारा ग्राम सिद्धक्षेत्र

बारा १ बडा कसवा है। दि० जैनी भाइयोंके बहुतसे घर हैं। १ मंदिर है जिसमें महामनोहर प्रतिमा विराजमान हैं। यहांके जंगलमें परम पूज्य गुरुवर श्रीकुन्दकुन्द स्वामीका समाधिमरण हुआ था उनकी यहां चरणपादुका एक छत्रीमें विराजमान हैं। वहां जाकर दर्शन करना चाहिये। फिर लोटकर स्टेशन आकर गुना जंकशनका टिकट लेलेना चाहिये।

गुना जंकशन

गुना शहर स्टेशनसे लगा हुआ है। यहांपर १ धर्मशाला और ३ शिखरबन्द विशाल मंदिर हैं। पूजा बडे ठाट बाट और भक्तिभावसे होती है। दिगम्बर जैनी भाइयोंके घर करीब १ सौ हैं। आपसमें अच्छी एकता है।

१ पाठशाला और १ सभा स्थापित है। यहांका शहर तथा छावनी देखने योग्य है। यहांसे रेलवे लाइन ३ जाती हैं परन्तु यात्रियोंको यहांसे बैलगाडी वा तांगामें बजरंगगढ जाना चाहिये।

श्रीबजरंगगढ अतिशय क्षेत्र
जयनगर

यहांपर एक धर्मशाला १ पाठशाला १ कन्याशाला और ३ विशाल मंदिर हैं। १ मंदिरमें श्रीअरहनाथ और कुंथनाथ भगवानकी महा मनोहर प्राचीन प्रतिमा विराजमान हैं। और भी अनेक मनोहर प्रतिमा भौंरेमें विराजमान हैं।

यहांपर विक्रम सम्वत् १९४३ में एक मंदिरमें पंच-कल्याणक प्रतिष्ठा हुई थी। उस समय जिस दिन जन्म-कल्याणका महोत्सव था उस दिन कुछ वैष्णव लोगोंने द्वेषके कारण विघ्न डाला था। दुष्टोंने २७ प्रतिमाओंको खण्ड खण्डकर पारवती नदीमें जाकर डाल दिया। वहांसे हल्ला करते करते वे मंदिरके भौंरेके पास आये। इस मंदिरके भौंरेमें विक्रम संवत १२ की श्रीअरहनाथ और कुंथ-नाथकी प्रतिमा विराजमान थीं दुष्टोंने उनको तोडनेकेलिये धावा किया। बस! वे भौंरोंके पास ही आये थे कि दैव-योगसे वहांपर अग्निवर्षा और धुवांके गुबारे निकलने लगे, सब लोग एकदम घबडा गये और लाचार होकर लौट गये

जैनियोंके साथ दुश्मनीकर उनको बडा पश्चात्ताप हुआ। आकर जैनियोंसे उन्होंने बहुत कुछ अनुनय विनय किया, क्षमा प्रार्थना की और जैनियोंका आदर सत्कार करने लगे। राजाके कान तक भी यह बात पडी। तुरंत ही पुलिस आई और उसने बहुतसे हुल्लड मचानेवाले आदमियोंको पकड लिया और सजा दी। यह वृत्तांत थोडे दिनका ही होनेके कारण सब लोग प्रायः इससे परिचित हैं तथा सुनाते हैं, अब भी उक्त प्राचीन प्रतिमाओंमें बाल्य तरुण और वृद्ध तीनों अवस्थाओंका दृश्य दीख पडता है, इन प्रतिमाओंके नाम मात्र स्मरणसे सब कंटक भग जाता है ऐसी यहां धारणा है। रात्रिमें १२ बजेके बाद देवकृत नृत्य गान आदिका उत्सव होता है, ऐसा यहांके लोग कहते हैं। यहांकी यात्राकर यात्रियोंको बीना इटावा जाना चाहिये। यहां रेलसे जाना होता है, बीना इटावाका हाल ऊपर लिखा जा चुका है। यहांसे भेलसा जाना चाहिये।

भेलसा

यह शहर भेलसा स्टेशनके बिलकुल पास है। यहांपर शहरमें १ पाठशाला १ कन्याशाला है, जैनी भाइयोंके घर ६० के करीब हैं। १ बडा भारी प्राचीन शिखरबंद मंदिर तथा ३ चैत्यालय हैं। बडी मनोज्ञ प्रतिमा इनके अंदर विराजमान हैं।

बहुतसे लोग इस भेलसा शहरको भद्रिलापुरी कहकर भगवान शीतलनाथका गर्भ जन्म और तप स्थान यहीं मानते हैं। इसीलिये इसको वे अतिशय क्षेत्र मानते हैं।

भेलसा सांचीके चौतर्फा २० कोशतक जंगल २ और माबर में राजा अशोकके जमानेके २० फुटसे लेकर ६५ फुटतक ऊंचे बहुतसे मंदिर हैं जो कि लाखों रुपयोंकी लागतके महा मनोहर हैं, इनको वर्तमानमें यहां बौद्ध स्तुप कहते हैं. यहांसे यात्रियोंको भूपालताल जाना चाहिये।

भूपालताल

यह शहर प्राचीन और नामी है, राजा भोजने इसे बनाया था इसलिये इसका नाम पहिले भोजपाल था पीछे से अपभ्रंश होकर इसका नाम भोपाल हो गया। यहांपर अंगरेजी सेना रहती है, ४॥ मील लम्बी और १॥ मील चौडी यहां १ झील है, दो मीलकी दीवारसे चारो ओर घिरा हुआ १ विशाल यहां किला है, शहरके बाहर एक तीमार बस्ती है। दोनों तरफ दो फतहगढ हैं, गढमें बेगम साहिबा रहती हैं. यहां बेगम साहिबाका महल जुम्मा मस्जिद टकसाल घर तोपखाना मोतीमस्जिद खुदासीया बेगमबाटिका जनाना स्कूल हिंदी स्कूल अंग्रेजी स्कूल आदि चीजें देखने लायक हैं। यहां राजाका बनाया हुआ १ विशाल

तालाव है, चौगिर्द पहाडसे घिरा हुआ है, इसी तालावके नामसे यह स्थान भूपालतालके नामसे मशहूर है।

भोपाल शहर स्टेशनसे २ मीलकी दूरीपर है, स्टेशनपर हिन्दुओंकी ३ धर्मशाला हैं. शहरमें दिगंबर जैनियोंकी ३ धर्मशाला हैं, १ मंदिर २ चैत्यालय हैं और एक पाठशाला है, यहांसे करीव १० मीलके फासलेपर एक समसगढ नामका अतिशय क्षेत्र है, तांगासे वहां जाना चाहिये।

भोपालसे १ रेलवे वीना १ उज्जैन १ इटार्सी इसप्रकार ३ लाइन जाती हैं।

श्रीसमसगढ अतिशय क्षेत्र

यहां अत्यन्त जीर्ण प्राचीन एक मंदिर है। यह मंदिर देखनेसे बडी लागतका जान पडता है तथा इसकी जीर्णता से यह चतुर्थ कालीन सरीखा जान पडता है, इसके अन्दर ३ प्रतिमा चतुर्थ कालकी अत्यन्त देदीप्यमान मनोहर विराजमान हैं। यहां भगवान पार्श्वनाथका समवसरण आया था इसलिये यह अतिशय क्षेत्र माना जाता है। यहांकी यात्राकर भोपाल लोट जाना चाहिये और स्टेशन जाकर मकसी पार्श्वनाथका टिकट लेकर वहां चला जाना चाहिये.

मकसी पार्श्वनाथ स्टेशन (अतिशय क्षेत्र)

स्टेशनसे १। मीलके फासलेपर एक कल्याणपुरा नाम का कसवा है, वस्तीके भीतर एक दि० जैन धर्मशाला तथा

एक मंदिर है, एक धर्मशाला श्वेतांबरी है, यहां १ प्राचीन बडा विशाल मंदिर श्रीपार्श्वनाथ भगवानका है, पहिले यह मंदिर दि० था परंतु श्वेतांबर दिगम्बर दोनोंमें आपसमें झगडा होनेके कारण अब यह दोनोंके आधीन हो गया है। दोनों ही सम्प्रदायवाले तीन २ घण्टा अपने अपने नम्बरसे पूजन करते है। दोनों सम्प्रदायवालोंके पूजा करते समय किसीको भी दर्शन करनेकी मुमानियत नहीं। यही दशा अन्तरिक्ष पार्श्वनाथ क्षेत्रपर भी है। यहांपर भगवान पार्श्वनाथकी प्राचीन चतुर्थ कालीन महामनोहर सातिशय प्रतिमा विराजमान हैं, यहां जिससमय मुसलमान बादशाह इस प्रतिमाजीके तोडनेके लिये आया था उसे कई बार अद्भुत अतिशय दिखाया था। इस समय भी बहुतसे अतिशय यहां होते रहते हैं, इस प्रतिमाजीके दर्शनसे चित्त बडा ही आनन्दित होता है, यहांकी यात्राकर ॥) की टिकट लेकर यात्रियोंको उज्जैन शहर जाना चाहिये।

उज्जैन

एक मंदिर एक धर्मशाला स्टेशनके पास है। १ मंदिर एक धर्मशाला लोनकी मंडीमें है। एक मंदिर नयापुरामें है और एक मंदिर उज्जैनसे ४ मीलके फासलेपर १ पुरामें है, ये सभी मंदिर बडे मजबूत प्राचीन और मनोहर हैं। सबोंमें उत्तमोत्तम प्राचीन प्रतिमा विराजमान हैं, यह शहर पुराना

है। यहां बजार नदीका घाट हिंदुवोंके मंदिर भैरवगढ महा कालेश्वरका मंदिर जयपुर राजाजीका आकाश लोचन, गवालियर महाराजका महल कपडेका मिल आदि चीजें देखने लायक हैं। यहां दि० जैनी भाइयोंके घर करीब ५० के हैं, एक बोर्डिंग और एक पाठशाला है।

उज्जैन राजा विक्रमादित्यकी राजधानी थी। यहां बडे २ विद्वान हो गये हैं। इसी उज्जैनी नगरीके भोजवती यवन्ती अवंतिका वैशाखा आदि नाम संस्कृत कोषोंमें प्रसिद्ध हैं। वर्तमानमें यह नगरी सुन्दर है। हिन्दु लोग इसे बडा पवित्र मानते हैं। तीर्थ मानकर हमेशा यहां आते जाते रहते हैं कभी कभी यहां वैष्णवोंका मेला (चढावा) बडे ठाट बाटसे होता है, लाखों आदमियोंकी बडी भारी भीड होती है। यहांपर सिप्रा नदी बहती है।

परम पूज्य श्रीभद्रबाहु स्वामीने इसी स्थानपर राजा चंद्रगुप्तके १६ स्वप्नोंका फल बताया था। यहींपरसे बारह वर्षका अकाल पड जानेके कारण भगवान भद्रबाहु स्वामी दक्षिणकी ओर चले गये थे और चन्द्रगुप्त राजाको अपना पद प्रदानकर जैनबद्री चंद्रगिरि पर उन्होंने समाधिमरण किया था।

उज्जैनसे ३ रेलवे लाइन जाती हैं। १ भोपाल १ रत- लाम और १ इन्दौर। उज्जैनके भाइयोंसे पूछकर यहांसे

सिहोरा रोडका टिकट लेकर बाहुरीबन्ध क्षेत्र जाना चाहिए सिहोरा रोड ई० आई० आर० रेलवेमें पड़ता है।

श्रीबाहुरीबंध क्षेत्र

यह क्षेत्र स्टेशनसे १८ मीलकी दूरीपर है, जी० आई० पी० रेलवेका एक सलया स्टेशन है उससे भी यह क्षेत्र १८ मील पडता है। यह ग्राम छोटासा ठीक है, पुरानी बस्ती है। यहांपर टूटे फूटे जैनियोंके मंदिर और प्रतिमा बहुतसी हैं। १२ फुट ऊंची महा मनोहर १ प्राचीन प्रतिमा श्रीशांतिनाथ भगवानकी विराजमान हैं, ग्रामके पास १ बडा तालाब है तालाबके पास बहुतसी प्रतिमा और टूटी फूटी हालतमें मंदिर हैं। यहांपर १ पीरोंकी कब्र देखने योग्य है। यहां लौटकर फिर उज्जैन जाना चाहिये और वहांसे रतलाम आवरा मंदशार नीमच आदि होकर भीलवाडा आदिको जाना चाहिये।

भीलवाडा

स्टेशनसे १ मीलकी दूरीपर शहर है। यह शहर बहुत सुन्दर देखने लायक है। यहांपर २ मंदिर और २५ घर दि० जैनी भाइयोंके हैं यहांकी मंडली धर्मात्मा और शुद्धाचरणसे परिपक्क है, यहांसे बिजोलिया पार्श्वनाथ जाना होता है। उसका हाल पहिले ऊपर लिख दिया गया है, यहांसे यात्रियोंको सहापुरा जाना चाहिये।

सहापुरा

सहापुरा शहर अच्छा है, यहांपर सब प्रकारका व्यापार होता है। यहांपर ४ मंदिर बहुत उत्तम हैं ३१ घर दिगम्बर जैनी भाइयोंके हैं १ धर्मशाला है। इस शहरके आनके लिये मांडलसे भी रास्ता है। यहांसे मांडल जाना चाहिये।

मांडल स्टेशन

यह शहर भीलवाड़ाकी अपेक्षा भी बढ़िया है १ जैन मंदिर और कुछ घर दिगम्बर जैनियोंके हैं। यहांसे १ रास्ता बागुदरा चुलेश्वर भी जाता है उसका हाल ऊपर लिखा जा चुका है। यहांसे १ रास्ता हम्मीरगढ भी जाता है। यहांसे यात्रियोंको नसीराबाद जाना चाहिए।

नसीराबाद

स्टेशनसे २ मीलकी दूरीपर शहर है, शहरमें १ दि० जैन धर्मशाला है वहां ठहर जाना चाहिये। ४ मंदिर और नशियांजी हैं। यहांके मंदिर और नशियाजी बड़े सुन्दर देखने योग्य हैं। दिगम्बर जैनी भाइयोंके घर ५० से जादा होंगे। यहांकी छावनी देखने योग्य है। यहांसे यात्रियोंको अजमेर आना चाहिये।

अजमेर

स्टेशनसे १ मीलकी दूरीपर सेठ मूलचंद नेमीचन्द सोनीकी १ विशाल धर्मशाला है। यात्रियोंको इस धर्मशालामें उतरना चाहिए। यहां सब बातका आराम मिलता है। यहांसे थोडी दूरके फासलेपर ४ नशियाजी हैं। सब का दर्शन करे। यहांपर १ नशियाजी ३ मंजलकी राजमहलके समान बडी ही मनोहर हैं। यह लाखों रुपयोंकी लागातकी बनी हुई है। इसमें तीन विशाल मंदिर हैं। १ मंजलमें यहांपर शास्त्रोक्त रीतिके अनेक चित्राम पंचकल्याण शिखरजी आदिकी रचना शास्त्रीय लेख आदि हैं. १ मंजल में अयोध्या सर्व धातुकी बनी हुई समवसरणकी नकल और १ मंदिरमें स्फटिकमयी विशाल प्रतिमा विराजमान हैं। १ मंजलमें काठका हाथी घोडा आदि रचना देखने योग्य हैं। बडी सावधानी और जांचके साथ दर्शन करना चाहिये। ऐसा लाखों रुपयोंकी लागातका जैनियोंमें अन्य कोई स्थान नहीं।

जैसा मंदिर नसियाजीमें है वैसा ही उक्त सेठ साहब का शहरके अंदर घरमें भी १ मंदिर है। दोनों हीकी रचना बडी मनोहर और प्रसिद्ध है। बडा दूरके मनुष्य इन दोनों मंदिरोंको देखने केलिये यहां आते हैं।

अजमेर शहरमें भी सेठ साहबके घरके मंदिर संयुक्त

७ मंदिर हैं सबका दर्शन करना चाहिये । यहांके मंदिरोंके दर्शनोंसे चित्त बडा ही आनंद होता है । यहांपर सेठजीका मकान अजायब घर कालेज डेढ दिनका झोपडा दरवाजा पीरका दरगा लाइब्रेरी अना सागर दौलतबाग आदि चीजें देखने योग्य हैं ।

यह शहर पहिले जैनियोंका था जैन राजा अजयका बसाया हुआ है । इस समय भी यह जैनियोंका पूज्य स्थान बन रहा है । हजारों दूर दूरके जैनी यहां दर्शनार्थ आते हैं । ख्वाजी पीरका दरगा होनेसे यह मुसलमानोंका भी प्रसिद्ध तीर्थ स्थान है हजारों मुसलमान यहां आते जाते बने रहते हैं । यहांपर ख्वाज पीरका १ बडा भारी मेला जुटता है हजारों हिंदु और मुसलमान बोल कबुल लेकर आते हैं । यहांपर हिंदुओंका प्रसिद्ध तीर्थस्थान पुष्करजी पास है इसलिये हजारों हिंदुओंका भी अजमेरमें भी आना जाना बना रहता है । अजमेर शहर वास्तवमें एक बडा ही मनोहर और दर्शनीय शहर है ।

यहांसे ४ रेलवे लाइन जाती हैं १ फुलेटा १ मारवाड जंकशन १ चित्तोड और १ पुष्करजी । अजमेरसे पुष्करजीका ≈) आना रेलभाडा लगता है । यदि देखनेकी इच्छा हो तो पुष्कर देख आना चाहिये ।

पुष्करजी

यह हिंदुओंका १ बडा भारी तीर्थ स्थान है। यहांपर हजारों लोग आते जाते रहते हैं। यहांपर बडा भारी वैष्णव लोगोंका १ मंदिर है। और उसके घाट बने हुए हैं। हजारों राजा लोगोंकी छत्रियां और मकान यहां देखने योग्य हैं। यहांका दृश्य देखकर अजमेर लौट जाना चाहिये। वहांसे नयानगर (ब्यावर) चला जाना चाहिये।

नयानगर (ब्यावर)

यह शहर व्यापारके विषयमें कलकत्ता बम्बईके समान चढा बढा है। यहांपर सब प्रकारका व्यापार होता है कपडा बोरोंके बुननेका मिल और कपासके पेच यहांपर हैं। यहां के सभी व्यापारी धनिक हैं। शहरके चारो ओर परकोट है और उसमें ४ दरवाजे हैं।

यहांपर २ दिगंबर जैन मंदिर है। दोनों ही मंदिर बडे सुन्दर और कीमती हैं। १०० घर दिगम्बर जैनी भाइयोंके हैं यहांपर लोग धर्मात्मा और धर्मसे रुचि रखनेवाले हैं। इनकी क्रिया धर्मानुकूल है। यहांकी मंडली उत्तम है यहांके सेठ चंपालालजी १ प्रसिद्ध व्यक्ति हैं। इन्हीं सेठ साहबकी ओरसे यहांपर १ नशियांजी है जिसमें जैनी यात्री ठहरते हैं। १ पाठशाला और १ सभा ब्यावरमें स्थापित है। ब्यावर देखकर यात्रियोंको अजमेर लोट आना चाहिए।

बस यहां इसप्रकार यात्रा प्रकरण समाप्त होता है। यदि अजमेरसे किसी भाईको आगे जाना हो वो वह किशन-गढ फुलेरा आदि जा सकता है यदि पीछे लौटना हो तो वह नसीराबाद भीलवाडा चितौड मारवाड जंकशन आबू जोधपुर आदि जा सकता है। फुलेरासे सांभर कुचामन डेगा-डाना मेरतारोड लाडनू सुजानगढ रेवाडी राणोली शिखरजी देहली जयपुर आदि जा सकता है। इन गांवोंका हाल ऊपर लिख दिया है। किशनगढ कुशलगढ आदिका हाल यह है—

किशनगढ

स्टेशनसे १ मीलके फासलेपर गांव है, शहर पुराना है २५ घर दि० जैनियोंके हैं। १ धर्मशाला ४ मंदिर और एक पाठशाला है, यहां किला ग्रीष्मभवन फूल महल व्रजराजजी मदनमोहन और चिंतामणिका मंदिर काठीवालोंका मकान देखने लायक चीजें हैं, यहांसे फुलेरा जाना चाहिये।

फुलेरा जंकशन

यह ग्राम स्टेशनके पास है, यहां वैष्णवोंकी एक धर्म-शाला है। एक चैत्यालय है. १२ घर दि० जैन खण्डेल-वाल भाइयोंके हैं। यहांसे ४ रेलवे लाइन जाती हैं १ अज-मेर एक जयपुर १ रेवाडी १ मेरतारोड। सब हाल ऊपर लिख दिया है। फुलेरा जंकशन होनेसे अच्छा कसबा है, खाने पीनेका सब सामान मिलता है, रेवाडीकी तरफका कुछ

शाक यह है। फुलेरासे रींगच स्टेशनका टिकट लेना चाहिये।

रींगच जंकशन

यह ग्राम अच्छा है। यहां १ चैत्यालय और कुछ घर जैनी भाइयोंके हैं, यहांसे १ लाइन सीकर जाती है. बीचमें राणोली स्टेशन है। २ दि० जैन मंदिर और ६० मकान जैनियोंके हैं। रींगचसे राणोली हो सीकर जाना चाहिये।

सीकर

यह शहर स्टेशनके पास है, सुन्दर शहर है २०० घर दिगम्बर जैनियोंके हैं। ३ मंदिर और १ चैत्यालय है। यहां पंडित महाचन्द्रजी बडे भारी विद्वान हो गये हैं। बडे आत्मज्ञानी और न्याय व्याकरण आदिके प्रबल पंडित थे। इनकी कई कृतियां बनी हुई हैं। पंडित महाचन्द्रजीका समाधिमरण १९४५ के माघ मासमें हुआ था, त्रिलोकसारजीकी पूजा इन्हींकी बनायी है। यहांसे रामगढ जाना चाहिये।

रामगढ

चुरूसे भी यह समीप पडता है, यह ग्राम बडा है यहां बीस मकान दि० जैनी भाइयोंके हैं। एक जैन मंदिर है। इसके आगे फतेहपुर एक बडा शहर पडता है। इच्छा हो तो वहां जाना चाहिये, नहीं तो सीधा रेवाडी जाना चाहिये।

रेवाडी

यह शहर बहुत बडा है। यहां ४ मंदिर हैं। १०० मकान

दिगम्बर जैनियोंके हैं। यहांसे श्रीमाधोपुर जाना चाहिये

श्रीमाधोपुर

यह शहर भी बहुत बडा तथा नामी है। राजाका राज है। बडी रोनकदार है। यहां ३ मंदिर और बहुतसे मकान दिगंबर जैनी भाइयोंके हैं। यहांसे लौटकर देहली चला जाना चाहिये। देहलीका हाल ऊपर वर्णन किया गया है। यदि यहासे आगे कोई भाई पंजाब जाना चाहै तो जा सक्ता है। देहलीसे १ रेल पानीपत रोहतक गोहाना भटिण्डा फौजील्का मुलतान आदि जाती है। सभी बडे २ शहर हैं तथा सब जगह जैन मंदिर और श्रावकोंके मकान हैं। एक रेलवे मेरठ खतौली मुजफ्फरनगर सहारनपुर जाती है। एक अम्बाला जगाधरी सिमला तक जाती है।

अंबालासे एक लाइन लुधियाना जाती है। लुधियानासे एक लाइन फीरोजपुर लाहौर रावलपिंडी अटक पेशावर तक जाती है सब ही बडे २ शहर हैं। सबोंमें जैन मन्दिर और जैनी भाइयोंके मकान हैं। अम्बालासे १ लाइन अमृतसर सियालकोट तक जाती है। एक लाइन देहलीसे भिवानी हिसार रतनगढ बीकानेर सुजानगढ जोधपुर जाती है। यात्रियोंकी इच्छा वे कहीं जा सकते हैं।

इसप्रकार यह तीर्थयात्रादर्शक नामकी पुस्तक समाप्त हुई।